जकड़ी

हरियाणवी महिलाओं के सर्व-सुलभ लोकगीत



देवेन्द्र कुमार

KW

जकड़ी

हरियाणवी महिलाओं के सर्व–सुलभ लोकगीत

डॉ. देवेंद्र कुमार
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
अंग्रेज़ी विभाग, कला संकाय
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221005

आई०एस०बी०एन० : 978-93-84299-55-2

प्रथम संस्करण : 2015

मूल्य : 350/-

प्रकाशक
किशोर-विद्या-निकेतन
बी-2/236-ए, भदैनी, वाराणसी- 221001
दूरभाष:-09415996512, उत्तर प्रदेश
email: kvnpublisher@gmail.com
website: www.kishorvidyaniketan.com

मुद्रक :
श्रीमहावीर प्रेस
वाराणसी

माँ भरपाई देवी

व

बहन लाजवन्ती

को

समर्पित

भूमिका (उद्गार)

बहन और भाइयों में सबसे छोटा होने के कारण मेरा अधिकांश समय माँ और बहन की संगति में ही गुज़रा। माँ और बहन दोनों ही कमाल की गितेरण (अवसर-अनवसर गीत गुनगुनाने वाली) रही हैं। स्वाभाविक है कि मैंने उन्हें लगभग हर समय कोई-न-कोई गीत गाते हुए ही देखा है। सर्दियों की रातों में रजाई में दुबककर और गर्मियों की रातों में चाँद-तारों के नीचे आँगन में लेटे हुए उनके गीतों को सुनते-सुनते कब नींद आ जाती थी, पता ही नहीं चलता था।

माँ और बहन के माध्यम से ही अड़ोस-पड़ोस की चाची-ताइयों से मेरा संपर्क बढ़ा और शादी-विवाह जैसे विशेष अवसरों के साथ-साथ दिनचर्या के अंग के रूप में होने वाली उनकी आपसी मुलाकातों का मैं साक्षी रहा। उन अवसरों पर उनके मध्य होने वाले वार्तालाप और गीत-संगीत ने मेरा परिचय हरियाणा की महिलाओं की उस अंदरूनी दुनिया से कराया जिसके बारे में पुरुष-समाज को कम ही जानकारी है। ज्यों-ज्यों मैं बड़ा होता गया और आस-पास की दुनिया के बारे में कुछ जानकारी होने लगी तो मुझे महसूस हुआ कि समय और संस्कृति बड़ी तीव्र गति से बदल रहे हैं। इस बदलाव का कुछ अहसास इस बात से हुआ कि लोकगीतों को तन्मयता से गाने वाली महिलाओं की संख्या बड़ी तेज़ी से घट रही है। इस कमी का प्रमुख कारण बदलती हुई जीवन शैली और प्राथमिकताएँ हैं, जिनके कारण नई पीढ़ी लोकगीतों में अपेक्षित रुचि नहीं ले पा रही।

पिछली शताब्दी के अंतिम दशक में मुझे उच्च शिक्षा के सिलसिले में गाँव छोड़ना पड़ा। कई-कई दिनों के बाद घर आता तो रात में माँ के पास ही सोता। कभी मैं उन्हें कोई गीत विशेष गाने के लिए कहता तो कभी वह मुझसे किसी भजन विशेष की कोई भूली हुई पंक्ति याद दिलाने को कहती। धीरे-धीरे जब मैंने महसूस किया कि माँ की याददाश्त कमज़ोर पड़ती जा रही है और इसके साथ ही अनेक मनभावन लोकगीत भी गायब होते जा रहे हैं तो मैंने हरियाणा के लोकगीतों को कलमबद्ध कर लेने का निश्चय किया। इस प्रकार प्रारंभ हुआ यह प्रयास, जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदान (आर्थिक सहायता) प्रदान करने से पूर्व मंथर गति से चल रहा था, अनुदान पाने के बाद काफी तेज़ी

से आगे बढ़ा। हरियाणा के विभिन्न गाँवों से एकत्र किए गए गीतों में से कुछ लोकगीत, जिन्हें हरियाणा की महिलाएँ सामूहिक रूप से "जकड़ी" नाम से जानती हैं, इस पुस्तक में हिंदी के पाठकों हेतु छायानुवाद सहित प्रस्तुत हैं।

हरियाणा के लोकगीतों को हिंदी जगत के लिए सुलभ करवाने के पीछे कई कारण हैं। सर्वप्रथम तो ऐसे कार्य को अपनी जड़ों की ओर लौटकर जाने के उत्तर-उपनिवेशवादी प्रयास के रूप में देखा जा सकता है। स्वतंत्रता के लगभग सत्तर साल बाद आज भारतीय मानस एक बार पुनः इस स्थिति में है कि वह अपनी संस्कृति, अपनी धरोहर को हीनभावना से न देखकर आत्मीयता से परख सके और अपनी खोई हुई पहचान को पुनः सँजो सके। सामान्यतः यह माना जाता है कि किसी भी समाज की लोक संस्कृति और उसके द्योतक तत्व किसी भी अन्य माध्यम या विधा की अपेक्षा ज़्यादा बेहतर तरीके से उस समाज विशेष की जानकारी दे सकते हैं। इस दृष्टि से यह पुस्तक हरियाणा की कर्मठ महिलाओं के जीवन-दर्शन को उनकी अपनी दृष्टि से समझने में सहायक होगी, ऐसा मेरा विश्वास है। दूसरे, आज लगभग समस्त परंपरागत समाजों में सदियों से प्रवाहमान लोकसंस्कृति की धारा लुप्त होने के कगार पर है। इसका सबसे प्रमुख कारण व्यक्ति के जीवन निर्वाह के साधनों में आमूल-चूल परिवर्तन होना है। जिस परंपरागत समाज का हम ज़िक्र कर रहे हैं, वह समाज मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन और अन्य संबंधित कार्यकलापों पर आरंभ से ही निर्भर था। उसकी कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में शनैः- शनैः वह लोक संस्कृति पनपी और फूली-फली जिसके मरणासन्न होने का हम आज शोक मना रहे हैं। ऐसा नहीं है कि उस परंपरागत लोक-संस्कृति के लुप्त होने पर एक शून्य पैदा होगा। तथ्य तो यह है कि हर समाज की अपनी एक लोक-संस्कृति होती है। यह तथ्य भारतीय समाज पर भी घटित होता है। उत्तर-आधुनिक युग में जैसा समाज बनता जा रहा है, उसी के समरूप उसकी लोक-संस्कृति भी साथ-साथ विकसित हो रही है। यह संस्कृति है-टी.वी. सीरियल की, कंप्यूटर की, फिल्मों की, डी.जे. के धूम धड़ाके की, रात भर चलने वाले देवी-देवताओं के भव्य जागरणों इत्यादि की। ऐसे संक्रमण काल में बौद्धिक समाज का उत्तरदायित्व बनता है कि वह लोक संस्कृति के लुप्त होते तथ्यों और तत्वों का भावी पीढ़ियों के लिए समुचित संरक्षण करे ताकि आने वाली संतति को अपना सांस्कृतिक इतिहास गढ़ते हुए मौलिक सामग्री का अभाव न खले। प्रस्तुत पुस्तक इस दिशा में एक छोटा किंतु महत्वपूर्ण प्रयास सिद्ध होगी, ऐसी मुझे आशा है। तीसरे, यह पुस्तक राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

हिंदी भाषा की शक्ति का स्रोत इसकी लोक भाषाएँ और बोलियाँ ही हैं। हरियाणवी लोक भाषा हिंदी की एक महत्वपूर्ण सहायक बोली है। लेकिन हिंदी भाषा को इस बोली का प्रत्यक्ष रूप में वह संबल नहीं मिल सका है, जो इसे मिलना चाहिए। वेदों–उपनिषदों की जन्मभूमि हरियाणा की यह बोली अपने शब्दों और ध्वनियों में हज़ारों वर्षों का भाषायी एवं सांस्कृतिक इतिहास छिपाए खड़ी है, जिसके समुचित अध्ययन की आवश्यकता है। प्रस्तुत पुस्तक में लिपिबद्ध लोकगीत हरियाणवी लोकभाषा के प्रचलित स्वरूप को हिंदी जगत् के सामने लाएँगे और हिंदी के साथ इस बोली के तादात्म्य के अनछुए पहलुओं को उजागर करके राष्ट्रभाषा हिंदी के उत्थान में सहायक होंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस पुस्तक को वर्तमान स्वरूप में प्रस्तुत करने की प्रेरणा मुझे अग्रज समान डॉ. रामनारायण तिवारी की पुस्तक *भोजपुरी लोकगीतों में जँतसार* (2012)और स्टीव रॉड व जूलिया बिशप द्वारा संपादित पुस्तक द् *न्यू पैंग्विन बुक ऑफ़ इंग्लिश फ़ॉक सोंग्ज़* (2012) से मिली। मैं हरियाणा के विभिन्न गाँवों की उन महिलाओं के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने गर्मियों की भरी दोपहरी में आलस्य त्यागकर और अपने ज़रूरी कामों तक को छोड़कर मेरे आग्रह पर सहर्ष लोकगीत गाए और मुझे पुनः आने का निमंत्रण भी दिया। उनमें से कुछेक के नाम पुस्तक के अंत में गीतों पर लिखी टिप्पणियों में आए हैं। लेकिन अनेक के नाम, जो मैंने डायरी में पते, फ़ोन नं. सहित लिखे हैं, स्थानाभाव के कारण इस पुस्तक में नहीं दे पाया हूँ, उनके प्रति मैं श्रद्धा से अपना शीश झुकाता हूँ। इन लोकगीतों के संग्रह के लिए मैंने विभिन्न गाँवों की कई–कई बार यात्रा की और गीत गाने वाली महिलाओं से संपर्क साधा। इस प्रक्रिया के सफल और फलदायी होने में विभिन्न लोगों का मुझे सहर्ष सहयोग मिला; जैसे–जयभगवान जाँगड़ा, मनोज देवी, सुनील, रवींद्र, संदीप ग्रेवाल, प्रदीप, पूनम, विजेंद्र जागलान, कमला देवी, विमला देवी, राजेंद्र रेड्डू, राजकुमार, कमलेश, संतोष देवी, सुधाकर, इंद्रदेव शास्त्री, रमेश, वीरेंद्र आदि। इनके सहयोग के बिना यह काम ज़्यादा कष्टसाध्य होता। इन लोकगीतों को लिपिबद्ध करने के लिए मैं अपनी पत्नी सुमन का आभारी हूँ, जिसने अपनी व्यस्त दिनचर्या में से समय निकाला और इस कष्टसाध्य कार्य को तत्परता से किया। मैं आशीष कुमार राय का भी कृतज्ञ हूँ, जिसने कई दिनों तक मेरे साथ बैठकर इन लोकगीतों की व्याख्या को मुझसे सुनकर कलमबद्ध किया। इन हस्तलिखित लोकगीतों को कंप्यूटर पर टंकित करने के लिए मैं सतवंत प्रसाद, बृजेश पटेल, आशीष कुमार और ओ.पी. गुप्ता को धन्यवाद देता हूँ। इंद्रदेव शास्त्री, सुनील प्रभाकर, भाईलाल पटेल, सत्यपाल शर्मा, मनीष मिश्रा एवं

रविकृष्ण त्रिपाठी ने जिस तन्मयता से पांडुलिपि का भाषा-संबंधी संस्कार किया, उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

मैं मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अधीनस्थ केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग का शुक्रगुज़ार हूँ, जिसने इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ वित्तीय अनुदान प्रदान करके मेरे कार्य को सरल बना दिया।

यह पुस्तक मेरी ओर से इस दिशा में पहला प्रयास है। इसमें अनेक त्रुटियाँ हो सकती हैं। इस आशा के साथ कि पाठक इन त्रुटियों की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट करेंगे, मैं इस पुस्तक को हिंदी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ।

- **डॉ. देवेंद्र कुमार**
एसोसिएट प्रोफ़ेसर
अंग्रेज़ी विभाग, कला संकाय
काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्राक्कथन

जब डॉ. देवेंद्र कुमार ने अपनी पुस्तक का प्राक्कथन मुझसे लिखने को कहा तो मेरे सामने दो कठिनाइयाँ अनायास खड़ी हो गईं। पहली कठिनाई सार्वजनिक थी और किसी भी व्यक्ति के सामने हो सकती है। वह यह कि मैं हरियाणवी भाषा की न समझ रखता हूँ, न उस संस्कृति की सोच। ऐसी स्थिति में हरियाणवी बोली और लोकगीत पर कलम चलाना मुझ जैसे अल्पज्ञ के लिए बालू से तेल निकालने के बराबर है। दूसरी कठिनाई व्यक्तिगत है। देवेंद्र मेरे परिचित ही नहीं, प्रिय और नज़दीकी भी हैं। मेरे और उनके बीच खून का नहीं, बल्कि नून का रिश्ता है, जिसका निर्वहन करना नमक की दीवाल उठाने के समान होता है। यह संबंध इतना नाजुक होता है कि इसके संबंध में कोई भविष्यवाणी सटीक हो ही नहीं सकती। यहाँ प्रेम करना या होना गौण होता है, लेकिन उसका एहसास करना बहुत बड़ी बात होती है। ऐसे संबंधों के निर्वहन में समीक्षकों और आलोचकों की कलम फ़िसल जाती है, क्योंकि प्रीति नीति का साम्राज्य हिलाने में हमेशा सफल रहती है। मुझे यहाँ कलम के बेईमान होने का भय भी सता रहा है। फिर भी इतना तो ज़रूर जानता हूँ कि नीति के लिए समर्पित रहना कष्टकर भले हो जाए, लेकिन प्रीति के प्रति समर्पण मनुष्य को सुखानुभूति करा ही देता है। यहाँ आग्रह अनुज का है, जहाँ सिर्फ़ अधिकार है और करना या लिखना अग्रज को है, जहाँ कर्तव्य के सिवाय कुछ और नहीं दिखता। अंततः मैंने डॉ. देवेंद्र का आग्रह स्वीकार करते हुए उनकी पुस्तक *जकड़ी : हरियाणवी महिलाओं के सर्व-सुलभ लोकगीत* का प्राक्कथन तो नहीं, लेकिन शुभाशंसा लिखने का मन बना ही लिया है।

सर्वप्रथम मैं डॉ. देवेंद्र को बधाई देता हूँ कि उन्होंने 'जकड़ी' जैसे उपेक्षित लोकगीत को अकादमिक अध्ययन का विषय बनाया और इस मौखिक परंपरा को लिखित में ढालकर ऋषितुल्य कार्य किया। वह भी उस विभाग में रहते हुए, जो 1980 तक ऑक्सफ़ोर्ड और कैंब्रिज़ का अनुकरण करने का सपना देखता था। मुझे याद है कि काशी हिंदू विश्वविद्यालय के इसी अंग्रेज़ी विभाग के प्रोफ़ेसर के.पी. मुखर्जी ने मुझे एक शब्द हिंदी में बोलने पर डाँट दिया था। उस समय हिंदी विभाग के शिक्षक भी संस्कृतनिष्ठ हिंदी के पीछे दौड़ते थे। लोक साहित्य में कार्य करने वाले साधक तो ढूँढ़े नहीं मिलते थे। जो मिलते भी थे, वे अपने आप तक सीमित थे। मुझ जैसा अकिंचन और अल्पज्ञ तो यहाँ देहाती भूचड़ की संज्ञा में था। इतना ही नहीं, इन विद्वानों की हेय दृष्टि

का शिकार भी। मैं साधुवाद देता हूँ उन अध्येताओं को जिन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रांगण में लोक साहित्य का ध्वज फहराया। इन लोगों के प्रयास से ही काशी हिंदू विश्वविद्यालय के सभागार में देहाती भूचड़ और अकादमिक सितारे एक साथ मंच पर बैठे और अपनी-अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इन लोगों ने इस सच्चाई को सबके सामने लाकर खड़ा कर दिया कि काशी हिंदू विश्वविद्यालय केवल शास्त्र की ही शिक्षा नहीं देता, बल्कि लोक ज्ञान भी देता है। डॉ॰ देवेंद्र इन्हीं लोगों के आंदोलन की संपूर्ण क्रांति हैं, जिनमें जड़ता को तोड़कर नवीनता को स्थापित करने का सामर्थ्य है। इतना ही नहीं, इनमें छोटे को उठाने और बूढ़े को सँभालने की अद्‌भुत क्षमता भी है। तभी तो 'जकड़ी' जैसे उपेक्षित लोकगीत को राष्ट्रीयता के पटल पर पहुँचाकर इन्होंने अनुकरणीय, स्तुत्य और वंदनीय कार्य किया है।

डॉ॰ देवेंद्र के पूर्व हरियाणवी लोकगीतों पर अनेक व्यक्तियों ने कलम उठाई है। इन लोगों की पुस्तकें प्रकाशित भी हैं। लेकिन किसी ने जकड़ी गीत को इतना महत्व नहीं दिया, जितना कि डॉ॰ देवेंद्र ने। अब प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों? जो लोकगीत हरेक कार्यक्रम और हरेक क्रिया-कलाप में आसानी से गाया जाता हो, जो जन-जीवन की जुबान और अभिन्न क्रिया बन चुका हो, वह इतना उपेक्षित क्यों रहा? यह प्रश्न विचारणीय है। लगता है कि इन विद्‌वानों का सारा ध्यान संस्कार, धर्म, मेहनत जैसे गीतों पर अटका रहा; या हो सकता है कि इन लोगों की सामंती और सैनिक मनोवृत्तियाँ जन-सामान्य के खुलेपन और प्रतिकार की प्रवृत्तियों को सहन करने में अक्षम थीं। इनके अलावा एक अन्य कारण भी न्यायसंगत हो सकता है। वह यह कि जो चीज़ जितनी नज़दीक होती है, उस पर आदमी का ध्यान उतना ही कम जाता है। यही कारण है कि जनता की जुबान 'जकड़ी' पर अन्य विद्‌वानों का ध्यान नहीं गया। लेकिन डॉ॰ देवेंद्र ने उसका ऐसा अनुशीलन किया कि जनता की यह जुबान जहान के सिर चढ़कर बोलने लगी। तभी तो इस पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने अपनी मुहर लगाई।

इस पुस्तक में अपनी बात कहते हुए डॉ॰ देवेंद्र ने 'जकड़ी' लोकगीत को परिभाषित करने का भरपूर प्रयास किया है। इनकी परिभाषा किस हद तक भविष्य में विद्‌वानों को प्रभावित करेगी, यह तो आने वाला समय ही बताएगा। लेकिन इतना तो ज़रूर है कि डॉ॰ देवेंद्र का यह प्रयास किसी संवेदनशील अध्येता को इस दिशा में नए ढंग से सोचने के लिए बाध्य करेगा। 'जकड़ी' को परिभाषित करते हुए डॉ॰ देवेंद्र ने प्राइमरी और द्‌वितीय दोनों स्रोतों का सहारा लिया है। प्राइमरी स्रोत में जहाँ गीत गाने वाली महिलाओं के साक्षात्कार हैं, वहीं द्‌वितीय स्रोत में हरियाणवी में संकलित पुस्तकों का ज़िक्र है। इनकी

यह पद्धति इनकी दोनों शक्तियों का एक साथ प्रत्यक्षीकरण करती है- एक तरफ़ तो लोक से रागात्मक संबंध और दूसरी तरफ़ अकादमिक अनुशीलन। एक लोकसाहित्यकार की तरह डॉ. देवेंद्र अपनी शक्ति लोक से प्राप्त तो करते हैं, लेकिन उसको प्रमाणित शास्त्रीय विधि-विधान से करते हैं। यहाँ उनकी यात्रा लोक से चलकर शास्त्र में सिर्फ़ संपादित ही नहीं होती, बल्कि लोक को शास्त्रीयता भी प्रदान करती है, जिसकी आज सख्त आवश्यकता है। यहाँ इनकी समन्वयक क्षमता अद्‌भुत है; बस इनका विश्लेषण कुछ भयभीत कर रहा है।

पुस्तक की भूमिका में डॉ. देवेंद्र ने जेंडर विश्लेषण का सहारा लिया है, लेकिन भारतीय लोकनारी की सुदृढ़ परंपरा को अनदेखा करके 'जकड़ी' लोकगीत के साथ अन्याय किया है। सच पूछा जाए तो 'जकड़ी' विशुद्ध नारी गीत है। जिस तरह से 'नौटंकी' नौटंकी नाम की लड़की से निकली, 'कजली' कजली नाम की लड़की से निकली, 'पिड़िया' पिड़ी नाम की लड़की से निकली, उसी तरह 'जकड़ी' भी हरियाणा की बेटी जकड़ी से निकली है। प्रेम-प्रपंच में सामाजिक पंचायत ने उसके पति की हत्या की और जकड़ी का सामाजिक बहिष्कार। नतीज़तन, वह घुमक्कड़ी जीवन जीने के लिए बाध्य हुई। वह संपूर्ण उत्तर भारत में घूम-घूमकर गीत गाने लगी और अंत में संज्ञा से विशेषण बन गई। भोजपुरी की एक कहावत में इसका उल्लेख भी मिलता है-

'भोरे में सभ गावें पराती, निरगुन के मध्यान्ह।
उठक बइठ सम जाकड़ी गावें, झूमर, झूमर सिवान॥'

इस कहावत में 'जकड़ी' लड़की का नहीं, बल्कि गीत का संकेत है। और तो और महाकवि विद्‌यापति ने भी अपनी पुस्तक में जकड़ी का उल्लेख किया है। इन सभी साक्ष्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि 'जकड़ी' सिर्फ़ एक गीत ही नहीं, परंपरा है। आज वह सरस्वती नदी की तरह विलुप्त हो गई हैं। डॉ. देवेंद्र अगर इस परंपरा को खोज देते तो वह बड़ा ही अद्‌भुत काम होता। इतना ही इसका भोजपुरी 'झूमर' के साथ तुलनात्मक अध्ययन भी अकादमिक क्षेत्र में एक नया दिशा-निर्देश उत्पन्न करता।

'जकड़ी' गीतों के वर्गीकरण में डॉ. देवेंद्र ने पूरी सफलता पाई है। निःसंदेह, जकड़ी एक लोकगीत है क्योंकि इसमें लोक की सारी मान्यताएँ हैं; लेकिन इसमें लोक का प्रतिकार और ज़माने के साथ सामंजस्य स्थापित करने का आग्रह जैसे तत्व 'वैकल्पिक आधुनिकता' की नींव भी स्थापित करने में सफल प्रतीत हो रहे हैं। डॉ. देवेंद्र का वर्गीकरण भी अपना है और यह उन्हें "हम और हमारा" से कहीं अलग नहीं कर रहा है। अर्थात् गीत तो लोक का है ही, उसका बँटवारा भी लोक का है और समय की करवट का

प्रत्युत्तर देने में सक्षम भी। ये सभी गीत डॉ. देवेंद्र के जन्म–संस्कार और कर्म–संस्कार का खुलासा करते हैं।

'जकड़ी' गीतों का संकलन निरुद्देश्य नहीं है। यह संकलन सिर्फ़ मरती हुई परंपरा को जीवित करने और शोध सामग्रियों को इकट्ठा करने हेतु नहीं, बल्कि अन्य संस्कृतियों के साथ अंतर्निहित संबंध स्थापित करने और हरियाणवी लोकमानस के मर्म पर युगों–युगों से पड़े हुए प्रभावों के आकलनार्थ जनमानस को प्रेरित करने के लिए किया गया है। मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि डॉ. देवेंद्र का यह संकलन अध्ययन और नए शोध के लिए कई मार्ग खोलेगा। इनके इस साहसिक और पवित्र कार्य को नमन, इन्हें शुभाशंसा।

स्थान : गाजीपुर
दिनांक : 10 दिसंबर, 2015

रामनारायण तिवारी
भोजपुरी लोकविद्

अनुक्रमणिका

जकड़ी : एक परिचय

भूल गई रंग चाह भूल गई जकड़ी।
तीन चीज़ याद रैह्गी नूण तेल लकड़ी॥

(एक हरियाणवी कहावत)

जकड़ी नै खा गी मकड़ी
मकड़ी नै खा ग्या ग्यान मेरा री मन गाणे नै।

(एक हरियाणवी लोकगीत)

उपर्युक्त कहावत और लोकगीत में प्रयुक्त शब्द 'जकड़ी' अपने आप में अनूठा है। यह कहावत तो लगभग सारे उत्तर भारत में प्रसिद्ध है। भाषायी संस्कृतियों में बदलाव के साथ-साथ इसके विभिन्न संस्करणों में 'जकड़ी' शब्द के अलग-अलग रूप प्राप्त हुए हैं; जैसे-गुजराती और राजस्थानी में यह शब्द 'जखड़ी', ब्रज में 'जकरी' और अवधी में 'छकड़ी'। अवध क्षेत्र से एक पदबंध प्राप्त हुआ है-'नउवा झखड़ी'। इसका आशय उस गीत से है जिसे बरात आदि का मनोरंजन करने के लिए नाई, भाट आदि पारंपरिक रूप से गाते रहते हैं। इस प्रकार के गीत को अवधी लोक में एक निरर्थक, अंतहीन प्रलाप की तरह लिया जाता है। तभी तो इस क्षेत्र के लोग निरर्थक विवाद की स्थिति को व्यंग्यात्मक लहजे में 'नउवा झखड़ी' कहते हैं।[1] जहाँ एक ओर कहावत में 'जकड़ी' शब्द का अर्थ गीत-संगीत के लिए किया गया प्रतीत होता है, वहीं दूसरी ओर लोकगीत में इस शब्द का अर्थ अस्पष्ट है। अगर यह लोकगीत पूरा मिल जाता तो शायद इसमें प्रयुक्त 'जकड़ी' शब्द के अर्थ का भी कुछ-कुछ अनुमान लग जाता। ऐसा लगता है कि अनेक लोकगीतों की तरह यह लोकगीत भी शायद विलुप्त हो चुका है। इसकी कुछ पंक्तियाँ ही लोक के स्मृति-पटल पर कभी-कभार उभर आती हैं। तथापि, इस पुस्तक की मुख्य विषय-वस्तु होने के नाते यह ज़रूरी है कि 'जकड़ी' शब्द के संभावित अर्थों की व्याख्या उपलब्ध स्रोतों की सहायता से की जाए। इन स्रोतों में जहाँ एक ओर हिंदी के शब्दकोश हैं, विभिन्न विद्वानों की अपनी राय है और 'जकड़ी' शब्द को प्रयोग करने वाले विभिन्न संदर्भ हैं, वहीं दूसरी ओर इस पुस्तक के संदर्भ में शायद सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं- इन लोकगीतों को गाने वाली स्वयं हरियाणवी महिलाएँ।

भार्गव हिंदी शब्दकोश में दर्ज़ एक शब्द है 'जाँगड़ी', जिसका अर्थ है–"वह गीत जो बंदीजन गाते हैं।"[2] हो सकता है हरियाणवी शब्द 'जकड़ी', जो एक विशेष प्रकार का गीत ही है, की व्युत्पत्ति 'जाँगड़ी' शब्द से हुई हो। डॉ. जयनारायण कौशिक ने अपने ग्रंथ हरियाणवी हिंदी शब्दकोश में 'जकड़ी' शब्द का अर्थ "तुकांत या अतुकांत रंजक उक्ति"[3] के रूप में परिभाषित करके बहुत ही सीमित दायरे में जकड़ दिया है। 'जकड़ी' शब्द की यह संकुचित परिभाषा स्वाभाविक जान पड़ती है, जब हम इस तथ्य पर ध्यान देते हैं कि सामान्यतः पुरुषों को हरियाणवी महिलाओं की अंदरूनी दुनिया के बारे में बहुत कम जानकारी रही है। इसके कई कारण हो सकते हैं– हो सकता है, सामाजिक-पारिवारिक मर्यादाओं के कारण पुरुषों का स्त्रियों के सांस्कृतिक जीवन में दखल बहुत कम रहा हो या पुरुषों का स्त्रियों के लोकगीतों के प्रति उपेक्षा का भाव रहा हो। संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर में एक मुहावरा है 'जकड़बंद करना', जिसका अर्थ है– "कसकर बाँधना।"[4] इसी शब्दकोश के अनुसार 'जक' शब्द का अर्थ है– 'हार, पराजय, हानि, घाटा, पराभव, लज्जा' और 'जकना' का अर्थ है– "झक में बोलना।"[5] उपर्युक्त संदर्भों में 'जकड़ी' शब्द सुनकर स्वाभाविक रूप से जो भाव मन में आता है, वह इन लोकगीतों को हरियाणवी स्त्री के विभिन्न बंधनों में जकड़े अभावग्रस्त एवं दयनीय जीवन की गेयात्मक अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार कर लेता है। यह ठीक भी जान पड़ता है क्योंकि अधिकतर 'जकड़ी' लोकगीतों का कथ्य एक युवा हरियाणवी महिला के दैनिक जीवन के कष्टदायी अनुभवों से संबंधित है। एक गीत के रूप में 'जकड़ी' का कथानक भी संक्षिप्त व बँधा हुआ होता है। इसमें प्रस्तुत कथानक से इतर किसी और प्रसंग का इशारा भर भी संभव नहीं हो पाता।

'जकड़ी' शब्द की व्युत्पत्ति और इतिहास संबंधी अन्वेषण ने मुझे सदियों पुरानी एक सूफ़ी परंपरा की जड़ में पहुँचा दिया, जिसे 'ज़िक्रे-जली' कहा जाता है। 'ज़िक्रे-जली' का अर्थ है– परमात्मा के बारे में मन में उठे विचारों को ऊँची आवाज़ में गा-गाकर लोगों को बताना। ऐसा प्रतीत होता है कि सूफ़ियाना मस्ती में सराबोर 'जिक्रे-जली' की लय महिलाओं के लोक-संसार में शीघ्र ही लोकप्रिय हो गई होगी। 'ज़िक्रे' शब्द की लोकयात्रा 'जिकरी', 'जकरी', 'जखड़ी', 'झकड़ी' आदि से होती हुई हरियाणा में 'जकड़ी' तक आ पहुँची होगी। 16वीं और 17वीं शताब्दी के गुरु नानकदेव, छीतम जी, काज़ी मोहम्मद, अक्खो जी, समय सुंदर जी, बहवलदास जी आदि भक्त कवियों ने अपने भक्ति-संदेश जनता में प्रचारित करने के लिए उस समय महिलाओं के मध्य लोकप्रिय 'जकड़ी' विधा का आश्रय लिया। लोककवि जनगोपाल की जकड़ियाँ तो इतनी लोकप्रिय हुईं कि कहा जाने लगा– 'सकल जगत व्यापक भई, जकड़ी जन गोपाल की'।[6] भारत के पश्चिम तटीय कोंकण क्षेत्र में गणेश पूजा के समय 'जाखड़ी' नामक

सामूहिक नृत्य किया जाता है। इन संदर्भ में 'जाखड़ी' शब्द की व्युत्पत्ति एक मराठी क्रिया-शब्द 'जखड़ने' से हुई मानी जाती है। मराठी में 'जखड़ने' का अर्थ है- किसी व्यक्ति या वस्तु को जकड़ लेने की क्रिया। 'जाखड़ी' नृत्य के बारे में प्रसिद्ध है कि यह दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर लेता है और वे इसे एकटक देखते रहते हैं।[7] 'जकड़ी' शब्द का प्रयोग सूरदास के पदों और बिहारी के दोहों में भी यत्र-तत्र देखने में आया है। उपर्युक्त संदर्भ सिद्ध करते हैं कि 'जकड़ी' शब्द का प्रयोग कोंकण से लेकर गुजरात, राजस्थान, ब्रज, हरियाणा और अवध क्षेत्र तक गीत-संगीत की एक विधा के लिए छठी-सातवीं सदी में सूफ़ियों के भारत में प्रवेश से ही प्रचलन में रहा है। 'जकड़ी' का सूफ़ी उद्गम, सूफ़ियों से इसका लोक में प्रचार, लोक से पुनः इसका भक्त कवियों के हाथों धार्मिक रूपांतर और एक बार फिर से हरियाणा में इसकी लोकगीत के रूप में प्रस्थापना स्वयं में किसी रोमांचक यात्रा वृत्तांत से कम रोचक नहीं है। किसी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले आइए, हम इस बात पर विचार करते हैं कि इन जकड़ियों को गाने वाली हरियाणवी महिलाएँ स्वयं इनके बारे में क्या सोचती हैं।

इन लोकगीतों का संग्रह करते समय मैंने महिलाओं से 'जकड़ी' नामक लोकगीत के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए भी कहा। अनेक महिलाओं ने बड़े ही रोचक ढंग से जकड़ी की मौलिक व्याख्याएँ कीं। उदाहरणतया एक महिला ने बताया, "जकड़ी आम गीत होवैं सैं, ना ये नाचण के होंदे, ना ये फागण के होंदे, ना सामण के होंदे। ये किस ए टेम गा ल्यो। फौजी के गीत, सास-बहू के गीत, जेठ-बहू के गीत, भाभी-नणंद के गीत; ये सब जकड़ी कहलावैं सैं।"[8] इसी प्रकार एक अन्य महिला ने कहा, "जकड़ी तो सीधी ए जोड़ी अर बणा ली। किसे मौके पै गा ल्यो, कड़ै ए खड़ी होके गा ल्यो।"[9] एक अन्य महिला के अनुसार, "टाइम पास करण नै जो गीत गाए जा हैं, उननै जकड़ी क्है द्याँ साँ। किसे कै बारै म्हैं भी हो सकै हैं- कोए चूँदड़ी पै गा द्याँ, कोए दामण पै गा द्याँ हाँ। इसका कोए इतणा मतलब कोनी होंता, ब्हाण-भाई के भी होवै हैं, फौजी पै गा दे हैं, जमीदारै पै भी होवैं हैं।"[10] एक और महिला की जुबानी- "कोए पति-पत्नी कै प्यार की जकड़ी, कोए तकरार की जकड़ी, कोए सास-बहू कै झगड़ै की जकड़ी, कोए भाभी-नणंद कै बारै मैं जकड़ी, कोए घर कै बारै मैं जकड़ी; ये हो सैं जकड़ी।"[11] अन्य महिलाओं ने भी जकड़ियों के बारे में लगभग ऐसी ही बातें कहीं।

इन महिलाओं से हुई बातचीत के आधार पर 'जकड़ी' नामक लोकगीत के संदर्भ में यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि ये लोकगीत सर्वसुलभ, सर्वप्रिय एवं सर्वग्राह्य हैं। 'सर्वसुलभ' इसलिए कि इन्हें किसी भी समय गाया जा सकता है। इनकी व्याप्ति का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि हरियाणवी समाज में कोई भी मांगलिक अवसर हो, महिलाएँ दो चार जकड़ी तो ज़रूर ही गाती हैं। शुरुआत भले ही वे उस

मांगलिक अवसर विशेष से संबंधित मंगल गीतों से करती हों, लेकिन ऐसे आठ-दस मंगल गीत गाने के बाद कोई न कोई महिला कह उठती है, 'बहुत हो लिया, अब दो च्यार जकड़ी गा ल्यो'। 'सर्वप्रिय' इसलिए कि ये गीत सरल व सीधे-सपाट हैं। इन्हें कोई भी महिला, जिसकी गीत-संगीत में थोड़ी-सी भी रुचि है, गा लेती है। यहाँ तक कि दैनिक जीवन में जहाँ भी महिलाओं को एकत्र होने का मौका मिलता है- पनघट पर, खेतों में, दालान-दहलीज़ों में; वे तुरंत लोकगीत की तान छेड़ देती हैं, और वह लोकगीत बहुधा 'जकड़ी' ही होता है। हरियाणवी महिलाओं का विश्वास है- "दो की बतिया, तीन की गितिया"।[12] अत: वे समूह में एकत्र होते ही जकड़ी गाना शुरू कर देती हैं। जकड़ियों की 'सर्वग्राह्यता' का तो यह आलम है कि एक महिला ने गीत की पहली पंक्ति बोली नहीं कि समूह में शामिल सभी औरतें साथ-साथ गाना या गुनगुनाना शुरू कर देती हैं। इस उच्च स्तर की सहभागिता अन्य लोकगीतों के संदर्भ में कम ही देखने में आती है।

एक विधा के रूप में 'लोकगीत' की अपनी मौलिक विशेषताएँ होती हैं। क्योंकि 'लोकगीत' सबसे पहले एक गीत होता है, इसलिए इसमें गेयात्मकता होनी ही चाहिए। 'लोकगीत' क्योंकि 'लोक' का गीत है, इसलिए इसमें बनावटीपन नहीं होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, इसकी लय सरल और गिने-चुने सुरों में ही सिमटी होनी चाहिए ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग एक साथ गा सकें। वस्तुत: स्वाभाविकता एवं सामूहिकता के गुण ही किसी लोकगीत की असली पहचान हैं। अगर कहा जाए कि महिलाओं के गीत ही सही अर्थों में हरियाणवी लोकगीत हैं तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसके अपने कारण हैं। जैसे इन गीतों के रचयिता अनाम हैं और हर प्रस्तुति के दौरान इनमें प्रक्षेप होने की संभावना बनी रहती है। पुरुष लोकगीत के रूप में प्रचलित हरियाणवी रागनियों को लोकगीत न मानकर 'जनगीत' माना जा सकता है क्योंकि ये जनसामान्य के लिए तो लिखे गए हैं, लेकिन इनके रचयिता का नाम ज्ञात होता है। इस कारण इनकी सभी प्रस्तुतियाँ अक्षरश: समान होती हैं। अत: इनमें बदलते लोक की भावनाओं को अपने में समाने लायक लोच नहीं बचती।

अगर समग्र रूप में देखा जाए तो हरियाणवी महिलाओं के लोकगीतों को मोटे तौर पर सात विधाओं में बाँटा जा सकता है- 1. जन्म-संबंधी गीत, 2. विवाह-संबंधी गीत, 3. मृत्यु-संबंधी गीत, 4. ऋतु-गीत, 5. जकड़ी, 6. नृत्य-गीत और 7. भजन। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है; जन्म-संबंधी गीत शिशु के, विशेषकर पुत्र के जन्म पर गाए जाते हैं। किसी भी पितृसत्तात्मक समाज की भाँति हरियाणा में भी पुत्र के जन्म को एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस उत्सव का उल्लास जन्म-संबंधी हरियाणवी लोकगीतों में देखते ही बनता है। इसी प्रकार विवाह-संबंधी लोकगीत विवाह के उत्सव में संगीत का रस घोलते हैं। मृत्युगीत किसी की दुखदायी मृत्यु के अवसर पर महिलाओं द्वारा किया

जाने वाला लयबद्ध क्रंदन होता है, जिसमें मृत व्यक्ति को विभिन्न प्रकार से याद किया जाता है। ऋतु-गीत कुछ विशेष मौसमों और मौसमी त्योहारों से संबंधित लोकगीत होते हैं, जिनके गाने का समय निश्चित होता है। हरियाणवी लोक-संस्कृति में सावन, कार्तिक और फाल्गुन महीनों में गाए जाने वाले ऋतु-गीत ज़्यादा प्रचलित रहे हैं। सावन के ऋतु-गीत वर्षा ऋतु और तीज के त्योहार से संबंधित होते हैं। कार्तिक मास को हिंदू शास्त्रों में धर्म-कर्म करने का सबसे उपयुक्त महीना बताया गया है। उसी के अनुरूप हरियाणवी महिलाओं ने भी पुण्य कमाने और इच्छित फल पाने के लिए कार्तिक महीने में सुबह-सुबह गाँव के आस-पास स्थित तालाबों, नहरों आदि में नहाने की परंपरा विकसित की और उस अवसर के अनुकूल लोकगीतों, भजनों आदि की रचना की। फाल्गुन का महीना अपनी वसंती छटा के कारण सबको भाता है। इस महीने में जड़ से जड़ व्यक्ति में भी कुछ न कुछ उल्लास का संचार अवश्य होता है। भला ऐसे समय में हरियाणा की जीवंत महिलाएँ किससे पीछे रह सकती हैं? पूरे वर्ष यत्र-तत्र उमड़ता उनका उल्लास फाल्गुन के महीने में सैलाब बनकर उनके लोकगीतों और घूमर नृत्य के रूप में सबको बहा ले जाता है। हरियाणवी लोकगीतों की एक अन्य महत्वपूर्ण विधा वृद्ध महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले परंपरागत भजन हैं, जिन्हें वे सत्संग मंडली में और किसी वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु के अवसर पर विशेषत: गाती हैं। इन भजनों में जीवन और मृत्यु की सच्चाई, मोक्ष प्राप्ति के मार्ग और वृद्ध होने पर व्यक्ति के पारिवारिक बंधनों के बदलते समीकरणों की लोक व्याख्या प्रस्तुत की जाती है। एक अन्य विधा 'नृत्य गीत' में वे लोकगीत हैं, जिन्हें गाते हुए हरियाणवी महिलाएँ नृत्य करती हैं। इन लोकगीतों की लय और ताल अन्य गीतों की अपेक्षा तीव्र और उछाल भरी होती है। 'जकड़ी' नामक लोकगीतों में हरियाणवी महिलाएँ, विशेषकर युवा महिलाएँ अपने विभिन्न संबंधियों के उनके प्रति व्यवहार के संबंध में अपने हृदय की गाँठ खोलती हैं।

लोकगीत के रूप में 'जकड़ी' नामक विधा के अंतर्गत आने वाले गीत अपने-आप में विशेष हैं। सच में देखा जाए तो जकड़ियों की सरलता, सादगी, स्पष्टता और अनलंकारिता ही इन्हें विशेष बनाती है। 'जकड़ी' लोकगीत सीधे सपाट और बिना किसी दुराव-छिपाव, लाग-लपेट के साधारण भाषा में रचे बसे होते हैं। लोकगीतों के श्रोता भी रचयिता के समान ही एक-सी सामाजिक, शैक्षणिक पृष्ठभूमि से होते हैं। इसलिए इनमें अलंकारों का तो लगभग अभाव ही होता है। इनकी सरलता, स्पष्टता, भदेसपन ही इन्हें धार प्रदान करते हैं। प्रेम का इजहार हो या शिकायतों का ढेर हो, यहाँ पर शब्दों से खिलवाड़ वर्जित है। इसके अतिरिक्त, लोकगीतों की अन्य विधाओं की अपेक्षा जकड़ी यथार्थ के ज़्यादा समीप हैं। इनमें कल्पना लोक की बात न होकर दैनिक जीवन की वास्तविक घटनाओं व पात्रों का चित्रण होता है। इन लोकगीतों में सास-ससुर व पति

क्रमशः कौशल्या, दशरथ और मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अवतार न होकर जीते-जागते इसी लोक के हाड़-मांस के पुतले नज़र आते हैं, जो रोज़मर्रा की दिनचर्या में कदम-कदम पर पेश आने वाले निर्णय लेने के अवसरों पर सामाजिक-सांस्कृतिक मर्यादाओं और मान्यताओं के जटिल जाल में उलझे शक्ति-संतुलन को अपने-अपने पक्ष में झुकाते प्रतीत होते हैं। इन लोकगीतों की अचूक हृदयग्राह्यता का कारण यही नज़र आता है। अन्य लोकगीतों की भाँति जकड़ियाँ भी मौखिक हैं और श्रुति परंपरा से समाज में भ्रमण करती रहती हैं।

लोक साहित्य के मर्मज्ञों ने 'जकड़ी' को प्रकीर्ण गीत कहकर उपेक्षित कर दिया है। उदाहरण के तौर पर साधु राम शारदा की *हरियाणा के लोकगीत* (1970) नामक पुस्तक में जहाँ ऋतु-गीत, संस्कार गीत आदि विस्तार से दिए गए है, वहीं जकड़ियों को 'विविध गीत' नामक छोटे-से अध्याय में निपटा दिया गया है। 'जकड़ी' शब्द का तो कहीं ज़िक्र ही नहीं है। इसी प्रकार शंकरलाल यादव की महत्वपूर्ण पुस्तक *हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य* (1958) में भी जकड़ी गीतों की यही स्थिति है। उन्होंने संक्षेप में इन गीतों को 'कृषि गीत', 'राजनैतिक प्रभाव के गीत' 'अन्य गीत' आदि छोटे-छोटे उप-शीर्षकों में समेट दिया है। ओमप्रकाश कादयान ने जकड़ियों को अपनी पुस्तक *हरियाणा के लोकगीत भाग-2* (2012) के अंतिम अध्यायों में विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत कुछ हद तक संगृहीत किया है। जहाँ तक मैं जान पाया हूँ, कुछ जकड़ी गीतों का संग्रह सुमेरचंद की पुस्तक *म्हारी दादी परदादी के गीत* (2004) में 'हर मौके पर गाए जाने वाले गीत-जकड़ी' शीर्षक के अंतर्गत उपलब्ध है। सुधीर शर्मा की पुस्तक *हरियाणा के लोकनृत्य-गीत* (2011) में तो खैर जकड़ियों के लिए कोई जगह बनती ही नहीं। विजयबाला द्वारा संकलित पुस्तक *अनमोल मोती : हरियाणवी-लोकगीत* (2012) में कुछ सम्यक् रूप में जकड़ियों को समुचित स्थान देने का प्रयास नज़र आता है। निर्मल द्वारा संकलित और संपादित पुस्तक *लोकगीतों का बुगचा* (2014) में पर्याप्त संख्या में जकड़ियों का संग्रह है, लेकिन अव्यवस्थित रूप में। संपादिका की लोकगीतों के बारे में समझ तो गहरी जान पड़ती है, संभवतः समयाभाव के कारण वे इन लोकगीतों को व्यवस्थित ढंग से इस पुस्तक में नहीं रख पाईं।

एक अन्य तथ्य जो हरियाणवी लोकगीतों के अब तक के संग्रहों पर समान रूप से लागू होता है, वह है- पाठक वर्ग की अनदेखी। लोकगीतों, विशेषकर उन बोलियों के, जिनको संविधान की अनुसूची में स्थान नहीं मिल पाया है और जो कहीं भी किसी भी स्तर पर अकादमिक जगत में नहीं रही हैं, उनका संग्रह करते हुए यह तथ्य अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि किन लोगों के लिए यह संग्रह हो रहा है? कहने का अभिप्राय यह है कि केवल लोकगीतों के माध्यम से हरियाणवी बोली को लिपिबद्ध कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। अगर

हमें वास्तव में इन लोकगीतों से लोगों का परिचय करवाना है तो इनका अनुवाद या छायानुवाद किसी ज़्यादा प्रचलित भाषा रूप में अवश्य करना चाहिए। ऐसा करने से हरियाणवी बोली से अपरिचित लोगों की भी इन लोकगीतों को सुनने-समझने में रुचि पैदा होगी। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए मैंने इस पुस्तक में प्रत्येक जकड़ी में प्रयुक्त ठेठ हरियाणवी शब्दों का हिंदी रूपांतर देने के साथ-साथ उस जकड़ी का हिंदी भाषा में छायानुवाद भी दिया है ताकि हिंदीभाषी लोग भी इन लोकगीतों को समझ सकें और अपनी-अपनी बोलियों के लोकगीतों के साथ इनकी तुलना कर सकें। यद्यपि इन गीतों को लिपिबद्ध करना एक तरह से इन गीतों के लोकतत्व का हनन करना है, लेकिन वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए ऐसा करना आवश्यक जान पड़ता है। आज ये लोकगीत नए विकसित हुए सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने में अपनी स्वाभाविक मृत्यु की ओर अग्रसर हैं। ऐसे में जो गीत जिस भी रूप में उपलब्ध हो सकते हैं, उनको लिपिबद्ध, स्वरबद्ध कर लेना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इनको पढ़-सुनकर अपने पूर्वजों की सांस्कृतिक धरोहर का अनुमान लगा सकें और अपनी समृद्ध संस्कृति को अपने विकासानुक्रम में एक महत्वपूर्ण पड़ाव के रूप में देख सकें।

'जकड़ी' लोकगीतों को सही ढंग से समझने के लिए हमें हरियाणवी महिलाओं द्वारा विभिन्न पारिवारिक एवं सामाजिक अवसरों पर दी जाने वाली उनकी संगीतमय प्रस्तुतियों की संरचना को समझना होगा। हरियाणवी महिलाओं की अधिकतर संगीतमय प्रस्तुतियों को मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है। प्रस्तुति के प्रथम भाग में वे मांगलिक अवसर के अनुरूप मंगलगीत गाती हैं। दूसरे भाग में वे जकड़ी गाती हैं। अंत में वे घेरा बनाकर खड़ी हो जाती हैं और गीत गाते हुए ताली बजाकर नृत्य करती हैं। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि मांगलिक अवसर पर परिवार के पुरुष भी किसी न किसी रूप में सम्मिलित रहते हैं। अमूमन मांगलिक गीतों की प्रस्तुति के साथ ही पुरुष लोग इधर-उधर हो जाते हैं और आँगन में केवल महिलाएँ ही रह जाती हैं। इस अपेक्षाकृत ज्यादा उन्मुक्त वातावरण में महिलाएँ जकड़ियाँ गाती हैं। जकड़ी के कथ्य को ध्यान में रखते हुए इनकी प्रस्तुति के लिए ऐसा ही अवसर अनुकूल प्रतीत होता है। संस्कार-गीतों में कल्पना पर कल्पना के पुट चढ़ाती स्त्रियाँ जकड़ी के क्षेत्र में आते ही यथार्थवादी हो जाती हैं। कल्पना-लोक में विचरण होता भी है तो क्षण मात्र। ज़्यादातर जकड़ियों का ताना-बाना पारिवारिक संबंधों के इर्द-गिर्द बुना गया है। लगभग सभी जकड़ियों की विषय-वस्तु हरियाणवी समाज में महिलाओं की स्थिति का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करती हैं। मांगलिक गीत जहाँ एक ओर पितृसत्ता का अतिरंजित महिमामंडन करते जान पड़ते हैं, वहीं दूसरी ओर जकड़ियाँ हरियाणवी समाज में व्याप्त विविध संबंधों के बनते-बिगड़ते समीकरणों की व्याख्या स्त्री के दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती हैं। जकड़ी

लोकगीत में मुख्य पात्र या मुख्य प्रस्तोता प्राय: एक स्त्री ही होती है जो अपने युवा जीवन की विभिन्न अवस्थाओं के अलग-अलग पड़ाव पर खड़ी प्रतीत होती है। सामान्यत: इन लोकगीतों में स्त्री के कुँवारेपन से लेकर उसके मातृत्व पद को पाने तक की विभिन्न परिस्थितियों की झलक देखी जा सकती है। ज़्यादातर जकड़ियों में वह महिला पात्र बहन, बेटी, पत्नी, बहू, ननद, देवरानी, भाभी, प्रेमिका, नवविवाहिता आदि विभिन्न भूमिकाओं में नज़र आती है और भूमिका विशेष के कारण उपजे अपने नज़रिए से कथ्य को प्रस्तुत करती है।

श्रमसाध्य कार्य करते समय या उनसे संबंधित गाए जाने वाले गीतों को कई लोक-मर्मज्ञ 'श्रम-गीत' कहते हैं। उदाहरण के तौर पर रामनारायण तिवारी की भोजपुरी लोकगीतों से संबंधित पुस्तक भोजपुरी श्रम लोकगीतों में जँतसार (2012) को लिया जा सकता है। 'जकड़ी' के संदर्भ में यह कहना समीचीन होगा कि गाने के अवसर की बजाय गीत की विषयवस्तु के आधार पर इनमें से कुछ को श्रमगीत कह सकते हैं। वास्तविक जीवन में हरियाणा में महिलाएँ श्रमसाध्य कार्य करते हुए भजन, ऋतु-गीत आदि भी गाती मिलती हैं। दूसरी ओर मांगलिक अवसरों पर या विश्राम के क्षणों में कृषि कार्य और दिनचर्या संबंधी गीत भी गाती रहती हैं। खेत में खाना पहुँचाने, निराई-गुड़ाई करने, पशुओं के लिए चारा लाने, फ़सल काटने, निकालने और ढोने जैसे कृषि कार्यों के अतिरिक्त पशुओं को चारा डालना, उन्हें भीतर-बाहर बाँधना, गोबर ढोना, दूध दुहना आदि अनेक कार्य महिलाओं को भोर से देर रात तक व्यस्त रखते हैं। इसके अलावा परंपरागत हरियाणवी महिला के जीवन में चक्की पीसना, चरखा कातना, पानी भरना, घर की सफ़ाई करना, कपड़े धोना, खाना बनाना, बच्चों की देखभाल करना आदि महत्वपूर्ण दैनिक कार्य हैं। इन सभी कार्यों से संबंधित या इनकी कठिनाई से भरे गीत प्रचुर संख्या में मिले हैं। लेकिन इन लोकगीतों का संग्रह करते समय मुझे कहीं इस बात का पुख्ता सबूत नहीं मिला कि श्रमगीतों के रूप में जकड़ियाँ केवल श्रमसाध्य कार्य करते हुए ही गाई जाती हैं, जिसके कारण उनकी लय का निर्धारण कार्य विशेष को करने के तरीके से होता हो। 'जकड़ी' नामक हरियाणवी लोकगीत खेत खलिहानों में, पगडंडियों पर, पनघट पर, चूल्हा-चक्की करते वक्त घर के आँगन में, देवी-देवताओं की बलिवेदी पर, ऋतु संबंधी अनुष्ठानों व त्योहारों को मनाते समय, संस्कार संबंधी कार्य करते समय या विश्राम के क्षणों में समूह में बैठी महिलाओं के इर्द-गिर्द जन्मे और प्रसारित हुए हैं। थकान भरी नीरस दिनचर्या को महिलाएँ लोकगीत गाकर कम उबाऊ बनाती हैं।

'जकड़ी' गीतों की सांस्कृतिक और समाजशास्त्रीय उपादेयता इस तथ्य में निहित है कि ये लोकगीत हरियाणवी महिला के जीवन के सबसे महत्वपूर्ण और शायद सबसे ज़्यादा अनिश्चित और उथल-पुथल से युक्त पड़ाव की सटीक अभिव्यक्ति हैं। स्त्री के

जीवन का यह पड़ाव है- उसके रजस्वला होने से शुरू होकर उसके पुत्रवती होने तक का समय। एक स्त्री की उम्र का यही वह पड़ाव है, जिस दौरान उसके जीवन में आने वाले स्त्रीजन्य बदलाव झँझावात के रूप में आते हैं- वह लड़की से युवती बनती है। विवाह के उपरांत वह नितांत पराए घर और अजनबी परिवेश में स्थानांतरित कर दी जाती है। उसकी सबसे कड़ी परीक्षा इस बात में होती है कि वह कितना और किस तरीके से अपने आपको ससुराल में स्थापित कर पाती है। फिर सभी उसके पुत्रवती होने का इंतज़ार करने लगते हैं। एक-एक दिन उसके लिए भारी तनाव लेकर आता है। अगर वह पुत्र को जन्म देती है तो उसे ससुराल में कुलवधू के रूप में स्वीकार कर लिया जाता है। वरना उसका संघर्ष जारी रहता है।

हरियाणा में महिलाओं द्वारा गाई जाने वाली जकड़ियाँ सही मायनों में एक स्त्री के विवाहोपरांत होने वाले विस्थापन और पुन:स्थापन के बीच के अत्यंत महत्वपूर्ण कालखंड की सटीक और मुखर अभिव्यक्ति हैं। एक युवती का दुल्हन के रूप में ससुराल पहुँचना और अपरिचित माहौल एवं अजनबी लोगों के बीच दिन-रात रहकर अपने लिए स्थान बनाना वास्तव में मानवीय जीवन की एक बहुत बड़ी चुनौती है। इस विस्थापन और पुन:स्थापन के दौर में उसे कितनी ही तरह की पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक संरचनाओं की दुरूहता से दो-चार होना पड़ता है; यह केवल एक स्त्री ही जान सकती है। इन्हीं जटिल संरचनाओं के बीच अपनी मनोवैज्ञानिक यात्रा की सामूहिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति हरियाणवी महिलाएँ जकड़ियों के माध्यम से सशक्त ढंग से करती हैं।

हरियाणवी लोकगीतों की भाषा में कहें तो स्त्री के जीवन के इस सबसे महत्वपूर्ण कालखंड की सीमाएँ निम्नलिखित दो लोकगीत निर्धारित करते हैं-

'ओ हो चाह मुकलावै के
मैं दूस्सर ले के जाऊँ री चाह मुकलावै के'

और

'बगड़ बिचाळै पीपळी नंदलाल
ललाजी ओ जाँ का तो अड़बड़ पान
प्यारी लागै कुळबहू नंदलाल'

पहला लोकगीत हरियाणवी युवती के पहली बार ससुराल जाने की उमंग और उत्साह को परिलक्षित करता है, जबकि दूसरा लोकगीत पुत्र-जन्म के समय गाया जाता है, जिसमें इस युवती की एक कुलवधू के रूप में स्थापना दृष्टिगोचर होती है। हरियाणवी स्त्री के जीवन में घटने वाली इन दो महत्वपूर्ण घटनाओं के बीच में शायद और बहुत कुछ घट जाता है, जिसके सामने स्त्री का आगे-पीछे का जीवन महत्वहीन, नगण्य प्रतीत होता है। ससुराल के लिए विदा होते समय युवती को एक आदर्श वधू के अनुरूप व्यवहार करने

की सीख एक जकड़ी में दी गई है। उस जकड़ी के सबसे ज्यादा प्रासंगिक दो अंतरे इस प्रकार हैं–

"सुसरे कै स्याह्मी बोलिए मत ना
सास की कदर घटाइए मत ना
नणदल नै धमकाइए मत ना
बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना
जेठ नै गैर समझिए मत ना
जेठाणी तैं न्यारी पाटिए मत ना
देवर तैं गिरकाइए मत ना
बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना"

(जकड़ी सं. 04)

बहुधा वह युवती ऐसे ही आदर्श अपने मन में लेकर ससुराल आती है। ससुराल में कुछ दिन तो सब कुछ सपने जैसा लगता है। सभी के सौहार्दपूर्ण व्यवहार के बीच पति की नजदीकियाँ और अत्यधिक लाड़-दुलार उस युवती की उमंग और उत्साह को और बढ़ा देते हैं। एक अन्य जकड़ी में ऐसी ही एक स्थिति का वर्णन मिलता है–

"बखत ऊठ के चाक्की झोई ए चाक्की धौरै आवै सै
मेरी सैसड़ की आँख उघड़ गी ए यो के चाळा हो र्‌या सै"

(जकड़ी सं. 173)

ऐसी ही छोटी-छोटी घटनाओं से सास का मन बहू के प्रति ईर्ष्या से भर जाता है। उससे बहू-बेटे की बढ़ती नज़दीकियाँ देखी नहीं जातीं। यहीं से सास-बहू के संबंधों में खटास पैदा हो जाती है, जो किसी-न-किसी रूप में जीवनभर बनी रहती है।

शादी का खुमार उतरने पर नवविवाहित दंपती को देर-सवेर दैनिक जीवन की बदरंग, उबाऊ और कटु सच्चाइयों से दो-चार होना ही पड़ता है। पुरुष को रोजी-रोटी के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता है। एक जकड़ी में इसी प्रसंग को लेकर नवदंपती में हुए संवाद की बानगी देखिए–

"नौकर जाँगे रै गोरी बाप लड़ै सै
हाम बी चलाँगे ओ पिया सास लड़ै सै
दोनुवाँ का जाणा गोरी ठीक नहीं सै
सुत्ती नै ए मन्नै छोड डिगर ग्या"

(जकड़ी सं. 85)

जकड़ियों में जो एक बात दर्शनीय है, वह है- रोटी कमाने के साधन को लेकर पुरुष और स्त्री की सोच में अंतर। उपर्युक्त जकड़ी में जहाँ पिता चाहता है कि उसका बेटा

रोजी-रोटी के लिए परदेस जाए, वहीं माँ नहीं चाहती कि उसका बेटा परदेस जाए। वह उसे किसान के रूप में ही देखना चाहती है ताकि वह उसकी आँखों के सामने रहे-

"सैस बैरी की बेटी री
हे री तेरा लाल नौकरी जाय सैस तूँ क्यूँ ब्याह्वै थी री?
बहू ए मेरै बस का कोन्या ए
हे तेरै तैं डाट्या जा तो डाट नौकरी घराँ भतेरी ए"

(जकड़ी सं. 191)

सच्चाई तो यह है कि चाहे सैनिक के रूप में हो या किसान के रूप में, पुरुष को घर-आँगन छोड़कर बाहर निकलना ही पड़ता है। उसके चले जाने पर उसकी नवविवाहित पत्नी अपनी सास, ननद, जेठानी और छोटे देवर के साथ घर में अकेली रह जाती है। सास, जो पहले ही बहू-बेटे की नजदीकियों से चिढ़ी बैठी है, अब खुलकर मैदान में आ जाती है और बहू को तंग करने के लिए तरह-तरह के ताने देने लगती है। ऐसी ही एक जकड़ी देखिए, जिसमें सास द्वारा बहू को मनमाफ़िक खाना न देने से उठे विवाद का वर्णन है-

"सैस बाजरे की रोटी री
हे री दो देंदी दे दे एक सैस गिह्वाँ की दे दे री
बहू ए गिह्वाँ की खावै ए
हे तेरा बाबल साहूकार के भरके गाड्डी आवै ए"

(जकड़ी सं. 225)

उस नवविवाहिता के लिए उसकी सास ही नहीं, बल्कि अन्य संबंधी, विशेषकर ननद और जेठ भी कष्टदायी बन जाते हैं। ऊपर से अगर उसका पति परदेस में है तो उसका जीवन एकाकी और उद्देश्यहीन होते देर नहीं लगती। वह अपने मायके को याद करती है और वापस वहाँ जाना चाहती है। ऐसे में जब उसका भाई उससे मिलने आता है तो उस स्त्री का मन उल्लास से भर जाता है। वह उसके साथ मायके जाना चाहती है। लेकिन जब वह उसे बताता है कि उनका पिता उसे ससुराल में ही देखना चाहता है तो एक बार फिर उसका मन घोर निराशा से भर जाता है-

"क्है दे क्है दे रे बीरा मेरा मन की रे बात भोळा मन की रे बात
माय मेरी नै कह्या जे
माँ ए कह्या सै रे बाई नै ले घर आय भोळा ले घर आय
बाप कह्या धी मेरी घर भली जे
पाटज पाटज ए धरती द्यो न बिवाड़ भोळी द्यो न बिवाड़
जिनके तो जामी न्यू कह्वैं जे"

(जकड़ी सं. 39)

फिर शीघ्र ही इंतज़ार होने लगता है उस नवविवाहिता के माँ बनने का। उसके पति का उतावलापन तो देखिए कि एक-दो बार ससुराल आने-जाने पर ही वह अपनी पत्नी को ताना मारता है-

"हे रै कोटन के जंफर आळी सब छोरी लाल खिलावैं"

(जकड़ी सं. 117)

संतान की चाह में वह पुरुष इतना कठोर बन जाता है कि वह दूसरा विवाह करने में भी नहीं हिचकता-

"ना तेरै छोरा रै गोरी ना तेरै छोरी
द्यल्ली स्हैर म्ह रै गोरी सुथरी-सी छोरी
सुथरी-सी छोरी रै गोरी ल्याणी जरूरी
उसकै होज्या रै गोरी छोरा र छोरी"

(जकड़ी सं. 178)

पति दूसरा विवाह कर लेता है। सौत आते ही उस अभागी स्त्री को घर-परिवार से निकलवा देती है। ऐसे में अपने भाग्य को कोसने के अतिरिक्त वह करे भी तो क्या करे? उसके हृदय से निकल पड़ता है-

"हे ईस्बर तेरी लीला रे न्यारी
एक लाल कै ऊपर छुट गी रे नगरी"

(जकड़ी सं. 178)

हरियाणवी समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति के पीछे ऐसे ही सामाजिक-सांस्कृतिक कारण रहे हैं जिनकी परिणति स्त्री के निर्वासन, हत्या या मज़बूरन आत्महत्या के रूप में होती रही है। ऐसी ही एक मार्मिक जकड़ी देखिए जिसमें आत्महत्या करने के बाद वह स्त्री पाती है कि उसकी सास और पति दहाड़ मार-मार कर रो रहे हैं-

"सांसरे म्हैं सासड़ रोवै घर नै क्यूँ न आय गई
क्यूँ रोवै मेरी सैस बावळी निरणाबासी काढ़ देई
काढ़ैं देवर जेठ भाण मेरा टस-टस रोवै भरतार हे
क्यूँ रोवै भरतार बावळे ब्याह ल्याइए थाणेदार की"

(जकड़ी सं. 75)

लोकगीतों की एक विधा के रूप में जकड़ियों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। विवाहिता युवती के जीवन के कष्टों का दर्पण होने के साथ-साथ ये गीत उसके जीवन की अन्य संभावनाओं और स्थितियों का लेखा-जोखा भी प्रस्तुत करते हैं। इस संदर्भ में यहाँ जकड़ियों की एक महत्वपूर्ण उपविधा की चर्चा समीचीन होगी। इस उपविधा में वे

जकड़ियाँ हैं, जो स्त्री का एक अलग ही रूप प्रस्तुत करती हैं। इन जकड़ियों में वह एक निरीह, बेबस, दलित, प्रताड़ित और अभागी नारी के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी सशक्त महिला के रूप में सामने आती है जो विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखती है, दुर्गम मार्ग होने के बावजूद अपनी स्वभावजन्य इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास करती है, तमाम सामाजिक-सांस्कृतिक बंधनों के बीच सामूहिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत रुचियों के बीच सामंजस्य स्थापित कर लेती है। या यूँ कहें कि ये जकड़ियाँ उस स्त्री से हमारा परिचय कराती हैं, जिसमें आत्म-निरीक्षण, आत्मालोचन का साहस है, जो अपनी धूर्तताओं, छल-कपटों, झूठों को स्वीकर करने में नहीं झिझकती- वे धूर्तताएँ, वे छल-कपट, वे झूठ; जो पितृसत्तात्मक समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखने के संघर्ष में उसके लिए हथियार का काम करते हैं। उदाहरण के तौर पर, जब यौवन की उद्दाम लहरें उस युवती का मायके में रहना मुहाल कर देती हैं तो वह अपनी माँ के सहयोग से नियत समय से पहले ही ससुराल आने में सफल हो जाती है-

"हे री सिमवा दे लीली बूँद और धन चाँह्दा ना तेरा
हे री माँ मन्नै दे न घाल डरै जी लागदा ना मेरा
हे तेरी साथण बूझैं बात ताई री हमनै पाट्या ना बेरा
हे उसकी सासू सकत बीमार जमाई ले ग्या सै ए मेरा"

(जकड़ी सं. 06)

उत्सुकतावश वह युवती समय से पहले ससुराल आ तो जाती है, लेकिन थोड़े समय बाद ही उसे एहसास हो जाता है कि यहाँ भी सब कुछ हरा-हरा ही नहीं है। यहाँ भी दैनिक जीवन की वही जद्दोजहद है जिससे वह अपने मायके में ऊबी हुई थी। ऐसे में वह कई तरह के झूठ बोलती है, चालाकियाँ करती है, अपने आप को उन कार्यों से बचाने के लिए, जिन्हें वह करना नहीं चाहती या उन परिस्थितियों से स्वयं को बचाने के लिए, जिनमें उसके फँसने की आशंका हो। एक जकड़ी के कुछ अंश, जिनमें सास-बहू खेत में खाना लेकर जाने के मुद्दे पर झगड़ पड़ती हैं और ससुर लाठी उठा लेता है, द्रष्टव्य हैं-

"ए म्हारी सैस बहू की लड़ाई सुसरे नै लाठी ठाई

× × × × × × × ×

हे वो साँझै हाळी आया मैं लाग गळे कै रोई

× × × × × × × ×

ओ बाबल इसी के जिवानी छैगी तनै मेरी निरमलाँ पीटी
हे रै बेटा तेरी निरमलाँ झूठी, मनै अपणी बूढ़ळी पीटी"

(जकड़ी सं. 184)

जब पति परेदस में हो तो स्त्री के उच्छृंखल होने की संभावना बढ़ जाती है। एक परदेसी की ऐसी ही उच्छृंखल पत्नी कैसे चालाकी से अपने आपको पति के कोप से बचाती है, देखिए निम्नलिखित जकड़ी में–

"नैड़ तेरी तारूँगा रै तन्नै ल्ह्याज सरम ना आई
ऐंख भरगी पाणी की ओ तेरै किसनै स्यकसा लाई
रूल गेड्या हाथाँ तैं ए पापी नै काळजै कै लाई
गैल ले चालूँगा रै मेरी घणी दुख पाई मुरगाई"

(जकड़ी सं. 114)

ज्यों–ज्यों स्त्री का वैवाहिक जीवन का अनुभव बढ़ता जाता है, त्यों–त्यों उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता जाता है, जो उसे और भी दुस्साहसी बनने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे ही दुस्साहस का प्रसंग एक जकड़ी में आता है, जिसमें विवाहित स्त्री पराए पुरुष पर रीझ गई है और अपना बसा–बसाया घर–बार छोड़कर उसके साथ जाने को तत्पर है–

"पाणी तो मन्नै प्या दे रै मैं घणे दिनाँ का तिसाया
पाणी तो तन्नै प्या द्यूँगी ओ टोकणी का नीर निवाया
गैल तेरै चालूँगी ओ छोड़ूँगी आपणा ब्याह्या"

(जकड़ी सं. 65)

आगे इसी जकड़ी में वह अपनी चरित्रगत खूबियों का बखान करती हुई बताती है कि कैसे वह उस पुरुष को समाज से अलग–थलग कर देगी–

"और के चाइए सै ओ भाइयाँ तैं पाड़ द्यूँ न्यारा"

(जकड़ी सं. 65)

समग्र रूप से कहा जा सकता है कि जकड़ियों का संसार इन्हें गाने वाली हरियाणवी महिलाओं के 'आंतरिक संसार'[13] की ही भाँति विविधताएँ लिए हुए है। एक हरियाणवी युवती के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था का चित्रण करने के अतिरिक्त जकड़ियाँ समसामयिक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक घटनाओं को भी लोकगीतों के सागर में समेटती रही हैं। यदि किसी को देश की आज़ादी से लेकर गाँधी, नेहरू, जिन्ना, सुभाष, इंदिरा गाँधी, चीन और पाकिस्तान के साथ युद्ध, बंसीलाल, नसबंदी, विद्युतीकरण, नहरीकरण, शराबबंदी आदि समसामयिक घटनाओं पर लोक की यथार्थवादी टिप्पणी देखनी हो तो जकड़ियों से बेहतर स्रोत शायद ही कोई मिले। इनके अलावा सामाजिक कुरीतियों; जैसे अनमेल विवाह, निरक्षरता, नशाखोरी, दहेज़, लिंगभेद आदि पर करारा प्रहार करती जकड़ियाँ भी प्रचुर संख्या में उपलब्ध हैं। ऐसी जकड़ियाँ मुख्यतया आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित नज़र आती हैं। इसके अतिरिक्त पालतू पशु, पक्षी, प्रेम–संबंध, कृषि–कार्य, सैनिक, मूर्ख, पेटू लोग आदि विषय भी महिलाओं के रचना–संसार

से अछूते नहीं रहे हैं। ग्रामीण जीवन और काम धंधों के बारे में जकड़ी गीत प्रचुर संख्या में मिलते हैं। ये गीत यथार्थवादी हैं। इनमें ग्राम्य जीवन का महिमामंडन नज़र नहीं आता, बल्कि ये गीत विभिन्न व्यवसायों विशेषकर कृषि से जुड़े विभिन्न खतरों, थकान, ऊब और गरीबी का बखान करते हैं, साथ ही किसान की पत्नी को कितने स्तरों पर किन-किन परेशानियों से जूझना पड़ता है, इसका विस्तृत वर्णन इन गीतों में दृष्टिगोचर होता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गीत चाहे दुख के हों या हास्य-व्यंग्य के, जकड़ियों में कथ्य को मुख्यतः यथार्थवादी दृष्टिकोण से ही प्रस्तुत किया गया है। वासना, परपुरुष या परस्त्री संसर्ग, वैवाहिक मर्यादाओं का उल्लंघन आदि विषयों को बड़े ही हास्यपूर्ण तरीके से निस्तारित किया गया है। कई गीतों में पति को पर-पुरुष से गर्भवती पत्नी को स्वीकार करते दिखाया गया है। ऐसे जकड़ी गीत पुरुष-प्रधान संस्कृति की सोच का ध्वंस करते प्रतीत होते हैं। ये गीत अंजना-पवन, राम-सीता आदि मिथकों के समानांतर लोक स्त्री की व्यावहारिक सोच का परिचय देते हैं। पुरुषों के गीतों, रागनियों आदि में तो विवाहित स्त्री को भोग्या ही माना जाता है। लोकाचार में भी देवर जेठ के साथ उसके संबंधों को नाजायज नहीं माना जाता। लेकिन जकड़ियों में हरियाणवी स्त्री ऐसी पुरुषवादी सोच का ज़ोरदार ढंग से प्रतिकार करती है। उदाहरण के तौर पर एक जकड़ी में जब स्त्री अपने पति के सामने अपने देवर के अभद्र व्यवहार की शिकायत करती है तो पति उसे समझाते हुए कहता है-

"गोरी रै के हो ग्या मेरी माँ का जाया छोटा बीर"

(जकड़ी सं. 219)

लेकिन स्त्री को अपनी अस्मिता के साथ समझौता स्वीकार नहीं है। वह अपने पति को धिक्कारती है-

"डूब क्यूँ ना मर ग्या जींदे नै सौंप देई नैर"

(जकड़ी सं. 219)

इस संदर्भ में स्त्री की सोच ज्यादा तर्कसंगत और आधुनिक कही जा सकती है। उसके अनुसार अविवाहित स्त्री को प्रेम का अधिकार है, उसे अपना पति चुनने का अधिकार है, लेकिन एक बार शादी हो जाने पर उससे पति के प्रति पूर्ण निष्ठा की अपेक्षा की जाती है। दूसरी ओर पुरुष-प्रधान समाज स्त्री की लैंगिकता पर अपना अधिकार समझता है। उसकी मर्ज़ी से ही स्त्री को किसी पुरुष को अपनी अस्मिता सौंपने का अधिकार है। बाद में वह पुरुष अगर उस स्त्री के शरीर को अपने बंधु-बांधवों के साथ बाँट भी लेता है तो आमतौर पर यह चर्चा का मुद्दा नहीं बनता। इस संबंध में मुझे दो अवसरों पर हुए वार्तालाप के अंश याद आ रहे हैं। एक अवसर पर एक पुरुष ने अपने

पड़ोस में घटित घटना के बारे में बताया जिसमें एक व्यक्ति ने अपने भाई की पत्नी से जबरदस्ती संबंध बनाया। जब पत्नी ने शिकायत की तो उसके पति ने कहा–'के होया, मेरी माँ का जाया भाई ए तो सै। उसमैं अर मेरै म्हैं के फरक सै बावळी?' दूसरे अवसर पर एक वृद्ध महिला ने अपने विवाह के शुरुआती दिनों को याद करते हुए कहा–'छह महीने तो मन्नै न्यू ए कोनी बेरा पाट्या अक मेरा खसम कौण-सा सै।'

शिल्प की दृष्टि से ज़्यादातर जकड़ियों की संरचना अन्य गीतों की तरह पुनरावर्तन वाली नहीं है। इनमें अंतरा गाने के बाद बार-बार स्थायी नहीं गाया जाता, बल्कि ये गीत घटनाक्रम के साथ-साथ आगे की ओर बढ़ते जाते हैं। इनकी विषयवस्तु संयोग, वियोग, कार्य की अधिकता, पारिवारिक कलह, लिंगभेद, हिंसा, उलाहना, खुशी, दुख, क्रोध आदि को निरूपित करने वाले छोटे-छोटे कथानक हैं। कथानक की वाहक होने के कारण जकड़ियों की संरचना में एक द्वंद्व नज़र आता है। इसी कारण ये लोकगीत अन्य लोकगीतों, जो एक सूचिका शैली में गाए जाते हैं, से बहुत अलग हैं। दूसरे लोकगीतों में जहाँ विभिन्न संबंधियों के नामों, नायक या नायिका के वस्त्रों और आभूषणों आदि की सूची गिनवाई जाती है और लोकगीत का स्थायी पूरे गीत की संरचना को जोड़ता है, जकड़ियों में ऐसा देखने में नहीं आता। जकड़ियों में एक घटनाक्रम होता है, जो गीत की प्रत्येक पंक्ति के साथ-साथ आगे बढ़ता जाता है। इसी कारण जकड़ी में सामान्यतया स्थायी का प्रयोग नहीं होता। एक अंतरा दूसरे अंतरे से कथानक के विस्तार के आधार पर जुड़ा होता है। दूसरे शब्दों में, जकड़ी का स्वरूप वृत्तात्मक न होकर एकरेखीय होता है। और हो भी क्यों न? जब इनको गाने वाली हरियाणवी महिलाएँ मानती हैं– 'साची कैह्णा, सुखी रैह्णा।'

एक अन्य बात जो जकड़ियों के शिल्प के संदर्भ में समीचीन है– वह है, इनके कथानक का उत्तम पुरुष में होना। इसी से जुड़ी दूसरी खास बात यह है कि कथानक का उत्तम पुरुष प्रस्तोता अनिवार्य रूप से एक युवा स्त्री है। युवती जकड़ी में अपने साथ घटित किसी घटना का उत्तम पुरुष शैली में समूह की अन्य महिलाओं के सामने आत्मकथात्मक वर्णन करती है। क्योंकि जकड़ियों की विषय-वस्तु किसी भी स्त्री के जीवन से जुड़ी हुई हो सकती है। इसलिए अन्य महिलाएँ भी तत्काल उस स्त्री के अनुभवों को साझा करती हैं और इस प्रकार जकड़ी एक व्यक्तिगत अनुभव की सामूहिक अभिव्यक्ति बन जाती है।

'जकड़ी' लोकगीत एक युवा हरियाणवी महिला के यथार्थ की अभिव्यक्ति हैं। इसलिए इसमें कल्पनालोक में विचरण उतना ही हुआ है जितना कि किसी अभिव्यक्ति को कलात्मक बनाने के लिए आवश्यक होता है। रूपक और बिंब भी केवल इसी रूप में प्रयोग हुए हैं जो बोरियत से भरे उनके वास्तविक जीवन की एकरसता को गीत के

कथ्य के लिहाज़ से किंचित् सौंदर्य प्रदान करने हेतु नितांत आवश्यक हों। इसी कारण एकाध जकड़ी में सलवार-कमीज़ की बजाय 'साड़ी' का ज़िक्र आ गया है, या शयनकक्ष को 'रंगमहल' या पति को 'राजा' कह दिया गया है।

इस पुस्तक में 'जकड़ी' का वर्गीकरण महिला पात्र की भूमिका को ध्यान में रखकर किया गया है। इस आधार पर जकड़ियों को मुख्य रूप से छह श्रेणियों में रखा गया है। पहली श्रेणी में वे जकड़ियाँ रखी गई हैं, जिनमें स्त्री पात्र एक बेटी के रूप में सामने आती है। इन जकड़ियों में कहीं तो वह अपने माँ-बाप की इज़्ज़त की रक्षा करने के लिए अपनी जान तक देने में नहीं हिचकिचाती, और कहीं वह अपने पिता से शिकायत करती है कि युवा होने के बावजूद अब तक उसकी शादी क्यों नहीं हुई? एक-दो जकड़ियों में तो वह विद्रोही बनकर सारी स्थापित मान्यताओं और संस्कारों की दीवारें तोड़ने के लिए अपनी सखियों को ललकार बैठती है। दूसरी श्रेणी में वे जकड़ियाँ हैं, जिनमें स्त्री पात्र एक बहन के रूप में उपस्थित होती है। इस भूमिका से जुड़े गीतों में कहीं तो वह अपने भाई की सुख-समृद्धि और लंबी आयु के लिए चिंताकुल प्रतीत होती है तो कहीं वह उसी भाई को अपने प्रति उचित सम्मान न दिखाने के लिए कोसती है। एक-दो जकड़ियों में तो वह धन के लालच में भाई की हत्या तक कर बैठती है। तीसरी श्रेणी में वे जकड़ियाँ हैं, जिनमें महिला पात्र एक प्रेमिका के रूप दिखाई देती है। इन गीतों में विवाह पूर्व एवं विवाहेतर प्रेम-संबंध और उनसे उपजी विषमताओं, विसंगतियों आदि का वर्णन मिलता है। हरियाणवी समाज की मान्यताओं के विपरीत महिला पात्र इन जकड़ियों में जाति, वर्ग या वर्ण को अपने प्रेम का आधार नहीं बनाती। न ही वह अपने प्रेम को समाज के सामने प्रकट करने में हिचकिचाती है। यहाँ तक कि वह अपने विजातीय प्रेमी के लिए जान देने और जान लेने तक पर उतारू हो जाती है। हरियाणवी समाज में जाति के बंधन विशेषकर शादी-विवाह के विषय में तो बहुत ही जकड़न वाले हैं। लेकिन जकड़ियों में महिलाओं के लिए जाति कोई मुद्दा नहीं है। इन लोकगीतों में स्त्री का किसी पुरुष की ओर आकर्षण सहज नज़र आता है। लोकगीतों में प्रेमी पुरुष सामान्यतया तथाकथित निम्न जातियों से ही होते हैं। स्त्री का उनके प्रति आकर्षण कोई जातीय बंधन स्वीकार नहीं करता। दूसरी ओर, इन गीतों में कोई पुरुष, चाहे वह किसी भी जाति या वर्ग का हो, स्त्री की इच्छा के विरुद्ध उसके प्रेम का पात्र नहीं बन सकता। मुगल, तुर्क, राव, डूम, थानेदार आदि से संबंधित लोकगीतों का यहाँ जिक्र प्रसंगानुकूल है। स्त्री का सपेरे, जोगी, मनियार, नट, लीलगर, राँघड़ आदि के प्रति प्रेम भी स्वतःस्फूर्त और सहज है; जो जाति, वर्ग या धर्म के बंधनों से परे है। इन गीतों में स्त्री की सक्रिय भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। लोकमत के विपरीत वह निष्क्रिय या प्रतिक्रियावादी नहीं रहती, बल्कि अपने मनोभावों के अनुरूप स्वयं पहला कदम बढ़ाती है और सफलता के लिए

सचेष्ट नज़र आती है। पहले या बाद में किसी भी प्रकार की ग्लानि या हीनता के भाव न आना उसके स्वतंत्र और व्यक्तिवादी दृष्टिकोण का परिचायक है। समाज की थू-थू का भान उसे अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं विशेषकर प्रेम-संबंधी इच्छाओं को पूरा करने से नहीं रोक सकता।

चौथी श्रेणी में उन जकड़ियों को रखा गया है, जिनमें स्त्री पात्र एक पत्नी के रूप में दिखाई देती है। इस श्रेणी से संबंधित गीत अधिक संख्या में मिले हैं। पत्नी के रूप में भी स्त्री के अलग-अलग अनुभवों की मुखरता इन लोकगीतों में प्रकट है। किसान की पत्नी के रूप में उसके अनुभव एक परदेसी विशेषकर एक सैनिक की पत्नी के रूप में हुए उसके अनुभवों से बिलकुल अलग हैं। हरियाणा एक कृषि-प्रधान प्रदेश है। पारंपरिक रूप से हरियाणा की बहू-बेटियाँ भी कृषि-कार्यों में पुरुषों के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर काम करती रही हैं। पुरुष को जहाँ साँझ होते-होते अपने कार्य से मुक्ति मिल जाती है, वहीं दूसरी ओर महिलाएँ तो देर रात तक घर के विभिन्न कार्यों में जुटी ही रहती हैं। सुबह-सवेरे भी उन्हें ही सबसे पहले उठकर दैनिक कार्यों को निपटाना पड़ता है। इस श्रमसाध्य जीवन की यथार्थवादी झाँकी जकड़ियों की इस उपश्रेणी में दृष्टिगोचर होती है। स्वाभाविक है कि किसान की पत्नी से संबंधित जकड़ियों में हमें इस कठोर दिनचर्या की कलुषित छाया पारिवारिक संबंधों पर भी पड़ती नज़र आती है। अपनी गरीबी और लाचारी से परेशान किसान को भी अपनी भड़ास निकालने का माध्यम पत्नी के अलावा और कोई नज़र नहीं आता। इसीलिए वह पत्नी की छोटी-सी चूक पर ही उसे डाँटने-डपटने और कई बार तो पीटने तक पर उतारू हो जाता है। पत्नी के कोमल मनोभावों के लिए उसके जीवन में शायद ही कोई जगह बचती हो। अपना मन मसोसकर दिनचर्या की चक्की में पिसती किसान की पत्नी जकड़ियों के माध्यम से जब-तब अपनी व्यथा को उजागर करती रहती है। कुछ जकड़ियों में किसान की पत्नी अपने पति से कुछ फ़सल विशेष, जैसे- ईख, मक्का आदि बोने से मना करती है क्योंकि ईख जैसी फ़सल साल भर चलती है और किसान की पत्नी को तनिक भी सुस्ताने का अवसर नहीं मिलता। यहाँ तक कि वह मायके जाने को भी तरसती रहती है।

हरियाणा में सैनिक परंपरा का इतिहास सदियों पुराना है। हरियाणवी समाज को अपने पुत्र-पुत्रियों की शौर्यगाथाओं पर गर्व रहा है। इसलिए इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं अगर यहाँ के लोकगीतों में सैनिकों, फौजियों का ज़िक्र बार बार आता है। जकड़ियों में तो सैनिक बार-बार मुख्य पात्र के रूप में आते हैं। कुछ गीतों का मुख्य कथानक ही सैनिकों से संबंधित मिलता है। इस प्रकार फौजी या सैनिक से संबंधित गीत 'जकड़ी' लोकगीत की एक महत्वपूर्ण उपविधा के रूप में सामने आते हैं। ध्यान देने की बात यह है कि इस प्रकार के अधिकांश गीत दुख से भरे हैं, जिनमें सैनिक जीवन के खतरों के

साथ-साथ उसकी पत्नी द्वारा सहे जाने वाले कष्टों का मार्मिक वर्णन मिलता है। मात्र कुछ ही गीत मुझे ऐसे मिले, जिनमें सैनिक वृत्ति का गौरवगान किया गया हो। इस दृष्टि से ये गीत स्त्री-हृदय की गहन संवेदनशीलता और उसकी व्यावहारिक दृष्टि के परिचायक हैं। स्त्री जकड़ियों के माध्यम से राष्ट्रीयता, देशभक्ति, त्याग और बलिदान के लोक-लुभावने नारों और मुहावरों से परे जाकर जीवन की वास्तविकताओं से परिचय कराती है। आश्चर्यजनक रूप से सैनिकों की चमकदार वर्दी या रोबीली छवि हरियाणवी स्त्री को रत्तीभर भी आकर्षित नहीं करती। सैनिक की एक चीज़ जो लोकगीतों में बार-बार आती है, वह है 'रूल'-एक गोल डंडा-जो स्त्री को सज़ा देने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इन जकड़ियों में पुरुष का वेश बदलकर आना और पत्नी की निष्ठा और पवित्रता की परीक्षा लेना भी एक प्रसंग के रूप में उभरकर आता है। सैनिक की पत्नी का लंबे समय से बिछुड़े पति को न पहचानना, परिणामस्वरूप उसका निरादर करना सैनिक को खुशी से भर देता है। कई गीतों में पत्नी निशानी देखकर अपने परदेसी पति को पहचानती है। कुछ जकड़ियों में लंबे समय तक पति का न आना उसे खीज से भर देता है और अंत में वह पति से विरक्त तक हो जाती है।

पाँचवीं श्रेणी में उन जकड़ियों को रखा गया है, जिनमें स्त्री पात्र नवविवाहित कुलवधू के रूप में सामने आती है। इस श्रेणी के गीत विविधताओं से भरे हुए हैं। जहाँ कुछ जकड़ियों में नवविवाहित युगल के बीच पनप रहे प्रेम की झलक नज़र आती है, वहीं अन्य जकड़ियों में नवविवाहिता द्वारा ससुराल में विभिन्न संबंधियों के साथ सामंजस्य बैठाने में आने वाली दिक्कतों का वर्णन है। ससुराल में उसकी सास, ननद, जेठानी आदि सामान्यतया उसे संशय की दृष्टि से देखती हैं। वे उसके काम में मीनमेख निकालने और उसे तरह तरह के ताने देने का अवसर ढूँढ़ती रहती हैं। ऐसी परिस्थितियों में नवविवाहिता का जोश और उल्लास जल्दी ही ठंडा पड़ जाता है और उसके सपने टूट जाते हैं। वह अपने आप को संबंधों के अंतस्तल पर चलने वाले सत्ता संघर्ष का शिकार बनता पाती है। स्वाभाविक है कि अनेक जकड़ियों में ऐसी परिस्थितियों के कारण उसके मन में उपजे असंतोष एवं निराशा के भावों की अभिव्यक्ति हुई है। कई गीतों में तो वह दुखी होकर आत्महत्या तक कर बैठती है। कुछेक लोकगीतों में वह एक संघर्षशील महिला के रूप में सामने आती है, जो पारिवारिक संबंधों के सत्ता-संघर्ष में एक शिकार की भूमिका से आगे बढ़कर एक सक्रिय भागीदार बनकर अपनी विजय के लिए प्रयासरत रहती है। उसकी विजय जैसे-तैसे अपने पति को अपने पक्ष में खड़ा कर लेने में है। इन चुनिंदा लोकगीतों में वह दिन-प्रतिदिन की पारिवारिक घटनाओं को अपनी सुविधा के अनुसार तोड़-मरोड़कर पति के सामने प्रस्तुत करती है। कई बार उतावलेपन में वह अलग घर बसा लेने के लिए भी अपने पति को उकसाती है। इन जकड़ियों में महिला-पात्र का

ससुर सामान्यतया एक निष्पक्ष पात्र के रूप में सामने आता है। नवविवाहिता का अपने जेठ से आमतौर पर छत्तीस का आँकड़ा ही रहता है क्योंकि वह उस पर बुरी नज़र रखता है। कुँवारे देवर के प्रति नवविवाहिता का स्नेह और देवर का भी विषम परिस्थितियों में खुले तौर पर अपनी भाभी के पक्ष में खड़े होने जैसे रोचक प्रसंग जकड़ियों में द्रष्टव्य हैं।

अंतिम श्रेणी में वे जकड़ियाँ रखी गई हैं, जिनका कथ्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से स्त्री से संबद्ध नहीं है। ये जकड़ियाँ समसामयिक या ऐतिहासिक कथानकों से प्रेरित हैं।

संग्रह एवं संकलन की विधि

जकड़ी लोकगीतों का संग्रह करने के लिए मैंने पिछले कई वर्षों के दौरान भिवानी, जींद, हिसार, रोहतक, करनाल, फतेहाबाद आदि जिलों के कई गाँवों का भ्रमण किया और विभिन्न महिलाओं द्वारा मेरे अनुरोध पर गाए गए गीतों को दृश्य एवं श्रव्य यंत्रों के माध्यम से रिकॉर्ड किया। तकनीकी के अभूतपूर्व विकास ने लोकगीतों के संग्रह का कार्य काफी हद तक सरल बना दिया है। आधुनिक दृश्य-श्रव्य यंत्रों के माध्यम से आज लोकगीतों के केवल बोल ही नहीं बल्कि धुन और लय को भी संरक्षित करना संभव हो गया है। इस पुस्तक में कुल मिलाकर लगभग पचहत्तर महिलाओं द्वारा चौदह विभिन्न स्थानों पर गाई गई जकड़ियों को संकलित किया गया है। इन महिलाओं की सांस्कृतिक जड़ें हरियाणा के आठ जिलों (हिसार, जींद, रोहतक, भिवानी, झज्जर, पानीपत, सोनीपत, फतेहाबाद, कैथल) के लगभग तिरसठ गाँवों से जुड़ी हुई हैं। इस संग्रह में प्रस्तुत गीत हरियाणवी महिलाओं के असंख्य लोकगीतों के नमूने मात्र हैं। ये नमूने मेरे द्वारा संगृहीत सात सौ से भी ज़्यादा जकड़ियों में से चुने गए हैं। इन सभी जकड़ियों का ऑडियो संग्रह लेखक के पास उपलब्ध है। इस पुस्तक में संकलित प्रत्येक जकड़ी की रिकॉर्डिंग का दिन, स्थान, प्रस्तोता का नाम, उसकी ससुराल व मायका, उसकी आयु आदि का विवरण पुस्तक के अंत में 'परिशिष्ट' के अंतर्गत दिया गया है। प्रत्येक गीत की मूल प्रस्तुति के साथ ही उस गीत विशेष की विषय वस्तु के बारे में संक्षेप में खड़ी बोली हिंदी में टिप्पणी भी दी गई है। जहाँ आवश्यकता जान पड़ी है, वहाँ इन लोकगीतों में प्रयुक्त ठेठ हरियाणवी शब्दों का हिंदी रूपांतर भी उसी पृष्ठ पर दिया गया है। प्रत्येक जकड़ी में आए किसी महत्वपूर्ण पदबंध को उस जकड़ी विशेष के शीर्षक के रूप में प्रयोग किया गया है। इन लोकगीतों को लिपिबद्ध करते समय उनकी गेयता का विशेष ध्यान रखा गया है। इसी कारण 'हे', 'रे', 'री', 'ओ', 'जे', 'रै' आदि शब्दों को निरर्थक न मानकर उनको समुचित स्थान पर रखा गया है। लेखक का मानना है कि लोकगीतों के शब्दों के साथ-साथ लय को भी संप्रेषित करने के लिए ऐसे 'निरर्थक' शब्दों और ध्वनियों को लिपिबद्ध करना आवश्यक है।

लोकगीतों के संग्रह के दौरान मुझे कई जकड़ियों के अलग-अलग रूप मिले। संकलन की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ऐसे गीतों को मिलाकर एक ज़्यादा विस्तृत गीत के रूप में इस पुस्तक में रखा गया है। इसके अतिरिक्त जहाँ आवश्यकता महसूस हुई, वहाँ शब्द विशेष की वर्तनी को जान-बूझकर मानक के अनुरूप न लिखकर उसे गाए जाने के ढंग के अनुसार लिखा गया है ताकि लोकसंगीत में रुचि रखने वाले पाठक वर्तनी की सहायता से भी जकड़ी की धुन और लय का अनुमान लगा सकें। मेरा मानना है कि लोकगीतों का केवल पुस्तक के रूप में संग्रह ही पर्याप्त नहीं है। इनका सजीव प्रस्तुतीकरण भी होना चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर रजत नैय्यर की सहायता से मैंने जकड़ियों पर आधारित एक वृत्तचित्र तैयार किया, जिसे "Jakari : Life-Songs of Haryanavi Women" शीर्षक के तहत www.youtube.com पर देखा जा सकता है।

मुझे कुछ ऐसे लोकगीत भी मिले जो जकड़ियों जैसे ही हैं। लेकिन उन लोकगीतों को मैंने इस पुस्तक में संकलित नहीं किया। कारण, ये जकड़ियों जैसे लोकगीत केवल विशेष अवसरों पर ही गाए जाते हैं, न कि जकड़ियों की तरह किसी भी मौके पर। उदाहरण के लिए, बेटी की विदाई के समय उसकी सहेलियों द्वारा गाए जाने वाले कुछ लोकगीत या रतजगे के दौरान आधी रात के बाद गाए जाने वाले लोकगीत। इन लोकगीतों की अवसर-विशेषानुकूलता को ध्यान में रखते हुए ही इन्हें जकड़ियों की परिधि से बाहर रखा गया है; वह परिधि, जो इस पुस्तक में खींची गई है- सर्वप्रिय, सर्वग्राह्य, सर्वसुलभ।

संदर्भ-सूची

1. अवध क्षेत्र के बारे में यह जानकारी वाराणसी के समीप स्थित माधो सिंह गाँव के श्री उदयशंकर दूबे ने 8 दिसंबर, 2015 को टेलीफ़ोन के माध्यम से दी।
2. आर.सी. पाठक, सं. *भार्गव आदर्श हिंदी शब्दकोश*, वाराणसी : भार्गव बुक डिपो, 2004. पृ. 256.
3. जयनारायण कौशिक, *हरियाणवी-हिंदी कोश*. चंडीगढ़ : हरियाणा साहित्य अकादमी, 1985. पृ. 283.
4. रामचंद्र वर्मा, सं. *संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर*. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, सं. 2054 वि. पृ. 342.
5. वही।
6. 'जकड़ी' शब्द की व्युत्पत्ति के संबंध में यह महत्वपूर्ण जानकारी मुझे श्री सुख संप्रदाय के संत स्वामी नवल माधुरी शरण जी से 11, 13 और 14 दिसंबर, 2015 को टेलीफ़ोन के माध्यम से वृंदावन से प्राप्त हुई। उनकी जानकारी के स्रोत मुख्यतया संत साहित्य के बारे में उनका अपना विस्तृत अध्ययन और डॉ. रमण लाल पाठक द्वारा 1973 में स्वाध्याय नामक गुजराती पत्रिका में प्रकाशित एक लेख हैं।

7. 'जाखड़ी' नृत्य के बारे में यह जानकारी मुझे काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के मराठी विभाग में कार्यरत डॉ. प्रमोद पडवल से 18 दिसंबर, 2015 को प्राप्त हुई।
8. नन्हीं (आयु : 38 वर्ष; मायका : जलालपुर, जींद; ससुराल : मसाणिया खेड़ी, जींद; स्थान : जलालपुर, जींद; दिनांक : 30 मई, 2013)।
9. प्रोमिला (आयु : 45 वर्ष; मायका : मोखरा, रोहतक; ससुराल : बामला, भिवानी; स्थान : बामला; दिनांक : 24 मई, 2013)।
10. सावित्री (आयु : 50 वर्ष; मायका : न्योळथा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद; स्थान : शाहपुर; दिनांक : 8 नवंबर, 2015)।
11. अंगूरी (आयु : 70 वर्ष; मायका : घिरावड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद; स्थान : शाहपुर, जींद; दिनांक : 08 नवंबर, 2014)।
12. राजपती (आयु : 62 वर्ष; मायका : घिलोड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद; स्थान : शाहपुर, जींद; दिनांक : 08 नवंबर, 2014)।
13. सुधीर कक्कड़, द् इनर् वर्ल्ड : साइकॉएनलिटिकल स्टडी अव चाइल्डहुड एंड सोसायटी इन इंडिया, नई दिल्ली : ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012.

★★★★

बेटी

माँ मन्नै बी कर दे त्यार ओ मेरी ज्यान[1]

सारी छोरी चली सांसरै माँ मन्नै बी कर दे त्यार ओ मेरी ज्यान
जितणे काम बताऊँ री माता मत ना मेरे इनकार करिए
घोटा, पेमक फूल सुतारे मेरी ओढ़णी म्ह गिरवाइए
पीको और मुकेस माता मेरे बंबर[1] म्ह गिरवाइए
काळे सैण्डल ऊँची ऐडी री पँजे ऊपर मोर छपाइए
सुण सुण के नै पागल हो ज्या री माँ मेरे स्यर का सिणगार[2] हो मेरी ज्यान
बँटा और टोकणी री माता बाल्टी जरूर मँगाइए
चरखा पीढ़ा मेज कुरसी री पिलंगाँ म्ह तोता गिरवाइए
सुण सुण के नै पागल हो ज्या री माँ मेरे स्यर का सिणगार हो मेरी ज्यान
म्हारे घेर म्ह आया बटेऊ[3] री डाटण का कुछ ख्याल करिए
काल साँझ का निरणाबासी री खाणा-पीणा त्यार करिए
घणे[4] दिनाँ म्ह छुट्टी आया री घालण[5] तैं ना इनकार करिए
सुण सुण के नै पागल होज्या री माँ मेरे स्यर का सिणगार हो मेरी ज्यान
नाई की नै बुलवा री माता बढ़िया-सा मेरा सीस गुँदाइए
मनियारी नै बुलवा री माता बढ़िया-सी चूड़ी प्हरवाइए
नाई की नै भेज माता सारी सखियाँ नै त्यार कराइए
झाकी र जंगळे पकड़ण लागी ए काढ़ देइ मैं घर तैं बाहर ओ मेरी ज्यान
तों तो ए बेबे[6] चली सांसरै तेरी पैड़ाँ[7] नै टोह्वाँगे
तेरे कैसी सकी मिलै ना ए भीतर बड़-बड़ रोवाँगे
तेरे कैसी सकी मिलै ना भरकैं मारो नैण गुमार हो मेरी ज्यान
बढ़िया-सा री माँ सूँट सिमा दे सूँट सिमा दे टेरीकोट
मेरे सूँट म्ह तारे टूटैं री जणो नाचै माँ बण म्ह मोर
बढ़िया-सा री माँ सूँट सिमा के लाड कोथळी म्ह भेज दिए ओ मेरी ज्यान

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा उसे ससुराल भेजने के लिए अपनी माँ से किए गए आग्रह का विस्तृत वर्णन है। जब वह युवती देखती है कि उसकी सभी सहेलियाँ

---

1. दुपट्टा 2. शृंगार 3. मेहमान 4. बहुत 5. विदा करना 6. बहन 7. कदमों के निशान

एक-एक करके ससुराल जा रही हैं तो वह भी ससुराल जाने के लिए मचल उठती है। वह अपने दहेज़ की एक-एक चीज़ सलीके से जुटाने के लिए अपनी माँ से आग्रह करती है। फिर वह अपने पति की खूब आवभगत करने और उसे सम्मानपूर्वक ससुराल विदा करने और सावन में उसकी लाड-कोथली भिजवाने की बात याद दिलाना नहीं भूलती है।

मतना पीहर कमाइयो [2]

ए मत ना करियो काम छोरियो ए मत ना पीहर कमाइयो
ए काम करे का स्यान[1] नहीं सै मत ना देही तुड़ाइयो
ए सूती कपड़ा कोए ना सिमाइयो ए टेरीकोट सिमाइयो
ए सोळ्हा ईंच के खुल्ले फ्हैंचे ए म्हैं बुकरम घलवाइयो
सारी छोरी कट्ठी हो कै पिक्चर देखण जाइयो
ए नया सनीमा हाल दादरी ए नंबर टिकट कटाइयो
ऐ उड़ै[2] आँवैं कोलिज के पढ़णिए मत ना धरम घटाइयो
ऐ माँ बापाँ की घणी लाडली ए नीची तरफ लखाइयो

इस जकड़ी में एक लड़की अन्य लड़कियों से मायके में काम न करके मौज-मस्ती से रहने का आह्वान करती है। वह कहती है कि मायके में काम करके देही तुड़वाने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि कोई उनका एहसान नहीं मानता। आगे वह आह्वान करती है कि सभी लड़कियों को सूती कपड़े की बजाय टेरीकोट के नए फैशन वाले सूट पहनने चाहिए। वह सभी लड़कियों से इकट्ठी होकर सिनेमा हॉल में फ़िल्म देखने के लिए जाने को भी कहती है। अंत में वह चेतावनी देते हुए कहती है कि सिनेमा हॉल में कॉलेज के लड़के भी आएँगे। ऐसे में उन्हें अपने चरित्र, धर्म और माता-पिता की इज़्ज़त की रक्षा हेतु नज़र नीची रखनी चाहिए।

देख लिए सासू की हेली [3]

ओ पिता करो पाटड़ा त्यार मनै ओ ना चाह्ना पीहर की
ए बेटी एक साल गम खा ए देख लिए सासू की हेली[3]
ए मन्नै आई नै होए दिन च्यार झड़क गई हाथाँ की चूड़ी
हे री सासू गाळ्याँ म्हैं हांडैं[4] मनियार फ्हरा दे री मीनै[5] की चूड़ी
ए बहू जड़ म्हैं बसैं लुहार प्हैर ले लोह्वे की चूड़ी
ए मन्नै ढाई का गेर्या[6] तार पाँच की ए च्यट्ठी गेर देइ
ऐ मेरे छुट्टी आए भरतार गोरी रै हरदे[7] म्हैं के बीती

---

1. एहसान 2. वहाँ 3. हवेली 4. घूम रहे 5. मीनाकारी वाली चमकदार 6. डाला 7. हृदय

ओ मन्नै आई नै होए दिन च्यार झड़क गई हाथाँ की चूड़ी
हे री सासू गाळाँ म्हैं हांडै मनियार पहरा दे री मीनै की चूड़ी
हे बहू जड़ म्हैं बसै लुहार पैह्र ले लोह्वे की चूड़ी
हे रै गोरी जड़ म्हैं बसैं रै सुनार प्हैर ले रै स्योने की चूड़ी

इस लोकगीत में एक युवती का ससुराल के लिए चाव और वहाँ पहुँचने पर उसके टूटे सपनों का वर्णन है। वह अपने पिता से स्पष्ट कहती है कि उसे मायके की कोई चाह नहीं रही, अब उसे ससुराल भेज दिया जाए। लेकिन ससुराल में तो उसके लिए 'चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात' वाली बात हो जाती है। सारा दिन काम करते-करते उसके हाथों की चूड़ियाँ चटक जाती है। जब वह अपनी सास से मनियार को बुलाकर मीने की चूड़ियाँ पहनाने को कहती है तो सास उसे लोहे की चूड़ियाँ पहनने को कहती है। यह जवाब सुनकर वह अपने पति को पत्र भेजकर बुलवा लेती है। सारी बात जानकर उसका पति उससे कहता है कि अगर उसकी इच्छा हो तो वह सुनार के यहाँ जाकर सोने की चूड़ियाँ पहन ले।

बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना [4]

हे बड़ पीपळ कटवाइए मत ना चरती गऊ हटाइए मत ना
पाणी म्हैं डळा[1] बगाइए मत ना बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना
हे गोसे पै गोसा[2] फोड़िए मत ना सिर धर लकड़ी तोड़िए मत ना
खाली तवा तारिए मत ना ए बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना
ऊपर चढ़के न्हाइए मत ना च्यारूँ तरफ लखाइए मत ना
घर घर धक्के खाइए मत ना बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना
सुसरे कै स्याहमी[3] बोलिए मत ना, सास की कदर घटाइए मत ना
नणदल नै धमकाइए मत ना, बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना
जेठ नै गैर समझिए मत ना, जेठाणी तैं न्यारी पाटिए मत ना
देवर तैं गिरकाइए[4] मत ना, बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना
इतणी भेज देई समझाकैं माँ का दूध लजाइए मत ना
बाप का नाम डबोइए मत ना बेटी उल्हाणा ल्याइए मत ना

इस जकड़ी में एक माँ द्वारा बेटी को उसकी विदाई के समय दिए जाने वाले उपदेशों का वर्णन है। वह उसे पेड़ कटवाने, चरती हुई गाय को हटाने, तालाब में ढेला फैंकने, सिर पर रखकर लकड़ी तोड़ने, चूल्हे पर से खाली तवा उतारने, छत पर चढ़कर

---
1. ढेला 2. उपला 3. सामने 4. सौंदर्य और श्रृंगार का प्रदर्शन करना

नहाने, इधर उधर ताँक-झाँक करने, घर-घर धक्के खाने, ससुर के सामने बोलने, सास का आदर घटाने, ननद को धमकाने, जेठ को गैर समझने, जेठानी से अलग होने, देवर से मज़ाक करने आदि से मना करती है। वह कहती है कि इन बातों का पालन करने पर उसकी बेटी माँ के दूध की लाज और पिता की इज़्ज़त रख पाएगी और कोई उसे उलाहना नहीं देगा।

ऐ बिजळी कैसा पळका लाग्या [5]

ए चाचे ताऊ मेरे भाई भतीजे चाल्ले करण सगाई
ए दिल्ली के म्हैं छोरा ढूँढ्या बार्हा पास कराई
ए घड़ी और गूँठी साइकिल माँगी ए माँगी ज्हयाज हवाई
ए मेरे पिता की सरधा[1] कोन्या उसकै करी सगाई
ए लगन लिखा दिया बान बिठा दिया बारोठी [2] पै आया
ए बारोठी पै न्यू उठ बोल्या छोरी देखण आया
ए चाचे ताऊ मेरे भाई भतीजे आपस म्हैं बतळाए
हे कुछ तो जतन बता ए म्हारी लाडो इज्जत तारण[3] आए
ओ चाचे ताऊ मेरे भाई भतीजे इतणे क्यूँ घबराए
ओ इज्जत तारण के आए ये अपणी तरावण [4] आए
ए बढ़िया सा मेरा सूँट सिमा द्यो ईब पैह्रण[5] तँई[6]
ओ लाइलून का ल्या द्यो दपट्टा ऊपर ओढ़ण तँई
ए आडी टेढ़ी माँग झुका लेइ किलफ जचाणे तँई
ए ओळे[7] हाथ कै घड़ी बाँध लेइ टेम बताणे तँई
ए जिद बनड़ा [8] बारोठी पै आया यो च्यारूँ तरफ लखाया
ए बिजळी कैसा पळका[9] लाग्या खाके पड़्या तिवाळा[10]
ओ मैं तो तेरै पिस्संद आगी हो तूँ मेरै ना आया
ओ चाल्या जा बदमास ढेड तूँ कौण कितें तैं आया
रै भाज[11] ल्यो रै भाइयो भाज ल्यो रै भाइयो कोलेज टूटैगा
रै बार्हमी का पढ़णिया छोरा मूँज कूटैगा

इस जकड़ी में एक लड़की द्वारा अपने दहेज़-लोभी ससुराल वालों को सबक सिखाने का प्रसंग हैं। एक लड़की की दिल्ली के एक बारहवीं पास लड़के से सगाई हो जाती है। लड़के वाले भारी दहेज़ की माँग करते हैं, जिसे देना लड़की के पिता के सामर्थ्य से बाहर है। विवाह वाले दिन लड़की के घर वाले घबरा जाते हैं। उनकी हिम्मत

1. गुंजाइश 2. ढुकाव 3. उतारने 4. उतरवाने 5. पहनने 6. के लिए 7. बाएँ 8. दूल्हा 9. चमक 10. गश 11. भाग

बँधाते हुए लड़की कहती है कि वे हमारी इज़्ज़त उतारने नहीं, बल्कि स्वयं की इज़्ज़त उतरवाने आए हैं। शादी के समय वह पूरी तरह सज-सँवर कर आधुनिक लड़की की तरह दूल्हे के सामने जाती है। वह उसका रूप देखकर चक्कर खा जाता है। लेकिन वह दूल्हे को डाँटते हुए कहती है कि बेशक मैं तुझे पसंद आ गई, लेकिन तू मुझे पसंद नहीं आया। गालियाँ देती हुई वह उसे वहाँ से भाग जाने के लिए कहती है। उस लड़की की हिम्मत देख सारे बराती भाग खड़े होते हैं और दूल्हे के भविष्य को लेकर तरह-तरह के मज़ाक करने लगते हैं।

हे री माँ मनै दे न घाल[6]

हे री सिमवा दे लीली बूँद और धन चाँह्दा[1] ना तेरा
हे री माँ मनै दे न घाल[2] उरै जी लागदा ना मेरा
हे तेरी साथण[3] बूझैं बात ताई री हमनै पाट्या ना बेरा
हे उसकी सासू सखत बीमार जमाई ले ग्या सै ए मेरा

इस जकड़ी में एक लड़की के नियत समय से पहले ही ससुराल जाने का वर्णन है। उसका मन अब मायके में नहीं लगता। वह अपनी माँ से आग्रह करती है कि वह उसे ससुराल भेज दे, चाहे दहेज़ में कुछ भी न दे। बेटी की दशा को देख माँ भी उसे ससुराल भेजने का प्रबंध कर देती है। जब उसकी सहेलियाँ जानना चाहती हैं कि वह अचानक ससुराल क्यों चली गई तो उसकी माँ बहाना बनाती है कि उसकी सास सख्त बीमार है; इसलिए जमाई आकर उसे ले गया है।

घालण का म्हारा ब्योंत नहीं[7]

बीरमती ए तेरा बाग निरोळा[4] सबतैं पति निराळा ए
पतळा सुथरा छैल गाबरू म्हारी बैठक म्ह बड़ ग्या[5] ए
पतळे पतळे मांडे[6] पोए आलू का साग बणाया ए
भीतर बड़के जीम लिए ओ तूँ घालण का म्हारा ब्योंत नहीं
घालण का म्हारा ब्योंत नहीं सै कातक पाछै आ ज्याइए
बड़ळी[7] भावज नै बेरा[8] पाट्या[9] ओ नणदोइया ले ज्याइए
सारा ब्योंत[10] बणा राख्या सै ओ नणदोइया ले ज्याइए
गाळाँ के म्ह न्यू फिर रही सै जणु हिलाऊ नारा[11] सै
सारे कुणबे पै डाट जमावै जणु[12] रोहतक का थाणा सै

---

1. चाहिए 2. भेजना, विदा करना 3. सखी 4. निराला 5. घुस गया 6. फुलके 7. बड़ी 8. पता 9. चला 10. तैयारी, सामर्थ्य 11. बैल 12. जैसे

इस जकड़ी में एक युवती की भाभी द्वारा जबरदस्ती उसे ससुराल भेज देने का वर्णन है। युवती का पति उसे लिवाने के लिए आता है, लेकिन घरवाले कहते हैं कि अभी बेटी विदा करने की तैयारी पूरी नहीं हुई है। इस पर उस युवती की भाभी कहती है कि सब तैयारी पूरी हो चुकी है। अच्छा हो, वह उसे अपने साथ अभी ले जाए। आगे वह अपनी ननद की शिकायत करते हुए कहती है कि वह गलियों में आवारा घूमती रहती है और सारे कुनबे पर धौंस जमाती फिरती है।

आज मेरी बेटी आवैगी [8]

माँ अर बाबू न्यू बतळाए आज मेरी बेटी आवैगी
अळी गळी के बाळक बोले बाळकाँ नै पीटणी आवैगी
घर की बिलाई न्यू बोली वा खुरचण खाणी आवैगी
घर के मूसे[1] न्यू बोले वा बासण[2] ढकणी आवैगी
भाभी र भाई न्यू बतळाए रै खरचा करणी आवैगी
बडणा भाई न्यू बोल्या वा गैल[3] बाळकाँ नै ल्यावैगी
छोटा भाई न्यू बोल्या वा सारा दूध पिलावैगी

इस जकड़ी में एक युवती के ससुराल से मायके आने की संभावना को लेकर परिवार के लोगों की प्रतिक्रियाओं का वर्णन है। जहाँ युवती के माता-पिता यह सुनकर खुश हैं, वहीं गली के बच्चे यह सोचकर निराश हैं कि वह उन्हें बात-बात पर पीटेगी। यहाँ तक कि खबर सुनकर चूहे और बिल्ली भी खुश नहीं हैं। भाई-भाभी इस बात से परेशान हैं कि अब उनका व्यय बढ़ जाएगा।

सोळ्हा साल कुमाई ए [9]

जग्हाँ देख माळी बाग लगा दे कटमा कटमा क्यारी ए
तर्हाँ तर्हाँ के फूल बाग म्हैं खसबो न्यारी न्यारी ए
अपणे पिता कै मैं मार मँडासा[4] सोळ्हा साल कुमाई ए
मेरे पिता नै जुलम करे मेरी दो सलवार सिमाई ए
सुसरा तो ए मेरा कांबळ माँगै सासू माँगै रिजाई ए
नणदल माँगै टरंक[5] खुलाई ज्यान मरण म्हैं आई ए
भीतरले सोप्पे[6] म्हैं बड़कै मैं डांगर ज्यूँ अरड़ाई[7] ए

1. चूहे 2. बरतन 3. साथ 4. सिर कसकर 5. संदूक, एक नग 6. कमरे 7. रोई, दहाड़ मारकर रोना

मेरे पति नै जाण[1] पाटगी मैं ठा छाती कै लाई ए
रोवै मत ना रै मेरी गोरी गैल ले चालूँगा

इस लोकगीत में एक लड़की द्वारा कम दहेज़ लाने के कारण झेली गई परेशानियों का वर्णन है। वह सोलह वर्ष तक अपने पिता के यहाँ खूब कमाती है। लेकिन विदाई के समय उसका कंजूस बाप उसे पूरे कपड़े भी नहीं देता। ससुराल पहुँचने पर जब सास, ससुर, ननद आदि अपना-अपना नेग माँगते हैं तो उसकी जान साँसत में आ जाती है। वह कमरे के अंदर घुसकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती है। यह देखकर उसका पति उसे गले लगाकर सांत्वना देता है।

किसे ए मिले सैं भरतार [10]

सकी ए त्हम[2] कित-कित[3] ब्याह दी किसे ए मिले सैं भरथार
सकी ए मैं तो भ्याणी[4] ए ब्याह दी बाबू जी मिले सैं भरथार
सकी ए मैं तो टिकट काट द्यूँ गाडी चलावै भरथार
सकी ए मैं तो रोहतक ब्याह दी डाक्टर मिले सैं भरथार
सकी ए मैं नबज देख द्यूँ टीके तो लावै भरथार
सकी ए मैं तो रुड़की ए ब्याह दी मास्टर मिले सैं भरथार
सकी ए मैं तो लड़की पढ़ाऊँ लड़के पढ़ावै भरथार
सकी ए मैं तो बागड़[5] ब्याह दी हाळी मिले सैं भरथार
सकी ए मैं तो झाड़ काट द्यूँ बाजरा तो बोवै भरथार

इस जकड़ी में युवतियाँ इकट्ठी होकर अपने-अपने ससुराल और पति के कारोबार का बखान कर रही हैं। पहली युवती, जिसका विवाह भिवानी में हुआ है, उसका पति कंडक्टर है। रोहतक ब्याही हुई युवती का पति डॉक्टर और रुड़की वाली का पति अध्यापक है। चौथी सखी, जो बागड़ में ब्याह रखी है, उसका पति एक किसान है और वह कृषि-कार्य में उसका हाथ बँटाती है।

बाबल बीस बरस की हो ली [11]

बाबल बीस बरस की हो ली मन्नै हो इब कद सिक[6] ब्याह्वैगा
बेटी माड़ी[7] सै तकदीर बटेऊ ए तेरा मोड्डा[8] हो लिया
बाबल न्यू तो मनै बता ए कड़ सिक धूणा ला र्‌ह्या सै
बेटी सीद्दी सरड़क जाय बाग म्हैं धूणा ला र्‌या सै

---

1. पता 2. तुम 3. कहाँ-कहाँ 4. भिवानी 5. रेगिस्तान 6. कब तक 7. कमज़ोर 8. साधु

मोड्डे न्यू तो मनै बताय के ब्याहा सै क कँवारा
छोरी न्यू तो मनै बताय के दुस्सर ल्यावैगी क ना
मोड्डे दूस्सर ल्याऊँ जरूर लेण मनै आवैगा क ना
छोरी लेणे नै आवै मेरा बीर के चिमटा ल्यावैगी क ना
मोड्डे चिमटा ल्याऊँ जरूर गैल मनै ल्यावैगा क ना
छोरी लेवण नै आवै मेरा बीर गैल उसकै आवैगी क ना
मोड्डे धूणे म्हैं खो द्यूँ ज्यान ल्हास[1] नै ओ ठावैगा क ना
छोरी कर दे माफ कसूर लेण तो मैं ए आऊँगा

इस जकड़ी में एक विवाहित लड़की द्वारा अपने पति, जो संन्यासी हो गया था, को घर वापस लाने का प्रसंग है। बीस वर्ष की होने पर एक दिन वह लड़की अपने पिता से पूछती है कि उसका विवाह कब होगा? उसका पिता उसे बदकिस्मत बताते हुए कहता है कि उसका पति संन्यासी बन गया है। यह सुनकर वह पूछते-पूछते उस संन्यासी के आश्रम में जा पहुँचती है। वह उससे पूछती है कि वह शादीशुदा है या कुँवारा? संन्यासी कहता है कि वह अपने छोटे देवर के साथ आ जाए, वह स्वयं उसे लेने नहीं आएगा। इस पर क्रोधित होकर कहती है कि मैं यहीं हवन कुंड में कूदकर जल मरूँगी। उसका हठ देखकर संन्यासी उससे माफ़ी माँगता है और कहता है कि वह स्वयं उसे लेने के लिए जल्दी ही आएगा।

चंद्रकलाँ ए बेटी पाणी नै गई थी [12]

चंद्रकलाँ ए बेटी पाणी नै गई थी
माँज टोकणी ए पाणी की भरी थी
पाणी आळी[2] मनै पाणी प्यादे रै प्यावैगी क ना
हे रै कद का मरूँ तिसाया[3] रै प्यास बूझावैगी क ना
पाणी पी ले के थोड़ा हो सै बोलण का ओ तरीका हो सै
इतणी लुगाई[4] मेरै जड़ म्हैं खड़ी तेरी मेरे म्हैं न्यजर गई
ओ धरती पर तैं छोड बावळे[5] ओ बैह्म[6] लुगाई का
के देखै सै हाथाँ कानी[7] रूप दिया सै बेमाता नै
जलम दिया सै माँ बापाँ नै
सीधी सरड़क चाल्या जाइए ओ नाता भाई का
ओ धरती पर तैं छोड बावळे ओ बैह्म लुगाई का

---

1. लाश 2. वाली 3. प्यासा 4. महिलाएँ 5. पगले 6. भ्रम 7. की तरफ़

कूए पर तैं ए चाल पडूया ए वो म्हारे कमरे म्ह बड़ ग्या ए बेबे
सोड़ सोड़िए दरी गींडवे[1] लावै नाई का
ओ धरती पर तै छोड़ बावळे ओ बैह्म लुगाई का
कूए पर तैं मैं भी आगी साचम साच बता दे री माता
कमरे म्ह कौण बटेऊ री माता
कूए पर बतळाई ए बेटी कमरे म्हैं वो ए बटेऊ ए बेटी
कूए म्हैं पडूँगी री माता झूठा ऐलम[2] लावै री माता नाता भाई का
धरती पर तैं छोड़ बावळे ओ बैह्म लुगाई का

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा कुएँ पर पानी भरने के दौरान एक अजनबी से हुई मुलाकात का वर्णन है। जब चंद्रकला पानी भर रही थी तो एक परदेसी उससे पानी पिलाने का आग्रह करता है। चंद्रकला उसे अन्य किसी लड़की से पानी पीने के लिए कहती है। लेकिन जब परेदसी उसे एकटक देखता है तो वह उसे भाई कह देती है। वहाँ से चलकर राहगीर चंद्रकला के घर आ जाता है, जहाँ उसकी खूब आवभगत होती है। जब चंद्रकला की माँ उसे बताती है कि वही उसका पति है तो वह विश्वास नहीं करती।

◆◆◆◆

1. तकिये 2. आरोप

बहन

भरती हो ग्या पलटण म्हैं [13]

चाळे[1] कर ग्या रे दयानंद नाम लिखा लिया पलटण म्हैं
माँ बापाँ की मानी कोन्या भरती हो ग्या पलटण म्हैं
लिख च्यट्ठी ए मन्नै गेरी ढोल म्हैं दयानंद बीरा बाँच लिए
तेरे भाणजे का ब्याह सै दयानंद तोळ्ा[2] छुट्टी आ ज्याइए
दस दिन की ए बीरा छुट्टी आया आण भाण कै डट ग्या ए
चंदरमा सी ब्हाण किरसना ए माड़ी क्याँतैं[3] होगी ए
दुराणी जिठाणी बीरा बोली मारैं फौजी भाती आवैगा
तेरा मामा रै तेरी मम्मी खातर टैरीकोट सिमावैगा
बोली मत ना मारो ए छोरियो मैं सबनै ए राजी कर ज्याँगा
सात भाई ए म्हारै एक किरसना ए सबतैं ऊँची कर ज्याँगा

इस लोकगीत में एक सैनिक और उसकी बहन का वर्णन है। बहन को इस बात का खेद है कि उसका भाई दयानंद माता-पिता के मना करने के बावजूद फ़ौज में भरती हो गया। वह पत्र लिखकर अपने भाई को सूचित करती है कि उसके भानजे का विवाह है और उसे विवाह में आना है। दयानंद दस दिन की छुट्टी लेकर बहन के यहाँ जाता है और उससे उसके दुबली होने का कारण पूछता है। वह कहती है कि उसकी देवरानी-जेठानी उसे ताने मारती हैं कि फौजी भात भरने आएगा और अपनी बहन के लिए टेरीकोट के कपड़े सिलवाएगा। इस पर दयानंद कहता है कि वह सबको खुश कर देगा और अपनी बहन की शान सबसे ऊँची करके जाएगा।

बीर आपी माँ के जाए रे [14]

बीर आपी माँ के जाए रे
रे लोटे[4] थे एक सरीर करम अपणे न्यारे न्यारे रे
बीर तूँ तो पढ़ण बिठा दिया रे
ए रे मैं तो छोरट[5] खिलाऊँ दिन रात करम अपणे न्यारे न्यारे रे
बीर तेरे धोळे[6] कपड़े रे

---

1. कमाल 2. जल्दी 3. किसलिए 4. लेटे, पैदा हुए 5. बच्चे 6. सफ़ेद

रे तेरा कुड़ता कीमतदार धोवण नै तो साबण चहिए रे
बीर मैं तो गोबर बिटोळूँ रे[1]
ए रे मेरा कुड़ता ल्हीरम ल्हीर[2] *धोवण नै तो फुरसत कोनी रे*
बीर तेरा घी ए तुलै सै रे
रे कुणबे पै मारै डाट बीर तेरी डाट उटै सै रे
बीर म्हारा बासी खाणा रे
हे रे पीणे नै खाटा सीत[3] *डाट कुणबे की ओटाँ रे*
बेबे ए इसी हीणी[4] *ना बोलै ए*
ए मेरा जळग्या सारा ए सरीर खून का तो पाणी होग्या ए
बेबे ए तनै पढ़ण बिठा द्यूँ ए
तनै ल्या दूँ बेद किताब भाण तनै बी.ए. पढा द्यूँ ए
बीर मैं तो याए[5] *चाहूँ रे*
हे रे चलदी नै दिए ना जबाब लेण[6] *मनै तावळा*[7] *आइए रे*

इस जकड़ी में बहन और भाई के संवाद हैं। बहन अपने भाई के सामने अपने दुर्भाग्य का रोना रोती है। वह कहती है कि हम एक ही माँ के पैदा किए हुए हैं, लेकिन अपनी किस्मत अलग-अलग है। जहाँ एक ओर भाई पढ़ने जाता है, स्वच्छ कपड़े पहनता हैं, उसके लिए घी-दूध का अलग से प्रबंध है और वह सभी को डाँटता रहता है; लेकिन परिवार का कोई भी व्यक्ति उसका बुरा नही मानता, वहीं दूसरी ओर लड़की को घर के तुच्छ कामों; जैसे बच्चे खिलाना, गोबर इकट्ठा करना आदि में लगा दिया जाता है; उसके कपड़े फटे हुए और मैले-कुचैले हैं; पीने के लिए उसे खट्टी लस्सी मिलती है और परिवार के सभी लोग उसे डाँटते रहते हैं। बहन की ये शिकायतें सुनकर भाई को ग्लानि महसूस होती है और वह स्वयं उसे पढ़ा-लिखाकर बी.ए. पास करवाने की बात कहता है। लेकिन बहन तो केवल इतना चाहती है कि उसका भाई उसे प्रेमपूर्वक विदा करे और ससुराल से लिवाने के लिए जल्दी आए।

तूँ बिन्या ए भाई की भाण सै [15]

साइकल आळे मेरे बीर जाइए रे माँ नै फेटकै[8]
के सै ए छोरी तेरा नाम तूँ किस ए भाई की भाण सै
कमला रे देबी मेरा नाम मैं म्हैंदर स्यंग की भाण सूँ
मैं ए सूँ म्हैंदर तेरा बीर हो ले न मेरे साथ म्हैं
एक बर घर नै रे चाल बूझूँगी[9] *अपणी सास नै*

---

1. इकट्ठा करूँ 2. चीथड़े-चीथड़े 3. लस्सी 4. हीन 5. यही 6. लिवाने 7. जल्दी 8. मिलकर 9. पूछूँगी

आर्या सै सासड़ मेरा बीर यो बेठ्या थारे घेर म्हैं
कोन्या ए बहुवड़ तेरा बीर तूँ बिन्या ए भाई की भाण सै
म्हैंदर मेरा री बीर मैं जाँगी[1] री इसके साथ म्हैं

इस जकड़ी में एक बिना भाई की बहन की व्यथा का वर्णन है। वह इतनी अधिक व्यथित है कि उसे एक राहगीर ही अपना भाई लगने लगता है। वह उस साइकिल वाले राहगीर से अनुरोध करती है कि वह उसकी माँ से अवश्य मिलकर जाए। राहगीर उस स्त्री से उसका और उसके भाई का नाम पूछता है। वह अपना नाम कमला देवी और भाई का नाम महेंद्र सिंह बताती है। राहगीर उसे अपने साथ चलने के लिए कहता है। इस पर वह राहगीर को अपने ससुर के घर ले जाती है और अपनी सास से अपने भाई के रूप में परिचय देकर उसके साथ मायके जाने की अनुमति माँगती है। उसकी सास उसे याद दिलाती है कि वह तो बिना भाई की बहन है। लेकिन वह जिद कर बैठती है कि महेंद्र ही उसका भाई है और वह उसके साथ जाएगी।

मेरी सीलाँ उडावै काग [16]

मेरी माँ नै सुपना आया ए मेरी सीलाँ उडावै काग
तड़के[2] नै बीरा आ ग्या ए बेबे कहो ना मन की बात
बीरा धोळी[3] स्याड़ी बांधूँ रे मैह्लाँ के उडाऊँ काग
बीरा भूरे भूरे हाथाँ म्हैं सजता ना बरेली का बाँस
बीरा माता नै मतना कहिए रे वा रोवै टक्कर मार
बीरा भावज नै मतना कहिए रे पनघट पै पूर दे[4] बात
बीरा बेबे नै मतना कहिए रे सखियाँ म्हैं रह्वै उदास
बीरा बाबल नै जा कहिए रे पंचाँ[5] म्हैं चलावै बात

इस जकड़ी में एक उपेक्षित विवाहिता, जिसका नाम शीला है, के दुख का मर्मस्पर्शी वर्णन है। एक दिन शीला की माँ को सपना आता है कि उसकी बेटी ससुराल में बहुत दुखी है। दूसरे दिन सवेरे-सवेरे ही शीला का भाई शीला के पास पहुँच जाता है और उसके मन की बात पूछता है। कुछ प्रतीकों जैसे "सफ़ेद साड़ी" "काग उड़ानी" और "हाथ में बरेली का बाँस" आदि के माध्यम से वह अपने उपेक्षित वैवाहिक जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। साथ ही वह अपने भाई से आग्रह करती है कि वह उसकी दुर्दशा के बारे में मायके जाकर माँ को न बताए क्योंकि उसे डर है कि यह जानकर उसकी माँ चीत्कार कर रोएगी। वह अपने भाई से यह बात अपनी भाभी को भी न बताने का

---

1. जाऊँगी 2. सवेरे 3. सफ़ेद 4. फैला दे 5. पंचायत

आग्रह करती है। उसे डर है कि कहीं उसकी भाभी यह बात पूरे गाँव में न फैला दे और उसके परिवार की जग हँसाई हो जाए। साथ ही वह यह भी नहीं चाहती कि यह बात उसकी छोटी बहन को पता चले, जिससे वह सखियों में उदास रहने लगे। अंत में वह अपने भाई से यह बात अपने पिता से बताने के लिए कहती है, जो इस समस्या को पंचायत में रखे और कुछ समाधान निकाले।

माँ नै कहिए रे बीर [17]

मेरी माँ नै कहिए रे बीर मेरा चूंदड़ रे ले धरै [1]
मेरा चूंदड़ पाट्या [2] रे बीर जिनकै घूंघट रे काढ़दी [3]
मेरी माँ नै कहिए रे बीर मेरा कब्जा [4] रे ले धरै
मेरा कब्जा पाट्या रे बीर जिनके च्हैंडे [5] रे तारदी
मेरी माँ नै कहिए रे बीर मेरा दामण [6] रे ले धरै
मेरा दामण पाट्या रे बीर जिनकै लामणी [7] रे काटदी
मेरी माँ नै कहिए रे बीर मेरा मैंह्दा रे ले धरै
मेरा म्हैंदा उतर्या रे बीर जिनकै कासण [8] रे माँजदी

यह जकड़ी एक विवाहिता और उसके भाई के बीच में हुए संवाद के रूप में है। भाई अपनी बहन से मिलने के लिए उसकी ससुराल आया हुआ है। वह स्त्री भाई के हाथ अपनी माँ के लिए संदेश भेजती है। वह चाहती है कि उसकी माँ उसके लिए एक नई चुनरी ले ले क्योंकि ससुराल में लगातार घूँघट निकालने से उसकी चुनरी फट गई है। इसी प्रकार वह चाहती है कि उसकी माँ उसके लिए नई कुर्ती और घाघरा ले ले, जो क्रमशः ससुराल में पानी भरते हुए और फ़सल काटते हुए फट चुके हैं। गीत के अंतिम अंतरे में वह अपनी माँ से मेंहदी लेकर रखने के लिए कहती है क्योंकि ससुराल में लगातार बर्तन माँजने के कारण उसकी मेंहदी उतर चुकी है।

बीर मेरा सूट सिमा दे रे [18]

बीर मेरा सूट सिमा दे रे
हे रे सिमवा दे टेरीकोट बीर मेरै होया सै भतीजा रे
बीर मेरा बोल्या कोन्या ए
ए वो करकै नीची नैड़ [9] बीर मेरा ब्हार्याँ [10] नै लिकड़ग्या [11] ए
भीतर तैं मेरी भावज लिकड़ी ए

---

1. रखना 2. फटा 3. निकालती 4. कमीज़ 5. पानी के घड़े 6. घाघरा 7. फ़सल 8. बरतन 9. गरदन 10. बाहर 11. निकल गया

हे री इस घर का कर द्यो नास जमीन अपणै नाम करवा ल्यो री
भाण मन्नै दाती ज्योड़ी[1] ठाई ए
ए मैं होई टेसन[2] की राही रेल बार्हा की आई ए
भाण मन्नै टक्कर मारी ए
हे मन्नै टुकड़े बणा लिए च्यार ल्हास टेसन पै गेरी ए
भावज मेरी माँडे पोवै ए
हे मेरा बीरा जीमै ढोल पुलस उसकै ब्हार खड़ी सै ए
यार टेसन पै चालिए रै
हे रै बिमला की पड़ी सै ल्हास ल्हास नै ठाके ल्याइए रै
नैर[3] तन्नै के सोची थी रै
रै के सूँट सूँट की बात गाळ[4] हमनै दुनिया देगी रै

इस जकड़ी में एक बहन अपने मायके आई हुई है क्योंकि उसे भतीजा हुआ है। खुशी के इस मौके पर वह अपने भाई से टेरीकोट का सूट सिलवाने का आग्रह करती है। भाई बिना कुछ कहे गर्दन नीची करके घर से बाहर निकल जाता है। भीतर से उसकी भाभी निकलकर ताने मारते हुए कहती है कि "तुम जमीन बँटवा लो और इस घर का नाश कर दो।" ऐसी जली-कटी सुनकर बहन दराँती-जेवड़ी लेकर रेलवे स्टेशन पर आ जाती है और रेलगाड़ी से कटकर अपनी जान दे देती है। पुलिस जब भाई के घर पहुँचती है तो भाई मौज में खाना खा रहा होता है। पुलिस उसे स्टेशन पर चलकर अपनी बहन विमला की लाश को उठाने के लिए कहती है। गीत के अंत में भाई अपनी पत्नी को धिक्कारता है कि सूट की छोटी-सी बात को लेकर हुए ऐसे दर्दनाक हादसे के कारण दुनिया हमें गालियाँ देगी।

मेरी ल्याइए गुलाबी छींट [19]

रे पीतल की बाल्टी आळे क्यूँ ढोवै बाळू रेत
रे बीरा तड़कै दिल्ली जाइए मेरी ल्याइए गुलाबी छींट
ए बेबे सारै स्हैर फिर आया मन्नै मिली ना गुलाबी छींट
रे बीरा थोड़े दाम दिखाए तन्नै मिली ना गुलाबी छींट
ए मेरी भावज ताने मारै सिमवा ले गुलाबी छींट
रे कातक की करी लामणी भादवे की चुगी कपास
रे भावज का जापा काढ्या चलदी नै दिया जवाब
ए मेरै बाबू नै बेरा[5] पाट्या[6] मेरी ल्याया गुलाबी छींट

1. दराँती और रस्सी 2. स्टेशन 3. पत्नी, नारी 4. गाली 5. पता 6. चला

ए बेबे कोए ना किसे के भाई दुख सुख के माई अर बाप

इस जकड़ी में एक बहन अपने भाई से दिल्ली जाने और उसके लिए छींट वाला गुलाबी रंग का सूट लाने का आग्रह करती है। भाई खाली हाथ आ जाता है और कहता है कि पूरे शहर में कहीं भी उसका मनपसंद सूट नहीं मिला। बहन भाई की चालाकी जानती है। वह समझती है कि उसका भाई जानबूझ कर गुलाबी सूट नहीं लाया। दूसरी ओर उसकी भाभी उसे गुलाबी छींट के नाम पर ताने मारती है। बेबस बहन दुखी होकर अपने भाई को याद दिलाती है कि कैसे उसने पीहर में रहकर भादों के महीने में कपास चुगवाई और कार्तिक में लामणी की है (फ़सल कटवाई है)। साथ ही उसने भाभी के जापे का काम किया। लेकिन ससुराल के लिए चलते समय भाई ने उसे टका-सा जवाब दे दिया। जब उसके पिता को पता चलता है तो वह बेटी के लिए गुलाबी छींट लेकर आता है। इस पर वह कहती है कि सुख-दुख में माँ और बाप काम आते हैं, भाई और भाभी नहीं।

मन्नै मायड़ चाहिए आज [20]

ए बीरे कै ब्होत कमाई कमाई दिन अर रैत
ए बेबे कपड़े की मोटर भर दी बेठण नै व्हाई ज्हैज
ए स्योने म्हैं पीळी कर दी चाँदी के दिए गिलास
ए ऊपर तैं भावज उतरी माथे म्हैं त्योड़ी [1] *च्यार*
ओ बेबे का भरणा भर द्यो बसणे की कर द्यो टाळ
ए मैं भीतर बड़के रोई याद आए माई अर बाप
ए बार्याँ तैं बीरा आ ग्या बेबे क्याँतैं [2] *होइ ए उदास*
रे बीरा आज सासरै जाणा मन्नै मायड़ चाहिए आज
ए बेबे माँ तो रेत म्हैं रुळगी [3] *भावज पै धर ल्यो ध्यान*
रे बीरा भावज मन की कोन्या मेरा कोन्या कर्या रे कसार
ए बेबे सौ के लाड्डू ल्या द्यूँ तेरा जीमै सारा परिवार
रे बीरा लाडुवाँ नै परिवार खा ज्या बाँडणे नै चाहिए रे कसार
रे बीरा लाड्डू लाड कोथळी दूसर का मरड़ कसार

इस जकड़ी में एक बहन ससुराल जाते समय के क्षणों का वर्णन करती है। उसने काफी समय मायके में रहकर दिन-रात खूब काम किया है। विदाई के वक्त भाई ने उसे खूब गहने कपड़े दिए। यह देखकर भाभी के माथे पर बल पड़ गए। भाभी ने कटाक्ष किया कि "सब कुछ बहन को दे दो और खुद उजड़ जाओ।" यह सुनकर बहन को अपने माँ-बाप

1. त्यौरी 2. किसलिए 3. खो गई

याद आ जाते हैं और वह घर के भीतर जाकर रोने लगती है। भाई उससे माँ को भूलकर भाभी में मन लगाने की सलाह देता है। इस पर बहन कहती है कि भाभी उसके मन की नहीं है क्योंकि भाभी ने उसके लिए कसार नहीं बनाया। भाई उसके लिए बाजार से लड्डू लाने की बात कहता है। लेकिन बहन कहती है कि लड्डुओं को तो परिवार के लोग ही खा जाएँगे। पड़ोस में बाँटने के लिए उसे कसार चाहिए। इसके अतिरिक्त परंपरानुसार लड्डू तो कोथली में दिए जाते हैं जबकि दूस्सर (गौने) में कसार दिया जाता है।

अपणे घराँ बिग ज्या [21]

हाँ रे बीरा ब्होत कुमाई दिन रात रंग मेरा सौंव्ळा[1] पड़ग्या
हाँ ए बेबे कुमाणा[2] हो तो कुमाय नहीं तो अपणै घराँ बिग ज्या[3]
हाँ बीरा सुसरे की हेली[4] रे च्यार नौरंगी झिंडा टंग रृह्या सै
हाँ रे बीरा सुसरा तो लंबरदार जेठ पटवारी सै
हाँ रे बीरा देवर तो बीए पास जीजा रे तेरा मैसटर सै
हाँ रे बीरा तेरैं रै बरगे[5] ढेड मेरैं तो हाळी पाळी फिरैं
हाँ रे बीरा भावज बरगी रे नार म्हारा तो गोबर गेरैं सैं[6]

इस जकड़ी में बहन-भाई के बीच नोक-झोंक दिखाई पड़ती है। बहन भाई से कहती है कि पीहर में कमा कमाकर उसका रंग साँवला पड़ गया है। भाई तिरस्कार पूर्वक कहता है कि अगर काम करना है तो रह, नहीं तो अपनी ससुराल चली जा। इस बात पर बहन चिढ़ जाती है और अपने ससुराल की प्रशंसा करने लगती है। वह कहती है कि उसके ससुर की चार हवेलियाँ हैं; उसका ससुर नंबरदार, जेठ पटवारी और पति अध्यापक है। आगे वह कहती है कि तेरे जैसे तो वहाँ हलवाहे, चरवाहे हैं और भाभी जैसी औरतें तो गोबर-बुहारी करती हैं।

बीर दुनिया नै देखिए [22]

हाँ रे बीरा[7] बीस बरस का हो लिया
हाँ रे बाबल की मानदा ना एक बीर दुनिया नै देखिए
हाँ रे बीरा सोळ्हा साल पढ़ै दिया
हाँ रे बीरा नौकरी की कर दे टाळ बीर दुनिया नै देखिए
हाँ रे मेरे राजकँवर का ब्याह ए सै
हाँ रे मेरै कूण भरैगा भात बीर दुनिया नै देखिए
हाँ ए बेबे मेरे तैं छोटे तीन सैं

---

1. साँवला 2. कमाना 3. चली जा 4. हवेली 5. जैसे 6. ढोती हैं 7. भाई 8. बहन 9. जगह

हाँ ए तेरे वैं ए भरैंगे भात ब्हाण[8] दिल अपणा डाटिए
हाँ रे वैं तीनूँ अपणी ट्योड़[9] सैं
हाँ रे मेरै आवैगा बखत पै याद बीर दुनिया नै देखिए
हाँ ए बेबे राजकँवर नै ब्याह लिए
हाँ ए तेरै आण[1] भराँगे भात ब्हाण दिल अपणा डाटिए

इस जकड़ी में बहन भाई को दुनियादारी सिखाती है। उसे मलाल है कि उसका भाई जवान हो गया है और पिता की एक भी बात नहीं मानता। आगे वह उसे पढ़ा-लिखा होने के बावजूद नौकरी करने से मना करती है। उसे डर है कि उसके बेटे के विवाह में भात कौन भरेगा? भाई बहन को तीन और छोटे भाइयों का हवाला देता है, लेकिन बहन कहती है कि सब अपनी-अपनी जगह हैं; वक्त पर तो वही याद आएगा। इस पर भाई कहता है कि भानजे के विवाह में वह अवश्य आएगा।

बीर तनै और पढ़ा द्याँ रे [23]

हे मेरा एक सूबे सिंग बीर बीर नै तो पढ़ण बिठा दिया हे
हे दसमी के दिए इम्तहान बीर मेरा फैल लिकड़ ग्या[2] हे
हे कमरे तैं लिकड़ के ब्हार बीर मेरा ठाडूँ[3] रोया हे
हे कूवे पै भरूँ जल नीर बीर का बोल पिछाण्या[4] हे
हे मनै पटके नेजू र डोल बीर छाती कै लाया हे
रे मत रोवै सूबे सिंग बीर बीर तनै और पढ़ा द्याँ रे
रे तेरा जीजा सै कप्तान बीर तनै नौकर लुवा दे रे
रे भीनै के ढाई हजार बीर तनै नगद दिवा दे रे
रे मेरी छोटी नणंद संतोस बीर तेरी सादी करवा दे रे

इस जकड़ी में अपने भाई के लिए एक बहन का प्रेम दिखाया गया है। एक महिला कुएँ पर पानी भर रही है। अचानक उसे अपने इकलौते भाई सूबेसिंह के रोने की आवाज सुनाई देती है। वह अपने नेजू डोल कुएँ पर पटककर भाई को छाती से लगा लेती है। सूबेसिंह दसवीं में फ़ेल हो गया है; इसलिए रो रहा है। बहन उसे चुप कराते हुए कहती है कि उसका जीजा फ़ौज में कप्तान है, जो उसे नौकरी दिला देगा। अंत में वह कहती है कि वह अपने भाई सूबेसिंह की शादी अपनी छोटी ननद संतोष से करवा देगी।

नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं [24]

---

1. आकर 2. निकल गया 3. ज़ोर-ज़ोर से 4. पहचाना

सुसरा बुरा सै बीरा इस घर म्हैं
लांबा सा मैं घूँघट काढूँ फेर भी क्है सै मुँह दीखै सै
नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं
सास बुरी सै बीरा इस घर म्हैं
काजळ बरगा[1] चून पीसूँ फेर भी क्है सै मोटा पीसै
नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं
जेठ बुरा सै बीरा इस घर म्हैं
सौ सौ कोसाँ हठ कै चालूँ फेर बी कह्वै अड़कै चालै
नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं
जेठाणी बुरी सै बीरा इस घर म्हैं
पतळे पतळे मांडे पोऊँ फेर भी क्है सै मोटे पोवै
नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं
देवर बुरा सै बीरा इस घर म्हैं
दो दो तो मैं गींडो[2] ल्याऊँ फेर भी क्है सै भावज बुरी सै
नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं
नणंद बुरी सै बीरा इस घर म्हैं
सौ सौ के मैं सूट सिमा द्यूँ फेर भी क्है सै के दे दे सै
नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं
कंथ[3] बुरा सै बीरा इस घर म्हैं
मोरणी सी चाल चालूँ फेर बी क्है सै फूहड़ चालै
नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं
मैं ए भली सूँ बीरा इस घर म्हैं
सारे कुणबे की धू[4] ओटूँ[5] सूँ फेर भी क्हैं सैं मोटी होगी
नहीं नहीं हो गुजारा मेरा इस घर म्हैं

इस जकड़ी में एक स्त्री संयुक्त परिवार से अलग घर बसाना चाहती है क्योंकि उसे संयुक्त परिवार में रहना मुश्किल लगता है। घर के सभी लोग उसके काम में मीन-मेख निकालते रहते हैं। जहाँ ससुर को शिकायत है कि वह पूरा घूँघट नहीं निकालती, वहीं जेठ उसके चलने के ढंग को अड़ियल बताता है। जहाँ जेठानी उसके द्वारा बनाई गई रोटियों को मोटा बताती है, वहीं देवर उसे भाभी के रूप में बुरा बताता है। इसी प्रकार ननद की नाराज़गी इस बात को लेकर है कि वह उसे कुछ भी नहीं देती। यहाँ तक कि वह अपने

1. जैसा 2. गेंद 3. पति 4. धौंस 5. सहन करना

पति से भी नाराज़ है जो उसकी चाल को फूहड़ बताता है। अंत में वह कहती है कि इस पूरे घर में सिर्फ़ वही भली है, जो सारे कुनबे की धौंस सहन करती है।

नौकरी रे जाया नी करदे [25]

हे रे मेरा बीरा बेबे का कह्णा मान नौकरी रे जाया नी करदे
हे मेरी बेबे ओड़ै [1] जाँ दुनिया के लाल घणी [2] ए घबराया नी करदे
हे रे मेरा बीरा भावज की उमर निदान [3] छोड कै रे जाया नी करदे
हे मेरी बेबे बीराँ की ओळी [4] जात घणी ए मुँह लाया नी करदे
हे रे मेरा बीरा या नौ भाइयाँ की भाण घणी रे धमकाया नी करदे
हे मेरी बेबे मेरा कर दे माफ कसूर घणी ए छोह [5] आया नी करदे

इस जकड़ी में एक नवयुवक, जो नौकरी के लिए बाहर जाना चाहता है, उसके और उसकी बहन के बीच हुए संवाद का वर्णन है। बहन उसे उसकी नवविवाहित पत्नी का वास्ता देकर नौकरी के लिए जाने से रोकना चाहती है। भाई कहता है कि औरतों को ज्यादा मुँह नहीं लगाना चाहिए। लेकिन जब बहन उसे अपनी पत्नी को डाँटने-डपटने से रोकती है तो वह अपना कसूर स्वीकार कर लेता है और उससे क्षमा माँगता है।

पलटण म्हैं भरती हो ग्या [26]

बेले म्हैं दूध छोड ग्या ए बाँदी थाळी म्हैं खीर
पलटण म्हैं भरती हो ग्या ए बाँदी माँजाया बीर
ऊपर तैं सरद पड़ै सै ए बाँदी ठिरै [6] जमीन
बीचाळै [7] ठिरदा होगा ए बाँदी माँजाया बीर
ऊपर तैं धूप पड़ै सै ए बाँदी तपै जमीन
बीचाळै तपदा होगा ए बाँदी माँजाया बीर
आगै तैं चीन लड़ै सै ए बाँदी पाच्छै जापान
बीचाळै लड़दा होगा ए बाँदी माँजाया बीर
आगै तैं तोप चलै सै ए बाँदी पाछै बंदूक
किते ल्हुकदा [8] फिरदा होगा ए बाँदी माँजाया बीर

इस जकड़ी में एक स्त्री अपने सगे भाई द्वारा सेना में भोगे जाने वाले खतरों का वर्णन करती है। उसे चिंता है कि सर्दी में उसका भाई ठिठुरता होगा और गरमी में खुले आकाश के नीचे तपता होगा। एक तरफ चीन और दूसरी तरफ जापान के हमलों के बीच

---

1. वहाँ 2. ज़्यादा 3. नादान 4. उलटी 5. गुस्सा 6. ठिठुरना 7. बीच में 8. छिपता

उसका भाई मोर्चा थामे होगा। आगे से तोप और पीछे से बंदूक चल रही होंगी और उसका भाई अपनी जान बचाने के लिए कहीं छिपता फिरता होगा।

तूँ मेरी बेबे उरै आके ब्होत घणी मस्ताई ए [27]

सूबेसिंह की ब्याही आई काळा दामण ल्याई ए
ओढ पैह्र पाणी नै चाली जळगे [1] लोग लुगाई ए
पाणी भरके उल्टी आई आया पाया भाई ए
पतळे पतळे मांडे पोए आलू की तरकारी ए
आजे रे बीरा जीम ले जीमावै माँ की जाई रे
तूँ मेरी बेबे उरै आके ब्होत घणी [2] मस्ताई ए
दामण तो बीरा न्यू प्हैर्या था जलगे लोग लुगाई रे
कचिया धोती न्यू बाँधी मेरा बालम छुट्टी आया रे
सुरमा तो बीरा न्यू स्हार्या था आँख दूखणी आई रे
टीका बिंदी न्यू लाई थी पाणी भर के ल्याई रे

इस जकड़ी में बहन–भाई के बीच बहन के श्रृंगार को लेकर हुए संवाद हैं। अपनी ससुराल में एक औरत खूब सज–धजकर पानी भरने जाती है। जब वह वापस घर आती है तो उसे अपना भाई आया मिलता है। जब वह भाई को खाने पर बुलाती है तो भाई उसे सजी–धजी देखकर कहता है कि वह ससुराल आकर बहुत ज्यादा मस्ता गई है। इस पर बहन अपने घाघरे, साड़ी, सुरमा, टीका–बिंदी आदि से श्रृंगार करने के कारण गिनाती है।

ए बीर मेरा तो सादा भोळा [28]

ए बीर मेरा तो सादा भोळा ए भावज सै कळिहारी [3]
ए दिन म्ह तो मैं करूँ लामणी [4] रात पिसावै सारी
हे सासरे म्ह सासू कोनी ए पीहर म्ह माँ कोनी
ए ब्याहा पति परेदस डिगर [5] ग्या ए किस पै करूँ डिठोरा [6]
ए बारह्मै म्हीनै की बाराह तारिख फौजी छुट्टी आया
हे अपणै वो ठैह्र्या कोन्या ए घर साळे कै आया
हे आलू मटर टमाटर गोभी ए बढ़िया साग बणाया
हे जद वो फौजी जीमण लाग्या ए घालण [7] का जिकर चलाया
ओ पूरणमासी के सुण ओ बटेऊ दिन रैह्गे अठारा

---

1. जल गए 2. बहुत अधिक 3. झगड़ालू 4. फ़सल की कटाई 5. चला गया 6. घमंड 7. विदाई 8. तैयारी 9. जुबान चलाना 10. अधिक

ओ होळी पाछै आ ज्याइए इब ब्योंत[8] नहीं सै म्हारा
ए क्यूँ कर रही सै चरबर चरबर[9] दिल धड़कै सै मेरा
हे घणे [10] दिनाँ तैं छुट्टी आया ए जी ना लागै मेरा

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी, जो मजबूरी में अपने मायके में रह रही है, के कष्टों का वर्णन है। वह कहती है कि उसका भाई तो सीधा-सरल है, लेकिन उसकी भाभी बड़ी धूर्त है। वह उससे दिनभर तो खेत में काम करवाती है और रातभर अनाज पिसवाती है। जब मेरा पति छुट्टी लेकर आता है तो वह उसे ससुराल भेजने से भी मना कर देती है। इस पर वह स्वयं मुखर हो जाती है और अपनी भाभी को डाँटते हुए कहती है कि उसका पति बहुत दिनों बाद आया है और अब उसका मन मायके में नहीं लगेगा।

खड़्या ए लखावै उसका राजमल भाई [29]

रोटी तो लेके ए किरणाँ गई ए खेत म्ह
रोटी तो खा ले ओ मेरे राजमल भाई
रोटी ना खांदा रै मेरी किरणाँ लुगाई [1]
रोंदी [2] तो रोंदी ए किरणाँ घर नै री आई
हँसदा तो हँसदा ए राजमल घर नै री आया
रोटी तो खा ले ओ मेरे राजमल भाई
रोटी ना खांदा रै मेरी किरणाँ लुगाई
कुवे पडूँगा री माता जोहड़ पडूँगा
किरणाँ कै गेली [3] री माता सादी करवा दे
कुवै ना पड़िए रे बेटा जोह्ड़ ना पड़िए
किरणाँ की गेलाँ रे बेटा सादी करवा द्याँ
रोंदी तो रोंदी ए किरणाँ लगन लिखाया
हँसदा तो हँसदा ए राजमल लगन लिखाया
ईब बी समझले ओ मेरे राजमल भाई
कोन्या रै समझूँ मेरी किरणाँ लुगाई
रोंदी तो रोंदी ए किरणाँ फेर्याँ पै आई
हँसदा तो हँसदा ए राजमल फेर्याँ पै आया
ईब बी [4] समझ ले ओ मेरे राजमल भाई
कोन्या रै समझूँ मेरी किरणाँ लुगाई

---

1. पत्नी 2. रोती हुई 3. साथ 4. अब भी

रोंदी तो रोंदी ए किरणाँ घर नै री आई
हँसदा तो हँसदा ए राजमल घर नै री आया
ई बी समझ ले ओ मेरे राजमल भाई
पाटी[1] सै धरती ए बेबे[2] किरणाँ समा गी
खड्या ए लखावै[3] उसका राजमल भाई

इस जकड़ी में एक विचित्र घटना का वर्णन है जिसमें एक भाई का दिल अपनी ही बहन पर आ जाता है। एक दिन किरण अपने भाई राजमल के लिए खेत में खाना लेकर जाती है। वहीं पर राजमल उसे अपनी पत्नी कहकर पुकारता है। किरण रोती हुई जबकि राजमल हँसता हुआ घर आता है। घर आकर वह अपनी माँ को धमकी देता है कि अगर उसका विवाह किरण से नहीं हुआ तो वह आत्महत्या कर लेगा। उसकी माँ इस अनहोने विवाह के लिए तैयार हो जाती है। किरण विवाह के सभी संस्कार रोते-रोते पूरे करती है। अंत में उसकी पुकार सुन धरती फट जाती है और किरण धरती में समा जाती है। उसका भाई राजमल अवाक् खड़ा देखता रहता है।

ब्हाण भाई कै चाल पड़ी [30]

हाँ ए कोए बख्त[4] पड़े की बात ब्हाण भाई कै चाल पड़ी
ए भावज नै बता दिया खेत झाड़ उड़ै ऐडी तैं[5] चोटी
ए मनै बावन तारे फेर[6] भावज मेरी ल्याई ना रोटी
ए तड़के[7] तैं हो गई साँझ भावज मेरी ल्याई सै रोटी
हे री नणदी मरियो तेरा भरतार ईब लग ड्योळे[8] पै बैठी
हे री भावज मत ना मारै भरतार मैं कोन्या[9] तेरी रोटियाँ की भूखी
ए भावज नै बोल दिया बोल ओबरे[10] म्ह सुबकूँ खड़ी खड़ी
ए बाह्र्याँ तैं आया मेरा बीर भाण तनै क्याँ की भीड़ पड़ी
हे रे मत मरियो किसी की माँय माँय बिना बेटी ब्होत दुखी
ए मत रोवै सील संतोष भावज की ए कर द्यूँ खाट खड़ी
हे रे मत मारै बीर निरभाग भावज बिन्या सूनी साळ[11] पड़ी
हे रे या जामैगी नंदलाल बाप की या बेल बधावैगी

इस जकड़ी में अपनी भाभी द्वारा तंग की गई एक युवती के कष्टों का वर्णन है। ससुराल में किसी विपदा के कारण वह युवती कुछ दिनों के लिए अपने मायके आ जाती है। मायके में उसकी भाभी उससे खूब काम लेती है लेकिन समय पर खाना भी नहीं

---

1. फटी 2. बहन 3. ताकना 4. समय, संकट 5. से 6. चक्कर 7. सुबह 8. किनारे 9. नहीं 10. कमरे 11. घर

देती। इसके अतिरिक्त वह उसे हमेशा गालियाँ देती रहती है। जब युवती के भाई को इस बात का पता चलता है तो वह अपनी पत्नी को मारने पर उतारू हो जाता है। लेकिन वह युवती अपने भाई को रोकती है और कहती है कि मेरे लिए तुम अपना घर मत उजाड़ो।

ब्हाण धोखे म्ह मारी रै [31]

हे याणी की मरगी माय भाभियाँ धोरै[1] सोंदी ए
हे आधी की लग आई प्यास भावज पै पाणी माँग्या ए
हे मेरी बडणी भावज बदमास मूत बाछे[2] का ल्याई ए
हे मनै पैहला लाग्या मास ब्हाण मेरा हीया काचा[3] ए
हे मनै दूजा लाग्या मास ब्हाण मनै चक्कर आवैं ए
हे मनै तीजा लाग्या मास हीया मेरा राबड़ी माँगै ए
हे मनै चौथा लाग्या मास ब्हाण मेरा गात गरणाया[4] ए
हे मनै पाँचमाँ लाग्या मास बीर नै धोरै बिठाई ए
हे बेबे साचम साच बताय गरभ तेरै किस बिद[5] होया ए
हे रे बीरा याणी[6] की मर गयी माय भाबियाँ धोरै सोंदी रे
हे रे आधी की लग आई प्यास भावज पै पाणी माँग्या रे
हे रे मेरी बडणी भावज बदमास मूत बाछे का ल्याई रे
हे बेबे जे जामै नंदलाल सीस धरती म्ह धर द्यूँ ए
हे बेबे जे जामै बाछ्याँ की जोट सीस सोनै जड़वा द्यूँ ए
हे मनै नोमा लाग्या मास बीर मेरै धोरै सो ग्या ए
हे वो सो ग्या चादर ताण जोट बाछ्याँ की खेलै ए
हे बीरे की उघड़ी आँख ब्हाण तो मरी ए पड़ी सै ए
हे रै गोरी जाइयो सित्यानास ब्हाण धोखे म्ह मारी रै

इस जकड़ी में एक भाई द्वारा अपनी बहन की असामान्य मृत्यु पर बिलखने का वर्णन है। एक लड़की, जिसकी माँ बचपन में ही गुजर गई थी, अपनी भाभियों के पास सोती थी। एक रात उसे प्यास लगी और उसकी सबसे बड़ी भाभी ने धोखे से उसे पानी की जगह बछड़े का मूत्र पिला दिया। वह लड़की गर्भवती हो गई। जब उसके भाई को इस बात का पता चलता है तो उसे विश्वास नहीं होता। फिर भी वह बच्चा पैदा होने तक यह चेतावनी देकर इंतज़ार करता है कि अगर उसे इनसान का बच्चा पैदा हुआ तो वह उसे जान से मार देगा। समय आने पर वह बछड़ों की जोड़ी को जन्म देती है, लेकिन प्रसव-पीड़ा में मर जाती है। अंत में भाई अपनी पत्नी को कोसता है कि उसने धोखे से मेरी बहन को मरवा दिया।

1. पास 2. बछड़े 3. कच्चा 4. उभरना 5. तरह 6. छोटी 7. धुलाना 8. जंगल, वन

बेबे ए मनै मार्‌या ब्हणोइया [32]

बेबे ए मेरे हाथ धुवाइए[7] पाछै धुवाइए पिस्तौल
बीर के गादड़ मारे के रे बणी[8] के मारे सेर
बेबे ए ना गादड़ मारे ना ए बणी के मारे सेर
बेबे ए मनै मार्‌या ब्हणोइया तेरा तो मार्‌या भरतार
बीर तेरै कीड़े पड़ियो याणी[1] का मार्‌या भरतार
बीर मनै न्यू तो बता दे कड़ै[2] सी मारे भरतार
बेबे ए सीसम कै नीचे ड्योळे पै पड़ी उसकी ल्हास

इस जकड़ी में एक भाई द्वारा अपने बहनोई की हत्या और इस पर बहन द्वारा उसे शाप दिए जाने का वर्णन है। एक दिन भाई बहन के पास आता है और बहन से अपने खून से सने हाथ धुलवाने के लिए कहता है। बहन के पूछने पर वह बताता है कि उसने किसी और की नहीं; बल्कि उसी के पति की हत्या की है। यह सुनकर वह अपने भाई को शाप देती है कि वह कीड़े पड़कर मरेगा। फिर वह लाश के बारे में पूछती है। भाई बताता है कि उसके पति की लाश शीशम के पेड़ के नीचे खेत में पड़ी है।

मन म्हैं छा ग्या पाप बीर [33]

छुट्‌टी दे दे छुट्‌टी दे दे ओ छुट्‌टी दे सरकार
सात साल मन्नै आए नै हो लिए घरक्याँ[3] का के हाल
ले दस द्‌यन की छुट्‌टी ब्हाण वो आण[4] ब्हाण कै डट ग्या[5]
ए मौसै सेती करी निमसते जीजै तैं हाथ मिलाया
बेला भर दूधू का ल्याई रे म्हैं ए तिरै मळाई
रे बैठ्‌या हो कै पी ले बीर प्यलावै माँ की जाई
पतळे-पतळे मांडे पोए आलू का साग बणाया
रे आज्या रे बीरा जीम ले जिमावै माँ की जाई
जीम जूठ कै बैठ गए बतळाए ब्हाण र भाई
रे घणे दिनाँ म्हैं छुट्‌टी आया रे के ल्याया मेरा भाई
बीस हजार रप्पैये ले र्‌या ए सोना ले र्‌या धोरै
ए आज आज बेबे तेरै डट ग्या ए तड़कै जाँ माँ धोरै
ऊपरले कमरे म्हैं बीर तेरी खाट बिछा राक्खी
रे सोड़ सोड़िए रे दरी गींडवे रे उड़ै फुँचा राक्खी
आधी रात सिखर तैं ढळगी ए ठा ली खून कटारी

1. कम आयु की 2. कहाँ 3. घर वाले 4. आकर 5. रुक गया

रे ऊठ बीर मेरा बैठ्या हो ले रे जिंदगी हो ली पूरी
मत ना मारै भानमती ए बेबे मैं तेरा छोटा भाई
ए किसनै बाळक मामा क्हैंगे कुण आवै तेरै भाती
ठा ली खून कटारी बीर या पड़ती कोन्या रे
रे मन म्हैं छा ग्या पाप बीर मेरै बस की कोन्या रे
आधी रात प्हैर का तड़का ए बैठ स्हैळ म्हैं रोई
ए मेरे सुसरे नै मेरे पति नै ए मार दिया मेरा भाई

इस जकड़ी में पैसे के लालच में बहन द्वारा एक सैनिक की हत्या किए जाने का प्रसंग है। सात साल के बाद एक फ़ौजी दस दिन की छुट्टी लेकर आता है और रास्ते में अपनी बहन की ससुराल में रुक जाता है। बहन उसकी खूब आवभगत करती है। बातों-बातों में उसे पता चलता है कि उसके भाई के पास बीस हजार रुपये और कुछ सोना है। यह जानकर बहन के मन में पाप छा जाता है। आधी रात के समय वह कटारी लेकर भाई के पास आती है और उसे जान से मार देती है। मारने के बाद वह रोना-धोना शुरू कर देती है और अपने छोटे भाई की हत्या का आरोप अपने ससुर और पति पर लगा देती है।

एके था बीर [34]

मेरा बीरा छुट्टी आया ए बेबे आया सै आज
उसनै बटुआ खोल के दिखाया ए बेबे सौ सौ के नोट
मेरी सैसड़ के पाप जाग ग्या ए बेबे रांधी सै खीर
त्हों [1] जलदी भोजन खा ले रे बेटा लाग्याई भूख
ईसी के खीर रांध दी री मौसी आवै सै नींद
मेरै भी इसे म्हैं घाल दे सास री लाग्याई भूख
तन्नै [2] बार बार समझाऊँ ए बिमलां थाळी म्हैं जैह्र
तेरा जाइयो सत्यानास सास री एके था बीर
त्हों ब्होत बावळी र्‌हैगी ए बिमलां मिलगे सैं नोट
नोटाँ कै आग लगाऊँ सास री एके था बीर
मैं राज कँवर नै ब्याहूँ सास री कुण भरै भात

इस लोकगीत में बहन की सास द्वारा पैसे के लालच में एक परदेसी की की गई हत्या का प्रसंग है। परदेसी अपनी बहन की ससुराल जाता है। जब उसकी बहन की सास

1. तू 2. तुझे

उसका रुपयों से भरा हुआ बटुआ देखती है तो उसके मन में पाप जाग जाता है। वह उसकी खीर में जहर मिला देती है। जब उसकी बहन को पता चलता है तो वह अपनी सास को कोसती हुई कहती है कि उसका तो एक ही भाई था। सास उसे समझाते हुए कहती है कि देखो हमें कितने रुपये मिल गए हैं। लेकिन बहन ऐसे रुपयों को आग लगाने को कहती है।

भाई नै राण्ड कुह्वा दी[35]

ए दस दिन की छुट्टी आया यो आँतें[1] सुसरैड़ चाल्या
हे री माता थाळी म्हैं खीर सिळा[2] दे अर बिच म्हैं जैह्र मिला दे
हे री माता न्यारी न्यारी सिळा दे मेरे जीजे नै ढोल जिमा दे
ए वा छोरी पाणी नै चाली वा हाथ हलाकै[3] चाली
ओ पिया खीर कती[4] ना खाइए खीराँ म्हैं जैह्र मिलाया
हो साळे खीर कती ना खाँगे डाक्टर नै पर्हेज बताया
ए सासू नै जमाई पकड़्या साळे नै सीस उतार्या
ए वा छोरी उलटी आई आँगण म्हैं थाणा बैठ्या
हे बेटी कोठे[5] म्हैं मत बड़िए[6] कोठे म्हैं चीज़ बड़ी भार्या
ए उनै कोठा खोल के देख्या या ल्हास पड़ी बळ खा र्ही
हे बेटी कहो तो कैद करा द्याँ कहो तो सूळी तुड़वा द्याँ
ए भाई नै रांड[7] कुह्वा दी भावज नै रांड ना कुव्हाऊँ
ए थाणे नै थबकी[8] मारी जुग जियो हीर की जाई

इस जकड़ी में एक परदेसी की उसकी ससुराल में उसके साले द्वारा जहर देकर हत्या करने का प्रसंग है। परदेसी दस दिन की छुट्टी लेकर आता है और अपनी पत्नी को लिवाने ससुराल चला जाता है। उसका साला अपनी माँ से कहकर उसकी खीर में जहर मिलवा देता है। पत्नी के इशारा करने पर परदेसी खीर खाने से मना कर देता है। लेकिन उसकी सास और साला मिलकर उसकी गरदन काट देते हैं। जब उसकी पत्नी पानी लेकर वापस आती है तो अपने घर में पुलिस को आया पाती है। पुलिस कहती है कि अगर वह चाहे तो उसके भाई को फाँसी हो सकती है। लेकिन वह कहती है कि हालाँकि भाई ने उसे विधवा कर दिया है, लेकिन वह अपनी भाभी को विधवा नहीं होने देगी। यह बात सुनकर पुलिस उसे शाबाशी देती है।

---

1. आते ही 2. ठंडी करना 3. हाथ के इशारे से मना करना 4. बिलकुल 5. कमरे 6. प्रवेश करना 7. विधवा 8. पीठ थपथपाई 9. आर्यसमाज 10. जलसा

सुण ले बीर बलवान रे [36]

सुण ले बीर बलवान रे मेरी सुणदा जाइए
आरियां [9] का ज्हलसा [10] हो रह्या रे बीरा देखण जाइए
कव्हैंगे ग्यान की बात रे बीरा ध्यान लगाइए
तेरे तैं छोटा तेरा बीर रे उसनै खूब पढ़ाइए
तेरे तैं छोटी तेरी भाण रे उसनै आरियां कै ब्याहिए
जै तेरे हो ज्या नंदलाल रे बीरा जाप्पे पै बुलाइए
गंठी गळसरी बूजनी रे बीरा भावज पै दिवाइए

इस जकड़ी में एक बहन अपने भाई बलवान से आर्यसमाज के जलसे में जाकर ज्ञान की बात सुनने और गुनने का आग्रह करती है। बहन का मानना है कि आर्यसमाज के सिद्धांत उसके भाई को और भी गुणवान बना देंगे। उसे आशा है कि आर्यसमाजी होने पर उसका भाई बलवान अपने छोटे भाई को खूब पढ़ाएगा, अपनी छोटी बहन का विवाह किसी आर्यसमाजी परिवार में करेगा और जीवन के सभी संस्कारों को बखूबी निभाएगा।

हो ज्या रे बीरा आरिया [37]

गिह्वाँ [1] म्हैं सिरसम [2] बीरा बो देई
हाँ रे खिल रे सैं बाड़ी के से फूल हो ज्या रे बीरा आरिया [3]
माता का धोकणा रे बीरा छोड दे
हाँ रे माता तो कहिए अपनी माँय हो ज्या रे बीरा आरिया
देबी का धोकणा [4] रे बीरा छोड दे
हाँ रे देबी तो कहिए थारी [5] ब्हाण हो ज्या रे बीरा आरिया
दारू [6] का पीणा रे बीरा छोड दे
हाँ रे दारू तैं बिक ज्याँ डुँग्हे क्यार [7] हो ज्या रे बीरा आरिया
जूए का खेलणा रे बीरा छोड़ दे
हाँ रे जूए म्हैं बिक ज्या ब्याही नार हो ज्या रे बीरा आरिया
भजनाँ का सुणना रे बीरा सीख ले
हाँ रे भजनाँ म्हैं हो ज्यागा सुधार हो ज्या रे बीरा आरिया

इस जकड़ी में एक बहन अपने भाई से आर्यसमाजी बनकर सभी अंधविश्वासों और कुरीतियों को त्याग देने का आग्रह करती है। वह चाहती है कि उसका भाई अपनी माँ

1. गेहूँ 2. सरसों 3. आर्यसमाजी 4. पूजना 5. तुम्हारी 6. शराब 7. उपजाऊ खेत 8. बहन

और बहन को ही देवी मानकर उनका सम्मान करे। वह चाहती है कि उसका भाई शराब पीना और जुआ खेलना छोड़कर बुराइयों से दूर रहकर आर्यसमाज के भजन गाए, जिससे उसका जीवन सुधर जाएगा।

बीरा रे ब्होत दुखी तेरी भाण [38]

लिख परवाना बीरे धोरै गेर्या बीरा रे ब्होत दुखी तेरी भाण
रोटी खांते नै चिट्ठी मिलगी बेबे [8] ए थाळी म्हैं रहगे दोनूँ हाथ
मात पिता ए उसके बूझण लागे बेटा रे बांच सुणा दे दोए बात
राजी खुसी री माता सबकी नमस्ते माता री मेरे ते जल्दी काम
लीला सा घोड़ा बीरा चढ़ आया बेबे ए खोलो बजर किवाड़
साची साच बता दे बेबे बेबे ए कित सोवै नरभाग
ऊपर सोवै तेरा रे ब्हणोइया बीरा रे खूंटी नंगी तलवार
सास जिताई मेरा सुसरा जिता दिया बीरा रे मेरे पै घर लिया ध्यान
कित सै बेबे ए मेरा ब्हणोइया, कित से बेबे ए नंगी तलवार
ऊपर सोवे तेरा ब्हणोइया बीरा रे बोले से गंदी जबान
दम दम करता म्हैलाँ चढ़ ग्या जीजा ओ खोलो बजर किवाड़
इब लग [1] तो जीजा बाळक घणे [2] थे जीजा ओ इब होगे साँ जवान
इब लग तो हम तेरी सुणैं थे जीजा ओ इब होगे हुसियार

इस जकड़ी में एक दुखी स्त्री द्वारा पत्र के माध्यम से अपने भाई को संदेश देने और भाई द्वारा तत्काल पहुँच कर उसके कष्ट का निवारण करने का प्रसंग है। बहन की ससुराल पहुँचकर उसे पता चलता है कि उसका बहनोई गलत संगत में पड़कर जुआरी बन गया है। उसने धीरे-धीरे पूरे घर और परिवार को गिरवी रख दिया है। यह जानकर वह सीधे चौबारे में चला जाता है, जहाँ उसका बहनोई सोया हुआ है। बहनोई को सावधान करते हुए कहता है कि वह उसकी बहन को तंग करना छोड़ दे।

द्होरा द्होरा रे बीरा मेरा [39]

द्होरा [3] द्होरा रे बीरा मेरा ऊगण [4] का खेत भोळा ऊगण का खेत
आँवताँ तो जाँवताँ [5] बाई नै तावड़ा जे [6]
जाइयो जाइयो ए बाई मेरी तार्‌याँ की छाँह भोळी तार्‌याँ की छाँह
आइयो चंदै कै च्यानणै [7] जे

1. अब तक 2. अत्यधिक 3. कठिन 4. पूर्व दिशा 5. आते-जाते 6. धूप 7. प्रकाश 8. बबूल 9. आसान 10. बहन

द्होरा द्होरा रे बीरा मेरा जेठै का साथ भोळा जेठै का साथ
द्होरा है सूड़ भँबूळ[8] का जे
स्होरा स्होरा[9] ए बाई[10] मेरी जेठै का साथ भोळी जेठै का साथ
स्होरा है सूड़ भँबूळ का जे
द्होरी द्होरी रे बीरा मेरा झड़[1] की रे आग भोळा झड़ की रे आग
द्होरा चमासै का पीसणा जे
बळज्या[2] बळज्या ए बाई मेरी झड़ की ए आग भोळी झड़ की ए आग
घमड़क[3] पीसो पीसणा जे
जेठा जेठा रे बीरा मेरा बंबी का नाग भोळा बंबी का नाग
देवरिया संपळोटिया जे
बड़ज्या बड़ज्या ए बाई मेरी बंबी का नाग भोळी बंबी का नाग
गैल[4] पड़्या संपळोटिया जे
क्हैदे क्हैदे रे बीरा मेरा मन की रे बात भोळा मन की रे बात
माँ ए मेरी नै कह्या जे
माँ ए कह्या सै रे बाई नै ले घर आय भोळा ले घर आय
बाप कह्या धी[5] मेरी घर भली जे
पाटज[6] पाटज ए धरती द्यो न बिवाड़[7] भोळी द्यो न बिवाड़
जिनके तो जामी[8] न्यू क्हवैं जे

इस जकड़ी में दैनिक जीवन की कठिनाइयों के संबंध में एक बहन और भाई के बीच हुए संवाद का प्रसंग है। जब भाई अपनी बहन से मिलने उसकी ससुराल जाता है तो बहन अपने जीवन के दुखड़े उसके सामने रोना शुरू कर देती है। भाई उसे समझाते हुए सांत्वना देता है और उसे और भी दृढ़-निश्चयी और सहनशील बनने की सलाह देता है। अंत में बहन पूछती है कि क्या उसे मायके में बुलाया गया है। भाई स्पष्ट बता देता है कि माँ ने तो उसे बुलाया है, लेकिन पिता ने मना कर दिया है। यह सुनकर बहन का हृदय दुख से फट पड़ता है और वह धरती में समा जाना चाहती है।

••••

1. बरसात का मौसम 2. जल जाए 3. ज़ोर लगाकर 4. पीछे 5. बेटी 6. फट जाए 7. विवर, शरण 8. जन्मी

प्रेमिका

देखण गई तमासा ए[40]

कमला बेब्बे ताई गेल्याँ[1] *देखण गई तमासा ए*
नळके ऊपर बैठ परलै पार उतर गी ए
मेरी कमला बेबे पाई कोन्या कड़ै डिगर गी[2] *ए*
बाबल तो ए मेरा थाणेदार सै बीर मेरा पटवारी ए
उनकी इज्जत तार ब्हाण कुरसी पै धर गी ए
ऐ मेरी कमला बेबे पाई कोन्या कड़ै डिगर गी ए
मोटर साइकल और सकूटर पडूया पुलिस का लारा ए
चाचे ताऊ मेरे भाई भतीजे हांडैं[3] *मारे मारे ए*
उनकी इज्जत तार भाण कूवै पै धर गी[4] *ए*
मेरी कमला बेबे पाई कोन्या कड़ै डिगर गी ए

इस जकड़ी में एक लड़की के तमाशा देखने के बहाने घर से भाग जाने का प्रसंग है। वह अपनी ताई के साथ तमाशा देखने जाती है, लेकिन चुपके से बीच से ही गायब हो जाती है। उसका थानेदार पिता पूरी पुलिस को उसे ढूँढ़ने में लगा देता है, लेकिन उसकी कोई खोज-खबर नहीं मिलती। कई दिन तक उसका चाचा, भाई, भतीजे उसे खोजते हुए मारे-मारे फिरते हैं, लेकिन वह कहीं नहीं मिलती। दुनिया कहती रहती है कि वह अपने इज़्ज़तदार घर की इज़्ज़त उतारकर पता नहीं कहाँ चली गई?

त्हारे अगले र पछले यार[41]

गडरिए का भेड चरावै म्हारा ब्होत करै नुकसान
जाट की रै ड्योळे[5] *पै चराऊँ तेरा कुछ ना करैं नुकसान*
गडरिए के म्हारै घर आइए उड़ै[6] *बिछ रही सतरंग सेज*
जाट की रै नाम न जाणूँ ना जाणूँ तेरा मकान
गडरिए के नाम खजानी हेली[7] *कै आगै नीम*
गडरिए का सांझै ए आ ग्या आँदे[8] *नै ली साँकळ भेड़*[9]

---

1. साथ 2. चली गई 3. भटकना 4. रख गई 5. खेत की मेंड़ 6. वहाँ 7. हवेली 8. आते ही 9. बंद करना

गडरिए का पड़कै सो ग्या मेरै धर छाती पै हाथ
जाट की ए पड़कै सो गी वा धर पंठ्याँ[1] पै हाथ
रात के बार्हा बज गे मेरे छुट्टी आए भरतार
जाट की रै ईब मरूँगा तेरे छुट्टी आए भरतार
गडरिए के मरणे ना द्यूँगी बदले म्हैं खपा द्यूँ ज्यान
गडरिए के ब्हार लिकड़ ज्या दीवे कै मार दे फूक
पति ए मेरा बुखते[2] आया वो हाथाँ म्हैं ले र्या तलवार
पिया ओ के गादड़ मारे के मारे बणाँ के सेर
गोरी रै ना गादड़ मारे ना मारे बणाँ के सेर
गोरी रै मन्नै वैं ए मारे त्हारे[3] अगले र पछले यार

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी के विजातीय व्यक्ति से हुए प्रेम और उसके पति द्वारा उसके प्रेमी को मार देने का प्रसंग है। वह स्त्री अपने खेत में रोज एक गडरिए को भेड़ें चराते हुए पाती है। धीरे-धीरे उसको उस गडरिए से प्रेम हो जाता है वह उसे रात के समय अपने घर आने का निमंत्रण देती है। गडरिया दिन छिपते ही उसके घर पहुँच जाता है और दोनों दरवाजा बंद करके सो जाते हैं। उसी रात परदेसी घर आ जाता है और दरवाजा खटखटाता है। वह स्त्री दीये को बुझाकर अँधेरा कर देती है ताकि गडरिया वहाँ से भाग सके। लेकिन परदेसी सब जान जाता है और वह भी घर से बाहर निकल जाता है। सुबह मुँह अँधेरे जब परदेसी वापस आता है तो वह उसके हाथ में खून में सनी तलवार देखती है। पत्नी के पूछने पर वह बताता है कि उसने कोई गीदड़ या शेर नहीं मारे बल्कि अपनी पत्नी के नए-पुराने सभी प्रेमियों को खत्म कर दिया है।

वा तो बान्नै बैठ लेई [42]

इन बागाँ तैं ब्हैर लिकड़ ले आड़ै[4] डटण का काम नहीं
मैं राजा का राज कँवर सूँ तन्नै री मालण पिछाण्या[5] नहीं
जिसका मार्या फिरै भरमदा वा तो बान्नै बैठ लेई
जाइए री मालण बुलाकै ल्याइए बागाँ म्हैं आ र्हे तेरे पति
ऊठ चंदरकलाँ बैठी हो ले बागाँ म्हैं आ र्हे तेरे पति
अपणे पति की हे स्यान[6] देख कै जोड़े दोनूँ हाथ खड़ी
कर दे माफ कसूर पति जी जोड़ें हो दोनूँ हाथ खड़ी
मरे पै दुनिया रै जा दूसरे कै जींदे[7] पै जांदी[8] तूँ देखी
अपणा रै ले ले मेरा दे दे इसमैं कोए तकरार नहीं

1. बाल, जुल्फ़ 2. सवेरे, जल्दी 3. तुम्हारे 4. यहाँ 5. पहचाना 6. श्क्ल, सौंदर्य 7. जीवित 8. जाती हुई

इस जकड़ी में कई वर्षों तक पति के घर न आने पर मज़बूर पत्नी द्वारा दूसरा विवाह कर लेने का प्रसंग है। एक परदेसी एक बाग में आकर रुकता है तो मालिन उसे पराया व्यक्ति जानकर वहाँ से चले जाने के लिए कहती है। उसका परिचय पाकर मालिन उसे पहचान जाती है और कहती है कि जिस चंद्रकला नामक युवती के प्यार में वह भटकता फिर रहा है, उसका तो विवाह होने वाला है। वह मालिन के हाथों चंद्रकला को बाग में बुलाता है। चंद्रकला अपने पति को पहचान जाती है और दोनों हाथ जोड़कर अपनी गलती के लिए क्षमा माँगती है। इस पर वह कहता है कि एक पति के मरने पर दूसरा विवाह करना दुनिया का रिवाज़ है। लेकिन एक पति के जिंदा रहते हुए दूसरा पति सिर्फ़ वही कर रही है। अंततः वह अपनी नियति से समझौता कर लेता है।

बैठी रै मौज उडाइए [43]

हे रै सुख च्हाँदी[1] हो तो बेट्ठी रै मौज उडाइए
घर आळी यो घर भी तेरा मन्नै [2] मिल ज्या लोभ कमाई
तेरे कैसी हूर मिलै तो बेट्ठी नै भी ठाऊँ कोन्या
सौ सौ बाँदी पास रव्हैं तेरै सौ बाताँ के ठाठ लाऊँ
इतणी हो ली देर गोरी इब मेरे म्हैं ला ले मेर [3]
मेरे म्हैल म्हैं चाल गोरी चौगरदे[4] को नज्जर फेर
किते पंखे र किते पिलंग सणी के तूँ उन पै लोट लगाइए
हे रै सुख च्हाँदी हो तो बैठी रै मौज उडाइए
कोटन का कमीज गोरी दूस्टैंड लगवाया करिए
आडी टेढ़ी मांग गोरी हर्‌या रंग लाया करिए
जापानी तेरी घड़ी ल्या दूँ हाथ कै सजाया करिए
जग्हाँ जग्हाँ पै कोठी रै गोरी चौगरदे कै फिरणा होगा
घर की चालै कार गोरी धरती पै पाँ धरणा [5] कोन्या
फेर होज्याँ रै तेरै मन के चाहे तूँ आँख मार बतळाइए
हे रै सुख च्हाँदी हो तो बैठी रै मौज उडाइए
पायाँ म्हैं तेरै ईड़ी बीड़ी घुँघरूवाँ की लागी लार
कानाँ म्हैं तेरै डांडी बाळे माथे ऊपर साजी स्हार
सिर के ऊपर चीर जरी का घोटा और किनारी रै
छम छम कर दी चाल्या करिए ज्यब उठैगी झनकार
धोळे धोळे दांदाँ[6] म्हैं रै तूँ मेख गडाया करिए
हे रै सुख च्हाँदी हो तो बैठी र मौज उड़ाइए

---

1. चाहती 2. मुझे 3. प्रीत 4. चारों तरफ़ 5. पाँव रखना 6. दाँत

इस कलियों वाली जकड़ी में एक पुरुष एक नारी को अपने साथ चलने और आनंदपूर्वक पूरे जीवन मौज़ उड़ाने का प्रस्ताव करता है। वह उसके रूप पर अत्यंत मोहित है और उसे पाने के लिए कुछ भी करने को तैयार है। वह कहता है कि वह उसके लिए सौ-सौ नौकरानियाँ रख देगा ताकि उसे छोटे से काम के लिए भी उठना न पड़े। वह उसे सुख-सुविधा से संपन्न महल का भी लालच देता है। वह उसके लिए तरह-तरह के वस्त्र, आभूषण, मोटरगाड़ी आदि उपलब्ध कराने को तैयार है। वह उसे हर तरह की छूट देने को तैयार है बशर्ते वह उसके साथ विवाह कर ले।

देखण की छोरी भोळी ढोळी [44]

हे बारा [1] बज्याँ नै छुट्टी होई कोलिज आळ्याँ [2] की
हो आगै आगै छोरे[3] लिकड़े गैल छोरी थी
हे पीठ फेर के देखण लागे छोरी आवैं थी
हे साइकल ऊपर बैठ निरमलां वाज[4] लगावै थी
रै टैरीकोट का सूँट निरमलां जंफर [5] ढीला सै
रै देखण की छोरी भोळी ढोळी बोल रसीला सै
ओ मेरी साइकल का टैर फूट ग्या तेरे बतलाणे म्हैं
ओ मात पिता मेरे छोह् म्हैं आवैं वारी[6] जाणे म्हैं
रै अड्डे ऊपर चाल निरमलां टैर घला द्यूँगा
रै मेरी गैल्याँ चाल निरमलां भाड़ा भर द्यूँगा
रै मात पिता तेरे छोह्[7] म्हैं आवैं जतन बता द्यूँगा
रै मास्टर जी नै पेपर ले लिया होगी देर मनै
ए सारी छोरी पढ़के आई निरमलां ना आई
हे बाबल के घर ऐड सुवासण[8] देर कित लाई
ओ मास्टर जी नै पेपर ले लिया होगी देर मनै

इस जकड़ी में कॉलेज में पढ़ने वाले एक लड़के और एक लड़की के बीच पनपते प्यार का ज़िक्र है। कॉलेज की छुट्टी होने पर लड़के लड़कियों का झुंड बाहर निकलता है। निर्मला नाम की लड़की एक लड़के को आवाज देकर बुलाती है। लड़का उसके रूप की प्रशंसा करता है। बातें करते-करते उन्हें देर हो जाती है तो लड़की यह सोचकर घबरा जाती है कि उसके माँ-बाप क्या कहेंगे? लड़का उसे एक बहाना बनाने के लिए कहता है कि प्रोफ़ेसर ने पेपर लिया था, इसी कारण देर हो गई। घर जाकर लड़की यही कारण बताती है और डाँट से बच जाती है।

1. बारह 2. वालों 3. लड़के 4. आवाज़ 5. कुरता 6. देर से 7. गुस्सा 8. युवती, रजस्वला

वो तो मेरै जेठ का बेटा [45]

वो तो पतळा घणा ए वो तो सुथरा घणा ए
वो तो मेरै जेठ का बेटा ए बाँदी
वो तो बागाँ म्हैं जावै वो तो मेवा ए खावै
उसनै घराँ बलाके[1] ल्याइए ए बाँदी
तेरी होई सै गरज[2] तेरी होई सै मरज
तेरी चाची घराँ बुलावै रे भाई
तेरै के री गरज तेरै के री मरज
तनै बाँदी हाथ बलाया री चाची
मेरै चढ़ी रे जवानी तेरै नहीं रे जनानी
तेरा चाचा बूढ़ा हो रह्या रे भाई
मेरा छोड़ दे हाथ मनै आवै सै ल्हयाज[3]
मेरा चाचा आवण न हो र्‌या री चाची
मेरे फूटे री करम तेरै नहीं री सरम
तेरा लागूँ आखर[4] बेटा री चाची

इस जकड़ी में एक स्त्री द्वारा अपने जेठ के युवा बेटे पर मोहित हो जाने का वर्णन है। उस स्त्री का पति बूढ़ा हो गया है। कामाग्नि में जलती उसकी निगाह अपने जेठ के खूबसूरत बेटे पर जा पड़ती है। वह अपनी नौकरानी को भेजकर उसे अपने पास बुलाती है और उसका हाथ पकडकर् अपने साथ प्रेम करने के लिए मनाती है। लेकिन वह लड़का शर्म के मारे जमीन में गड़ जाता है और कहता है कि वह तो उसके बेटे के समान है। साथ ही उसे डर है कि कहीं उसका चाचा न आ जाए।

लड़की नै रोप दिया चाळा [46]

जगन सेठ के दरवाजे पै बाबे नै अलख जगाई
जगन सेठ की कमला बेटी वा भिकस्या घालण[5] आई
पतळा सुथरा छैल गाबरू तनै किस बिद लेई फकीरी
याणै[6] के माँ बाप मरे थे भाइयाँ नै देई फकीरी
पतळी सुथरी ब्यावहण जोगी तू इब लग फिरै कंवारी
मेरे पिता नै करी सगाई उनै माँगी जहाज हवाई
मेरे पिता की रे सरधा[7] कोन्या मैं इस बिद रही कंवारी
लांबी ओ नैड़[8] तळे नै कर ले तेरै घालूँगी ओ फुलमाळा

1. बुलाकर 2. ज़रूरत 3. शर्म 4. आखिर 5. डालने 6. बच्चा 7. गुंजाइश, ब्यौंत 8. गरदन

इब घालैगी रै फेर काढ़ैगी[1] तूँ साफ रैह्ण दे टाळा
मैं घालूँगी ओ कुण काढ़ैगी या तेरे गळे की माळा
जाइए ए बाँदी राजे नै बलाइए लड़की नै रोप दिया चाळा[2]
के बेटी ए पतियाँ की भुक्खी मोड्डे कै घाल देई माळा
बीस बरस की हो गी ओ पिता जी कदे ज्यकर[3] सुण्या ना ब्याह का
आधा तो ए उसनै राज दे दिया बेटी का दे दिया ड्योळा[4]
हे रै मोड्डे रै जा इसनै ले ज्या तेरा करम जोर कर र्ह्या सै

इस लोकगीत में एक युवती द्वारा परिवार वालों की इच्छा के विरुद्ध एक युवा संन्यासी से विवाह करने का प्रसंग है। जगन सेठ के दरवाज़े पर एक साधु भिक्षा के लिए आता है तो जगन सेठ की बेटी कमला उसके रूप पर मोहित हो जाती है। पूछने पर वह बताता है कि बचपन में ही उसके माँ-बाप मर गए थे और भाइयों के दुर्व्यवहार ने उसे फ़कीरी लेने पर मज़बूर कर दिया। कमला भी अब तक इसलिए कुँवारी है क्योंकि उसका पिता पर्याप्त दहेज़ देने में असमर्थ है। कमला फ़कीर के सामने शादी का प्रस्ताव रखती है। आरंभिक झिझक के बाद फ़कीर उससे विवाह करने को तैयार हो जाता है। सेठ को मज़बूर होकर अपनी बेटी धन-धान्य सहित फ़कीर के साथ विदा करनी पड़ती है।

बुरज नीचै कुण खड़्या जी आधी रात [47]

चँदा तेरी च्यानण[5] सी रात बुरज नीचै कुण[6] खड़्या जी आधी रात
आइयो गोरी लांबै सै बजार हमारे केळे रस भरे जी आधी रात
खोलो ज्यानी अजड़ किवाड़ हमारे नींबू रस भरे जी आधी रात
एक बै गोरी पुठी[7] बिग ज्याय[8] हमारै धोरै दूसरी जी आधी रात
जाइयो ज्यानी तेरा सित्यानास टाबर[9] छोरे रोंवदे जी आधी रात
चँदा तेरी च्यानण सी रात बुरज नीचै कुण खड़्या जी आधी रात
आइयो ज्यानी लांबै सै बजार हमारे नींबू रस भरे जी आधी रात
खोलो गोरी अजड़ किवाड़ हमारे केळे रस भरे जी आधी रात
एक बै ज्यानी पुठा बिग ज्याय हमारै धोरै [10] दूसरा जी आधी रात
जाइयो गोरी तेरा सित्यानास पग पै परचा [11] तैं लिया जी आधी रात

इस लोकगीत में एक स्त्री और पुरुष के बीच विवाहेतर प्रेम का ज़िक्र है। आधी रात को चाँदनी के प्रकाश में एक नारी की नज़र बुर्ज के नीचे खड़े एक पुरुष पर पड़ती

---

1. निकालेगी 2. कमाल 3. ज़िक्र 4. डोली 5. चाँदनी 6. कौन 7. वापस 8. चली जा 9. बच्चे 10. पास 11. तुरंत बदला

है। पुरुष उसे अपने घर आने का आमंत्रण देता है। जब वह उसके ठिकाने पहुँचती है तो वह यह कहकर उसे वापस भेज देता है कि इस समय वह किसी और स्त्री के साथ है। वह उसे यह कहकर कोसती हुई वापस आ जाती है कि उसके कारण उसने अपने बच्चों को रोते हुए छोड़ा है। अगली रात को वे फिर मिलते हैं। इस बार स्त्री उसे अपने ठिकाने पर आने का निमंत्रण देती है। लेकिन जब वह उसके घर पहुँचता है तो वह यह कह देती है कि इस समय उसके पास कोई अन्य पुरुष है। वह भाँप जाता है कि उसने उससे बदला लिया है। वह भी उसे कोसता हुआ वापस चला जाता है।

रंग म्हैल म्हैं आ ज्याइए [48]

पढ़ण आळी के मोल सै रै तेरा मुँह बटुआ सा गोळ सै रै
तूँ किस छोरे का पिस्तौल सै रै तूँ रंग मैह्ल म्हैं आ ज्याइए
आप पसीना ले ल्याँगे रै तूँ हलवे र पूरी खा ज्याइए
मेरी रै गेल्लाँ[1] मोहब्बत कर ले सौ का सूट सिमा द्यूँगा
काख [2] के म्हैं घालूँ रेडिया हरी जारजट ल्या द्यूँगा
ज्यब कोलेज म्हैं तैं लिकड़ण लागै आँगळी ईसारा मत करिए
कदे छोरियाँ नै जाण पाट ज्या ल्हयाज सरम का डर करिए
ज्यब छुट्टियाँ का रैस्ट मिलैगा हो खड़्या गेट पै पा ज्याइए
रै चौबीस घंटे रहूँ अकेला टेम लगै ज्यब आ ज्याइए
फैल होण तैं डरिए मत ना रै परचा फस्ट दिवा द्यूँगा
दे मास्टर नै कोड़ हूर तेरा प्हैला नंबर दिवा द्यूँगा
रंग चायाँ[3] के दिन न्यारे हो सैं रै सिर पै मोड़ बँधावाँगे
पढ़ण आळी तेरी चाह्ना [4] कोन्या रै अपणा ढूँड [5] बसावाँगे

इस लोकगीत में कॉलेज में पढ़ने वाले एक युवक और युवती के बीच पनपे प्रेम का जिक्र है। युवक युवती की सुंदरता पर मोहित होकर उसे अपने ठिकाने पर आमंत्रित करता है। वह उसे तरह-तरह के प्रलोभन देता है। लड़की उसकी बातों में आ जाती है और कहती है कि जब कॉलेज की छुट्टी हो, वह गेट पर मिल जाए। वह कहता है कि वह तो हरदम अकेला ही रहता है, जब भी उसे समय मिले, वह आ जाए। कुछ दिन की मुलाकात के बाद वह लड़की उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखती है। लेकिन युवक कहता है कि अब उसे उसकी चाह नहीं है। वह तो किसी और के साथ शादी करके अपना घर बसाएगा।

---

1. साथ 2. बगल 3. चाव 4. इच्छा 5. घर

बाँदी ए आधा द्यूंगी ए राज [49]

ओ सब लोग नौकरी नै जाँय थम घर बैठे कैसे जी
राणी रै सब की गठड़ी म्हैं दाम हाम तो नरसे [1] रैह् गए जी
राजा हो गळ का द्यूँगी चंदणहार हाथाँ के द्यूँगी छैनड़े जी
बांदी ए चढ़ के चूबारै हे देख राजा कितसिक[2] जा लिए जी
राणी ए जा लिए कोस पचास घोड़ा हिणस्या [3] फौज म्हैं जी
बांदी हे झटपट तळै [4] उतर्याय साँकळ किसनै खुड़काइयाँ[5] जी
बाँदी ए झटपट चूल्हा-चौका लीप ब्हामणै [6] नै ढोल जिमाइयाँ जी
बांदी ए चढ़ कै चुबारै ए देख राजा कितसिक आ लिए जी
राणी ए आ लिए कोस पचास घोड़ा हिणस्या बाग म्हैं जी
बांदी ए झटपट नीचै उतर्याय ब्हामणै नै बाह्र लिकाड़ियाँ[7] जी
बांदी ए साची दे न बताय सेजाँ मैली क्यूँ करी जी
राजा हो राणी की दूखै थी आँख आँतां पाँतां लोटदी जी
बांदी ए साची दे न बताय चूल्हा-चौका क्यूँ कर्या जी
राजा हो राणी के आ रे थे बीर[8] चूल्हा-चौका न्यू कर्या जी
बांदी ए साची दे न बताय गालाँ बुड़के[9] क्यूँ भरे जी
राजा हो छींकै लड़ती बिलाई लड़ती लड़ती ढ्है [10] पड़ी जी
बांदी ए तूँ मेरी माँ जाई भाण तनै मेरी ज्यान बचाइयाँ जी
बांदी ए आधा द्यूँगी ए राज आधा बालमा सौंप द्यूँ जी

इस लोकगीत में एक विवाहित स्त्री के पर पुरुष गमन और नौकरानी द्वारा उसके पति से चतुराईपूर्वक यह बात छिपा लेने का रोचक प्रसंग है। पत्नी अपने गहने बेचकर पति के लिए घोड़ा खरीदवाती है और उसे नौकरी के लिए दूसरे देश में भेज देती है। पति की गैरहाज़िरी में वह अपने प्रेमी के साथ रंगरलियाँ मनाती है। बीच-बीच में वह नौकरानी से अपने पति के आवागमन की खबर लेती रहती है। जब पति वापस आता है और उसे अपने घर की हालत देख कुछ शक होता है तो वह नौकरानी से सवाल-जवाब करता है। नौकरानी बड़ी चतुराई से अपनी मालकिन के प्रेम-प्रसंग को छिपा जाती है। उसकी वाक्पटुता से खुश होकर उसकी मालकिन उसे अपनी आधी दौलत और यहाँ तक कि आधा पति भी सौंप देने का वचन देती है।

---

1. गरीब 2. कहाँ तक 3. हिनहिनाया 4. नीचे 5. खटखटाई 6. ब्राह्मण 7. निकालो 8. भाई 9. काटने के निशान 10. गिर पड़ी

भीड़ी चूड़ी ओ मनियारे [50]

सीधी सरड़क नैहर की ओ भर पटड़ी पटड़ी आ ज्याइए
अमली नीचै बैठके ओ भर भीड़ी[1] चूड़ी प्हरा[2] ज्याइए
भीड़ी चूड़ी ओ मनियारे हाय छोड़ दे मर ज्याँगी
मैं बाळक तू मलंग गाबरू देख गात[3] नै डर ज्याँगी
म्हारी गळी म्हैं आ ज्याइए ओ भर उड़ै आरता कर द्यूँगी
काके ताऊ अगड़ पड़ोसी माथै मोड़ बंधा द्यूँगी
ए बोळी बेटी सील सती ए तनै रोप्या असल पवाड़ा[4] ए
मेरा जमाई रामकिसन था ले ज्यागा[5] मनियारा ए

इस लोकगीत में एक युवती और चूड़ी बेचने वाले मनियार के बीच हुए प्रेम-विवाह का प्रसंग है। युवती मनियार को अपने खेत में आकर चूड़ी पहना जाने के लिए कहती है। वहाँ दोनों में प्रेमालाप होता है। अगले दिन युवती मनियार को अपने घर आने का निमंत्रण देती है और वहाँ सबके सामने उसके गले में वरमाला डाल देती है। लाचार घरवाले उसे कोसते हुए कहते हैं कि उसने तो गजब कर डाला। वे तो उसे उसके पति के साथ भेजने की तैयारी कर रहे थे और वह मनियार के साथ चली जा रही है।

हे एक साइकिल आळा [51]

ए म्हारा डैह्र तळे का खेत खेत म्ह एकली का जाणा
हे एक साइकिल आळा छैल मेरै तो दे लिया घेरा
हे रै छोरी साचम साच बता दे तूँ ब्याही सै क कुँवारी सै
ओ छोरे झूठ बोलूँ ना मूळ[6] मैं तो छोरे असल किँवारी सूँ
हे रै छोरी मोटे मोटे हाथ हाथाँ म्ह तेरै चूड़ी भी कोनी
ओ छोरे इबकी छोरी आजाद चूड़ी तो म्हारै प्हैरैं भी कोनी
हे रै छोरी मोटे मोटे नैण नैणाँ म्ह तेरै स्याही भी कोनी
ओ छोरे भाइयाँ की आवै ल्ह्याज[7] स्याही तो म्हारै घालैं[8] बी कोनी
हे रै छोरी भूरा कचिया गात गळे म्ह तेरै माळा भी कोनी
ओ छोरे सैह्र[9] तळे का गाम माळा तो म्हारै प्हैरैं भी कोनी
हे रै छोरी बचनाँ म्ह बोलै ठीक जणु तो तनै छोडूँ भी कोनी
ओ छोरे बीरे का दूर ए खेत नहीं तो तनै बोलूँ भी कोनी

इस जकड़ी में एक युवती और एक अनजान राहगीर के बीच हुए संवाद का वर्णन

1. तंग 2. पहना 3. शरीर 4. विघ्न 5. जाएगा 6. बिलकुल 7. लाज 8. डालना 9. शहर

है। युवती खेत में जा रही है। रास्ते में उसे एक युवक मिलता है। युवक उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। युवती भी उसके सवालों का बेबाकी से जवाब देती है। अंत में युवक उससे प्रणय-निवेदन करता है। युवती भी उसकी ओर आकृष्ट प्रतीत होती है। लेकिन वह उसके प्रणय-निवेदन को विनम्रता से ठुकरा देती है। वह कहती है कि उसके भाई का खेत यहाँ से काफ़ी दूर है। अगर वह कहीं आस-पास होता तो वह उससे बोलने की हिम्मत भी नहीं करती।

कोलेज के छोरे बदमास [52]

मनै सोळ्हा कर लेई पास एक रैह् गी बाकी
मैं गई कोलेज कै बीच हाथ म्ह कापी
मैं बैठी कुरसी बीच लटक रही चोटी
कोलेज के छोरे बदमास खींच लेई चोटी
छोरे दिन की करा देऊँ कैद रात की फाँसी
छोरी कर दे माफ कसूर आवाँगे तेरै भाती
छोरी दुनिया म्ह पड़ै किलकार कोलेज के भाती
छोरी थाळी म्ह ढाई हजार और रैहगे बाकी

इस जकड़ी में एक युवती के साथ कॉलेज में हुई छेड़छाड़ का प्रसंग है। युवती एम. ए. में पढ़ती है। एक दिन वह हाथ में किताब लिए कुर्सी पर बैठी थी कि कॉलेज के एक लड़के ने उसकी चोटी खींच ली। गुस्से में भरकर वह युवती उसे जेल में भिजवा देने की धमकी देती है। युवक को अपनी गलती का एहसास हो जाता है। वह उसे अपनी बहन बना लेता है और वादा करता है कि वह उसके बच्चों की शादी में अपने साथियों के साथ उसके घर भाती बनकर आएगा और उसकी इ़ज़्ज़त को बढ़ाएगा।

तेरे जंफर पै निज़र पड़ी [53]

च्यार सखी ए हम पाणी नै गई एक सखी ए पाच्छे तैं रळी [1]
कूए के ऊपर पुलस खड़ी एक पुलसिए की निज़र पड़ी
पाणी प्या [2] *दे रै छोरी मर्या तिसाया* [3] *रै छोरी*
पाड़छे म्ह नेजू र डोल धरे पाणी पी ले ओ छोरे
पाणी की रै मनै प्यास भी नहीं तेरे जंफर पै निजर पड़ी
कुण से गाम म्ह ब्याह राखी के बण र्या सै रै तेरा पति
खेड़ी खांडै ब्याह राखी बड़ा अफसर सै मेरा पति

---

1. पीछे से मिली 2. पिला 3. प्यासा

बैठ ले स्कूटर जुड़ी[1] खड़ी तनै बुलावै तेरा पति
छिड़कूँ मटिया तेल बदन म्ह आग लगी
आप ले ज्यागा मेरा पति

इस जकड़ी में एक पुलिस वाले के एक युवती से किए गए प्रणय–निवेदन का वर्णन है। सहेलियों के साथ वह युवती पानी भरने कुएँ पर गई और देखा कि वहाँ पुलिस खड़ी हुई है। एक पुलिस वाला उसके रूप पर मोहित हो जाता है और पूछता है कि उसका पति क्या काम करता है? जब युवती उसे बताती है कि उसका पति एक बड़ा अफसर है तो पुलिस वाला उसे कहता है कि वह उसके स्कूटर पर बैठ जाए ताकि वह उसे उसके पति के पास पहुँचा दे। यह सुनकर युवती आग बबूला हो जाती है। वह उसे धमकी देती है कि वह मिट्टी का तेल छिड़ककर स्कूटर को आग लगा देगी।

देखी ना इसी हूर घणी रै सरमावै सै[54]

खड़्या गेट पै पाइए ओ छोरे त्यार मनै
बूझूँगी दोए बात सुणी ओ तकरार मनै
मुँह बटुवा–सा नाक सुवा–सा माथै बिंदी ला र्‌ही रै
ढूँगे ऊपर काळी चोटी नाग–सी फफारी रै
म्हारै रै बाग म्ह आवै रै मेवा खावै सै
देखी ना इसी हूर घणी रै सरमावै सै
पंजाबी की लड़की कहिए पैंट र बुरसट प्हरै ए
साबण तेल अतर की सीसी टंकी नीचै न्हावै ए
लांबे–लांबे बाळाँ म्ह खसबोई तेल रमावै ए
म्हारै रै बाग म्ह आवै रै मेवा खावै सै
देखी ना इसी हूर घणी रै सरमावै सै
निरमलाँ के जायाँ पाछै आधा हो ग्या माड़ा[2] रै
म्हारे कमरे म्ह आया करदी दो घंटे बतळाया करदी
मीठी–मीठी बाणी बोलै प्यार सा बँटाया करदी
म्हारे रै बाग म्ह आवै रै मेवा खावै सै
देखी ना इसी हूर घणी रै सरमावै सै

इस जकड़ी में एक युवक और युवती के बीच पनपते प्यार का वर्णन है। दोनों छिप–छिपकर बाग में मिलते हैं। दोनों में मीठी तकरार भी होती है। युवक उसके सौंदर्य

1. तैयार 2. कमज़ोर

पर कुर्बान है और तरह-तरह से उसका मन बहलाता है। लेकिन जब वह युवती कहीं और चली जाती है तो उस युवक का मन नहीं लगता। वह उसकी याद में दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होता जाता है।

इब अपणा ढूँढ़ बसावाँ [55]

ए कमला र बिमला संतोस किरसना ए पढ़ण चाल पड़ी
हे आगै सी क जाकै [1] किरसना ए न्यारी पाट गी
ए कोलिज म्ह तैं छोरे लिकड़े तीन डिजान के
कोए पंदरा कोए सोळ्हा ए कोए सतरा साल के
हे ज्यद छोरे की होई सगाई छोरी नै बेरा पाट्या [2]
ओ क्यूँ छोरे तनै लेई सगाई ओ मैं तेरै पढ़ण आळी
हे रै ब्याह सादी के रंग चाह न्यारे रै माथै मोड़ बँधावाँ
हे रै पढण आळी छोड देई रै इब अपणा ढूँढ [3] बसावाँ

इस जकड़ी में एक युवती और एक युवक के बीच खत्म हुए प्रेम-प्रसंग का वर्णन है। कृष्णा नाम की लड़की सहेलियों के साथ कॉलेज में पढ़ने जाती है। वहाँ एक युवक से उसका प्रेम हो जाता है। लेकिन कुछ समय बाद उस युवक की सगाई कहीं और हो जाती है। पता चलने पर वह युवती उससे पूछती है कि जब वह उससे प्रेम करता है तो उसने दूसरी जगह सगाई क्यों करवाई ? इस पर वह युवक कहता है कि प्यार-प्रेम अपनी जगह है और शादी-विवाह अपनी जगह। वह स्पष्ट कह देता है कि अब वह प्यार-व्यार के चक्कर छोड़कर अपना घर बसाने की सोच रहा है।

रे घराँ चाल पटुवै के [56]

खड़ी रे म्हैल पै रुक्के मारूँ [4] रै बोल पटुवै के
रे गठड़ी खोल पटुवै के
तेरी गठड़ी म्ह के ले र्या रे मनै सही बता दे मोल पटवै के
रे गठड़ी खोल पटुवै के
घोटा पेमक फूल सुतारे डोरा तेरे तबीज का
बोलण जोगी [5] स्यान कोनी छोरी तेरी कमीज की
और के जादा जिकर करूँ रे घराँ चाल पटुवै के
रे गठड़ी खोल पटुवै के

---

1. जाकर 2. पता चला 3. घर 4. आवाज़ लगाऊँ 5. योग्य

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा गलियों में साजो-सिंगार का सामान बेचने वाले एक युवक पर मोहित होने का प्रसंग है। गली में सामान बेचने वाले की आवाज़ सुनकर वह युवती छत पर चढ़ जाती है और उससे पूछती है कि वह अपनी गठरी में क्या-क्या लिए हुए है? अपने साजो-सामान के बारे में बताते-बताते जब वह उसके रूप-सौंदर्य की प्रशंसा भी कर देता है तो युवती उस पर मोहित हो जाती है और उसे अपने घर आने का निमंत्रण देती है।

घालूँगी तेरै माळा [57]

हे तों सोळा साल की हो री हे तों इब के बाळक रह री
हे ब्याह करवा ले रामरती ए ना उमर कटैगी तेरी
हे एक बाबा धूण ला र्या
ओ लंबी नैड़ तळे नै कर ले ओ घालूँगी [1] तेरै माळा
हे रै मेरा कोले [2] तैं रंग काळा हे रै तूँ चंदे धोरै[3] तारा
हे रै आँख खोलके देख रति रै कदे बण म्ह रोप दे चाळा
हो तों भूरा हो चहे काळा हो तों मेरी निंग्हा म्ह आ र्या
हो लांबी नैड़[4] तळे नै करले ओ घालूँगी तेरै माळा

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा एक संन्यासी के साथ प्रेम-विवाह करने का प्रसंग है। परिवार वालों के बार-बार आग्रह करने पर भी वह युवती विवाह के लिए तैयार नहीं होती। लेकिन एक दिन एक रमते जोगी पर उसकी नज़र पड़ जाती है। वह उसके सामने विवाह का प्रस्ताव रखती है। संन्यासी के मना करने के बावजूद वह कहती है कि उसका मन अब उस पर आ गया है। चाहे वह गोरा हो या काला, अब वह उसी के गले में वरमाला डालेगी।

मेरै ईब निंग्हाँ म्हैं आया [58]

भार्या पेड्डा नींबू का ए किसे भागवान नै लाया
ग्हैरी छाँयाँ नींबू की ए एक फौजी बिस्तर ला रह्या
आड़े तैं बिस्तर ठा[5] ले ओ हो म्हारा कहिए बाग जनाना
तू निरभाग लुगाई [6] रै हे रै तन्नै काच्ची निंदरा ठाया
म्हारे कमरे म्हैं आइए ओ हो मेरै ईब निंग्हाँ [7] म्हैं आया
कंध का दामण धर्या[8] सै ओ हो मन्नै कदे ना तन कै लाया
ओढ प्हैर पाणी जाऊँ ओ हो छोर्याँ म्हैं बैठ्या पाइए

1. डालूँगी 2. कोयले 3. पास 4. गरदन 5. उठा 6. औरत 7. निगाह 8. रखा

ज्यब मेरी चाल निंग्हाइए ओ हो कमरे म्हैं आण बताइए
चालै चाल गजब की रै हे रै कुछ लांबी डिंग धरै सै
बोलै बोल रसीले रै हे रै पटवारी नै माफ करै सै।

इस लोकगीत में एक परदेसी और उसकी पत्नी के बीच एक बाग में हुई मुलाकात का वर्णन है। नींबू के पेड़ की गहरी छाया में एक फ़ौजी आराम कर रहा है। नायिका आकर उसे वहाँ से चले जाने को कहती है। लेकिन तत्काल वह उसे पहचान जाती है और अपने घर ले जाती है। वह उसे कहती है कि जब वह ओढ़-पहनकर पनघट पर जाए तब वह गली में बैठकर उसकी चाल परखे। बाद में उसकी प्रशंसा करता हुआ कहता है कि उसकी चाल गज़ब की है। उसका बोल पटवारी के बोल से भी ज़्यादा रसीला है।

ओ पढणिए [59]

मेरा धोळा[1] सूँट सिमा दे ओ पढणिए लीली[2] सी वैल
मैं रोटी लेके आऊँ ओ पढणिए कोल्यज के बीच
तूँ प्हैल्याँ दूधू पी ले हो पढणिए पाच्छै[3] तैं सीत[4]
तूँ दूध कड़े तैं[5] ल्याई रै किरसना मिलता ना सीत
तूँ म्हारे गाम म्हैं आइए हो पढणिए राँधूँगी खीर
तेरी पैंट्याँ पै चिड़िया छापूँ ओ पढणिए बुरसट पै फूल
तेरी चर चर चिड़िया बोलै हो पढणिए उड़ ज्यागा फूल

इस जकड़ी में एक लड़की का एक पढ़ने वाले युवक के प्रति अनुराग दिखाया गया है। वह उसके लिए सज-धजकर कॉलेज में खाना ले जाने को तैयार है। और तो और जिस मौसम में छाछ तक मिलनी मुश्किल होती है, उस मौसम में वह उसके लिए दूध का प्रबंध करती है। वह लड़का पूछता है कि वह दूध कहाँ से लाएगी? वह उसे अपने गाँव में आने का निमंत्रण देती है, जहाँ वह उसके लिए खीर बनाएगी। यही नहीं वह उसकी पैंट और कमीज़ पर चिड़िया और फूलों के कसीदे भी काढ़ना चाहती है।

कदे तो छुट्टी आवैगा [60]

धोळे[6] से कुवे पै नीर भरूँ थी
पाणी प्या दे रै छोरी रै रेसम के लहंगे आळी
पाणी ओ पी ले भर रोटी ओ खा ले
होक्का पी ले म्हारे न्होरे[7] म्हैं ओ राही के जाणे आळे

1. सफ़ेद 2. नीली 3. बाद में 4. लस्सी 5. कहाँ से 6. धवल, सफ़ेद 7. बैठक

किसे भागवान की बेटी सै रै तूँ
किसे भागवान कै ब्याह राखी रै रेसम के लहंगे आळी
बेटी सूँ मैं भले घराँ की
इसे मूरख कै ब्याह राखी ओ जळ्या[1] छोड के नौकर डिगर ग्या
मेरी रै गैलां[2] ब्याह करवा ले
बेठी मौज उड़ाइए रै हे रै रेसम के लहंगे आळी
ब्याह र सगाई के दो दो हो सैं
कदे तो छुट्टी आवैगा ओ राही के जाणे आळे

इस लोकगीत में एक परदेसी की पत्नी और एक राहगीर के बीच पनघट पर होने वाले वार्तालाप का वर्णन है। राहगीर उसे पानी पिलाने के लिए कहता है तो वह औरत उसे आतिथ्य भाव के नाते खाना खाने और हुक्का पीने के लिए भी कहती है। यह सुनकर राहगीर उस पर रीझ जाता है और उसके घर-परिवार के बारे में पूछता है। जब उसे पता चलता है कि वह अपने पति के परदेस जाने से व्यथित है तो वह उसे अपने साथ चलने और आनंदपूर्वक जीवन बिताने की बात कहता है। इस पर वह कहती है कि ओ राही! सगाई और विवाह दो-दो बार नहीं होते। मेरा पति कभी तो छुट्टी आएगा।

मेरै पाछै कुणबा भारी [61]

ऊपर राम तळै[3] धरती ए मेरा कोए ना जगत म्हैं साथी
बडळी[4] जेठाणी बदमास घणी ए मैं एकली ड्हैर[5] म्हैं घाली
डैह्र्याँ म्हैं हरी हरी दूब खड़ी ए मनै बांध्या जबर[6] भरोटा
राही छोड बटेऊ ओ हो भर मनै ठवा के जाइए
पतळी सूथरी भतेरी रै हे रै तूँ एकली डैह्र म्ह आ रही
एकली मत ना समझिए ओ हो मेरै पाछै कुणबा भारी
सुसरा नंबरदार मेरा ओ मेरी सासु घर की राणी
जेठा हाळी लोग मेरा ओ जेठाणी जिवारे आळी
देवर बी.ए. पास मेरा ओ दुराणी म्हैल की राणी
ब्याह्या जा र्‌या सै फौज म्हैं ओ दुनिया की करण भलाई

इस जकड़ी में एक सैनिक की पत्नी द्वारा खेत में एक राहगीर की प्रेमभरी बातों के प्रतिकार का प्रसंग है। सैनिक की पत्नी को बेसहारा-सी मानकर उसकी बड़ी जेठानी

1. जालिम 2. साथ 3. नीचे 4. बड़ी 5. सिंचित खेत 6. भारी

उसे घास लेने के लिए अकेले ही खेत में भेज देती है। हरी-हरी दूब का गट्ठर बाँधकर वह उसे उठवाने के लिए एक राहगीर को आवाज़ देती है। राहगीर उसे अकेला देखकर उसकी सौंदर्य की प्रशंसा करता है और उसे रिझाने का प्रयास करने लगता है। उसकी बदनीयत पहचान कर वह उसे चेतावनी देते हुए कहती है कि वह अकेली नहीं है, उसके पीछे बहुत भारी परिवार है। सास, ससुर, जेठ, जेठानी, देवर, देवरानी की हैसियत बताती हुई वह अपने पति के बारे में कहती है कि वह दुनिया की भलाई के लिए फ़ौज में गया हुआ है।

मेरै तो तूँ पासंग भी कोन्या [62]

मेरे सिर पै रोटी दाळ रोटी ले गी हाळी की
मैं लिकड़ी बिचली[1] गाळ[2] के छोर्याँ नै बोली मार दई
भाई किस छोरे की नार[3] चाल पै चाळा[4] पाड़ रही
भर उस छोरे की नार छोडकै ओ नौकर जा र्‌ह्या सै
तेरे भूरे भूरे हाथ हाथाँ म्हैं तेरै चूड़ी भी कोन्या
भर कर रही बी.ए. पास चूड़ी तो कदे प्हैरी भी कोन्या
तेरे मोटे मोटे नैण नैणाँ म्हैं तेरै स्याही भी कोन्या
भर भले घराँ की बेटी स्याही तो कदे घाली भी कोन्या
तेरी लांबी लांबी नाड़[5] गळे म्हैं तेरै हार भी कोन्या
भर जमाना सै बेईमान हार कदे[6] प्हैर्‌या बी कोन्या
तेरी भरमाँ भरमाँ छाती गोदी म्हैं तेरै लाल भी कोन्या
भर छोड नौकरी जा र्‌ह्या लाल की तो च्हैना[7] भी कोन्या
हे रै तूँ मेरी गेल्याँ[8] चाल आड़ै तो तेरा आदर भी कोन्या
तूँ किसे रांड का सांड मेरै तो तूँ पासंग[9] भी कोन्या

इस लोकगीत में खेत में रोटी लेकर जाती हुई एक परदेसी की पत्नी और एक मनचले के बीच हुए संवाद का ज़िक्र है। जब उस मनचले को पता चलता है कि उसका पति परदेस गया हुआ है तो वह उससे पूछता है कि इतनी सुंदर और युवा होने के बावजूद उसने बिलकुल भी शृंगार नहीं किया तो वह कहती है कि पति के परदेस होने पर भले घर की लड़कियाँ बनती-सँवरती नहीं हैं। वह मनचला उससे कहता है कि तुम मेरे साथ चलो क्योंकि यहाँ पर तो तुम्हारी कोई इज़्ज़त नहीं है। इस पर वह उसे गाली देती है और उसके किसी भी प्रकार से अपने लायक न होने की बात कहकर उसका तिरस्कार कर देती है।

1. बीच वाली 2. गली 3. पत्नी 4. कमाल 5. गरदन 6. कभी 7. इच्छा 8. साथ 9. आस-पास

मेरठ के मारे थाणेदार [63]

ब्हाण[1] मेरी रेसम की चूँदड़ी छोटी ए नणदल मेरी साथ
भाण पाणी नै गई थी रस्ते म्हैं मिल्या थाणेदार
भाण मेरे पाँ[2] पकड़े थे दोनूँ तैं जोड़े उसनै हाथ
भाण मन्नै ठोकर मारी परे नै हो ले बदमास
भाण तलवार दिखाई डरती तै हो ली उसकै गेल
भाण कोठी पै ले ग्या कोठी म्हैं घल रही सोफा सेट
भाण ऊँकी[3] ब्याही आई ब्याही तै बूझै मन की बात
भाण मन्नै साच बता दे क्यूकर हूया थारा[4] प्यार
भाण म्हारा प्यार नहीं सै सीता ए रावण आळा बैर
भाण ऊपर नै देख ले खूँटी पै धरी तलवार
भाण उँका पाच्छा[5] फिर गया धुर[6] तै ए तारी उसकी नैड़[7]
भाण मन्नै चिट्ठी गेरी जल्दी सी आइए भरतार
जळे ओ मेरठ म्हैं पड़ी सूँ मेरठ के मारे थाणेदार

इस जकड़ी में एक थानेदार द्वारा एक युवती के अपहरण और युवती द्वारा उसकी हत्या कर देने का प्रसंग है। एक दिन वह युवती पानी भरने गई थी। रास्ते में उसे थानेदार मिल गया। थानेदार उस पर मोहित हो जाता है, लेकिन वह युवती थानेदार को झिड़क देती है। थानेदार उसका अपहरण करके अपने घर ले जाता है। वहाँ पहुँचने पर थानेदार की पत्नी को जब वास्तविकता का पता चलता है तो वह स्वयं उस युवती को आत्मरक्षा के लिए तलवार थमा देती है। मौका पाकर वह युवती उस थानेदार की गर्दन धड़ से अलग कर देती है।

हे बेईमान डरावण लाग्या [64]

मरद घाट पै न्हाण[8] गई थी ए अपणै दिल नै ठाड्डा[9] करकै
हे बेईमान डरावण लाग्या काळे पीळे दीदे[10] करकै
घूँघट के म्हैं रोवण लागी ए तरलै[11] होठ नै ढीला करकै
हे बेईमान भळोवण[12] लाग्या मीठे बोल रसीले करकै
मेरी रै परी नै सीस झुकै लिया मेरे पै के नाट्या[13] जा सै
मेरे पति नै डाळ झुका लिया मेरे पै के काट्या जा सै

इस जकड़ी में एक युवती और युवक की अचानक हुई मुलाकात का वर्णन है।

---

1. बहन 2. पाँव 3. उसकी 4. तुम्हारा 5. पीठ 6. जड़ 7. गरदन 8. नहाने 9. मज़बूत 10. आँखें 11. निचले 12. फुसलाने 13. मना करना

एक दिन वह युवती अपना दिल मज़बूत कर मर्दाना घाट पर स्नान करने चली जाती है। वहाँ उसे एक अजनबी युवक मिलता है जो उसे काली-पीली आँखें करके डराने लगता है। जब वह युवती डर के मारे रोने लगती है तो वह युवक मीठे बोल बोलकर उसे बहलाने लगता है। शीघ्र ही दोनों प्रेमपाश में बँध जाते हैं।

छोड़ूँगी आपणा ब्याहा [65]

चूँदड़ी झिलमिल की ए ओढूँ तो पाट जे चाळा[1]
पाणी नै गई थी ए कूवे पै बेठ्या बिच्यारा[2]
पाणी तो मन्नै प्या दे रै मैं घणे[3] *दिनाँ का तिसाया*[4]
पाणी तो तन्नै प्या द्यूँगी ओ टोकणी का नीर निवाया[5]
गैल[6] *तेरै चालूँगी ओ छोड़ूँगी आपणा ब्याह्या*
गैल तन्नै ले ज्याँगा रै मेरा छोटणा भाई सै किँवारा
फेर तन्नै देखूँगा रै तूँ किसा क बसावैगी दिवारा[7]
मेरा के देखैगा ओ मैं तो हिल्या हिलाया नारा[8]
पाणी के थारे भर द्यूँगी ओ टोकणी के बजा द्यूँ बार्हा
रोटी ओ तेरी पो द्यूँगी ओ चढ़वा द्यूँ चून उधारा
और के चाइए सै ओ भाइयाँ तैं पाड़ द्यूँ न्यारा[9]

इस लोकगीत में एक बिगड़ैल औरत द्वारा अपने ही तरीके से घर बसाने का वर्णन है। वह पनघट पर पानी लेने जाती है तो एक राहगीर उसे पानी पिलाने के लिए कहता है। पानी पिलाते समय वह उस पर मोहित हो जाती है और अपने पति को छोड़कर उस राहगीर के साथ जाने को तैयार हो जाती है। राहगीर कहता है कि मैं तुझे ले तो जाऊँगा, लेकिन अपने छोटे भाई के लिए, जो कुँवारा है, और फिर देखूँगा तू कैसा घर बसाती है? इस पर वह तपाक से कहती है कि मेरा क्या देखेगा? मैं तो अनुभवी बैल की तरह हूँ। वह कहती है कि वह उनके लिए पानी भर देगी, लेकिन पीतल की टोकनी के बारह बजा देगी। वह उनके लिए रोटी तो बना देगी, लेकिन आटा पड़ोस से उधार लेकर। और तो और, वह अपने करतबों से दोनों भाइयों को अलग कर देगी।

••••

1. कमाल हो जाए 2. बेचारा 3. बहुत 4. प्यासा 5. गरम 6. साथ 7. घरवासा 8. बैल 9. अलग करना

पत्नी

हाळी लोग कै ब्याही [66]

मेरी बिंदी पै रिमझिम हो रही ए कट्या रूप पै चाळा[1]
ए रोटी ले कै गई खेत म्हैं साइकल आळा[2] छोरा
गाम बता दे गोरी नाम बता दे रै भेद बता दे सारा
हे रै पतळी सुथरी हूर कामणी रै सिर पै धर्या[3] जिवारा[4]
गाम जाणदी[5] ना नाम जाणदी ओ भेद जाणदी ना सारा
ओ सीसम नीचै हळिया जोड़ र्ह्या खास मेरे घरआळा
डूब गए रै तेरे माई अर बाबू रै डूब गया तेरा भाई
हे रै पतळी सुथरी हूर कामणी रै हाळी[6] लोग कै ब्याही
ना डूबे ओ मेरे माई अर बाबू ओ ना डूब्या मेरा भाई
ओ पढ़दे पढ़दे कै करी सगाई ओ फेर लाग ग्या हाळी

इस जकड़ी में एक किसान की पत्नी का एक राहगीर से संवाद है। सज–धजकर किसान की पत्नी अपने किसान पति का खाना लेकर खेत को जा रही है। रास्ते में एक साइकिल सवार उस पर मोहित हो जाता है और उसका नाम व पता पूछना चाहता है। जब उसे पता चलता है कि वह एक किसान की पत्नी है तो राहगीर उसके माता–पिता और भाई को कोसने लगता है, जिन्होंने इतनी ज्यादा सुंदर लड़की को एक किसान के साथ ब्याह दिया। इस पर वह औरत अपने परिवार वालों का बचाव करती हुई कहती है कि विवाह के समय तो उसका पति पढ़ रहा था; किसान तो वह बाद में बन गया।

पति ओ मेरा स्याल ल्या दे [67]

पति ओ मेरा स्याल[7] ल्या दे दुनिया म्हैं पड़ै क्यलकारी[8]
हीरे मोती लाग रहे कानी[9] जाळीदार हो
चाँदी के तो तार खिंचा दे स्योने की झुमकार हो
अल्लें पल्लें बाग बगीचे बीच म्हैं अनार हो
रातराणी फूल स्याही[10] अत्तर[11] की म्हैकार हो

---

1. कमाल 2. वाला 3. रखा 4. किसान और बैलों के लिए दोपहर का भोजन 5. जानती 6. हलधर 7. शाल 8. किलकारी 9. कोने 10. शाही 11. इत्र

गैंदा मरवा फूल चमेली बीच म्हैं गुलाब हो
ईसा[1] बीज बखेर पति हो जिसनै बोवै दुनिया सारी
ओ मेरा स्याल ल्या दे दुनिया म्ह पड़ै क्यलकारी
रंगे डंगे छापे हुए पूरे अस्सी गाम[2] हों
मेंहदा, लेहड़ा, देहड़ा जड़ म्हैं माँढ़ोड़ी सकूल हो
मैयाँ सैंया दादरी यो बीच म्हैं तुसाम हो
राजपुरा छत्तरपुरा नीसरे का बाग हो
द्हैवाणा, म्हैवाणा जड़ म्हैं झाँसी आळी राणी हो
इसा ड्यजान मिला मेरा बालम ना चौड़ा ना भीड़ा
पति ओ मेरा स्याल ल्या दे दुनिया म्ह पड़ै क्यलकारी
खास मील के स्योड़[3] सोड़िए दिल्ली की मसीन हो
पाणीपत के साइकल चालैं रोहतक आळा मील हो
इस स्याल के छापण आळे किरसन जी औतार हों
इस स्याल की ओढ़ण आळी मेरे कैसी नार हो
इसा ड्यजान मिला मेरा बालम ना चौड़ा ना भीड़ा
पति ओ मेरा स्याल ल्या दे दुनिया म्ह पड़ै क्यलकारी

यह लोकगीत विशिष्ट गायन शैली के कारण कलियों वाली जकड़ी के नाम से जाना जाता है। इस गीत में एक स्त्री अपने पति से एक विशेष प्रकार का शॉल लाने का आग्रह करती है-ऐसा शॉल, जिसे देखकर संसार चकित रह जाए। शॉल की बनावट का वर्णन करते हुए वह गीत के पहले अंतरे में विभिन्न फूलों, खुशबुओं और बहुमूल्य धातुओं से कसीदाकारी का ज़िक्र करती है। दूसरे अंतरे में वह आस-पास के अनेक गाँवों का नाम लेती है, जिनका चित्रण वह अपने शॉल में चाहती है। गीत के अंतिम अंतरे में वह दिल्ली, रोहतक, पानीपत आदि नगरों के प्रसिद्ध उद्योगों का जिक्र करते हुए अंत में चाहती है कि ऐसे विशिष्ट शॉल को बनाने वाले स्वयं कृष्ण भगवान हों।

बोलण का के डर सै [68]

ओ चंदर बादी का सांग पति जी हो मत ना देखण जाइए
ओ धरमबीर की रागनियाँ पै ओ मत ना ध्यान लगाइए
ए अपणे पति नै बरज[4] लिए मेरे काचे[5] नींबू खा ग्या
ए आंब नरंगी सेब संतरे धड़ केळे की खा ग्या
ए आ लेण दे उस पति मेरे नै ए मैं समझा ल्यूँगी

1. ऐसा 2. गाँव 3. रजाई 4. रोकना 5. कच्चे

ए जो कुछ ल्यावै आम नरंगी ए घराँ पुँचा द्यूँगी
ओ जिन गळियाँ ओ पिया धूळ उडै ओड़ै[1] जाया ना करते
हो इतणा जबर[2] उल्हाणा ओ साज्जन ल्याया ना करते
हे रै पतळी डाळी वजन घणा रै गोरी तोल्या ना करदे
हे रै अपणे मरद कै स्याह्मी[3] रै गोरी बोल्या ना करदे
ओ पतळी डाळी मैं वजन घणा हो पिया तौलण का के डर सै
ओ जिसके बाल्यम आ ज्याँ खोट[4] म्हैं ओ बोलण[5] का के डर सै

इस जकड़ी में एक स्त्री अपने पति को गलत संगत छोड़ने की सलाह देती है। वह उसे गंदे साँग–सिनेमा देखने और अश्लील रागनी सुनने से मना करती है। वह अपने पति की उच्छृंखलता से भी तंग आ चुकी है। इसलिए वह उसे सलाह देती है कि वह गैर चलन छोड़ दे। उसका पति झुँझलाकर उसे एक औरत की औकात बताता है। वह कहता है कि एक पत्नी को अपने पति के सामने नहीं बोलना चाहिए। इस पर वह स्त्री निडर होकर कहती है कि जिस स्त्री का पति कसूर में आ जाता है, उसे सही बात बोलने में कोई डर नहीं होता।

जो तासाँ खेलै बाणिए कै[69]

मैं जल भर उलटी आऊँ मेरै छोरे बोली मारैं सैं
या किस छोरे की नार कुवे पै पाणी भर ल्यावै सै
या उस छोरे की नार जो तासाँ[6] खेलै बाणिए[7] कै
पिया बाणियाँ कै जाणा छोड मेरै छोरे बोली मारैं सैं
गोरी पीहर जाणा छोड मेरै छोरी बोली मारैं सैं
पिया पीहर जाऊँगी जरूर मन्नै[8] भाई भतीजे चहिए सैं
गोरी बाणिए कै जाऊँगा जरूर मन्नै मंडळ[9] माचिस चाहिए सै

इस लोकगीत में ताश खेलना एक सामाजिक बुराई के रूप में दिखाया गया है। इस गीत की स्त्री पात्र पनघट से पानी भरकर आ रही है। रास्ते में लोग उसे बनियों के यहाँ ताश खेलने वाले व्यक्ति की पत्नी के रूप में पहचानते हैं। इस पर वह बहुत शर्मिंदा हो जाती है और घर आकर अपने पति से कहती है कि वह बनियों के यहाँ जाना छोड़ दे क्योंकि इस बात को लेकर गली के लड़के उसे चिढ़ाते हैं। वह उसे मायके जाना छोड़ देने के लिए कहता है क्योंकि इस बात को लेकर गाँव की लड़कियाँ उसे ताने देती हैं। जब स्त्री पात्र कहती है कि वह पीहर तो अवश्य जाएगी क्योंकि उसे भाई–भतीजों की ज़रूरत है तो उसका पति भी बनियों के यहाँ जाने की बात कहता है क्योंकि उसे भी बनियों से बीड़ी माचिस चाहिए।

1. वहाँ 2. ज़बरदस्त 3. सामने 4. कसूर 5. बोलना 6. ताश 7. बनिया 8. मुझे 9. बीड़ी

हे बेईमान नणंद का बीर [70]

हे मैं रोटी ले गई खेत पति ए मेरा पूळी[1] छोलै[2] सै
हे ड्योळे[3] पै रोटी टेक पति ए मेरा पुळी छुलवावै सै
हो कदे काट्या न छोल्या ईख मन्नै के छोलणा आवै सै
हे उनै आल्ला[4] गंडा[5] पाड़ के कड़[6] कै ए बीच जचाया सै
हे मैं रोदी सुबकदी आई सास मेरी धीर बँधावै सै
हे दिन छिप ग्या हो गई साँझ सास मेरी सोण खंदावै[7] सै
हे मैं लोटा ले गई नीर सिर्हाणै ए कांबू खड़ी खड़ी
हे प्होंचे[8] तैं पकड़ लिया हाथ के गोड्याँ[9] बीच बिठाय लेई
हे मेरै आ गया गंडा याद के ठाडूँ ए ठाडूँ रोय पड़ी
हे बेईमान नणंद का बीर के करकै ए लाड भळोय लेई

इस जकड़ी में स्त्री पात्र एक दिन अपने किसान पति के हाथों खेत में हुई पिटाई और रात के समय दर्शाए गए प्रेम-प्यार का वर्णन करती है। एक दिन वह खेत में किसान पति का खाना लेकर गई। उसके पति ने उसे ईख छोलने के लिए कहा, लेकिन खेती की जानकारी न होने के कारण स्त्री ने मना कर दिया। गुस्से में पति ने ईख के गन्ने से उसकी पिटाई कर दी। जब वह रोती-सुबकती घर आई तो उसकी सास ने उसे धीरज बँधाया। रात को जब वह स्त्री सोने के लिए गई तो डर के मारे उसकी कँपकँपी छूटने लगी। लेकिन उसके पति ने प्यार से उसका हाथ पकड़ा और अपनी गोद में बैठा लिया। तभी उस स्त्री को खेत वाली घटना याद आ गई और वह फूट-फूटकर रोने लगी। इस पर उसका पति उसे मनुहार करके बहलाने लगा। पति के इस प्यार भरे रूप को देखकर वह उसे 'बेईमान' कहती है।

हाळी कै ब्याह करवाके [71]

साग[10] बणाया हे गोभी का फूल मँगाके
मंडे[11] पोए हे री बेलण की दाब लगाके
खेताँ म्हैं चाली हे री तांसळे[12] कै बीच जचाके
रोटी खा ले हो ल्याई सूँ साग बनाके
रोटी ना खाँदा हे रै ल्याई सै जैहर मिलाके
घर नै आ ग्यी हे री तसळे म्हैं टिकड़े[13] जचाके
पाणी नै चाली हे री टोकणी[14] पैं बंटा जचाके

---

1. ईख का गट्ठा 2. छीलना 3. मेंड़ 4. गीला 5. गन्ना 6. पीठ 7. भेजना 8. कलाई 9. घुटने, गोद 10. सब्जी 11. रोटी 12. तसला 13. तिरस्कृत रोटियाँ 14. पानी भरने का पीतल का मटका

कुवे म्हैं पड़[1] गी हे री करड़ा[2] सा हीया[3] करके
भाज्या[4] आया हे री कुवे म्ह पड़ी की सुणके
बड़ा दुख पाया हे रै सबजी म्हैं जैह्र बताके
बड़ी दुख पाई हे री हाळी कै ब्याह करवाके

इस लोकगीत में एक मूढ़ किसान की पत्नी द्वारा आत्महत्या कर लेने का वर्णन है। स्त्री पात्र आलू गोभी की सब्जी और गेहूँ की रोटी बनाकर अपने पति के लिए बड़े प्यार से खेत में ले जाती है। लेकिन किसान रोटी खाने से मना कर देता है क्योंकि उसे शक है कि सब्जी में ज़हर मिला हुआ है। वह स्त्री रोटी लेकर वापस घर आ जाती है और दुखी होकर कुएँ में जा गिरती है। जब किसान को पता चलता है तो वह भागा-भागा आता है और पछताता है कि क्यों उसने सब्जी में ज़हर बताया। अंतिम पंक्ति में वह स्त्री कहती है कि किसान से विवाह करके वह बहुत दुख पाई है।

आज खेत म्हैं जाणा होगा [72]

हर्या सूँट मेरी काळी चोटी भरमाँ भरमाँ छाती ए
आज खेत म्हैं जाणा होगा ले हाळी की रोटी ए
दो सौ तो मनै पूळे[5] घाले जूण[6] रहे कुछ बाकी ए
घाल[7] घूल के घर नै आई ठाई जळे[8] नै लाठी ए
दो सै तो मेरै लाठी मारी जूत रहे कुछ बाकी ए
मार मूर के पूछण लाग्या चोट कड़ै[9] सी लागी ए
ढकणी[10] के म्हैं आग घाल के सेकण लाग्या पाँसू[11] ए
गोज्याँ[12] के म्हैं हरी रुमाली पूंछण लाग्या आँसू ए

इस जकड़ी में स्त्री पात्र अपने किसान पति के हाथों अकारण हुई पिटाई और बाद में पति द्वारा की गई दवा-दारू का वर्णन करती है। यौवन से भरी हुई वह सज-धजकर अपने पति के लिए खेत में खाना लेकर जाती है। सारा दिन खेत में काम करती है। थोड़ा-सा काम बाकी छोड़कर वह देर शाम घर वापस आती है। उसका पति लाठी और जूतों से उसकी खूब पिटाई करता है। पीटने के बाद वह उसके पास बैठकर पूछता है कि उसे कहाँ-कहाँ चोट लगी है? उसके बाद वह मिट्टी के ढक्कन में आग लेकर उसकी पीठ सेंकता है और अपनी जेब से हरे रंग का रूमाल निकालकर आँसू पोंछता है।

1. गिरना 2. मज़बूत 3. मन 4. दौड़ा-दौड़ा 5. ईख के गट्ठे 6. फसल के गट्ठर बाँधने की घास की बुनी रस्सी 7. डालना 8. ईर्ष्यालु, एक उपालंभ 9. कहाँ 10. छोटा ढक्कन 11. बगल 12. जेब

हो तों खडूया लखावै जमींदार [73]

हे ड्योळे[1] पै खडूया जमीदार के धरती नापै खडूया खडूया
हो तूँ रोटी खा ले भरतार के चटणी ओ ल्याई पुदीने की
हे रै तूँ चाली जा बदमास के ल्याई क्यूँ ना दाळ मुसाले की
हो मेरा आ र्या बडणा[2] बीर[3] के तड़कै[4] ओ पीहर डिगर[5] ज्याँगी
हो मेरा बाबल साहूकार के दूजा ओ ब्याह करवा ल्यूँगी
हो मेरा मामा थाणेदार के दूजा ओ भात[6] भरा ल्यूँगी
हो तों खडूया लखावै[7] जमीदार छमा ओ छम फेरे ले ल्यूँगी
हो मैं बेठ ब्हैल[8] के बीच तनै ओ मैं झोली[9] दे ल्यूँगी

इस जकड़ी में एक किसान और उसकी पत्नी के बीच खेत में हुई तकरार का वर्णन है। पत्नी खेत में रोटी लेकर जाती है और पति से खाना खाने के लिए कहती है। किसान इस बात पर नाराज़ हो जाता है कि वह मसाले की दाल की जगह पुदीने की चटनी लेकर आई है। वह उसे वापस चले जाने को कहता है। इस पर स्त्री भी गुस्सा हो जाती है। वह कहती है कि उसका बड़ा भाई आया हुआ है। वह कल ही उसके साथ मायके चली जाएगी। वह अपने साहूकार पिता से कहकर दूसरा विवाह करवा लेगी। उसका थानेदार मामा दूसरी बार भी भात भर देगा। वह कहती है कि तुम खड़े-खड़े देखते रहना। मैं छमाछम फेरे ले लूँगी। विदाई के समय डोली में बैठकर वह उसे हाथ से इशारा करते हुए चली जाएगी।

ओ गुण गावणिया कोनी [74]

ए पढ़ी लिखी लड़की थी ब्हाण[10] किसमत म्हैं कमी बताई
ए म्हारै घरक्याँ[11] नै जुलम करे मैं हाळी लोग कै ब्याही
ए रोटी लेके गई खेत म्हैं ए ब्होत घणी दुख पाई
ए पाँच सात मेरै साँटे[12] मारे मैं सुबक सुबक के रोई
ओ मारै मतना मरद कसाई ओ गुण गावणिया[13] कोनी[14]
ओ मैं तो ट्हो[15] ल्यूँ और ठिकाणा ओ तनै ओटणिया[16] कोनी
हे रै चाली जा बदमास रांड तूँ ऊत घराँ की आई
हे रै तेरे आएँ पाछै रै म्हारी खेती कम करवाई
ओ घर तैं ल्याई बँटा टोकणी ओ भरकै देखूँगी
ओ जो दुनिया म्हैं चाल चाल र्ही ओ चलकै देखूँगी

1. मेंड़ 2. सबसे बड़ा 3. भाई 4. आने वाला कल 5. चले जाना 6. विवाह के मौके पर दूल्हा या दुल्हन के मामा द्वारा दिया जाने वाला उपहार 7. देखना 8. डोली 9. बुलाने के लिए हाथ का इशारा 10. बहन 11. घरवाले 12. कोड़े 13. गाने वाला 14. नहीं 15. ढूँढ़ना 16. स्वीकार करना

इस जकड़ी में बेमेल विवाह और उससे उत्पन्न समस्या का ज़िक्र है। एक पढ़ी-लिखी लड़की की शादी एक अनपढ़ किसान के साथ हो जाती है। खेत में रोटी लेकर जाने में उसे कष्ट होता है। इस पर किसान उसे पीट देता है। वह रोते-रोते पीटने से मना करती है और कहती है कि उसके गुणों को पहचानने वाला कोई नहीं है। वह उसे चेतावनी देती है कि मुझे तो और ठिकाना मिल जाएगा, लेकिन उस जैसे कसाई को सहने वाली कोई नहीं मिलेगी। किसान आग बबूला होकर उसके मायके वालों को बुरा-भला कहता है। साथ ही आरोप लगाता है कि जिस दिन से वह ब्याही आई है, उसके खेत की उपज घट गई है। अंत में वह स्त्री कहती है कि वह दबकर नहीं रहेगी बल्कि नई दुनिया के जो रिवाज़ हैं, उन्हें अपनाकर रहेगी।

ब्याह ल्याइए थाणेदार की [75]

डुंग्हे[1] डुंग्हे क्यार भाण मैं ईख नुलावण भेज देई
हळसी[2] छोड मेरा बालम आ ग्या मैं उसकै जड़ म्हैं बेठ गई
के पति ओ मन्नै भाड़ा दे दे ना राही बता दे म्हारे गाम की
चाली जा बदमास रांड के बेटी थाणेदार की
चाली कोस पचास भाण मनै राही ना पाई म्हारे गाम की
करड़ा[3] ढाट्ठा[4] मार भाण मनै ज्यान कुवे म्हैं झोक दी
पीहर के म्हैं माता रोवै बेटी मेरी मार देई
क्यूँ रोवै मेरी माँ ए बावळी याणी सी मैं घाल देई
परसी बेठ्या बाबल रोवै बेटी मेरी मार देई
क्यूँ रोवै मेरे बाप बावळे निरभागाँ कै ब्याह देई
सांसरे म्हैं सासड़ रोवै घर नै क्यूँ न आय गई
क्यूँ रोवै मेरी सास बावळी निरणाबासी काढ़ देई
काढ़ैं देवर जेठ भाण मेरा टस टस रोवै भरतार हे
क्यूँ रोवै भरतार बावळे ब्याह ल्याइए थाणेदार की

इस मार्मिक जकड़ी में दुरूह कृषि कार्य और किसान पति की दुत्कार से आहत एक स्त्री द्वारा आत्महत्या कर लेने का वर्णन है। स्त्री पात्र को ईख नुलाने के लिए खेत में भेजा जाता है। उसका पति हल छोड़कर आता है तो वह उससे अपने मायके का रास्ता पूछती है। किसान गुस्से में कहता है कि वह कोई थानेदार की बेटी नहीं है, जो उसे कृषि कार्य करना नहीं सुहाता। वह स्त्री पचास कोस तक चली जाती है, लेकिन उसे अपना मायका नहीं मिलता। अंत में निराश होकर वह कुएँ में गिरकर मर जाती है। उसकी मृत्यु

1. सुदूर, गहरे 2. हल 3. कसकर 4. मुँह ढाँपना

पर जब उसकी माँ रोती है तो वह अपनी मौत के लिए अपनी माँ को भी ज़िम्मेदार मानती है, जिसने उसे छोटी आयु में ही ससुराल भेज दिया। जब वह अपने पिता को रोते देखती है तो वह उसे भी दोष देती है क्योंकि उसी ने अपनी बेटी दुष्ट परिवार में ब्याही थी। अपनी सास के रोने पर वह कहती है कि इसी सास ने उसे भूखे पेट खेत में भेजा था। उसके देवर-जेठ उसकी लाश को कुएँ में से निकाल रहे हैं और उसका पति ज़ोर-ज़ोर से रो रहा है। यह देखकर वह अपने पति को कहती है कि इस बार थानेदार की बेटी से विवाह करना।

पीहर मतना जाइए रै कमला [76]

ए काची बेल पड़ी ए घीया की या काट्याँ तैं ना कटदी
ए उठै झाल समँदराँ कैसी डाट्याँ[1] तैं ना डटदी
ए छम छम करती फिरूँ म्हैल[2] म्हैं ए जल पर की मुरगाई
ए सो गई चूंदड़ ताण ब्हाण मन्नै प्यलंग बिछा लिया न्यारा
हे रै पीहर मतना जाइए रै कमलां याद आवैगी
हे रै सीसम नीचै रोटी रै कमलां कोण खुवावैगी
ओ दो म्हीन्याँ म्हैं आ ल्यूँ सजन मेरे रोया ना करदे
ओ दो म्हीन्याँ की खातर जिंदगी खोया ना करदे
ओ तड़कै[3] तो रै या चाली जागी आज राम मन्नै ठा ले
ओ धरती म्हैं सिर मारूँ सूँ रै कोए सरप लिकड़के[4] खा ले

इस जकड़ी में एक नवविवाहित युगल के प्रेमालाप का वर्णन है। पत्नी सज-धजकर पूरे घर में काम करती हुई छम-छम डोल रही है। उसके पति की निगाह उसी पर है। उसके मन में प्रेम की लहरें उठ रही हैं, जो रोकने पर भी नहीं रुक रहीं। अगले ही दिन उस युवती को कुछ दिन के लिए मायके जाना है, लेकिन उसके पति को तो एक पल का वियोग भी असहनीय है। रोते हुए वह कहता है कि अच्छा हो, आज रात ही उसे कोई साँप डस ले और वह मर जाए। यह सुनकर पत्नी उसे समझाते हुए कहती है कि दो ही महीने की बात है। वह फिर वापस आ जाएगी। महीने-बीस दिन के लिए इस तरह अपनी ज़िंदगी को बर्बाद नहीं किया करते।

रोवैगो मूंधो पड़कै [77]

पाणी[5] पै चाल्यो छैल कांधै पै कसी[6] धरकै
मैं रोटी ले कै जाऊँ ए गजब बहू बणकै

---

1. रोकना 2. महल; कमरा; चौबारा 3. कल 4. निकलकर 5. खेत में पानी देना 6. कस्सी

मेरै जेळी[1] मारी च्यार कसा ए कस करकै
मैं उलटी घर नै आऊँ ए सुबक दी ए रोंदी
मैं सो गई चूंदड़ ताण दरवाजो बंद करकै
वैं आए आधी रात सारा ए क्यारा[2] भरकै
गोरी खोलो बजर[3] किवाड़ क्यूँ सो गी बंद करकै
मेरा आ र्‌या बडणा बीर पीहर जाँगी तड़कै
तेरी उत्थो[4] आवै जीप जीप भाड़ो भरकै
तेरे पंठे[5] ल्यूँगी पाड़ सखियाँ म्हैं रळ मिलकै
तेरी इज्जत ल्यूँगी तार भाइयों म्हैं खड़ो करकै
तेरी खाली आवै जीप जीप भाड़ो भरकै
तेरी सुन्नी पावै सेज रोवैगो मूंधो पड़कै

इस जकड़ी में एक स्त्री द्वारा पति के हाथों पीटे जाने पर दर्शाए गए प्रतिरोध का वर्णन है। किसान खेत में पानी दे रहा है और उसकी पत्नी सज-धजकर उसका खाना लेकर जाती है। जब किसान उसे पीट देता है तो वह रोती हुई घर वापस आ जाती है और चुनरी ओढ़कर सो जाती है। किसान आधी रात को घर आता है। उसकी पत्नी अगले ही दिन मायके जाने की बात कहती है। वह आगे कहती है कि जब वह उसे लिवाने के लिए आएगा तो वह अपनी सखियों के बीच खड़ी होकर उसके बाल नोच लेगी और अपने भाइयों के बीच उसकी बेइज़्ज़ती करेगी। इस पर भी वह उसके साथ ससुराल वापस नहीं आएगी। अपनी सेज सूनी देखकर वह औंधे मुँह पड़कर रोएगा।

न्यारा हो ज्या ओ भरतार [78]

न्यारा[6] हो ज्या ओ भरतार तेरी माँ लड़ै दिन रात न्यारा हो ज्या
मन्नै पाइया[7] चून[8] भतेरा
मांडा तेरा भी बण ज्याय फुलका मेरा भी बण ज्याय
पिंडी मुन्ने की बण ज्याय न्यारा हो ज्या
न्यारा हो ज्या ओ भरतार तेरी माँ लड़ै दिन रात न्यारा हो ज्या
मन्नै सौ का नोट भतेरा
गोझी[9] तेरी भी भर ज्याय बटुवा मेरा भी भर ज्याय
गुलक मुन्ने की भर ज्याय न्यारा हो ज्या
न्यारा हो ज्या ओ भरतार तेरी माँ लड़ै दिन रात न्यारा हो ज्या

---
1. खेती का एक औज़ार 2. खेत 3. वज्र, मज़बूत 4. वहाँ 5. केश 6. अलग 7. पावभर 8. आटा 9. जेब

मन्नै दो गज कपड़ा भतेरा
कच्छा तेरा भी बण ज्याय कबजा मेरा भी बण ज्याय
झुगला मुन्ने का बण ज्याय न्यारा हो ज्या
न्यारा हो ज्या ओ भरतार तेरी माँ लड़ै दिन रात न्यारा हो ज्या
मन्नै दो गज धरती भतेरी
पिंलग तेरा भी घल ज्याय खटिया मेरी भी घल ज्याय
पलणा मुन्ने का घल ज्याय न्यारा हो ज्या
न्यारा हो ज्या ओ भरतार तेरी माँ लड़ै दिन रात न्यारा हो ज्या

इस जकड़ी में एक स्त्री अपने पति से कहती है कि वह अपने माँ बाप से अलग हो जाए क्योंकि उसकी सास उससे दिन-रात लड़ाई करती रहती है। वह स्त्री बड़े ही रोचक ढंग से बताती है कि कैसे वह स्वयं, उसका पति और उनका बच्चा बहुत ही थोड़े खर्च में अपना गुजारा कर लेंगे। एक पाव आटे में वह तीनों का मनपसंद खाना बना लेगी; सौ रुपये में वह पति की जेब, स्वयं का बटुआ और मुन्ने का गुल्लक भर लेगी; दो गज कपड़े में ही वह तीनों के मनपसंद वस्त्र सील लेगी और दो गज़ जमीन में ही वह पति का पलंग, अपनी खटिया और मुन्ने का पलना बड़े आराम से डाल लेगी।

मन्नै कर दे न्यारा [79]

कंद का दामण प्हैर कै ए मन्नै कस लिया नाड़ा
धोळा[1] कुड़ता प्हैर कै ए मन्नै ठा लिया जिवारा[2]
दूर ए तैं दिक्खी आवंदी ए हळ छुटग्या म्हारा
खूड म्हैं साँटा गेर कै ए मेरा जल तरवाया
किसनै घाली खेत म्हैं रै किसनै भेया[3] था जिवारा
सासू नै घाली खेत म्हैं ओ जेठा भेवै था जिवारा
मैं तो छोड्डी खेत म्हैं ए जळ्या प्हैल्याँ आया
ले ओ बाबू अपणे नारवे[4] ओ मन्नै कर दे न्यारा
धोळी हेली बांड[5] दे ओ बाबल ऊपरला चूबारा
रूंडी ल्यूँगा म्हैंस ओ बाबल धोळिया सा नारा
गोदी म्हैं तन्नै राखदी रे बेटा ढोया था जिवारा
जे मैं इतणी जाणदी रे तन्नै राखदी किँवारा
भली करी तन्नै ब्याह दिया री ना तो रोपदा पवाड़ा[6]

1. सफ़ेद 2. किसान और बैलों का खाना 3. भिगोना 4. बैल 5. बाँट 6. विघ्न

इस जकड़ी में एक नवविवाहिता सज-धजकर पहली बार अपने किसान पति का खाना लेकर खेत में जाती है। धूप के कारण अपनी पत्नी को पसीने से तर-बतर देखकर उसके हाथ से हल छूट जाता है। सीधा घर आकर अपने पिता से माँग करता है कि उसे अलग कर दिया जाए। वह हवेली में अपने हिस्से के रूप में चौबारे की माँग करता है। साथ ही वह सबसे अच्छी भैंस और सफेद बैल की भी माँग करता है। इस पर उसकी माँ कहती है कि बहू आज ही खेत में खाना लेकर गई थी और आज ही बेटा अलग हो रहा है। अपने दिनों को याद करती हुई वह कहती है कि जब वह छोटा था तो वह उसे गोद में लेकर खेतों में खाना पहुँचाती थी। फिर वह भावुक होकर कहती है कि अगर मैं जानती कि बेटा ऐसा करेगा तो वह उसे कुँवारा ही रखती। लेकिन इस उलाहने का भी बेटे पर कोई असर नहीं होता। उलटे वह कहता है कि अच्छा किया जो मेरी शादी करा दी वरना तो वह कुछ और ऊँच-नीच कर बैठता।

मतना बोइए ईख [८०]

मैं दूस्सर लेके आई ना बोली ना बतळाई सखी ए यू चाळा सै
बालम बोवै ए ईख जेठ बिजवावै सै
पिया जेठ साढ़ का म्हीना यो आवै तुरत पसीना ज्यान का गाळा[1] सै
मतना बोइए ईख ज्यान का गाळा सै
यू सामण भादुवा बरसै बादळ म्हैं बीजळी चमकै चमासा आवैगा
मतना बोइए ईख फेर[2] पिछतावैगा
यू आसोज कातक आ ग्या गंडे पै गोळा आ ग्या ओ पोरी पाकै सै
मतना बोइए ईख ओ गोरी नाटै सै
पिया माह पोह का सै पाळा यू कटै नींद का चाळा जोट तेरी आवैगी
मतना बोइए ईख नार दुख पावैगी
त्हों नोम्मै म्हीने जाम्मै फेर गूँद पंजीरी माँगै कड़े[3] तैं ल्याऊँगा
बो लेण दे रै रांड खांड कढ़वाऊँगा[4]

इस जकड़ी में स्त्री की इच्छाओं और पुरुष की विवशताओं की कशमकश दिखाई देती है। एक नवविवाहिता का पति ईख बोने में व्यस्त है, जबकि वह उसकी निकटता के लिए लालायित है। वह ईख की खेती से जुड़ी परेशानियों का ज़िक्र करते हुए पति को ईख बोने से मना करती है। वह कहती है कि ज्येष्ठ-आषाढ़ के महीने में भयंकर गर्मी के कारण तुरंत पसीना आता है, ऐसे समय में ईख बोना जान साँसत में डालने के समान है। सावन-भादों में चौमासा लग जाता है। ईख की खेती करने वाला पछताता है।

1. खतरा 2. बाद में 3. कहाँ 4. निकलवाऊँगा

आश्विन-कार्तिक में गन्ने के पोरों में रस पड़ने लगता है। किसान को रखवाली के लिए खेत में रात-रात भर रुकना पड़ता है, ऐसे वियोग से दुखी पत्नी ईख बोने से मना करती है। इसी प्रकार स्त्री अपने पति को याद दिलाती है कि पौष-माघ की कड़ाके की सर्दी में बहुत नींद आएगी। लेकिन किसान को रात-रात भर कोल्हू पर बैठना पड़ेगा, तब उसकी पत्नी बहुत दुख पाएगी। इसलिए वह उसे ईख बोने से मना करती है। इस पर किसान चिड़चिड़ा होकर कहता है कि जब वह हर नौवें महीने बच्चे पैदा करेगी और खाने के लिए गूँद-पँजीरी माँगेगी, तब वह कहाँ से लाएगा?

पाणी पै मत जाइए ओ [81]

पाणी[1] पै मत जाइए ओ पाणी पै छिड़ैगी लड़ाई
पाणी पै हम जावाँगे रै तूँ इतणी क्यूँ घबराई
पैंट उसनै प्हैर लई ए उसनै कसके पेटी लाई
काँधे पै कसी[2] ठाय लई ए उसनै लैट[3] बैटरी की मारी
मोरी तैं न्यूनै कूद लिया ए मोरी की ईंट हटाई
क्यारी म्हैं नाका तोड़ लिया ए बूँबी तैं नाग फफाई
नागण मनै मत खाइए ए मेरी ब्याही दूसरा ल्याई
बीर मैं तो खाऊँगी रे इसबर की घाली[4] आई
बेबे तो मेरी रोवैगी ए उसकै और नहीं सै भाई
बाबल मेरा रोवैगा ए उसकै और नहीं सै लाल
माता तो मेरी रोवैगी ए उसकी कौण करैगा सेवा बाड़ी

इस लोकगीत में रात के समय खेत में पानी देते समय एक किसान की दुखद मृत्यु का मार्मिक वर्णन है। किसान की पत्नी को अंदेशा है कि आज रात पानी देते समय कुछ अनहोनी हो सकती है। इसलिए वह अपने पति को जाने से रोकती है। लेकिन किसान उसे आश्वस्त करता है और कंधे पर कस्सी और हाथ में बैटरी लेकर खेत में सिंचाई के लिए चल पड़ता है। ज्योंही वह पानी का नाका तोड़ता है, त्योंही एक भयंकर नागिन फुँफकार उठती है। वह नागिन से न डसने की विनती करता है कि उसकी पत्नी नवविवाहिता है। लेकिन नागिन उससे कहती है कि भाई, मैं तुझे ज़रूर डसूँगी क्योंकि मुझे ईश्वर ने भेजा है। यह सुनकर बेबस किसान बारी-बारी से अपनी बहन, पिता और माता को याद करता है, जो अपने इकलौते भाई और बेटे की मृत्यु पर खूब रोएँगे।

चणा निपजैगा बाळू रेत म्हैं [82]

संग की सहेली कट्ठी[5] होकै मनै समझावण लागी ए

1. खेत में पानी देना 2. कुदाल, कस्सी 3. लाइट 4. भेजी हुई 5. इकट्ठी

तूँ ऊठ बैट्ठी हो ले तूँ रोटी साग बणा ले
ले ज्या न बोळी[1] खेत म्हैं चणा निपजैगा बाळू रेत म्हैं
रोटी लेकै गई खेत म्हैं सीसम नीचै सोवै ए
तूँ ऊठ बैठ्या हो ले तूँ बैलम रोटी खा ले
तेरी रोटी ल्याई खेत म्हैं चणा निपजैगा बाळू रेत म्हैं
तीन दिनाँ का निरणाबासी चाली जा कलिहारी रै
तेरा आ र्‌या बडणा[2] भाई तूँ चाली जाइए साथ म्हैं
चणा निपजैगा बालू रेत म्हैं
रोटी ले कै घराँ डिगर्‌याई[3] होगी लोगहँसाई ए
बड़[4] कमरे म्हैं रोवण लागी कोए ना धीर बँधावै ए
बडी जिठाणी बूझण लागी के दुखै सै तेरा ए
मैं बैलम नै सताई मन्नै नींद कती ना आई
यो एकला सो ग्या खेत म्हैं चणा निपजैगा बाळू रेत म्हैं
वो ऊँट चराकै ल्यावै वो म्हीने तक ना न्हावै
वो पड़कै सो ज्या रेत म्हैं चणा निपजैगा बाळू रेत म्हैं
बाळक बच्चे गळ[5] म्हैं घल गे मम्मी दे दे रोटी री
मैं कित तैं दे द्यूँ रोटी मेरे पास चवन्नी ना खोटी
त्हारा बाबू[6] सोवै खेत म्हैं चणा निपजैगा बाळू रेत म्हैं

इस जकड़ी में एक निकम्मे किसान की पत्नी की समस्याओं का ज़िक्र है। एक दिन सखियों के समझाने-बुझाने पर अपने किसान पति के निकम्मेपन से निराश होकर वह खेत में खाना लेकर जाती है। उसे अब भी आशा है कि उसका पति सुधर जाएगा और बालू रेत में खूब चना पैदा होगा। लेकिन किसान तो पेड़ के नीचे लंबी तानकर सो रहा था। वह उसे खाना खाने के लिए जगाती है तो किसान उसे डाँटकर भगा देता है। जब वह रोटी लेकर घर वापस आती है तो लोग उसकी हँसी उड़ाते हैं। वह कमरे में घुसकर रोने लगती है। इस पर उसकी बड़ी जेठानी उसके दुख का कारण पूछती है। वह बताती है कि उसे पति का दुख है जो ऊँट चराता है, महीनों तक नहाता नहीं और जहाँ मन आए वहीं पड़कर सो जाता है। तभी उसके छोटे-छोटे बच्चे उससे खाना माँगते हैं। वह दुखी होकर कहती है कि उसके पास फूटी चवन्नी भी नहीं हैं क्योंकि उनका बाप खेत में पड़े-पड़े सोता रहता है; कोई काम नहीं करता।

1. पगली 2. बड़ा 3. आ गई 4. घुसकर 5. गले 6. पिता

सूरतगढ़ पिया जाइए मतना [83]

ओ सूरतगढ़ पिया जाइए मतना ओ कर कलिय्हारे[1] टाळा
ओ नर नारी की निज़र बुरी सै ओ तेरी ज्यान का गाळा[2]
हे रै तड़कै जाँगे[3] नार नौकरी रै क्यूकर रह्या करैगी
हे रै मंदर जोड[4] मकान म्हैं तेरी क्यूकर रैत[5] कटैगी
ओ छोटा देवर मेरा लाडला ओ उस पै ध्यान धरूँगी
ओ मंदर जोड मकान म्हैं मेरी हँस हँस रैत कटैगी
ए न्हा धो कै नै बैठी पिलंग पै ए मोती पोवण[6] लागी
ए अपणे पति की स्यान[7] देख कै ठाडूँ रोवण लागी
ए कंद[8] का दामण धोळा कुड़ता ए झाल डाटणी हो सै
ए परदेसी कै ब्याह करवाकै कैद काटणी हो सै
ए काळी वैल[9] म्हैं गेरे सितारे घोटा मैला हो सै
ए परदेसी कै ब्याह करवाकै ए मोटा चाळा हो सै

इस जकड़ी में एक स्त्री अपने पति को परदेस जाने से रोक रही है। उसे डर है कि दुनियादारी की बुरी नज़र उसके पति की जान ले लेगी। उसका पति उससे पूछता है कि उसके परदेस जाने पर वह कैसे रहेगी और इतने बड़े घर में उसकी रात कैसे कटेगी ? इस पर वह कहती है कि वह अपने छोटे देवर पर ध्यान धर लेगी। जब परदेसी चला जाता है और वह नहा-धोकर पलंग पर बैठती है तो वह अपने पति को याद करके रोने लगती है। रोते-रोते वह कहती है कि जैसे श्रृंगार करके भी यौवन की लहर को रोकना पड़ता है, उसी प्रकार परदेसी के साथ विवाह करके मानो कैद काटनी पड़ती है। जिस प्रकार संदूक में पड़े-पड़े ही गहने कपड़ों की चमक घट जाती है, उसी प्रकार परदेसी से शादी करके जीवन बर्बाद हो जाता है।

सुबेरे कित जाओगे [84]

हाँ ओ पिया सांझै तो बिस्तर बाँध सुबेरे कित जाओगे
हाँ रै गोरी दिल्ली म्हैं आ रह्या सांग जलसा रै देखण जावाँगे
हाँ ओ पिया छोटे बीरै का ब्याह बटेऊ सारे आवैंगे
हाँ रै गोरी औराँ के हाळी पाळी लोग थारे रै फौजी आवैंगे
हाँ रै गोरी औराँ के आड़ू अमरूद थारे तो केळे ल्यावाँगे
हाँ रै गोरी ओराँ के बूँट जराब थारे तो संडल ल्यावाँगे
हाँ रै गोरी औराँ के सूँट र स्याल थारी तो स्याड़ी ल्यावाँगे

1. कलहकारी; एक उपालंभ 2. खतरा 3. जाएँगे 4. जितने 5. रात 6. पिरोने 7. शक्ल; तस्वीर, सौंदर्य 8. एक प्रकार का कपड़ा 9. दुपट्टा

इस जकड़ी में एक स्त्री और उसके रंगीले पति के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन है। वह पूछती है कि वह कल सवेरे कहाँ जाएगा, जो साँझ से ही बिस्तार बाँध लिया है। वह बताता है कि वह साँग देखने दिल्ली जाएगा। वह उससे कहती है कि कुछ ही दिनों में उसके छोटे भाई की शादी है, जिसमें सभी मेहमान आएँगे। इस पर वह अपनी हाँकने लगता है और उसे आश्वस्त करता है कि उसकी शान सबसे निराली होगी।

सुत्ती नै ए मन्नै छोड डिगर ग्या[85]

नौकर जांगे[1] रै गोरी बाप लड़ै सै
हम भी चलाँगे ओ पिया सास लड़ै सै
दोनुवाँ का जाणा रै गोरी ठीक नहीं सै
सुत्ती[2] नै ए मन्नै छोड डिगर ग्या
जा पलटण म्हैं भरती हो ग्या
संग के रै साथी पूछण लागे
मोटा था रै भाई माड़ा[3] हो ग्या
क्यां[4] की फिकर म्हैं भाई माड़ा हो ग्या
आवै थी रै भाई ल्याया कोनी[5]
उसके फिकर म्हैं भाई माड़ा हो ग्या
आळे म्हैं रै भाई फोटू भूल्या
फोटू नै देख के रोंदी होगी
खूँटी पै रै भाई भूल्या तौलिया
उसतैं आँसू पूँजदी होगी
म्हैल माळिए[6] छोड़ी रै जनानी
एकली रै सूत्ती रोवंदी होगी
उसके फिकर म्हैं माड़ा रै हो ग्या

इस जकड़ी में घरेलू कलह से तंग आकर सेना में भरती होने वाले युवक का वर्णन है। वह अपनी पत्नी को सोया छोड़कर घर से निकल जाता है और जाकर सेना में भरती हो जाता है। उसके साथी उसके दिन-प्रतिदिन कमज़ोर होते जाने का कारण पूछते हैं। वह बताता है कि उसे अपनी पत्नी की चिंता खाए जा रही है। वह उसके फ़ोटो को देखकर रोती होगी और खूँटी पर भूले तौलिए से आँसू पोंछती होगी। उसी पत्नी की फ़िक्र में वह कमज़ोर हो गया है।

---

1. जाएँगे 2. सोई हुई 3. कमज़ोर 4. किस 5. नहीं 6. घरबार

पति कहे म्हैं कोन्या [86]

ए के जीणा[1] ए मेरी के जिंदगानी ए पति कहे म्हैं कोन्या[2]
ए कोल्हू के म्हैं गँडा मार्या ए ल्ह्याज सरम बी कोन्या
ए मार पीट कै नौकर डिगर ग्या ए दया धरम भी कोन्या
ए इब गेरूँगी तार मरी का ए ज्यब पाटैगा बेरा
ए पलटण के म्हैं तार प्होंच ग्या ए खाकै पड़्या तिवाळा[3]
ए संग के साथी बूझण लागे रै के हो ग्या भाई तेरै
सी ओ साब मन्नै छुट्टी दे दे ओ घर पै जाणा जरूरी
रै के बिगड़्या मेरे मात पिता का रै के बिगड़्या भाभी का
हे रै घर सुना मेरी हेली सुन्नी रै सुन्ना पड़्या चुबारा

इस जकड़ी में उस नारी के दुख का वर्णन है जिसका पति उसकी परवाह नहीं करता। एक दिन वह उसे खेत में मार-पीटकर घर से निकल जाता है और जाकर फ़ौज में भरती हो जाता है। निराश और नाराज़ पत्नी आत्महत्या कर लेती है। जब उसके पास पत्नी की मृत्यु का तार पहुँचता है तो वह गश खाकर गिर पड़ता है। वह तत्काल छुट्टी लेकर घर आता है। जब वह अपना घर सूना पड़ा पाता है तो बड़ा पछताता है। वह सारा दोष अपने माता-पिता और भाभी के माथे मढ़ता है, जिनके बहकावे में आकर उसने अपनी पत्नी से हमेशा रूखा व्यवहार किया।

मैं संग फौजी कै ब्याही [87]

हे माँ बापाँ कै घणी[4] लाडली ए दूध दही तैं पाळी[5]
हे पिता मेरे नै जुलम करे ए मैं संग फौजी कै ब्याही
हे बैठ ज्हयाज म्हैं पिया के साथ म्हैं ए च्यारूँ तरफ लखाई[6]
हे कड़ै गए मेरे माय र बाबू कड़ै गया मेरा भाई
हे सैस नणंद कै मैं घणी लाडली उतर कँवर की ब्याही
हे कद[7] की देखूँ बाट निरमलाँ ए बाट दिखा के आई
छोटी नणदी घणी लाडली ए माँगै बार रुकाई
रे सौ का पत्ता ल्यूँगी बीर मेरे लाख दान के ल्याई
तूँ मेरी बेबे ब्होत बावळी ए कर दिया सिकर दुफारा[8]
ए सौ का पत्ता जिद ए मिलैगा खुलै काँगणा म्हारा
दिन छिप ग्या ज्यब होया अँधेरा ए भावज तैं बतळाया
हे री एक बै घेर म्हैं घालिए[9] री भावज गुण भूलूँ ना तेरा

1. जीवन 2. नहीं 3. चक्कर 4. बहुत ज़्यादा 5. पालन-पोषण करना 6. देखा 7. कब 8. दोपहर 9. भेजिए

उठ निरमलाँ बेट्ठी हो ले पिलंग बिछा दिया तेरा
ए तनै घेर म्हैं जाणा होगा ए पति बुला ग्या तेरा
ओढ़ चूंदड़ी सो गी पिंलग पै ए करके करड़ी[1] छाती
ए मार गंडासा सीस तार लिया दया कती ना आई
रोवैगी मेरी बुढिया-सी माता ओ रोवैगा मेरा भाई
ओ पिता मेरे कै सबर नी आवै बार्‌हा पास कराई

इस जकड़ी में एक सैनिक द्वारा विवाह के पहले ही दिन अपनी पत्नी की हत्या कर देने की घटना का मार्मिक वर्णन है। अपने माता-पिता की बहुत ही लाड़ली बेटी का विवाह एक सैनिक से हो जाता है। अपने माँ-बाप और भाई को छोड़कर वह ससुराल के लिए विदा होती है। ससुराल में भी उसकी सास और ननद उसकी खूब आवभगत करती हैं। रात के समय वह सैनिक अपनी भाभी के हाथों अपनी पत्नी को बुलाता है और बिना कुछ-कहे सुने ही गँडासा मारकर बड़ी निर्दयता से उसका शीश धड़ से अलग कर देता हैं। अकारण मारी गई वह नारी यह सोच कर दुखी है कि उसकी मृत्यु पर उसके माँ और भाई बहुत रोएँगे और उसके पिता को तो किसी भी तरह से संतोष नहीं होगा, जिसने उसे पढ़ाया-लिखाया है।

क्यूकर म्हारा गुजारा होगा [88]

त्हम[2] तो पिया चले नौकरी हमनै पीहर जाणा होगा
इस घर म्हैं या सास कलिहारी क्यूकर म्हारा गुजारा होगा
पीहर मतना जाइए रै गोरी सब तरियाँ[3] मुँह काळा होगा
बडणी भावज तेरी ताने मारै उसतैं डर के रैह्णा होगा
भाइयाँ सेती[4] करै लामणी नीची तरफ लखाणा होगा
मेरे बाप कै कुणबा भारी इसमैं तेरा गुजारा होगा
बखत उठकै पीसै पीसणा फेर खेत म्हैं जाणा होगा
देवर जेठ तेरे करैं लामणी ढाठा मार[5] कमाणा होगा
बडी जिठाणी चलै साथ म्हैं साँझै घर पै आणा होगा
छोटी नणदी चलै साथ म्हैं आकै पाणी ल्याणा होगा
टूटे लित्तर[6] पाट्टे कपड़े यो गोरी तेरा बाणा होगा
गाळाँ[7] के छोरे मारैं मसखरी नीची तरफ लखाणा होगा
जे प्हैरैगी सूँट रेसमी नाम तेरा गिरकाणा[8] होगा
मेरे बाप कै कुणबा भारी इसमैं तेरा गुजारा होगा

1. मज़बूत 2. आप 3. तरह 4. साथ 5. कसकर मुँह ढाँपना 6. जूते 7. गलियाँ 8. सजने-सँवरने पर ध्यान देने वाली

इस लोकगीत में एक सैनिक परदेस जाते समय अपनी पत्नी को सलाह देता है कि उसे उसकी अनुपस्थिति में कैसे रहना चाहिए? जब उसकी पत्नी कहती है कि सास के दुर्व्यवहार को देखते हुए उसे अपने मायके जाना पड़ेगा तो सैनिक कहता है कि ऐसा करने से उनकी बेइज़्ज़ती हो जाएगी। मायके में भी उसकी भाभी ताने मार-मारकर उसका जीना हराम कर देगी। साथ ही उसे अपने भाइयों से दबकर रहना होगा। वह कहता है कि मेरे पिता का कुनबा बहुत बड़ा है। इसी में उसका गुज़ारा होगा। बाकी गीत में वह उसे खूब काम करने और देवर, जेठ, जेठानी, ननद आदि के साथ यथोचित व्यवहार करने की सलाह देता है। अंत में वह उसे मैले-कुचैले कपड़े पहनने की और गली के लड़कों द्वारा किए जाने वाले मज़ाक को अनदेखा करने की सलाह देता है।

बण के दुखड़े हो स्है ल्यूँगी [89]

घराँ रहिए रै भर[1] नार[2] बण म्हैं बड़ी रै दुख पावैगी
सेती[3] चालूँ ओ भरतार बण के दुखड़े हो स्है ल्यूँगी
रै उड़ै कोनी सासू रै सुसरे
रै उड़ै कोनी देवर जेठ किसकी कैण[4] निभावैगी
घराँ रहिए रै भर नार बण म्हैं बड़ी रै दुख पावैगी
सेती चालूँ ओ भरतार बण के दुखड़े हो स्है ल्यूँगी
रै उडै कोनी मायड़ बाबू
रै उड़ै कोनी हीरा नंदलाल किसके लाड लडावैगी
घराँ रहिये रै भर नार बण म्हैं बड़ी रै दुख पावैगी
सेती चालूँ ओ भरतार बण के दुखड़े हो स्है ल्यूँगी
रै उड़ै कोनी घीया र तोरी
रै उड़ै कोनी मटर मसूर क्याँ का साग बणावैगी
घराँ रहिए रै भर नार बण म्हैं बड़ी रै दुख पावैगी
सेती चालूँ ओ भरतार बण के दुखड़े हो स्है ल्यूँगी
रै उड़ै कोनी स्योड़[5] स्योड़िए
रै उड़ै कोनी पिलंग निवार क्याँ पै लेट लगावैगी
घराँ रहिए रै भर नार बण म्हैं बड़ी रै दुख पावैगी
सेती चालूँ ओ भरतार बण के दुखड़े हो स्है ल्यूँगी

यह लोकगीत वनगमन के समय राम और सीता के बीच हुए संवाद का लोक प्रतिरूप जान पड़ता है। इस लोकगीत में विदाई के समय एक परदेसी और उसकी पत्नी

1. आदरसूचक संबोधन 2. पत्नी 3. साथ 4. लज्जा, प्रण 5. रजाई

के मध्य हुए संवाद का वर्णन है। परदेसी अपनी पत्नी को यह कहकर साथ ले जाने से मना करता है कि वन में उसे बहुत कष्ट होंगे। वह उसे याद दिलाता है कि वन में न तो उसके सास-ससुर होंगे, न देवर-जेठ। ऐसे में वह उनके प्रति अपने कर्तव्य कैसे निभाएगी? वन में उसे माँ-बाप, भाई या पुत्र भी नहीं मिलेंगे, जिनके वह लाड़ लड़ा सके। वहाँ उसे खाने-पीने, ओढ़ने-पहनने को कुछ नहीं मिलेगा। लेकिन इस सब अभावों के बावजूद भी वह नारी बार-बार पति के साथ जाने की ही रट लगाए हुए है और कहती है कि वह वनवास के सभी दुख सहन कर लेगी।

गोरी एक बै कैह्दे जाण की [१०]

कित सै झोळा र बैटरी रै गोरी कित सै बूँट जराब रै
म्हारी छुट्टी पूरी हो लेइ
खूँटी पै झोळा र बैटरी ओ पिया पेटी म्हैं बूँट जराब ओ
त्हारी छुट्टी पूरी हो लेइ
बिस्तर बाँधै भरतार ए कदे भीतर जावै कदे ब्हार[1]
रै गोरी एक बै कैह्दे जाण की
सास लड़ै दिन-रात ओ भर नणंद बणावै सोक ओ
भर मूळ कहूँ ना जाण की
बेबे की धर देइ ठीक[2] *रै गोरी माता नै चले समझाय रै*
गोरी एक बै कैह्दे जाण की
जाओ पति भरतार ओ थारै जिंदगी लावै भगवान
ओ थारी बणी रव्हैगी नौकरी
ठाके टोकणी नीसरी[3] *ए मैं तो म्हैल तळै को लीकड़ी*
ए मनै मन म्हैं कसूती सोच ली
करड़ा-सा ढाठा[4] *मारके ए मनै पाड़छे म्हैं जूती काढ़के*
ए मनै ज्यान कुवै म्ह झोक दी
काढ़ैं[5] *देवर जेठ ए मेरा डस डस रोवै भरतार*
रै गोरी आज कसूती सोच गी
पालणे म्हैं सोवै रगभीर रै उसकी जड़ म्हैं खड़्या जगबीर
रै गोरी किसकै भरोसै छोड गी

इस जकड़ी में एक नारी द्वारा अपने सैनिक पति की विदाई के समय जान दे देने की घटना का मर्मस्पर्शी वर्णन है। फ़ौजी ने बिस्तर बाँध लिया है और बार-बार अपनी

1. बाहर 2. गौने का दिन 3. निकली 4. दुपट्टे से मुँह ढाँपना 5. निकालना

पत्नी से उसे नौकरी पर जाने देने के लिए कहता है। लेकिन उसकी पत्नी उसे न जाने देने की जिद पकड़े हुए है क्योंकि उसकी सास, ननद दिन-रात उससे लड़ती रहती हैं। इस पर वह सैनिक बहन को ससुराल भेजने और माँ को समझा देने का आश्वासन देता है। निराश होकर वह नारी अपने पति की लंबी आयु और उसकी सफल नौकरी की कामना करते हुए उसे विदा कर देती है। उसके पीछे-पीछे वह मटका उठाकर कुएँ पर पहुँच जाती हैं और कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर लेती है। उसके देवर, जेठ उसे निकालते हैं। उसका पति फूट-फूटकर रोता है। वह अपने दो छोटे-छोटे बच्चों को देखकर उलाहना देता है कि वह उन्हें किसके भरोसे छोड़कर चली गई?

तेरी रो रो हूर मरैगी [91]

नौकर मतना[1] जाइए पति ओ तेरी रो रो परी[2] मरैगी
म्हैंलाँ के म्हैं चढ़ै एकली या दुनिया भरम धरैगी
हाथाँ म्हैं तेरै छन्न पछेली गजरे बीच सुपारी
कड़ै गए तेरे लाड करणिए रै किस पै डाट लगा री
ए दिल्ली के म्हैं भरती हो ग्या सगी नणंद का भाई
ए लांबे रोड़ नै जाय लिया वो अंबाळे की राही
खाकी वरदी बूंट बिलैती ऐड लाँवदा होगा
ए सपल [3] स्हैर म्हैं डबल कवाटर राग गाँवदा होगा

इस लोकगीत में एक परदेसी की पत्नी की विरह-व्यथा का वर्णन है। गीत के पहले भाग में वह अपने पति को नौकरी पर जाने से यह कहकर मना करती है कि उसके वियोग में वह रो-रोकर मर जाएगी। वह कहती है कि उसके चले जाने पर उसके उठने-बैठने, ओढ़ने-पहनने पर लोग ताने देंगे। गीत के दूसरे भाग में वह बताती है कि उसका पति दिल्ली जाकर सेना में भरती हो गया है और वहाँ से अंबाला चला गया है। अकेली बैठी वह कल्पना कर रही है कि सैनिक की वर्दी में उसका पति बड़ी शान से रहता होगा और बड़े सरकारी मकान में बैठा राग गा रहा होगा।

बुध के बिछड़े ना मिलाँ [92]

पिया मग म्हैं दूधू लिए खड़ी
पिया बेठ्या[4] हो के पीय ले कब की खड़ी तेरे म्हैल म्हैं
गोरी मग नै तो धर द्यो मेज पै
गोरी दुख सुख की बतळा ल्यो तड़कै जाँगे[5] नौकरी

---

1. मत 2. अप्सरा जैसी प्रिया 3. छावनी 4. बैठकर 5. जाएँगे

पिया तड़का[1] तड़का हो रही
पिया तड़कै सै बुधवार बुध के बिछड़े ना मिलाँ
गोरी बुध की तो सिरणी[2] बाँडियो
गोरी मंगळ का लाइयो रोट आवाँगे लड़ाई जीत के

इस छोटी-सी जकड़ी में रात के समय पति-पत्नी के बीच हुए संवाद का ज़िक्र है। पत्नी पति के लिए दूध लेकर आती है और उसे पीने के लिए कहती है। पति दूध को एक तरफ रखने के लिए कहता है और पत्नी से अपने दुख-सुख की चर्चा करने के लिए कहता है क्योंकि अगले दिन सुबह उसे परदेस जाना है। पत्नी को अंदेशा है कि अगले दिन बुधवार है। लोक-विश्वास के अनुसार बुधवार के दिन बिछड़े हुए लोग फिर कभी नहीं मिलते। इस पर उसका पति उसे बुधवार का प्रसाद बाँटने और मंगलवार की कड़ाही करने के लिए कहता है। उसे उम्मीद है कि उसकी पत्नी के ऐसा करने पर वह युद्ध जीतकर सकुशल वापस आ जाएगा।

गोरी स्याही मताना ला दिए[93]

चूँदड़ी मेरी तीस की ए मेरा दामण घेर घुमेर
ए मेरी माँ ए क्हवै तो प्हैर ल्यूँ
सुसरा धरम का बाप रै गोरी सास धरम की माय
रै गोरी उनकै स्यामणै[3] ना बोलिए
देवर जेठे सब एक से रै गोरी कितणी पड़ ज्या भीड़[4]
रै गोरी घूँघट मतना खोलिए
द्योराणी जिठाणी सब एक सी रै गोरी आधा करिए काम
रै गोरी उनतैं रळके[5] चालिए
पतळी सुथरी कामनी रै गोरी हम साँ कमल के फूल
रै गोरी स्याही[6] मतना ला दिए

इस लोकगीत में एक परदेसी विदा होते समय अपनी पत्नी को नियमपूर्वक अपना धर्म निभाने की सलाह देता है। वह कहता है कि ससुर धर्म का पिता और सास धर्म की माँ होती है। अत: उनके सामने उसकी पत्नी कभी मुँह न खोले। उसका मानना है कि देवर, जेठ सब एक जैसे होते हैं इसलिए चाहे कैसी भी विपदा आ जाए, उसकी पत्नी को उनके सामने घूँघट नहीं खोलना है। वह उससे कहता है कि देवरानी, जेठानी के साथ रहते हुए उसे अपने हिस्से का काम सहर्ष करना चाहिए। अंत में वह उसे चेताता है कि तुम

1. कल 2. प्रसाद 3. सामने 4. मुसीबत 5. मिलकर 6. दाग

सुंदर और कमनीय हो और वह स्वयं कमल के फूल के समान है। अत: वह कोई ऐसा काम न करे, जिससे उनकी इज़्ज़त में बट्टा लग जाए।

फौजी की नारी [94]

ओ पिया चले नौकरी हमनै भी जतन[1] बताइए
हे रै फौजी की नारी थोड़ा सा धरम कमाइए
हे रै तेरै जड़ म्हैं बणी सै मोर्‌याँ नै दाणे रै चबाइए
हे एक ज्हयाज डूब गी डूब्या नणंद तेरा भाई
ओ कड़ै[2] पड़के सो ग्या रेते म्हैं रुळ गी[3] कमाई
ए हाळी की नारी हँस हँस छोड चरावै
ए फौजी की नारी म्हैंल्याँ के काग उडावै
हे उड ज्याइए रे कागे अज म्हारे राजे घर आवैं
हे पति छुट्टी आ ग्या आके नै साँगळ खुलाई
ओ पिया साच बता दे कित कित छिड़ी हो लड़ाई
रै कसमीर जै लिए जंबू म्हैं छिड़ी रै लड़ाई
ओ पिया साच बता दे क्यूकर ज्यान बचाई
हे रै प्हाड़्याँ म्हैं बड़ गे[4] प्हाड़्याँ म्हैं देबी माई
हे रै गोरी मूँधे[5] पड़गे देबी की धोक लगाई
हो पिया भेली ल्या दे देबी की करूँगी कढ़ाई
हे रै गोरी पागल हो गी ब्हैम्याँ[6] की कोन्या रै दिवाई[7]

इस लोकगीत में एक फ़ौजी की पत्नी के डूबते-उतराते भाग्य की करुण कथा है। सैनिक युद्ध में जाने से पहले अपनी पत्नी को धर्म कमाने की सलाह देता है। वह उसे बणी में मोरों को रोज़ दाने चुगाने के लिए कहता है। एक दिन उस नारी को संदेश मिलता है कि जहाज़ डूबने से उसके पति की मौत हो गई है। वह रोते-रोते कहती है कि उसकी उम्र भर की कमाई मिट्टी में मिल गई। जहाँ एक गरीब किसान की पत्नी पति के सान्निध्य में हँसकर जीवन बिताती है, वहीं एक फ़ौजी की पत्नी महलों में विरहिणी का जीवन बिताती है। कई दिनों के बाद अचानक सैनिक घर आ जाता है। इस पर वह पूछती है कि उसकी जान कैसे बची? वह बताता है कि जम्मू-कश्मीर में लड़ते-लड़ते वह पहाड़ों में घुस गया और देवी माँ की पूजा की। गद्गद होकर उसकी पत्नी कहती है कि मैं देवी माँ का भोग लगाऊँगी। लेकिन सैनिक उसकी बात को यह कहकर टाल देता है कि यह अंधविश्वास है। उसके वहम का कोई इलाज़ नहीं।

1. उपाय 2. कहाँ 3. खो गई 4. घुस गए 5. पेट के बल 6. वहम 7. इलाज

बैठी रंग म्हैल म्हैं [95]

गोळ बिस्तरा ठा लिया फौजी टेसण[1] जै लिया
डाटूँ सूँ दिल डटदा कोनी ब्होत घणा[2] समझा लिया
बेठी रंग म्हैल म्ह बेठी सोच विचार म्हैं
मैह्ल तळै[3] को छोरा लिकड़ूया पिए की उनिग्हार[4] म्हैं
आज्या म्हारे म्हैल म्हैं बतळा ज्या म्हारे म्हैल म्हैं
रेसम के म्हारे सोड़ सोड़िए सो ज्या म्हारे म्हैल म्हैं
मैं पढ़णिया छोरा रै कोलिज पढ़ण जा र्ह्या रै
ना च्हांदे[5] तेरे सोड़ सोड़िए गैल[6] बिस्तरा ले र्ह्या रै
ये सरोली आम सैं ये फौजी के काम सैं
देखो जी ये साहब म्हारे खाणे म्हैं बेकार सैं
छोट्टा बड्डा क्यारा हो बढ़िया सा जमींदारा हो
तेरे बरगे[7] गाबरू नै चालणा सा नारा[8] हो
कंद का दामण लाल हो ऊपर काळी वैल हो
धोळे से कमीज नीचै बोडी और बणियाण हो
छोटा सा चूबारा हो गैल पिया प्यारा हो
च्याँदणी सी रात म्हैं यो चाँद का उजाळा हो
भार्या सा एक बाग हो सब मेवा के ठाठ हों
पत्ते ऊपर चाट बणाके खाणे आळा साथ हो

इस लोकगीत में एक परदेसी की पत्नी की कामुकता का वर्णन है। उसका पति चला गया है और उसके लिए अपना दिल सँभालना मुश्किल हो रहा है। वह अपने रंगमहल में विचारमग्न बैठी है। तभी वहाँ से कॉलेज में पढ़ने वाला एक लड़का गुज़रता है। वह उसे अपने रंगमहल में आमंत्रित करती है, लेकिन वह मना कर देता है। वह तरह-तरह से उसे लुभाने का निष्फल प्रयास करती है। अंत में वह निराश होकर अपने लिए ऐसे प्रेमी की कल्पना करती है जो चाँदनी रात में खिले हुए उपवन में उसके साथ विचरण कर सके।

गाड्डी का ऊकै टेम [96]

रै खड़ी हो ले बेठी हो ले गाड्डी का ऊकै टेम
ओ स्यर[9] भड़कै मेरा द्यल धड़कै जावण की ब्यल्कुल[10] टाळ
रै गौरी तड़कै नौकर जाँगे काढ़ाँगे[11] थारी रै मरोड़

---

1. स्टेशन 2. बहुत ज़्यादा 3. नीचे; पास 4. शक्ल 5. चाहिए 6. साथ 7. जैसे 8. बैल 9. सिर 10. बिलकुल 11. निकालेंगे

ओ पिया बेसक चाल्या जाइए मैं नौ भाइयाँ की ब्हाण
हे रै तन्नै भाइयाँ बीच सुखा द्यूँ जणू सूखै अरंड का पेड
ओ तन्नै पलटण बीच सुखा द्यूँ जणू सूखै भादुवे का घाम[1]
ए पति दस दिन की छुट्टी आया हाथाँ म्हैं लीला बैग
ए रस्ते म्हैं साळी मिल गी जीजा किसकी ल्यकड़ी मरोड़
रै साळी त्हमनै आवै मसकरी[2] म्हारे घर का हो ग्या नास
ओ जीजा साळी बडी चिंडाळी त्हारे दो बै जुड़ा दे हाथ

इस लोकगीत में एक फ़ौजी और उसकी पत्नी के बीच हुए विवाद का वर्णन है। फ़ौजी की पत्नी सिरदर्द का बहाना करके पड़ी है और फ़ौजी उससे विदा माँग रहा है। वह उसे विदा करने से मना कर देती है। गुस्सा होकर सैनिक कहता है कि मेरे चले जाने पर तुम्हारी मरोड़ अपने आप निकल जाएगी। जब वह कहती है कि वह नौ भाइयों की बहन है और उनके साथ रह लेगी तो वह कहता है कि मैं तुम्हें भाइयों के बीच ऐसे सुखा दूँगा जैसे अरंड का पेड़ सूख जाता है। इस पर ताव खाकर वह उसे फ़ौज में ऐसे सुखाने की बात कहती है, जैसे भादों की धूप होती है। कई दिनों के बाद फ़ौजी छुट्टी आता है। उसकी साली पूछती है कि जीजा, किसकी मरोड़ निकली? वह कहता है कि मेरा तो घर उजड़ गया और तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है। इस पर वह कहती है कि साली बड़ी ही धूर्त होती है जो तुम्हारे दो-दो बार हाथ जुड़वा सकती है।

सीसे के सा मेरा बखोरा[97]

छुट्टी पूरी हो ली नार तूँ दिल अपणे नै डाट लिए
के कहै र्‌या सै छुट्टी छुट्टी मत जाणे का नाम लिए
हाथ जोड़ के कहै र्‌या तूँ टेची[3] म्है तैं रुमाल दिए
के कहै र्‌या सै टेची टेची मत जाणे का नाम लिए
ठा[4] के बिस्तरा चाल पड़्या ए मैं ठाकै टोकणी चाल पड़ी
अड्डे तक बी जाण दिया ना ए ज्यान कुवे म्हैं झोक देई
पाच्छा[5] मुड़के देखण लाग्या[6] हाय राम मैं लूट लिया
सीसे[7] के सा मेरा बखोरा[8] पड़ पानी म्है फूट लिया
संग के साथी बूझण लागे क्याँ पै हुई तकरार थारी
नौकर जाँ थे जावणे ना दे थी ज्यान कुवे म्ह झोक देई

1. धूप 2. मसखरी 3. अटैची 4. उठाना 5. पीठ 6. लगा 7. काँच 8. बरतन

इस जकड़ी में विदाई के समय एक सैनिक और उसकी पत्नी के बीच हुई तकरार का वर्णन है, जिसकी परिणति पत्नी की मृत्यु के रूप में होती है। छुट्टी पूरी करके सैनिक वापस जा रहा है, लेकिन उसकी पत्नी उसे विदा नहीं कर रही है। ज्योंही वह घर से निकला, उसकी पत्नी कुएँ में गिर जाती है। यह देखकर वह चीत्कार कर उठता है और कहता है कि उसका काँच का सुंदर बरतन पानी में गिरकर टूट गया।

पति गए परदेस [98]

पति गए परदेस ब्हाण मैं क्यूकर रहूँ अकेली ए
ना मेरे से बात करणिया ना कोए मन का मेल्ली[1] ए
तनै डरेवर जुलम करे हो तन्नै ज्हयाज डाट दिया जल के म्हैं
मेरा पति ओ तनै आड़ै डबो दिया हाथ पकड़ के जल के म्हैं
दिल्ली भी ढूँढ़ी बरेली भी ढूँढ़ी ए ढूँढ़्याँ सै बंगाल मनै
तनै डरेवर जुल्म करे ओ यू ज्हयाज डाट दिया जल के म्हैं
रोवै मतना रै सुबकै मतना रै जाद्दा[2] सोर करै मतना
तेरे पति नै हम टोह द्याँगे रै ज्यादा ट्हैल[3] करै मतना
मोटे मणिए लड़ ताग्गे की रै पोवण तैं बंद हो ज्या न
तेरे पति नै हम टोह द्याँगे रोवण तैं बंद हो ज्या न
लांबे केस घैल रही चोटी रै ब्हावण तैं बंद हो ज्या न
तेरे पति न हम टोह द्याँगे रै रोवण तैं बंद हो ज्या न
मोटे नैण घाल रही स्याही घालण तैं बंद हो ज्या न
तेरे पति न हम टोह द्याँगे रै रोवण तैं बंद हो ज्या न
दुसरी बीर पै ध्यान ना धरिए ओ ब्यपता[4] पड़ रही मेरे पै
दुसरी बीर तैं इसा लखावै[5] जणूँ[6] गड र्ही कील मंडेरे म्हैं

इस जकड़ी में एक नारी अपने परदेसी पति को ढूँढ़ने निकली है। वह सारी दिल्ली, बरेली, बंगाल ढूँढ़ लेती है, लेकिन उसका पति नहीं मिलता। भटकती-भटकती वह उस जहाज़ के चालक से मिलती है, जिसमें उसका पति गया था। वह रोते-रोते उस चालक से अपने पति को ढूँढ़ निकालने की विनती करती है। वह चालक उसे चुप कराने के बहाने बार-बार उसके रूप-सौंदर्य की प्रशंसा करने लगता है। वह नारी उसकी नीयत भाँप जाती है और विपदा में पड़ी पराई नारी पर बुरी नज़र न रखने की चेतावनी देती है।

चिट्ठी भी ना आई [99]

हे रे कोरा कागज लीली स्याही रे पता काढ़[7] मेरे भाई

1. साथी 2. ज़्यादा 3. अनुग्रह 4. विपदा 5. देखना 6. जैसे 7. निकाल

हे रे सात साल दस म्हीने हो लिए रे चिट्ठी भी ना आई
हे म्हारा तो ए वो जीजा लागै माँ का लागै जमाई
हे सात साल दस म्हीने हो लिए तरस भतेरी आवै
हे रे कार आळे कार आळे रे कार डाट मेरे भाई
रे तेरी कार म्हैं मैं बेठूँगी ल्हयाज[1] राख मेरे भाई
ए कार म्हैं तैं चाली उतरकै ए च्यारुँ तरफ लखाई
ए किते ना दिक्खी स्यान पति की मैं डाँगर ज्यूँ अरड़ाई[2]
हे रे ज्हयाज आळे जहाज आळे जहाज डाट मेरे भाई
हे रे तेरी ज्हयाज म्हैं मैं बैठूँगी रे ल्हयाज राख मेरे भाई
ए ज्हयाज म्हैं तैं चाली उतरकै ए च्यारुँ तरफ लखाई
ए इब दिक्खी सै स्यान पति की मैं डाँगर ज्यूँ अरड़ाई
ए के काकै की ए ताऊ की ए के मेरी माँ की जाई
ए साची साच बता मेरी बेब्बे किस बिपता म्हैं आई
ओ ना चाचै की ना ताऊ की ओ ना तेरी माँ की जाई
हो सात साल दस म्हीने हो लिए ओ चिट्टी भी ना आई

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी द्वारा अपने पति की खोज में निकलने का वर्णन है। परदेसी को घर आए सात साल से भी ऊपर हो गए हैं। उसे ढूँढ़ने के लिए वह घर से निकल पड़ती है और लोगों से पूछती-पूछती अंत में अपने पति के सामने जा पहुँचती है। जब वह उसे देखकर पशुओं की तरह रोने लगती है तो परदेसी असमंजस में पड़ जाता है क्योंकि वह उसे पहचान नहीं पाता। अंत में वह उसे अपना परिचय देती है और इतने सालों से घर न आने पर उलाहना देती है।

हाँ ए कसमीर तौलिया भूल ग्या [100]

हाँ ए कसमीर तौलिया भूल ग्या
हाँ ए मेरी लागी ना फिकर म्हैं आँख के सांझै ए चाक्की झो लई
हाँ ए मेरी द्योराणी जिठाणी बोली मार गी
हाँ ए बेबे बिछ रहे सतरंग सेज के सांझै ए चाक्की झो लई
हाँ ए मैं ड्हाकै[3] खटोला पड़ गई
हाँ ए बार्हयाँ तैं[4] आ ग्या मेरा जेठ के ईंख नुळावण चालणा
हाँ ए मेरै सिर पै घड़िया नीर का
हाँ ए काँधे पै कसोला टेक के सीधी ए राही हो लई

1. लाज 2. रोई, चीखना-चिल्लाना 3. डालकर 4. बाहर से

हाँ ए रस्ते म्हैं डाकिया मिल गया
हाँ रै कित जागी गजबण नार तार फौजी का आ लिया
हाँ ए मन्नै घड़िया पटक्या नीर का
हाँ ए काँधे तैं कसौला गेर के सीधी ए सरड़क हो लई
हाँ ए ओड़ै छोरे बैठे ड्यौढ़ सै[1]
हाँ ए ओड़ै बैठे अपसर लोग के जोण सी रै हूणी[2] हो लई

इस जकड़ी में एक फ़ौजी की पत्नी की विरह-व्यथा का वर्णन है। उसका पति जाते हुए अपना तौलिया भूल गया, जिसे देख-देखकर उस नारी को नींद नहीं आती और वह रात को ही चक्की पीसने बैठ जाती है। इस पर उसकी देवरानी-जेठानी ताना मारती हैं कि वह क्यों अपनी सतरंगी सेज छोड़कर चक्की पर बैठ गई ? सुबह उसका जेठ उसे खेत में ईख निराई के लिए चलने को कहता है। सिर पर पानी का मटका और कंधे पर कसौला रखकर वह खेत की ओर चल पड़ती है। रास्ते में डाकिया उसे उसके पति का तार देता है। वह मटका फोड़कर और कसौला फेंककर सीधी पलटन में पहुँच जाती है। वहाँ पहुँचकर उसे पता चलता है कि उसके पति की मृत्यु हो चुकी है।

चीनियाँ नै ल्हास बणाई ए [101]

हे वो गया चीनियाँ कै पास चीनियाँ नै ल्हास[3] बणाई ए
हे मेरी धरी दसमी की ठीक[4] जेठ मेरा लेवण आया ए
हे मेरा पकड़्या सहेलियाँ नै हाथ ब्हैल[5] कै बीच बिठाई ए
हे मैं गई सुसरे की पोल[6] सैस मेरी तारण आई ए
हे स्हाळ्याँ[7] म्हैं पीढ़ा घाल सैस मेरी ठाढूँ रोई ए
हे रे किते हो तो बोल रणधीर आज तेरी ब्याही आई रे
हे मैं गई कमरे के बीच जेठ मेरा ठाडूँ[8] रोया ए
हे रै किते हो तो बोल रणधीर आज तेरी ब्याही आई रै
हे रै मेरा सै बेटी का नेग[9] आज मेरा धरम घटै सै

इस जकड़ी में भारत-चीन युद्ध में शहीद हुए एक भारतीय सैनिक के परिवार के दुख का वर्णन है। उस सैनिक के शहीद होने पर उसकी नवविवाहित पत्नी को जेठ के साथ ससुराल के लिए विदा किया जाता है। उसे उसकी सास डोली से उतारती है और अपने शहीद बेटे रणधीर को पुकारकर रोने लगती है। जब पुनर्विवाहिता सोने के लिए जाती है तो उसका जेठ चीत्कार कर उठता है और अपने मृत भाई को आवाज़ देता है। वह

---
1. असंख्य 2. अनहोनी 3. लाश 4. विदाई का दिन 5. डोली 6. दरवाज़ा 7. घर में एक विशेष स्थान 8. ज़ोर-ज़ोर से 9. संबंध

उसे कहीं से भी प्रकट होकर इस धर्मसंकट से बचाने को कहता है। कहाँ तो छोटे भाई की पत्नी बेटी के समान होती है और कहाँ आज वह पत्नी के रूप में सामने खड़ी है?

हे दिल्ली म्हैं दूसरी सोक [102]

चरखी दादरी रिवाड़ी के बीच पति ए मेरा ज्हयाज चलावै सै
ए भीन्नै [1] के ढाई हजार बेरा [2] ना बैरी कड़ै खपावै सै
हे दिल्ली म्हैं दूसरी सोक [3] बेरा नी बैरी उड़ै प्हुँचावै सै
ए मेरै चढ़ गए जाड्डे र ताप पति ए मेरा ढोल बजावै सै
ए सोकण कै चढ़ ग्या ताप पति ए मेरा बैद [4] ढुकावै सै

इस लोकगीत में एक नारी अपने पति पर परदेस में दूसरी पत्नी रखने का शक करती है। वह कहती है कि उसका पति महीने के अढ़ाई हज़ार रुपये कमाता है, लेकिन सारे ही खर्च कर देता है। लगता है वह दिल्ली में दूसरी पत्नी रखता है और सारी कमाई उस पर उड़ा देता है। वह कहती है कि जब मुझे बुखार चढ़ता है तो वह ख़ुशी के मारे ढोल बजाता है, लेकिन जब सौत बीमार होती है तो वह वैद्यों की कतार लगा देता है।

के कर ले फौजी माणस का [103]

भारत का ए ल्हैंगा ल्याई मेरी चूंदड़ी ए चीन जापान की
टारालीन का कुड़ता ल्याई मेरी जूती हिंदस्तान की
मैं ओढ़ प्हैर पाणी चाली रस्ते म्हैं पेड खजूर का
मैं पेड कै लागके रोई के कर ले फौजी माणस का
मेरा जेठ ब्यस्तरे बांधै बांधै सै नौकर जाण के
रै भाई तड़कै नौकर जाँगे ब्हैवड़ [5] के बोल खराब सैं
ओ जेठा बेसक चाल्या जाइए मैं कोनी डरदी [6] तेरे तैं
ओ सरड़क म्हैं झेल पड्या सै तेरी गाडी आणे जाणे म्हैं
ओ मेरे म्हैं कमी पड़ै सै मेरा बालम नौकर जाणे म्हैं

इस जकड़ी में एक फ़ौजी की पत्नी और उसके जेठ के बीच हुए विवाद का वर्णन है। वह पहली बार ससुराल आती है और तभी उसका पति फ़ौज में चला जाता है। वह अपने जेठ से लड़ बैठती है, जिसके कहने पर उसका पति पलटन में भरती हुआ था। अगले दिन उसका जेठ भी नौकरी पर जाने की तैयारी करता है। इस पर वह कहती है कि जेठ बेशक चला जाए, उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, फ़र्क तो उसे अपने पति के परदेस जाने से पड़ता है।

1. महीने 2. पता, मालूम 3. सौतन 4. वैद्य 5. बहू 6. डरती

मन्नै छोड्या हेज पति का [104]

ड्योळे [1] पै खड़ी बडबेरी पलटण म्हैं रंडी भतेरी
ड्योळे पै पेड बरू का उसनै छोड्या हेज बहू का
मेरा देवर पढ़के आया ए झोले म्हैं घाल [2] र्‌हया चिट्‌ठी
देवर पाछै रोटी खाइए ओ पहले बाँच सुणा दे चिट्‌ठी
भाबो राजी खुसी लिख राखी री भाई नै मिलदी ना छुट्‌टी
हे ड्योळे पै पेड़ रति का हे मन्नै छोड्या हेज पति का

इस लोकगीत में परदेसी की पत्नी के वियोग का चरमोत्कर्ष दिखाई पड़ता है। कई वर्षों से परदेसी घर नहीं आया है। इंतज़ार करते–करते उसकी विवाहिता उकता गई है। उसे लगता है कि पलटन में वेश्याओं की कमी नहीं है इसीलिए परदेसी ने पत्नी के प्रति अपने अनुराग को भुला दिया है। उसका देवर स्कूल से आते हुए एक पत्र लेकर आता है। वह उसे बाकी काम करने से पहले पत्र पढ़कर सुनाने की मनुहार करती है। जब वह सुनती है कि अब भी उसके पति को छुट्‌टी नहीं मिलेगी तो निराश होकर वह भी अपने पति–प्रेम को तिलांजलि दे देती है।

फौजी कै ब्याह ना कराइयो [105]

सुपना चाळे कर ग्या ए हे सुपने म्हैं दे ग्या दिखाई
खाकी वरदी प्हैर र्‌या ए हे काँधे पै रफल जचाई
च्यार मिंट बतळाई ए हे फेर बैरण आँख उघड़ गी
नींद कती ना आई ए हे जळ्दी [3] न चाकी [4] झोई
फौजी कै ब्याह ना कराइयो ए हे फौजी की नार दुखी सै
लोट [5] भतेरे ल्यावै ए हे लोटाँ की कोन्या सिळाई [6]

इस जकड़ी में एक सैनिक की पत्नी की विरह–वेदना का सटीक वर्णन है। काफी समय के बाद एक रात सपने में उसे अपना पति दिखाई देता है। वह खाकी वर्दी पहने कंधे पर राइफल सजाए हुए है। वह थोड़े ही समय उससे बात कर पाती है कि उसकी नींद खुल जाती है। जब उसे दोबारा नींद नहीं आती तो वह झुँझलाहट के मारे रात को ही चक्की पीसने बैठ जाती है। वह कहती है कि किसी भी लड़की को फ़ौजी से विवाह नहीं करना चाहिए। फ़ौजी रुपये तो बहुत कमाता है, लेकिन केवल रुपयों से कोई सुकून नहीं मिलता।

---

1. खेत की मेंड़ 2. डालना 3. दिलजली 4. चक्की 5. रुपये 6. ठंडक, संतोष

छुट्टी नहीं मिलै जुवान [106]

मन्नै छुट्टी दे सरकार मेरै घर तैं आ रह्या तार
मेरी हूर पड़ी बीमार मन्नै जाणा हो पड़ै
छुट्टी नहीं मिलै जुवान चाहे आज मरो चाहे काल म्हारै दया ए नहीं
वो तो बैठ ग्या जुवान वो तो करके नीची नाड़[1] कुछ चारा ए नहीं

इस छोटी-सी जकड़ी में एक सैनिक की विवशता का वर्णन है। सैनिक के घर से पत्र आता है कि उसकी पत्नी सख्त बीमार है। वह अपने अफ़सर को सारी बात बताता है और छुट्टी के लिए आग्रह करता है। लेकिन अफ़सर बड़ी निष्ठुरता से कहता है कि उसकी पत्नी चाहे आज मरे या कल, उसे छुट्टी नहीं मिलेगी। यह सुनकर वह जवान बेबस होकर गर्दन नीची करके बैठ जाता है।

मैं तो एकली नुळाऊँ खेत म्हैं [107]

लांबा बध ग्या[2] बाजरा ए बाजरे म्हैं पाड़ूँ न्यार[3] ए
मन्नै डर लागै सै खेत म्हैं
बार्‌हा आळी रेल म्हैं ए एक उतर्‌या नया रंगरूट ए
कांधे पै बिस्तरा गोळ सै
ड्योळे पै बिस्तरा गेर के ए उसनै देख्या अपणा खेत रै
तूँ एकली नुळावै खेत म्हैं
कित गए देवर जेठ रै थारी कित गई बुढ़िया सास रै
तूँ एकली नुळावै खेत म्हैं
न्यारे देवर जेठ ओ मेरी घर पै बुढ़िया सास हो
मैं तो एकली नुळाऊँ खेत म्हैं
हाम साँ[4] तेरे भरतार रै हाम छुट्टी आए म्हारी नार रै
तूँ तो एकली नुळावै खेत म्हैं
चाल्या जाइए बदमास ओ तेरै मारूँगी रैपटे[5] च्यार
ओ सैसड़ नै घाल्ली[6] खेत म्हैं
मेरे पति की चाल हो जणू[7] बागाँ म्हैं चालै मोर हो
तेरी लांबी लांबी टाँग सैं
मेरे पति का बोल हो जणू बागाँ म्हैं बोलै कोल[8] हो
तेरा भार्‌या भार्‌या बोल सै
मेरे पति का गात हो जणू सीसम कैसा पेड हो

1. गरदन 2. बढ़ गया 3. घास, चारा 4. है 5. थप्पड़ 6. भेजी 7. जैसे 8. कोयल

तेरा कीकर कैसा गात सै
दिन छिप ग्या ज्यब ब्हावड़ी[1] ए स्हाळ्याँ म्हैं दूधू पी रह्या ए
पींदे की हांसी छूट गी
माता इस बावळी नै बूझ री इसनै कुण फेट्या था खेत म्हैं
बाळक उमर निदान[2] रे इब हो ग्या सेर जिवान रे
इसनै नहीं पिछाण्या खेत म्हैं
हरी हरी सिरसम[3] फूल गी री या तो ब्याहे मरद नै भूल गी री
माता क्यूँ घाली थी खेत म्हैं
जमीदारे का काम रे म्हारा इसतैं चलै रुजगार रे बेटा
न्यूँ घाली थी खेत म्हैं

इस जकड़ी में कई वर्ष बाद एक परदेसी के छुट्टी आने और अपने खेत में अपनी पत्नी को अकेली पाकर उससे वार्तालाप करने का प्रसंग है। एक दिन परदेसी की पत्नी बाजरे के खेत में घास काट रही थी। तभी एक सुंदर नौजवान वहाँ आता है और उससे पूछता है कि उसे खेत में किसने भेजा? वह बताती है कि उसके देवर-जेठ अलग हो गए हैं और बूढ़ी सास घर पर है इसलिए वह खेत में अकेली है। वह बताता है कि वही उसका पति है। लेकिन वह उसे पहचानने से इनकार कर देती है, उसे गाली देती है और उसे खेत से बाहर चले जाने को कहती है। वह अपने पति की चाल-ढाल, बोलचाल और बलिष्ठ शरीर की प्रशंसा करते हुए कहती है कि तुम किसी भी तरह से मेरे पति जैसे नहीं लगते। जब वह घास लेकर घर आती है तो वही नौजवान उसकी सास के पास बैठकर दूध पी रहा होता है। वह अपनी माँ से कहता है कि इससे ज़रा पूछ आज इसे खेत में कौन मिला था? माँ सारी बात समझ जाती है। वह बहू का बचाव करते हुए कहती है कि वह छोटी-सी उम्र में उसे छोड़कर चला गया था। अब वह जवान हो गया है। इस कारण उसने उसे नहीं पहचाना। वह हैरान होता है कि कोई औरत अपने पति को कैसे भूल सकती है? वह पूछता है कि उसे खेत में क्यों भेजा गया था? उसकी माँ कहती है कि उनका भरण-पोषण कृषि-कार्य से ही होता है। इसीलिए उसे खेत में भेजा गया था।

गोरी रै क्यूँ जळदे नै जळावै सै [108]

देवर भाभी करैं थे लामणी[4] दोनुवाँ की होई तकरार
देवर हो न्यू के बीर[5] बण्या जा सै
बा‍र्हा आळी गाड्डी आई रोटी ल्याई मेरी सास
देवर हो न्यू के फेर धर्या जा सै

---

1. वापस आई 2. नादान 3. सरसों 4. खेत का काम 5. पत्नी

पहल्याँ तो रे बेटा रोटी खा ले फेर चिट्ठी नै बाँच
बेटा रे चिट्ठी म्हैं के लिख राखी सै
राजी खुसी माता सब की नमस्ते छुट्टी की बिलकुल टाळ
माता री चिट्ठी म्हैं न्यू लिख राखी सै
ढाई आळी आई रागनी सासू नै हिला दिया हाथ
बहू ए खेताँ म्हैं रैहणा ठीक नहीं
कोड्डी [1] कोड्डी सान्नी भेऊँ [2] छुट्टी आए भरतार
गोरी रै क्यूँ धंधे म्हैं फस र्ही सै
कुछ तो डुबे मेरे माय्यर बाबू कुछ फूटी तकदीर
पिया ओ क्यूँ जळदी नै जळावै सै
कुछ तो छुट्टी देई ना साब नै कुछ तूँ मारै तीर
गोरी रै क्यूँ जळदे नै जळावै सै

इस जकड़ी में एक फ़ौजी की पत्नी और उसके देवर के बीच खेत में हुई तकरार, सास द्वारा उसे घर भेजने और फ़ौजी के छुट्टी आने पर उन दोनों के बीच हुए वार्तालाप का प्रसंग है। फ़सल काटने को लेकर देवर-भाभी में झगड़ा हो जाता है। बुढ़िया सास उनका खाना लेकर आती है और अपने छोटे बेटे के तेवर देखकर बहू को जल्दी घर भेज देती है। घर आकर जब वह पशुओं को चारा डाल रही होती है तो उसका पति छुट्टी आ जाता है। और पूछता है क्यों वह सारा दिन घर के धंधे में फँसी रहती है? इस पर वह कहती है कि कुछ तो मेरे माँ-बाप डूब गए कि उसका विवाह एक परदेसी से कर दिया और कुछ उसका भाग्य फूट गया जो ससुराल में उसे स्नेह नहीं मिला। वह तो पहले ही जल रही है और वह उसे ऐसी बात कहकर और जला रहा है। इस पर उसका पति जवाब देता है कि कुछ तो साहब ने पहले छुट्टी नहीं दी और अब वह उसे ताने मार रही है। इस प्रकार वह उसे और दुखी कर रही है।

रंज भतेरा आया ए [109]

कित परदेसी पड़के सो ग्या ले बादळ की ओट ए
भरी जवानी न्यू ए डाटी [3] देख देख के बाट ए
छह भीन्याँ [4] म्हैं चिट्ठी आई चिट्ठी आई बड़ी खास ए
चिट्ठी के म्हैं न्यू लिख राख्या छुट्टी आवाँ [5] एक रात रै
कंधे ऊपर गोळ बिस्तरा आण स्हैळ म्हैं डट ग्या ए
स्हैल्याँ म्हैं उसकी माता बेठी आंदे ए[6] लाल सिखाया ए

1. झुकी हुई 2. पशुओं का चारा तैयार करना 3. रोकी 4. महीने 5. आएँगे 6. आते ही

उन परदेसाँ के रूल [1] बुरे सैं कड़[2] कै बीच जचाया ए
ठाकै टोकणी पाणी नै चाली रंज भतेरा [3] आया ए
दिन छिप ग्या ज्यब होया अंधेरा कुणबा सो ग्या सारा ए
दम दम करकै म्हैलें चढ़ गी सेज बिछा लिया न्यारा ए
वो बोल्या रै गोरी खाट बिछाइए मैं बोली ओ के [4] बांदी सूँ
वो बोल्या रै तेरे लाड करूँगा मैं बोली ओ के बाळक सूँ
बो बोल्या रै तेरै छोरा न छोरी मैं बोली ओ भरथार नहीं
वो बोल्या रै तेरा के लागूँ सूँ मैं बोली ओ भर जाण नहीं
वो बोल्या रै तेरी माता मर गी मैं बोली ओ बर सैस रही
वो बोल्या रै तेरा कुणबा मर ग्या मैं बोली ओ सनसार रही

इस जकड़ी में एक स्त्री और निष्ठुर परदेसी पति के बीच हुए वार्तालाप का ज़िक्र है। वह स्त्री अपनी भरी जवानी पति का इंतज़ार करते-करते बिता रही है। आखिरकार वह सिर्फ़ एक रात के लिए छुट्टी आता है। आते ही उसकी माँ उसे बहू के खिलाफ़ भड़का देती है। वह बिना उसका पक्ष सुने अपनी पत्नी की पिटाई कर देता है। उस स्त्री को बहुत दुख होता है। वह मटका उठाकर पानी लेने चली जाती है। रात को वह अपना अलग बिस्तर बिछाकर सो जाती है। परदेसी आता है। जब वह उसे बिस्तर लगाने के लिए कहता है तो वह कहती है कि मैं किसी की नौकरानी नहीं हूँ। जब वह उससे कहता है कि वह उसके लाड़ लड़ाएगा तो वह कहती है कि मैं कोई बालक नही हूँ। जब वह उसे पति मानने से भी इनकार कर देती है तो वह चिढ़कर कहता है कि तुम्हारी माँ मर गई है। इस पर वह कहती है कि कोई बात नहीं, सास तो है। अंत में जब वह कहता है कि तुम्हारा पूरा कुनबा मर गया है तो वह निरपेक्ष भाव से कहती है कि कोई बात नहीं, संसार बहुत बड़ा है। मैं गुज़ारा कर लूँगी।

मेरे तैं बोलते कोन्या [110]

ए मेरे छुट्टी आए भरतार मेरे तैं [5] बोलते कोन्या
ए नणदल की ल्याए संदूख इबे तो ठीक [6] बी कोन्या
ए ऊँकी [7] तीवळ ल्याए पचास दुपटट्याँ का ओड़[8] बी कोन्या
ए जेठाणी का सौ का सूँट मेरी तो बनियाण बी कोन्या
ए सासू का सपन [9] का सूँट इसी तो राँड बी कोन्या
ए जलती [10] नै खा लिया जहैर मेरे म्है तो सांस बी कोन्या

1. डंडे, कानून 2. पीठ 3. बहुतेरा 4. क्या 5. मुझसे 6. विदाई की तिथि 7. उसकी 8. अंत, ओर-छोर 9. विशेष प्रकार का कपड़ा 10. जली-भुनी

ए ढुकवा दे बैद पै बैद [1] आड़ै तो कोए बैद बी कोन्या
हे रै साळ्याँ की भरी चपैड़ [2] साळी तो मेरै एक बी कोन्या

इस जकड़ी में एक परदेसी के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से तंग आकर उसकी पत्नी द्वारा आत्महत्या कर लेने का रोचक वर्णन है। उस स्त्री को इस बात का दुख है कि उसका पति इतने साल बाद छुट्टी पाकर घर आया है और उससे बात भी नहीं कर रहा। वह पाती है कि वह अपनी बहन, भाभी और माँ के लिए ढेर सारे उपहार लेकर आया है और उसके लिए कुछ भी नहीं। वह गुस्से में आकर ज़हर खा लती है। बदकिस्मती से उस दिन कोई वैद्य भी नहीं मिलता और वह मर जाती है। उसे मरी देखकर परदेसी सोचता है कि उसकी ससुराल में साले तो बहुत हैं, लेकिन साली एक भी नहीं, जिससे वह शादी कर सके।

फौजी की दुखिया नैर [111]

सात सखी ए हम सात ढाळ [3] की बेबे ए दो फौजी की नैर
के पूछैगी ए टाळ रहैण दे बेबे ए फौजी की दुखिया नैर
कांधै कसोला सिर पै घड़ुवा बेबे ए जाय नुळाऊँ ड्हुँगे क्यार [4]
बार्हा बज्याँ की गाडी आई बेबे ए उसमैं तैं उतरे रंगरूट
कड़ै गई रै तेरी द्योराणी जिठाणी छोरी रै कड़ै गए भरतार
न्यारी होगी मेरी द्योराणी जिठाणी छोरे ओ नौकर गए भरतार
आ ज्या रै छोरी जोट्टा ला ले [5] छोरी रै पड़ै रै भादुवे का घाम [6]
जोट्टा जाट्टा मैं ना लांदी छोरे ओ दे दे न नौकर का निसान
स्योने की गूँठी हर्या नगीना छोरी रै कुछ तो निसानी पिछाण
मेरै पति की चौड़ी चौड़ी छाती छोरे ओ छाती म्हैं लंबर [7] च्यार
इसे किसे नै बाँचणे नी आवैं छोरे ओ ऊपर मेरा नाम
दीखत की रै छोरी भोळी ढोळी छोरी रै लिकड़ गई हुसियार

इस जकड़ी में एक परदेसी और उसकी पत्नी के बीच वर्षों बाद खेत में हुई मुलाकात का वर्णन है। कंधे पर कसौला और सिर पर पानी का मटका उठाए परदेसी की पत्नी ईख की निराई करने खेत में गई। दोपहर को एक सैनिक बिस्तर उठाए उसके पास पहुँचता है और उससे अकेले ही खेत में आने का कारण पूछता है। वह बताती है कि उसकी देवरानी-जेठानी अलग हो गई हैं और उसका पति परदेस में है। वह सैनिक उसे बताता है कि वही उसका पति है। यह सुनकर वह युवती उससे कोई निशानी माँगती है। निशानी दिखाने पर वह उसे पहचान जाती है। सैनिक भी अपनी पत्नी की चतुराई देखकर प्रसन्न हो जाता है।

---

1. वैद्य 2. दरवाज़ा 3. तरह 4. दूर का खेत 5. आराम कर ले 6. धूप 7. नंबर

गाड्डी म्हैं तैं रंगरूट उतर्या [112]

हे टोकणी भी ठाई बंटा भी ठाया कूवे ऊपर आई
कूवे ऊपर आण के ढाई की गाड्डी आई
गाड्डी म्हैं तैं रंगरुट उतर्या कूवे ऊपर आया
पाणी आळी पाणी प्या दे कद का मरूँ तिसाया [1]
ठाके डोल डबोके पी ले क्यूँ घणी सता र्या सै
तेरे बाप की नौकर कोनी के बाँदी ला र्या सै
दोफारै म्हैं नीर भरै रै तूँ ओढ़ चूँदड़ी काळी
न्यू तो मैं भी जाण गया तेरा कौण रह्वै रुखाळी
नीचै तो मेरै धरती माता ऊपर राम रुखाळी
पति गए परदेस जळ्या मेरा कोण रह्वै रुखाळी
कूवै पर तैं चाल पड़या वो म्हारे घेर [2] *म्हैं आया*
खड़ी खड़ी मैं देखूँ थी जेठे तैं हाथ मिलाया
म्हैंडी [3] *ऊपर तारी टोकणी रोटी र साग बणाया*
परदेसी नै मेरे हाथ का भोजन बी ना खाया
दिन छिप ग्या ज्यब होया अंधेरा ए सासड़ सोवण खँदाई [4]
एक हाथ दुधू का लोटा एक हाथ मैं झारी [5]
दमदम करदी मैह्लें चढ़ गी सोवै नणंद का भाई
खड़ी खड़ी के पैर सूज गे बोल्या ना मरद कसाई
बोल पति ओ तों बोल पति ओ तूं बोलदा क्यूँ ना
कद की खड़ी सिर्हाणै तूँ आँखियाँ खोलदा क्यूँ ना
बोलाँगे रै गोरी बोलाँगे रै कुछ डटके [6] *बोलाँगे*
कूए आळे बोल तेरे खटक्याँ तैं खोलाँगे
दमदम करदी तळै उतर्याई आके चाकी झोई
बेरा ना कद आवैगा ए मेरी माँ का जाया भाई

इस लोकगीत में एक परदेसी और उसकी पत्नी के बीच बरसों बाद पनघट पर अनजाने में हुई तकरार और इससे परदेसी के नाराज़ हो जाने का प्रसंग है। नायिका पनघट पर पानी भर रही है। गाड़ी से उतरकर एक परदेसी कुएँ पर आकर पानी पिलाने के लिए कहता है। वह कहती है कि वह स्वयं डोल उठाकर पानी पी ले। वह पूछता है कि किसके दम पर वह इतने नखरे दिखा रही है। वह जवाब देती है कि उसका पति परदेस में है और अब केवल ज़मीन और आसमान ही उसके रखवाले हैं। वहाँ से चलकर परदेसी

1. प्यासा 2. बैठक 3. पानी का मटका रखने की जगह 4. भेजी 5. पानी की सुराही 6. रुककर

अपने घर चला जाता है। वह भी पानी लेकर आती है और अपने पति के लिए खाना बनाती है। नाराज़ परदेसी उसके हाथ का खाना भी नहीं खाता। रात में जब वह सोने के लिए जाती है तो वह खड़ी-खड़ी इंतज़ार करती रहती है। परदेसी उससे बोलता भी नहीं। आखिरकार जब वही बात शुरू करती है तो परदेसी उसे पनघट वाली बात का हवाला देकर चुप करा देता है। अंत में दुखी होकर वह नीचे उतर आती है और रात में ही चक्की पीसते-पीसते अपने मायके को याद कर अपने भाई के आने की प्रतीक्षा करने लगती है।

यो सै बदले का काम [113]

ज्हाज्याँ का उठ्या घरणाट [1] री बर ईख नुळाऊँ एकली
पाणी तो प्या दे मेरी नार रै मैं मरूँ तिसाया [2] फौज म्हैं
पाणी तो पी ले भरतार ओ बर लेट [3] भरी सै खेत म्हैं
साच बता दे मेरी नार रै तनै किसनै घाली [4] खेत म्हैं
बडी ए जिठाणी बदमास ओ बर जेठे नै घाली खेत म्हैं
घर नै चालो म्हारी नार रै देखाँगे थारे जेठ नै
खूँटी तै तारी सै रूल [5] रै भाई इबकै आ ज्या चौक म्हैं
मार ना दिए नरभाग ओ कदे [6] जाणा पड़ जे खेत म्हैं
यो सै बदले का काम ओ कदे जाणा पड़ जे रात नै

इस लोकगीत में एक परदेसी के अपनी पत्नी को खेत में अकेले ही काम करते देखकर नाराज़ हो जाने का प्रसंग है। नायिका अकेली ही ईख निरा रही है कि अचानक जहाज़ों का शोर होता है और उसका पति छुट्टी पर आता है। वह खेत में आकर उससे माँगकर पानी पीता है और पूछता है कि उसे अकेले ही खेत में किसने भेजा है? जब वह कहती है कि जेठानी के कहने पर उसके जेठ ने उसे खेत में अकेले ही भेजा है। वह गुस्सा होकर अपने बड़े भाई को मारने दौड़ता है। इस पर नायिका उसे रोकती है और कहती है कि यह तो बदले का काम है। जेठ-जेठानी उसके काम आते हैं तो उसका भी फ़र्ज़ बनता है कि खेत के काम में वह उनका हाथ बँटाए।

मेरी बड़ी दुख पाई मुरगाई [114]

भावज नै बूझ रह्या री मेरी कड़ै [7] गई मुरगाई [8]
देवर वा तो पाणी नै गई ओ रस्ते म्हैं करै थी अँघाई [9]
रूल [10] लिए हाथाँ म्हैं ए वो तो होया कुवे की राही

---

1. शोर 2. प्यासा 3. छोटा तालाब 4. भेजी 5. डंडा 6. कभी 7. कहाँ 8. पत्नी के लिए प्यार भरा संबोधन 9. मटरगश्ती 10. डंडा

दूर सी बेठ गया ए झोली तैं[1] हूर बुलाई
नैड़ तेरी तारूँगा रै तन्नै ल्हयाज सरम ना आई
ऐंख भर गी पाणी की ओ तेरै किसनै स्यकसा लाई[2]
रूल गेडूया हाथाँ तैं ए पापी नै काळजे कै लाई
गैल[3] ले चालूँगा रै मेरी घणी दुख पाई मुरगाई

इस जकड़ी में एक फ़ौजी के छुट्टी पर आने और अपनी पत्नी से हुई रोचक मुलाकात का प्रसंग है। परदेसी घर आता है और अपनी पत्नी को न पाकर भाभी से उसके बारे में पूछता है। भाभी कहती है कि वह पनघट पर गई है और रास्ते में चुहलबाज़ी कर रही होगी। वह डंडा लेकर पीछे-पीछे जाता है और दूर से ही हाथ का इशारा करके उसे अपने पास बुलाकर डाँटने लगता है। जान मुसीबत में देखकर वह भोली-भाली बनकर रोने लगती है। परदेसी का मन पसीज जाता है। डंडा दूर फेंककर वह उसे अपनी छाती से लगा लेता है और इस बार उसे अपने साथ ही ले जाने का वादा करता है।

हो परदेसी बंदे इतणी हो क्यूँ तरसाई[115]

च्यार सखी ए हम च्यार ढाळ[4] की ए भरण लाग रई पाणी
हे एक घोड़े आळा कूवे की जड़ म्हैं खड़्या सै
पाणी आळी पाणी प्या दे मैं तन्नै देख कै आया
हे रै मेरी प्यास मिटा दे कद का रै मरूँ मैं तिसाया[5]
छोवैंगे[6] हो मेरे सासू र सुसरा नणदल देगी गाळी
ओ जेठाणी चाळी[7] इतणी देर कित लाई
मेरे साथ की माँजैं सैं टोकणी[8] ओ भरण लाग रई पाणी
हो भर इन पै पी ले मैं परदेसी की नारी
कंद का रै दामण धोळा कुड़ता रै हाल[9] रही बडबेरी[10]
हे रै मनै न्यू तो बता दे कुण सै फिकर म्हैं माड़ी[11]
पल्ला उकास कै[12] देखण लागी ओ सगी नणंद का भाई
हो परदेसी बंदे इतणी हो क्यूँ तरसाई

इस लोकगीत में पनघट पर एक परदेसी और उसकी पत्नी के बीच बरसों बाद हुई मुलाकात का ज़िक्र है। नायिका सखियों के साथ पनघट पर पानी भर रही थी। तभी कोई घुड़सवार वहाँ आता है और उससे पानी पिलाने का आग्रह करता है। वह कहती है कि

1. हाथ के इशारे से 2. कान भरे 3. साथ 4. प्रकार 5. प्यासा 6. गुस्सा होंगे 7. चालाक 8. पानी भरने का पीतल का बर्तन 9. डोलना, हिलना 10. बेर का पेड़ 11. कमज़ोर 12. घूँघट उठाकर

उसका पति परदेस में है। अगर उसकी सास, ननद या जेठानी ने उसे बात करते देख लिया तो वे नाराज हो जाएँगी। इसलिए अच्छा होगा कि वह किसी और से पानी पी ले। इस बीच वह घूँघट उठाकर देखती है तो अपने पति को पहचान लेती है। वह लजाती हुई पूछती है-ओ परदेसी! तुमने मुझे इतना क्यों तरसाया? जल्दी क्यों नहीं आए?

तीजाँ तैं पहल्याँ आ ल्याँगे [116]

कंद का रै दामण लाल इस दामण नै कद [1] प्हैरैगी
छुट्ठी के दिन रैहगे च्यार गोझाँ म्हँ[2] फोटू टोह्वैगी
कोन्या टोहूँ भरतार ओ मैं अपणे पीहर डिगर ज्याँगी [3]
पीहर म्हैं भावज बदमास तेरै भर भर ताने मारैगी
कोन्या तो मारै भरतार मेरी माँ छाती कै ला लेगी
सखियाँ के आवैं लणिहार [4] तूँ भीतर बड़के [5] रोवैगी
कोन्या ओ रोऊँ भरतार मैं चिट्टी गेड़ बुला ल्यूँगी
कोन्या तो आवैं थारे यार रै चिट्ठी पाड़ बगा द्याँगे [6]
तीजाँ का बडा हो त्यौहार मैं तीज झुलण नै जाऊँगी
ऊपर तैं छोडूँ दोनूँ हाथ तीजाँ नै रांडा [7] कर ज्याँगी
मताना रै करिए म्हारी नार तीजाँ तैं प्हैल्याँ आ ल्याँगे

इस जकड़ी में परदेस जाते हुए एक व्यक्ति और उसकी पत्नी के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन है। परदेसी कहता है कि उसके जाने के बाद वह उसका फोटो ढूँढ़ती फिरेगी। लेकिन वह कहती है कि वह अपने पीहर चली जाएगी और उसे याद नहीं करेगी। जब वह कहता है कि पीहर में उसकी भाभी उसे ताने देगी तो वह कहती है कि ऐसा होने पर मेरी माँ मुझे अपनी छाती से लगा लेगी। वह कहता है कि उसकी सखियों को लेने के लिए उनके भरतार आएँगे और वह अपने घर में घुसकर रोया करेगी। वह कहती है कि मैं तुम्हें पत्र भेजकर बुला लूँगी। जब वह कहता है कि वह उसके पत्र को फाड़ फेंकेगा और घर नहीं आएगा तो वह जवाब देती है कि ऐसा होने पर वह तीज वाले दिन झूले से गिरकर मर जाएगी। इससे घबराकर परदेसी कहता है कि वह तीज के त्योहार से पहले ही छुट्टी लेकर आ जाएगा।

परै हट ज्या बाँझ लुगाई [117]

ओ तूँ हरे तौलिए आळे सब छोरे ईख नुळावैं
हे रै कोटन के जंफर आळी सब छोरी लाल खिलावैं

1. कब 2. जेबों में 3. चली जाऊँगी 4. पति 5. घुसकर 6. फेंक देंगे 7. विधुर

ओ पिया इसी के बोली मारी ल्या द्यूँ ब्हाण माँ जाई
हे रै गोरी डट ज्या करो समाई ये दो दो नहीं खटाई
हे मेरे पिया की होई सगाई ये गावैं गीत लुगाई
हे मेरा पीया बान बैठ ग्या कुणबे नै खुसी मनाई
हे मेरा पीया ब्याह्वण चढ़ ग्या मनै नौ मण बाँडी मिठाई
हे मेरा पीया ब्याह कै आ ग्या उननै बारणै [1] कार अड़ाई
हे मैं लोटा आँटी ल्याई तूँ उतर ब्हाण माँ जाई
हे लोटे कै ठोकर मारी परै हट ज्या बाँझ लुगाई

इस जकड़ी में संतान पैदा न कर सकने पर एक औरत द्वारा अपने पति का दूसरा विवाह करवाने का वर्णन है। एक दिन जब वह युवती अपने पति को निठल्ला बैठा देखकर कहती है कि सभी लोग खेत में काम कर रहे हैं। वह तपाक से कहता है कि सभी औरतें भी तो गोदी में लाल खिला रही हैं। यह ताना सुनकर वह पति के मना करने के बावजूद अपनी छोटी बहन से उसका दूसरा विवाह करवा देती है। लेकिन जब वह नई दुल्हन के रूप में अपनी बहन का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ती है तो उसे बाँझ कहकर एक ओर हटा दिया जाता है।

मेरे नौकर गए भरतार मेरे तैं लड़कै [118]

मेरे नौकर गए भरतार मेरे तैं लड़कै [2] हे री लड़कै
उनै [3] खत गेड्या ना तार गुसे म्हँ भरकै हे री भरकै
मनै गेड्या ढाई का तार मरी का लिखकै हे री लिखकै
मेरे बाँच रहे भरतार गोड्याँ म्हँ धरकै [4] हे री धरकै
मनै छुट्टी दे दे साब आए थे लड़कै हे री लड़कै
मेरा चाल पड्या भरतार घोड़े पै चढ़कै हे री चढ़कै
वो उतर्या भाइयाँ बीच निमस्ते करकै हे री करकै
मैं करड़ा [5] ढाठा [6] मार कुवे म्हँ पड़ गी हे री पड़ गी
मेरे काढैं देवर जेठ चीरे री आळा [7] सबकै [8] हे री सबकै
भाई मत रोवै मेरे यार बिह्वा द्याँ[9] तड़कै [10] हे रै तड़कै
भाई ब्याह्या तो जाँगा जरूर इसी रै नहीं आणी नहीं आणी
तेरे सैंडल ल्याया नार टरंक [11] म्हँ धरकै हे री धरकै
तेरी पैहरै छोटी सोंक [12] कुवे पै चढ़कै हे री चढ़कै

1. दरवाज़े पर 2. लड़कर 3. उसने 4. गोद में रखकर 5. कसकर 6. मुँह ढाँपकर 7. पगड़ी वाला 8. सुबकना 9. विवाह करे 10. कल 11. अटैची 12. सौतन

तेरी स्याड़ी ल्याया नार टरक म्हँ धरकै हे री धरकै
तेरी बाँधै छोटी सोंक पिलंग पै चढ़कै हे री चढ़कै
ओ पिया पट दे तोड़ूँ नैड़ भूतणी बणकै हे री बणकै

इस जकड़ी में एक परदेसी और उसकी पत्नी के बीच मनमुटाव, पत्नी द्वारा आत्महत्या करने और परदेसी का पुनर्विवाह होने के प्रसंग का वर्णन है। युवती बताती है कि कैसे उसका पति उससे झगड़कर नौकरी पर चला गया और गुस्से के मारे उसने पत्र भी नहीं लिखा। इस बीच उसे मज़ाक सूझा और अपनी मृत्यु का झूठा समाचार उस तक पहुँचा दिया। उसका पति तत्काल छुट्टी लेकर आ जाता है और उसे आया पाकर वह युवती कुएँ में गिरकर मर जाती है। जब उसका पति रोने लगता है तो उसके परिवार वाले उसका पुनर्विवाह करवा देते हैं। अनेक उपहार जैसे सैंडल, साड़ी आदि जो परदेसी अपनी पहली पत्नी के लिए लाया था, अब नई दुल्हन प्रयोग कर रही है। यह सब देखकर उस युवती को ईर्ष्या होने लगती है और वह भूतनी बनकर अपनी सौत की गर्दन मरोड़ने का निश्चय करती है।

हाळी ए खड़्या देखै सै [119]

रेसम साड़ी सिर पै ना डटदी [1] आडी टेडी माँग माँग म्है रोळी [2] सै
रोटी लेके गई खेत म्हँ रोटी खा ले भरतार मनै हो घर जाणा सै
रोटी धर दे ड्योळे पै बेठ ज्या मतना मारै तीर मनै रै हळ बाह्णा सै
झाला पटक्या घड़ुवा फोड़्या होई कोलेज की राह हाळी ए खड़्या देखै सै
साँझ होई ज्यब घर पै आई माँ बेटे नै सिखावै बहू रे कोए चाळा सै
लाठी ठाई मारण आया लखाई कड़वै त्योर हाळी ए खड़्या देखै सै

इस जकड़ी में एक पढ़ी-लिखी युवती के अपनी सास और किसान पति के दबाव में न आने की घटना का वर्णन है। सज-सँवरकर वह युवती खेत में अपने हाली पति के लिए खाना ले जाती है। जब वह अपने पति से जल्दी खाना खाने के लिए कहती है तो परेशान किसान उसे झिड़क देता है और चुपचाप बैठने को कहता है। गुस्से के मारे वह खाने को वहीं पटककर कॉलेज चली जाती है। शाम को जब वह घर वापस आती है तो पाती है कि उसकी सास उसके पति को उसके खिलाफ़ भड़का रही है। माँ का सिखाया किसान जब डंडा उठाकर उसे मारने के लिए आगे बढ़ता है तो युवती उसे कड़वी नज़र से घूरने लगती है। उसके तेवर देखकर किसान खड़ा का खड़ा रह जाता है।

---

1. ठहरती 2. सिंदूर

मेरी ब्याही दुख पाई [120]

चाँदीगढ़ की चूंदड़ी ए उसमैं बिजळी गिड़ाई
ओढ़ प्हैर पाणी नीसरी ए सारी गाळ[1] गरणाई[2]
गाळाँ म्ह बेठे छोरे डेढ़ सै ए उननै बोली मारी
इसनै कोए मत छेड़ियो रै इसका बालम घर पै कोनी
दोघड़ भरके नीसरी ए मनै नोहरे[3] म्हँ बुलाई
आप पिलंग पै बैठ ग्या ए मनै मूढ़े पै बिठाई
साच बता मेरी गोरड़ी रै थम[4] के के[5] कमाई
दिन म्ह पीस्या पीसणा ओ राँतू सानी[6] कटवाई
किसनै पिसाया पीसणा रै किसनै सानी कटवाई
सास पिसाया पीसणा ओ जेठै सानी कटवाई
आग लगो इस नौकरी रै मेरी ब्याही दुख पाई

इस जकड़ी में एक परदेसी द्वारा अपनी पत्नी के कष्टपूर्ण जीवन के प्रति सहानुभूति दर्शाने का प्रसंग है। एक दिन जब वह युवती सज-सँवरकर पानी भरने जाती है तो गलियों में बैठे लड़के उस पर बोली मारते हैं। जब वह घर आती है तो उसे अपना पति आया मिलता है। अपने पास बिठाकर वह उसके सुख-दुख की बातें पूछता है। जब उसे पता चलता है कि उसकी अनुपस्थिति में उसकी पत्नी को बहुत काम करना पड़ता है तो वह ऐसी नौकरी को छोड़ देने का निश्चय करता है, जिसके कारण पत्नी इतना ज़्यादा कष्ट भोग रही है।

तेरे बिना मेरा जी ना लागै [121]

ओ कमरे भीतर पिलंग सणी का ओ दरी उलटके जाइए
ओ कुण लावैगा तकिए झालर टरकाँ बीच जचाइए
ओ तेरी बैटरी का तेज च्यानणा[7] ओ मंदा करके जाइए
ओ तेरे बिना मेरा जी ना लागै ओ तावळ[8] करके आइए
ओ ना मेरै सासू ना मेरै सुसरा ओ देवर सै गिरकाणा[9]
ओ उसनै भी समझाकैं जाइए ओ रोज करै धिकताणा[10]
हे रै छोटा देवर तेरा लाडला रै माँगै जो हे देइए
हे रै जे तेरा देवर पढ़की[11] आवै आगै आगै पाइए
ए द्यन छिप्या[12] ज्यब होया अंधेरा ए देवर सोवण आया

---

1. गली 2. गूँज उठी 3. बाहर वाला मकान 4. आप 5. क्या-क्या 6. पशुओं का चारा 7. प्रकाश 8. जल्दी 9. साज-शृंगार पर ज़्यादा ध्यान देने वाला 10. ज़बरदस्ती 11. पढ़कर 12. दिन छिपा

ए आँगळी पकड़ मेरा पृहोंचा[1] पकड़्या रै उठ ले मेरी माया
ओ पढ़ ले ओ देवर पढ़ ले ओ देवर मतना ध्यान डिगावै
ओ मेरे म्हैल म्हँ बेसक सो ज्या मतना हाथ लगावै
हे डिबिया के म्हँ रोक डिगर ग्या ए भाण आत्मा मेरी
हे बेरा ना कद आवैगा ए मेरी ज्यान मरण म्हँ आई

इस जकड़ी में नौकरी पर जाते समय परदेसी और उसकी पत्नी के बीच हुए संवाद, और परदेसी के चले जाने पर छोटे देवर द्वारा परदेसी की पत्नी से की गई छेड़छाड़ का प्रसंग है। अपने परदेस जाते पति को वह युवती कहती है कि उसके बिना उसका मन नहीं लगेगा इसलिए वह जल्दी वापस आए। इसके अलावा वह कहती है कि उसके घर में सास-ससुर नहीं हैं। एक देवर है, जो गैर-चलन है। वह रोज़ उससे छेड़छाड़ करता है। इसलिए वह जाने से पहले उसे समझाए। लेकिन परदेसी यह कहकर टाल देता है कि उसका छोटा देवर बहुत लाड़ला है, वह पढ़ने जाता है। इसलिए उसे उसका हर तरह से खयाल रखना चाहिए। परदेसी के चले जाने पर उसी रात उस युवती का देवर उसके पास आकर छेड़छाड़ शुरू कर देता है। वह उसे समझाती हुई कहती है कि उसे पढ़ाई से अपना ध्यान नहीं हटाना चाहिए। वह बेशक उसके कमरे में सो सकता है, लेकिन उसे हाथ लगाने की जुर्रत न करे।

हो ज्या रै गोरी न्यारी [122]

चंदा की चमकणी[2] रात मोटे मोटे तारे
उसनै लिखकें गेड़्या[3] तार हो ज्या रै गोरी न्यारी
मनै मन म्हँ लाया बिच्यार मैं क्यूकर हो ज्याँ न्यारी
मेरे घर पैं नणंद जिवान जेठा सै घरबारी
मनै उलटा गेड़्या तार हो गी ओ पिया न्यारी
बळधाँ की ल्याइए जोट[4] गैल ल्याइए हाळी
एक रूँडी ल्याइए म्हैंस गैल ल्याइए पाळी
सोनै के ल्याइए ओ गिलास चाँदी की ल्याइए थाळी
उनै उलटा गेर्या तार होइए ना गोरी न्यारी
भीनै[5] के ढाई हजार उने की आ ज्या थाळी

इस जकड़ी में एक परदेसी द्वारा भावों में बहकर अपनी पत्नी को कुनबे से अलग हो जाने की सलाह देने का; पत्नी द्वारा संयुक्त परिवार के लाभ को ध्यान में रखते हुए

1. कलाई 2. प्रकाशित 3. भेजा 4. बैलों की जोड़ी 5. महीने

उसकी सलाह न मानने का प्रसंग है। एक परदेसी अपनी पत्नी को पत्र लिखता है और उसे अपना अलग घर बसाने की सलाह देता है। काफी सोच-विचारकर वह युवती अपने पति को सबक सिखाने की ठान लेती है। वह जवाबी पत्र में लिखती है कि वह बाकी परिवार से अलग हो गई है। उसे घर चलाने के लिए बैलों की जोड़ी, एक हलवाहा, एक भैंस, एक चरवाहा, सोने-चाँदी के थाली-गिलास आदि तत्काल चाहिए। परदेसी तुरंत पत्र लिखता है और उसे संयुक्त परिवार में ही बने रहने के लिए कहता है क्योंकि उसकी अढ़ाई हजार रुपये की तनख्वाह में क्या-क्या सामान आ पाएगा?

कोए फौजी छुट्टी आया [123]

कमरे म्हैं जरसी बणूँ थी ए हे मेरी छोटी नणदल धोरै
बूटाँ का उठ्या मरड़ाटा [1] ए हे कोए फौजी छुट्टी आया
रोटी साग बणा दे रै हे रै मेरै गैल [2] साथियाँ का लारा [3]
रोटी मैं ना पोंदी ओ हो तेरी माता रोज लड़ै सै
न्यू तो मनै बता दे रै हे रै तनै क्याँ की गाळ [4] बकै सै
भाई भतीजे खप्परभरणी ओ हो मनै बाँझे बाँझ कह्वै सै
पीहर म्हैं बिग ज्याइए [5] रै हे रै दस दिन की राड़ मिटै सै
पीहर मैं ना जाँदी ओ हो मेरी बडणी भावज लड़ै सै
न्यू तो मनै बता दे रै हे तनै क्याँ की गाळ बकै सै
ऊतणी का छोड डिगर ग्या ए हे म्हारै सेर नाज का खरचा
कूवे म्हैं पड़ ज्याइए रै हे रै तेरी जड़ तैं राँद कटै सै
कूवे म्हैं ना पड़दी ओ हो बाबल कै बटा [6] लगै सै

इस जकड़ी में एक परदेसी और उसकी पत्नी के बीच पत्नी द्वारा उसकी अनुपस्थिति में भोगे जाने वाले कष्टों के संबंध में हुए वार्तालाप का वर्णन है। एक दिन वह युवती अपनी ननद के साथ कमरे में बैठी बुनाई-कढ़ाई में व्यस्त थी। तभी उसका सैनिक पति कुछ साथियों के साथ घर आ जाता है। वह अपनी पत्नी को खाना बनाने के लिए कहता है। वह यह कहकर खाना बनाने से इनकार कर देती है कि उसकी सास उससे रोज़ लड़ती है। परदेसी उसे कुछ दिन के लिए मायके चले जाने के लिए कहता है। लेकिन वह यह कहकर मायके भी जाने से मना कर देती है कि वहाँ उसकी भाभी बहुत झगड़ालू है। झुँझलाकर वह उसे कुएँ में गिर जाने को कहता है। लेकिन वह कुएँ में गिरकर मरने से यह कहकर मना कर देती है कि आत्महत्या करने से उसके पिता की इज़्ज़त मिट्टी में मिल जाएगी।

1. जूतों के मकड़ने की आवाज 2. साथ 3. समूह 4. गाली 5. चली जाना 6. कलंक

जगाया नहीं जागै री उठाया नाहीं उठै [124]

ऊँची मैड़ी लाल किवाड़ी जाँ[1] चढ़ मोलड़[2] सो ग्या री
जगाया नहीं जागै री उठाया नाहीं उठै
थप्पड़ मारे मुक्के मारे सिर धरती म्ह मार्‌या री
जगाया नहीं जागै री उठाया नाहीं उठै
छाबड़े म्ह बेचण चाली कोए तो मोलड़ ले ल्यो री
जगाया नही जागै री उठाया नाहीं उठै
गाजर मूळी हो तो ले ल्याँ मोलड़ का के ले ल्याँ री
जगाया नही जागै री उठाया नाहीं उठै
गुहाड़ बिचाळै[3] भार्‌या पीपळ पीपळ कै जूड़्याई[4] री
जगाया नही जागै री उठाया नाहीं उठै
पाच्छी मुड़के देखण लागी पीपळ पाड़्याँ[5] ल्यावै री
जगाया नहीं जागै री उठाया नाहीं उठै
तेरा री सासड़ खसम मरियो ईसा के मोलड़ जाया[6] री
जगाया नही जागै री उठाया नाहीं उठै

इस जकड़ी में एक ऐसे चेतनाशून्य व्यक्ति का वर्णन है, जिसकी नींद ही पूरी नहीं होती। एक दिन वह चौबारे में जाकर सो जाता है। उसकी पत्नी उसे जगाने के लिए थप्पड़-मुक्के मारती है, लेकिन सब बेकार। वह उसे टोकरी में डालकर बाज़ार में बेचने के लिए जाती है। उसे लेने को कोई ग्राहक तैयार नहीं होता। घर आकर वह उसे गली में एक पीपल के पेड़ से बाँध देती है। लेकिन थोड़ी देर में ही क्या देखती है कि वह बेसुध पीपल को ही उखाड़े चला आ रहा है। अंत में निराश होकर वह युवती अपनी सास को गालियाँ देने लगती है, जिसने ऐसा बेटा पैदा किया।

ए बालम सोवै न्यारा [125]

दुखियारी की रात काटणी ए साल बराबर हो सै
ए बाबल के घर ओड सुवैसण[7] इज्जत का डर हो सै
ए बड़ी जिठाणी नै बोली मारी ए बड़ सोप्पे[8] म्हैं रोई
ए तेरा पति ए बेबे सोवै घेर म्हैं ए न्यू ए जिंदगी खोई
ए सोड़ सोड़िए दरी गींडवे चैदर का रंग न्यारा
ए किसकै तळै[9] बिछाऊँ छोरियो ए बालम सोवै न्यारा

1. जहाँ 2. लापरवाह व्यक्ति 3. गली के बीच में 4. बाँध आई 5. उखाड़कर 6. पैदा किया 7. युवा लड़की 8. घर का सबसे अंदर वाला कमरा 9. नीचे

ए धोळी धोती छींटमछींटा ए कड़ै कड़ै तैं धोऊँ
ए इसा निकरमा [1] पल्लै पड़ ग्या ए बेट्ठ पिलंग पै रोऊँ
ए कंद का दामण सैठ [2] कली का ए कली कली म्हैं घोटा
ए इसा निकरमा पल्लै पड़ ग्या ए बोलण का बी टोटा
ए जिसनै तो म्हारी जोट मिलाई ए उसकै भिड़ियो ताळा [3]
री इसा लाल जामण की सासड़ आगै करिए टाळा

इस जकड़ी में एक नवविवाहिता, जिसका पति उससे दूर रहता है, के मनोभावों का वर्णन है। जब वह पहली बार ससुराल आती है तो पाती है कि उसका पति बाड़े में अकेला ही सोता है। इस बात पर उसकी जेठानी उसे ताना मारती है। वह कमरे में घुसकर रोने लगती है और बड़े चाव से लाए गए अपने दहेज़ के सामान को देखकर अपनी किस्मत को कोसने लगती है। दुखी होकर वह शाप देती है कि जिसने भी यह रिश्ता करवाया, उसके घर में ताला पड़ जाए। अंत में वह अपनी सास को सलाह देती है कि भविष्य में वह ऐसे बेटे पैदा न करे।

हे री मैं कदे ना पीऊँ सराब [126]

जिठाणी तेरे देवर नै घालिए[4] ए हे मैं कद [5] की देखूँ बाट
बेबे ए वो तो ठेके म्हैं जा लिया हे ए ठेके म्हैं पीवै सराब
सराबी तो सांझे नै आ ग्या ए हे साह्ळ्याँ [6] म्हैं सूती मेरी सास
माता री मेरी रोटी पो दे री हे री बढ़िया सा बणा दे साग
बेटा रे मेरी आसंग कोनी [7] रे हे रे म्हैलाँ म्हैं [8] सूती [9] तेरी नार
सराबी तो ऊपर चढ़ ग्या ए हे मेरी च्यम दे [10] उघड़ी आँख
गोरी रै मेरी रोटी पो दे रै हे रै बढिया सा बणा दे साग
पति तो मनै खूँटी कै जूड़ दिया ए हे मनै दोनूँ पकड़े हाथ
खूँटी के तैं बैंत तार लिया ए हे मनै मारे बैंत पचास
माता री मनै ईब छुटा दे री हे री मैं कदे ना पीऊँ सराब
बहू ए मेरी भले घराँ की ए हे मेरे बेटे की छुटा दी सराब

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने शराबी पति की पिटाई करने का वर्णन है। एक दिन वह अपने पति का इंतज़ार करते-करते सो जाती है। उसका पति शराब पीकर आता है और उसे जगाकर रोटी-सब्जी बनाने के लिए कहता है। वह अपने शराबी पति

---

1. निकम्मा 2. साठ 3. घर उजड़ जाना 4. भेजिए 5. कब 6. घर में एक विशेष कमरा 7. तबीयत ठीक नहीं 8. चौबारे में 9. सोई हुई 10. झटके से

को खूँटी से बाँध देती है और फिर लाठी से उसकी पिटाई करने लगती है। शराबी भविष्य में कभी भी शराब न पीने का वादा करता है। यह देखकर उस युवती की सास उसे इस कार्य के लिए आशीष देती है।

ए फौजी कै प्यारी नार [127]

ए मेरे बीरे कै ब्होत लाडली भाण फौजी कै ब्याह देई ए
ए मेरी भावज कै होई ना सुव्हैण[1] फौज म्हैं चिट्ठी गिड़वा देई ए
ए फौजी कै प्यारी नार कार बारणे म्हैं[2] अड़ा देई ए
ए मेरे बीरे म्हैं गुस्सा बडा तेज पुराणे कपड़े बिठा देई ए
हे उसनै अपणा कोट पिरहा[3] मेरै तो चसमे ला दिए ए
हे उसके पूच्छैं दोस्त यार यार तेरा यो के लागै रै
हे रै मेरे तैं छोटा मेरा बीर[4] यार मेरी माँ का जाया रै
हे ओड़ै[5] छिड़ी लड़ाई बड़ी तेज पति नै मनै रैफल दिवा देई ए
हे हमनै मार्‌या पाकस्तान चीन म्हैं चिट्ठी गिरवा देई ए
हे रै स्याबास तू म्हारी नार मेरी तो रै इज्जत राख देई

इस जकड़ी में एक सैनिक के अपनी पत्नी के प्रति अत्यधिक अनुराग का प्रसंग है। उस युवती की भाभी द्‌वारा बुलाने पर फ़ौजी समय से पहले ही अपनी पत्नी को लिवाने ससुराल पहुँच जाता है। इससे उस युवती के भाई को गुस्सा आ जाता है और वह पुराने कपड़ों में ही उसे विदा कर देता है। फ़ौजी अपना कोट और चश्मा अपनी पत्नी को पहना देता है और फ़ौज में ले जाता है। जब उसके साथी पूछते हैं तो वह कह देता है कि यह तो उसका छोटा भाई है। तभी युद्‌ध छिड़ जाता है। वह सैनिक अपनी पत्नी को भी एक राइफ़ल दिलवा देता है। युद्‌ध में वह पाकिस्तान को हरा देती है और चीन को तैयार रहने की चेतावनी देती है। उसकी बहादुरी देखकर सैनिक बहुत खुश होता है।

पीहर मतना जाइए रै गौरी [128]

ए स्योने का गुलीबंद छोरियो ए तोळे तीन का
ए मेरे पिता नै सूँट सिमाया ए टेरीलीन का
पीहर मताना जाइए रै गौरी माड़ी हो ज्यागी[6]
हे रै जेठ साढ़ का घाम[7] पड़ै रै ओड़ै काळी हो ज्यागी
ओ पीहर जाँगी मूळ डटूँ ना ओ खूब कमाऊँगी
ओ जेठ साढ़ का घाम पड़ै ओ ओड़ै ईंख नुळाऊँगी

1. संतोष, सहन 2. दरवाज़े पर 3. पहनाकर 4. भाई 5. वहाँ 6. कमज़ोर हो जाएगी 7. धूप

हे रै कोरा घड़िया ठंडा पाणी रै खाँसी हो ज्यागी
हे रै लोग करैं तकरार हूर तेरी हाँसी हो ज्यागी

इस जकड़ी में एक व्यक्ति के अपनी पत्नी के प्रति अनुराग का प्रसंग है। एक युवती अपने मायके जाने की तैयारी कर रही है। उसका पति नहीं चाहता कि वह उससे दूर हो। वह उसे चेताता है कि मायके जाकर वह कमज़ोर हो जाएगी और धूप में काली हो जाएगी। गरमी में पसीना आएगा। अगर वह ठंडा पानी पिएगी तो उसे खाँसी हो जाएगी। इससे लोग तरह-तरह की बात बनाएँगे और उसका मज़ाक उड़ाएँगे। उस युवती पर इन बातों का असर नहीं होता। वह मायके जाने पर अड़ी रहती है और कहती है कि चाहे कितनी भी गरमी पड़े, वह तो मायके जाकर खेती का काम कर लेगी।

मेरै गेलै चालैगी [129]

डिबिया के म्हैं बंद पड़ी ए माथे म्हैं लावण की
हे छह म्हीन्याँ की क्है के गया था ए छुट्टी आवण की
ए छह म्हीने छह साल बराबर क्यूकर काटूँगी
ए दिल परदेसी डटदा कोनी ए क्यूकर डाटूँगी
हे रे रोवै सै बहू तो रे बेटा डाटकै [1] जाइए
डाट्याँ तैं ना डटती सीस धड़ तारकै जाइए
हे रै मैं समझाऊँ समझ मेरी गोरी रै रोया ना करदे
हे रै भले घराँ की बेटी रै इज्जत खोया ना करदे
ओ मैं समझाऊँ समझ मेरा बालम जाया ना करदे
ओ आच्छे भूंडे [2] सांग सलीमे देख्या ना करदे
हे रै कालर [3] के म्हैं सरप पड्या मेरै गळ [4] म्हैं घालैगी
हे रै न्यू तो मैं बी जाण गया रै मेरै गेलै चालैगी

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने परदेसी पति के साथ जाने की ज़िद का प्रसंग है। परदेसी के इंतज़ार में युवती का बुरा हाल है। जब परदेसी छुट्टी पर आता है तो वह इस बार उसके साथ चलने की जिद करती है। जब परदेसी चलने की तैयारी करता है तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती है। परदेसी उसे समझाता है कि भले घरों की बहू-बेटियाँ इस तरह नहीं रोतीं। वह भी ज़ोर देकर कहती है कि अच्छे पति इस तरह अपनी पत्नी को छोड़ कर नहीं जाते। उसकी जिद के आगे परदेसी हार जाता है और उसे साथ ले चलने की बात मान जाता है।

---

1. रोककर, समझाकर 2. गंदे 3. साफ़ ज़मीन 4. गला

प्यारी तो लागै फूलझड़ी [130]

मेरा पढ़के आया भरतार सीधा तो आया माता धोरै माता धोरै
माता साचमसाच [1] बता ए कड़ै सै [2] मेरी फूलझड़ी फूलझड़ी
बेटा हम ना जाणाँ थारी सार [3] क्याँए नै बोलो फूलझड़ी फूलझड़ी
माता इब के छोरे बदमास बहुवाँ नै बोलैं फूलझड़ी फूलझड़ी
माता इब के बूढ़े बदमास बुढ़ियाँ नै बोलैं टेमघड़ी टेमघड़ी
बेटा इब जाणूँ थारी सार कमरे म्हैं सूती फूलझड़ी फूलझड़ी
उनै धर्‌या [4] ए देहळ [5] पै पैर ठाडूँ तो ठाडूँ रोय पड़ी रोय पड़ी
गोरी साचमसाच बताय आज तनै कौण लड़ी कौण लड़ी
पिया द्‌योराणी लड़ै दिन रात आज मेरी सास लड़ी सास लड़ी
पी ले पी ले रे दूध का गिलास सिर्‌हाणै तेरै लियाँ खड़ी लियाँ खड़ी
फैंको फैंको री दूध का गिलास रोवै सै मेरी फूलझड़ी फूलझड़ी
बेटा बोझ मरी रे दस मास प्यारी तो लागै फूलझड़ी फूलझड़ी
माता छोडे माई अर बाप गैल [6] मेरै होय लेई होय लेई

इस जकड़ी में एक युवक का अपनी पत्नी के प्रति अत्यधिक प्रेम दर्शाया गया है। एक दिन जब वह पढ़कर वापस आता है तो अपनी पत्नी को कहीं नहीं पाता। पूछने पर उसकी माँ बताती है कि उसकी पत्नी नाराज़ होकर कमरे में सो रही है। जब वह अंदर जाता है तो उसे देखकर वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती है और अपनी सास और जेठानी की शिकायत करने लगती है। इतने में युवक की माँ बेटे के लिए दूध का गिलास लेकर आती है। लेकिन वह दूध पीने से यह कहकर मना कर देता है कि उसकी प्रिय पत्नी दुखी है। माँ अपमानित महसूस करती है और उसे माँ से ज़्यादा अपनी पत्नी प्यारी लगने का उलाहना देती है। इस पर वह युवक कहता है कि उसे पत्नी प्यारी क्यों न लगे? वह अपने माँ-बाप तक को छोड़कर मुझ अनजान के साथ आ गई है।

बालम नै चिड़िया ले गई [131]

चढ़ चौबारे सो गई ए बालम नै चिड़िया ले गई
दिल्ली ढूँढ्या आगरा ए मेरठ म्हैं छपे अखबार
ए बालम नै चिड़िया ले गई
दिल्ली के सिपाही न्यूँ क्हवैं ए छोरी इसा के बालम ले रही
रै बालम नै चिड़िया ले गई
दिल्ली के परे नै नीमड़ी [7] ए नीमड़ी म्हैं घल र्‌या आलणा [8] ए

1. सच-सच 2. कहाँ है 3. व्यवहार 4. रखा 5. चौखट 6. साथ 7. नीम का छोटा पेड़ 8. घोंसला

आलणे म्हैं सूत्या मेरा बालमा ए बालम नै चिड़िया ले गई
खड़ी-खड़ी रुक्के मार रही ओ तूँ तळै[1] उतर्या भरतार
हो उरै लोग करैं तकरार ओ बालम नै चिड़िया ले गई

इस जकड़ी में एक युवती के पति के चिड़िया द्वारा उठा ले जाने का रोचक प्रसंग है। एक दिन जब वह चौबारे में सो रही थी तो उसके पति को चिड़िया उठाकर ले गई। उसने उसे दिल्ली में ढूँढ़ा, आगरा में ढूँढ़ा और मेरठ में इश्तिहार छपवाए। लोग आश्चर्य में भरकर उससे पूछते कि वह ऐसा कैसा पति लिए हुए है, जिसे चिड़िया उठाकर ले गई। काफी खोजबीन के बात पता चलता है कि उसके पति को चिड़िया ने दिल्ली के उस पार एक नीम के पेड़ पर घोंसले में छिपा रखा है। आखिरकार वह युवती उस पेड़ के पास पहुँचकर अपने पति से नीचे उतर आने का आग्रह करती है।

ए जिसके पकड़े जाँ भरतार[132]

हे तेरे बिना नीर सूख ज्या बाग सूख ज्या मेवा की डाळी
ए जिसके पकड़े जाँ भरतार के उसका सिंगरणा[2] ठीक नहीं
ए मैं पैंडी[3] दोघड़ तार के ठाढूँ ए ठाढूँ रोय पड़ी
ए मनै मन म्हैं लाया बिच्यार आज तेरा रोणा ठीक नहीं
ए गोझाँ म्हैं[4] घाले ढाई हजार पति नै छुटावण[5] चाल पड़ी
ए कुरसी पै बैठ्या थाणेदार जळे की ए ठाडी[6] ए गोझ भरी

इस जकड़ी में एक युवक के पुलिस द्वारा पकड़ लिए जाने और उसकी पत्नी द्वारा उसे कैद से छुड़ाने का प्रसंग है। जब उसे अपने पति की गिरफ़्तारी का समाचार मिलता है तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती है। लेकिन तभी वह विचार करती है कि रोने से कुछ नहीं होने वाला। सोच-विचारकर वह रुपये लेकर थाने में पहुँच जाती है और पति को छोड़ने की एवज में थानेदार की जेब उन रुपयों से भर देती है।

हम तो रै चंदरो चले नौकरी[133]

साइकल ले र्या तेज घुमा र्या झोळा करै कमाल तेरा
न्यू तो मैं भी जाण गई डोबैगा[7] हर्या रुमाल तेरा
घाल[8] दे री सासड़ घाल दे मैं ब्होत घणा तंग हो र्या सूँ
के सुख देख्या तेरी बेटी का गोबर पाणी ढो र्या सूँ
न्हा ले धो ले सीस गुंदा ले फेर या घड़ी ऊक ज्यागी[9]

1. नीचे 2. सजना-सँवरना 3. घर में पानी के मटके रखने का ऊँचा स्थान 4. जेब में 5. छुड़ाने के लिए 6. ठूँस-ठूँसकर 7. डुबोएगा 8. भेज दे 9. निकल जाएगी

हम तो रै चंदरो चले नौकरी तू पीहर म्हैं मर जेगी
भाई भावज तेरे मारैं ताने[1] छोरी कर लें हाँसी रै
सासरे की कैद भली सै पीहर म्हैं घल जे फाँसी रै
भाई भावजाँ के ओटूँ[2] ताने मैं छोरियाँ की ओटूँ हाँसी ओ
जेठ देवर की उटदी कोन्या वैं सैं लोग पड़ोसी ओ

इस जकड़ी में एक परदेसी युवक और उसकी पत्नी के बीच उसके मायके में रहने के संदर्भ में हुए वार्तालाप का वर्णन है। परदेस जाने से पहले वह पत्नी को लिवाने ससुराल जाता है। वह अपनी पत्नी से चलने के लिए तैयार होने को कहता है। वह चाहता है कि उसकी अनुपस्थिति में उसकी पत्नी अपनी ससुराल में रहे क्योंकि मायके में उसके भाई-भाभी उसे ताने देंगे और सहेलियाँ उसका मज़ाक उड़ाएँगी। इसलिए वह कहता है कि उसके लिए मायके की फ़ाँसी से बेहतर ससुराल की कैद है। वह युवती यह कहकर ससुराल जाने से मना कर देती है कि उसके लिए भाई-भाभी के ताने और सहेलियों के मज़ाक सहनीय हैं बजाय देवर-जेठ की तकरार के। देवर-जेठ अपनों की बजाय पड़ोसियों जैसा व्यवहार करते हैं।

इस ईंख जळी नै डोब दी [134]

चौड़े चौड़े पत्ते ए बेबे ईंख के
हाँ ए ईंख नुळावै[3] भरतार इस ईंख जळी नै डोब दी
एक दिन घर पै ए बेबे रै्है गया
हाँ ए चौबारै ढाळी[4] सै खाट इस ईंख जळी नै डोब दी
आधी के गादड़ बेबे बोल गे
हाँ ए दोनुवाँ की समड़ी[5] ना बात इस ईंख जळी नै डोब दी
तड़कै का मुरगा ए बेबे बोल ग्या
हे री दोनुवाँ की उघड़ी ना आँख इस ईंख जळी नै डोब दी
मेरा तो र्है ग्या ए बेबे पीसणा
हे री गजेसिंह की र्है गई धार[6] इस ईंख जळी नै डोब दी
सासड़ नै पीस्या ए बेबे पीसणा
हे री जेठे नै काढ़ी सै धार इस ईंख जळी नै डोब दी

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा ईख की कष्टकारी खेती में फँसे पति के साथ एक सुकून भरी रात बिताने का प्रसंग है। रोज तो उसका पति ईख के खेत में सोता था,

1. ताने 2. सहन करूँ 3. ईख की निराई गुड़ाई 4. डालना 5. खत्म होना 6. भैंस का दूध दुहना

लेकिन एक दिन वह घर पर रह जाता है। इस रात वे दोनों पूरी रात नहीं सोते। आधी रात को गीदड़ बोलना शुरू कर देते हैं, लेकिन उनकी बातें ही पूरी नहीं होतीं। सो जाने पर सुबह का मुर्गा बाँग दे-देकर थक जाता है। उनकी आँखें ही नहीं खुलतीं। ऐसे में उस युवती का तो पीसने का और युवक का दूध दुहने का समय चूक जाता है। सुबह उठने पर पता चलता है कि सास ने तो आटा पीसा और जेठ ने दूध दुहा।

जे मेरा बालम घर पर आ ज्या [135]

पति मेरा तो नौकर जा सै मनै छोडकै जा सै ए
मैं बागाँ की कोयल कहिए रोक पींजरे म्हैं जा सै ए
ना आया ए ना चिट्ठी गेरी दरिया पार उतर ग्या ए
दरिया के म्हैं ज्हाज डूब गी ठा ले ग्या मदरासी ए
मेरे पति के आण खातर [1] *रोज रटूँ सूँ माळा ए*
जे मेरा बालम घर पर आ ज्या सज ज्या म्हारा चुबारा ए
कंद का दामण धोळा कुड़ता झाल डाटणी [2] *हो सै ए*
फौजी गैल्याँ [3] *ब्याह करवाके कैद काटणी हो सै ए*

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी की विरह-वेदना का वर्णन है। परदेसी द्वारा छोड़कर चले जाने पर उस युवती को ऐसा लगता है मानो किसी कोयल को पिंजरे में बंद कर दिया गया हो। कई दिनों तक उसे अपने पति की कोई चिट्ठी नहीं मिलती। उसके मन में डर है कि कहीं उसका पति डूब न गया हो। वह रोज़ अपने पति के घर वापस आने की खैर मनाती है। उसका मानना है कि फ़ौजी के साथ विवाह करवाना तो जीवन भर कैद काटने के समान है।

इस बेहूदे नै कोए भी ना ले [136]

हाथ के म्हैं झोळा ले रह्या हर्या ए रुमाल यो बेहूदा [4] *चाल्या सुसराड़*
मेरी माता नै राँधी खीर इस बेहूदे नै आ गी नींद
मेरी माता नै राँधी दाळ इस बेहूदे की पड़ गी लाळ [5]
ओ बाबल एक कुआ खुदा इस बेहूदे पै पाणी भरवा
हाथ के म्हैं नेजू ले र्या सिर पै डोल यू बेहूदा चाल्या अणबोल
ओ बाबल एक घोड़ा ओ मुला [6] *इस बेहूद पै लीद सम्हरा* [7]
हाथ के म्हैं झाडू ले र्या सिर पै लीद यू बेहूदे गावै ए गीत
ओ बाबल एक मेळा ओ लुआ इस बेहूदे नै उड़ै बिकवा
पोंह्ची गंठी माळा नै सब कोए ले इस बेहूदे नै कोए बी ना ले

1. वापस आने लिए 2. रोकनी 3. साथ 4. बेशऊर आदमी 5. लार 6. खरीदना 7. इकट्ठी करवाना

इस जकड़ी में एक युवती, जिसका विवाह एक बेहूदे व्यक्ति से हो जाता है, की खीज का वर्णन है। जब उसका पति उसे लिवाने अपनी ससुराल पहुँचता है तो उसके रंग-ढंग देखकर वह गुस्से से भर जाती है। वह अपने पिता से कहकर उस बेहूदे को पानी भरने के काम में लगा देती है और वह भी चुपचाप पानी भरने लगता है। आगे वह अपने पिता से कहकर उस बेहूदे को घोड़ों की लीद इकट्ठी करने के काम में लगा देती है। लेकिन उस व्यक्ति को कोई शर्म महसूस नहीं होती, बल्कि वह तो लीद ढोते-ढोते गीत गाने लगता है। अंत में खीजकर वह उस बेहूदे को एक मेले में बेचना चाहती है, लेकिन उसे कोई खरीदता भी नहीं।

मैं कोन्या निगाह् म्हैं आई [137]

बढ़िया सी साड़ी बाँधके ए आँगण म्हैं देवूँ थी बुहारी [1]
मेरी बडणी जिठाणी न्यू कह्वै ए जा सो ज्या भाण माँजाई
मैं दमदम म्हैलैं चढ़ गी उड़ै सूत्या नणंद का भाई
जळ्या पीठ फेरके सो ग्या ए बोल्या ना मरद कसाई
मैं दमदम नीचै उतरी ए मनै आँदे ए चाकी झोई
मेरी बडणी जिठाणी न्यू क्हवै ए बेबे ओड बखत क्यूँ आई
बेबे तेरा देवर तो सूथरा ए मैं कोन्या निगाह् म्हैं आई
देवर खीर खांड म्हैं घी घणा ओ तनै खा के बी ना चाख्या
भाभी दारू के नसे म्हैं सोय गया ए मनै नींद गजब की आई
देवर थोड़ी क्यूँ ना पी लेई ओ तेरै नई ब्हवड़िया [2] *आई*
भाभी साथियाँ नै रळके [3] *प्या देई रै तेरै नई ब्हवड़िया आई*
भाभी आज घेर म्हैं घालिए उसकी काढूँगा घुमराई [4]
बेबे आज घेर म्हैं जाइए ए या म्हैंस [5] *मरै सै तिसाई*
बेबे आज घेर म्हैं ना जाऊँ उड़ै सूत्या नणंद का भाई

इस जकड़ी में एक नवविवाहिता, जिसके साथ पहली रात में उसका पति नहीं बोलता, की व्यथा का वर्णन है। वह सज-सँवरकर पति के पास जाती है, लेकिन उसका पति पीठ फेरकर सो जाता है। निराश होकर वह रात में ही नीचे उतर आती है और पीसने बैठ जाती है। बड़ी जेठानी के पूछने पर वह बताती है कि उसके पति को वह पसंद नहीं आई। दिन में भाभी के उलाहना देने पर वह युवक माफ़ी माँगता है और बताता है कि शराब के नशे में वह गहरी नींद सो गया था। साथ ही वह उससे कहता है कि वह अभी उसकी पत्नी को पशुओं वाले बाड़े में भेज दे। जेठानी के संदेश देने पर वह युवती घबरा जाती है और बाड़े में जाने से मना कर देती है।

1. झाड़ू लगाना 2. दुल्हन 3. मिलकर 4. घमंड, मरोड़ 5. भैंस

पति मेरा फैल लिकड़ ग्या ए [138]

बारह्मी के पेपर होते ए मेरा लेण [1] गया भरतार
रस्ते म्हैं बादळ छा गे ए ईसबर नै लाई बरसात
पति की रुमाली भीजै ए बारह्मी की भीजैं किताब
पति के च्यार यार थे ए च्यारूँ तो लिकड़े पास
पति मेरा फेल लिकड़ ग्या ए होटल पै फूक देई ज्यान
रात नै सुपना आ ग्या ए सुपने म्हैं दिख्या भरतार
गोरी रै मेरी रोइए मतना रै तेरी गोद पड़्या नंदलाल
म्हीने तो मेरे च्यार पड़े सैं ओ ओ मैं किसनै देख दिल डाटूँ
कमरे म्हैं फोटू टंग र्या रै तूँ उसनै देख दिल डाट
फोटू म्हैं तो नक्सा नक्सा हो तेरी बोलै ना तसबीर

इस जकड़ी में एक युवक द्वारा परीक्षा में फेल हो जाने पर आत्महत्या करने और उसकी पत्नी द्वारा विलाप करने का प्रसंग है। बारहवीं की परीक्षा होते ही वह युवक अपनी पत्नी को लिवा लाता है। जब परीक्षाफल आता है तो वह युवक फ़ेल हो जाता है और एक होटल में आग लगाकर खुदकुशी कर लेता है। रात में उसकी पत्नी को वह सपने में दिखाई देता है और कहता है कि वह माँ बनने वाली है। भावी संतान और चित्र के सहारे ही अब अपना जीवन बिताए। लेकिन उस युवती को किसी भी तरह सब्र नहीं आता। उसकी तस्वीर देखकर वह विलाप करती हुई कहती है कि चित्र में तो उसके केवल नैन-नक्श हैं; तस्वीर बोलती तो कुछ भी नहीं।

मैं तेरी के लागूँ थी ओ [139]

साड़ी लांबे पल्ले की ए ल्यावणिया [2] रोप ग्या चाळा [3]
गूंठी हरे नगीने की ए प्हरणिया रोप ग्या चाळा
टेची खोल दिखा दे ओ हो टेची म्हैं के ले र्या सै
टेची नही खुलैगी रै हे रै टेची म्हैं नार दूसरी
मैं तेरी के लागूँ थी ओ हो तूँ ल्याया नार दूसरी
तू मेरी बेबे [4] लागे रै हे रै मैं ल्याया नार दूसरी
मैं तेरी भेली [5] ल्याऊँ ओ हो कदे भात [6] भरण तै नाट ज्या
मैं तेरा करूँगी आरता ओ हो कदे पाटड़े चढ़ण तै नाट ज्या
जिद तेरी करूँगी बेज्जती ओ हो कदे गाम छोड़ के भाज ज्या

---

1. लिवाने 2. लेकर आने वाला 3. कमाल 4. बहन 5. संतान के विवाह के मौके पर स्त्री की ओर से अपने भाइयों को पारंपरिक निमंत्रण 6. विवाह के मौके पर मामा की ओर से दिया जाने वाला उपहार

इस जकड़ी में एक युवक द्वारा दूसरा विवाह कर लेने के उपरांत उसके और उसकी पहली पत्नी के बीच हुए संवाद का वर्णन है। वह युवती पूछती है कि वह स्वयं उसकी क्या कुछ और लगती है जो उसे दूसरी पत्नी लाने की आवश्यकता पड़ी? वह युवक जवाब देता है कि वह उसकी बहन लगती है। यह जवाब सुनकर वह युवती गुस्सा हो जाती है और कहती है कि बहन होने के नाते उसके बच्चों की शादी में उसे भात भरना पड़ेगा। वह उसे चौकी पर खड़ा कर दरवाज़े पर उसका स्वागत करेगी। उस समय ऐसा न हो कि वह भात भरने और आरता करवाने से मना कर दे। अगर ऐसा हुआ तो वह उसकी ऐसी बेइज़्ज़ती करेगी कि उसे गाँव छोड़कर भागना पड़ेगा।

दिल घबरा ग्या मेरा [140]

के जीणा ए मेरी के जिंदगानी पति कहे म्हैं कोन्या
हे ज्यब गेरूँगी तार मरी का ए ज्यब पाटैगा बेरा
हे दस की तो मनै चिट्ठी गेरी ए तार ढाई का गेर्या
हे कमरे के म्हैं तार बाँच र्या ए खाकै पड़्या तिवाळा [1]
ए प्यारे मंतर [2] *भाजे* [3] *आए रै मोटा हो ग्या चाळा*
ए संगेपुरी तैं गाडी चाली ए आण बाग म्हैं डट गी
ए ठंडी ठंडी हवा चाल र्ही ए मीठी मीठी मेवा
ए बडे भाई के करे निमस्ते ए झट कमरे म्हैं बड़ ग्या
रै साची साची बता म्हारी गोरी रै इसा तार क्यूँ गेर्या
ओ त्हम तो पीया चले नौकरी ओ जी लाग्या [4] *ना मेरा*
हे रै थारा तो रै गोरी अधर [5] *काळजा रै दिल घबरा ग्या मेरा*

इस जकड़ी में एक पत्नी द्वारा अपनी मृत्यु का झूठा समाचार भेजकर अपने सैनिक पति को तत्काल घर बुला लेने का प्रसंग है। जब पति के वियोग में एक युवती का जीना मुहाल हो जाता है तो वह अपनी मृत्यु का तार अपने पति के पास भिजवा देती है। तार पढ़कर परदेसी गश खाकर गिर पड़ता है। तत्काल छुट्टी लेकर वह अपने घर पहुँचता है। भाई से राम-राम करके वह कमरे में घुस जाता है और पत्नी से झूठा तार भेजने का कारण पूछता है। वह कहती है कि मैंने झूठ इसलिए लिखा क्योंकि तुम्हारे बिना मेरा मन नहीं लगा। परदेसी कहता है कि तेरा दिल तो मज़बूत है, मेरा मन तो घबरा ही गया था।

तनै बदलूँगी भरतार [141]

कदे लेण कार म्ह आया ना कदे एक सीट पै ल्याया ना

1. चक्कर आना 2. मित्र 3. दौड़े-दौड़े 4. लगा 5. मज़बूत

तनै बदलूँगी भरतार ओ इस हसनापर के मेळे म्हैं
मत बदलै नखरो नैर [1] रै इस छैल छबीले छोरे नै
कदे [2] सौ का सूँट सिमाया ना कदे चोली र बोडी ल्याया ना
तनै बदलूँगी भरतार ओ इस हसनापर के मेळे म्हैं
मत बदलै नखरो नैर रै इस छैल छबीले छोरे नै
कदे टीकी र बिंदी ल्याया ना कदे बैठकै लाड लडाए ना
ओ तनै बदलूँगी भरतार ओ इस हसनापर के मेळे म्हैं
मत बदलै नखरो नार रै इस छैल छबीले छोरे नै

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने पति के विरुद्ध शिकायतों का वर्णन है। वह कहती है कि वह अपने पति को मेले में ले जाकर बदल लेगी क्योंकि न तो कभी वह उसे कार में लिवाने गया और न ही कभी वे एक सीट पर इकट्ठे बैठकर आए। न कभी उसने उसका बढ़िया सूट सिलवाया और न ही कभी शृंगार का साजो-सामान दिलवाया। लेकिन हर बार पति प्रार्थना करता है कि वह उसे न बदले।

क्यूँ सुबकै सै खड़ी खड़ी [142]

क्यूँ सुबकै सै खड़ी खड़ी रै मेरी रोटी पो दे न
हे रै तड़कै जाँगे नैर नौकरी रै खुसी मना ले न
हे रै पल्ला काढ़ै [3] रै आँसू पूंजै [4] रै रोवै मतना
हे रै बैह्र खड़ी सनसार गोरी रै हँसावै मतना
हे रै के दुख सै तनै सैस नणंद का रै के दुख सै तनै मेरा
हे रै साची साच बता दे रै गोरी के दुखै सै तेरा
ओ ना दुख सै मनै सैस नणंद का ओ ना दुख सै मनै तेरा
ओ साची साच बता द्यूँ ओ बालम जी लागै ना मेरा
ओ त्हम तो पिया जी चाल पड़े ओ कुछ म्हारा जतन बताइए
हे रै बूढ़े सैं मेरे माइ अर बाबू इनकी सेवा करिए

इस जकड़ी में एक परदेसी के नौकरी पर जाते समय अपनी पत्नी से हुए वार्तालाप का वर्णन है। नौकरी पर जाने से एक दिन पहले ही परदेसी की पत्नी सुबक-सुबककर रोने लगती है। परदेसी को यह देखकर शर्मिंदगी महसूस होती है कि सब लोग उन्हें देख रहे हैं। वह उससे पूछता है कि उसे क्या दुख है जो वह ज़ोर-ज़ोर से रोए जा रही है। इस पर वह कहती है कि उसे किसी का दुख नहीं है, दुख केवल इस बात का है कि उसके

1. नारी, पत्नी 2. कभी 3. निकालना 4. पोंछना

चले जाने पर उसका मन नहीं लगेगा। वह पीछे से क्या करेगी ? इस पर परदेसी कहता है कि उसके माँ-बाप बूढ़े हैं। वह उनकी सेवा करके अपना समय बिताए।

बालम जा सै आज मेरा [143]

मोटे नैण [1] कतरमा स्याही चाल रही बेधड़कै रै
ठोकर लागै टाँग टूट ज्या नैड़[2] टूट ज्या पड़कै रै
झूठे लाड लडावै ओ बालम कोन्या लागदी प्यारी ओ
न्यू तो मैं बी जाण गई तेरै दिल की खास बीमारी ओ
जिस दिन तैं रै तेरी ठीक धरी थी दिन्न फळाया [3] करदा रै
छोर्याँ के म्हैं बेठके मेरा जिकर चलाया करदा रै
चौखट पकड़े खड़ी स्हाळ [4] म्हैं चेहरा खास उदास मेरा
सारा कुणबा राजी हो र्या बालम जा सै आज मेरा
क्यूँ रोवै सै सुबक सुबक कै क्यूँ मेरै लहू नै जळावै सै
गोरमिंट की करूँ नौकरी क्यूँ मेरा टेम उकावै सै
कंद का दामण धोळा कुड़ता झाल डाटणी हो सै ए
फौजी गैलै [5] ब्याह करवाके कैद काटणी हो सै ए

इस जकड़ी में विदाई के समय एक परदेसी और उसकी पत्नी के बीच हुए मार्मिक वार्तालाप का वर्णन है। परदेसी अपनी पत्नी के रूप की प्रशंसा करता हुआ याद करता है कि कैसे वह उसके ससुराल आने का इंतज़ार किया करता था। इस पर वह युवती उसे झूठ-मूठ का प्यार करने का उलाहना देती है क्योंकि आज वह उसे छोड़कर जा रहा है। जब वह रोने लगती है तो परदेसी उसे कहता है कि वह मज़बूर व्यक्ति का खून जला रही है। सरकारी नौकर होने की वजह से उसे आज जाना ही पड़ेगा।

आपाँ दोनूँ बुआ र भतीजा [144]

आरियाँ[6] के छोरे बेबे दस पढ़ र्हे मैं तो ए बेबे अणपढ र्हैगी
घाल [7] पाटड़ा ए न्हाण बेठ ग्या वाटर ल्या दे रै मेरी गोरी
भाज लीजकै [8] मैं गई बाणियाँ कै घाल टमाटर ल्याई ए
फेर बी कह्वै रै गोरी वाटर ल्या दे
भाज लीज के मैं गई घेर म्हैं खोल काटड़ा [9] ल्याई ए
फेर बी कह्वै रै गोरी वाटर ल्या दे

---

1. नयन 2. गर्दन 3. गिनना 4. घर के अंदर एक विशेष स्थान 5. साथ 6. आर्यसमाजी 7. डालना, रखना 8. भाग-दौड़कर 9. भैंस का बच्चा

घाल पाटड़ा न्हाण बेठ ग्या इब समझा दे ओ मेरा पिया
पाणी ल्या दे रै मेरी बूआ क्यूँ मेरी छाती म्हैं खोद दिया कूवा
हिंदी क्यूँ ना बोली ओ भतीजा इंगलिस का तो यो रै नतीजा
आपाँ दोनूँ [1] बुआ र भतीजा

इस जकड़ी में एक पढ़े-लिखे युवक और उसकी अनपढ़ पत्नी के बीच संवादहीनता की स्थिति का रोचक प्रसंग है। पढ़ा-लिखा युवक अंग्रेज़ी में अपनी पत्नी से माँगता कुछ है। वह ले कुछ और आती है। अंत में वह खीजकर उसे बुआ कह देता है। यह सुनकर युवती भी तपाक से कहती है कि वह हिंदी में क्यों नहीं बोला? अंग्रेज़ी बोलने का तो यही नतीजा होगा कि हम बुआ-भतीजा बन गए।

मेरा सुण ले आखरी बोल छोडके ओ मत जाइए [145]

सगी नणंद के बीर तेरे ओ बिन्या कौण बँधावै धीर छोडके ओ मत जाइए
सैस बहू का झगड़ा सै चाकी पर का रगड़ा सै
तेरे घर म्हैं देवर तकड़ा [2] सै रै कुछ करके रहिए ख्याल बात सुण दुखियारी
सगी नणंद के बीर तेरे ओ बिन्या कौण बँधावै धीर छोडके ओ मत जाइए
अपणे पीयर डिगर ज्याँगी ओ तेरी स्यरत [3] पूरी कर ज्याँगी
कूवे म्हैं पड़के मर ज्याँगी ओ मेरा सुण ले आखरी बोल छोड के ओ मत जाइए
सगी नणंद के बीर तेरे ओ बिन्या कौण बँधावै धीर छोड के ओ मत जाइए
ऊँची हेली [4] ऊपर चुबारे ओ नीचै पड़के मर ज्याँगी
पड़दी का फूटै सीस जळे ओ मेरी कौण बँधावै धीर छोड के ओ मत जाइए
सगी नणंद के बीर तेरे ओ बिन्या कौण बँधावै धीर छोड के ओ मत जाइए

इस जकड़ी में विदा होते वक्त एक परदेसी और उसकी पत्नी के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन है। युवती कहती है कि उसके बिना इस घर में उसकी सुनने वाला कोई नहीं है। इसलिए वह उसे अकेली छोड़कर न जाए। परदेसी उसे समझाता हुआ कहता है कि उसकी अपनी सास से तकरार चलती रहती है, दूसरे घर में देवर जवान है। ऐसे में उसे बहुत समझदारी से रहना चाहिए। लेकिन वह कहती है कि उसके बिना वह इस घर में नहीं रहेगी, फिर चाहे उसे मायके जाना पड़े या कुएँ में गिरकर या छत से कूदकर आत्महत्या करनी पड़े।

तेरै तो बस की नौकरी नहीं [146]

हाँ ए उसनै खाकी तो कस लिए बूँट बिस्तरे ठाय लिए

1. हम दोनों 2. तगड़ा, जवान 3. शर्त 4. हवेली

हाँ ए मेरै सिर पर धर दिया हाथ राजी रै रहिए फूलझड़ी
ए मनै लेई ए चुबारे की ओट ठाढूँ ए ठाढूँ[1] रोय पड़ी
ए मेरी बाह्र्याँ तैं[2] आ गई सैस बहू ए आज क्यूँ रोई
री तेरे लाल गए परदेस मेरा तो जिया लागदा नहीं
ए उसनै ढाई का गेड़ूया तार पाँच की च्यट्ठी गेड़ देई
ओ मनै छुट्टी तो दे दे बाबू साब घर पै तो ब्याही हूर पड़ी
रै तों तो नाम कटा ले रघबीर तेरै तो बस की नौकरी नहीं
ओ मैं तो या ए चाहूँ था बाबू साब रो रो के मरगी फूलझड़ी

इस जकड़ी में पत्नी-प्रेम के कारण एक सैनिक द्वारा नौकरी छोड़ देने का प्रसंग है। अनमना-सा परदेसी नौकरी पर चला जाता है। उसके जाते ही उसकी पत्नी चौबारे में छुपकर रोने लगती है। जब उसकी सास को पता चलता है कि बहू का मन नहीं लग रहा तो वह फ़ौज में अपने बेटे के पास इसका समाचार भिजवा देती है। तार मिलते ही फ़ौजी अपने कमांडर से छुट्टी माँगता है। कमांडर कहता है कि उसके वश में नौकरी करना नहीं है, अच्छा हो, वह फ़ौज से अपना नाम कटा ले। यह सुनते ही फ़ौजी खुश हो जाता है और कहता है कि वह भी यही चाहता है। ऐसी नौकरी से क्या लाभ, जिसके कारण उसकी फुलझड़ी-सी सुंदर पत्नी रो-रोकर अपनी जान दे दे?

बाळक बहू मेरी [147]

ओ बाबू जी मनै छुट्टी दे दे ओ कर ले दया मेरी
ओ घर पै बेट्ठी सांस घाल री[3] बाळक[4] बहू मेरी
ओ बाबू जी के ब्हाण गुडावै रै तनखा दे र्या सै
रै सारै छोरे ब्याह राखे के मेम ले र्या सै
हे ज्यब आवण का जिकर सुण्या वा मेंहदा लाण लगी
हे घणे दिनाँ म्ह छुट्टी आया ए सोर मचाण लगी
हे दम दम म्हैलें चढ़े गया ए ओड़ै सूती[5] हूर परी
ए हाथ पकड़के बेट्ठी कर लेई बाळक बहू मेरी
हे रै प्हैर ले न गेहूँदाणा[6] रै मार ले गाती
हे रै बाह्र खड़े सैं छोरे छींडे रै फूक दे छाती
हे गोड्याँ तक[7] के पैर भरे सैं पैहरे बूँट रबड़ के
हे ओढ़ प्हैर पाणी नै चाली ए जळ गे लोग बगड़[8] के

1. ज़ोर-ज़ोर से 2. बाहर से 3. मरने पर उतारू 4. नादान 5. सोई हुई 6. एक विशेष प्रकार का कपड़ा 7. घुटनों तक 8. मोहल्ला

इस जकड़ी में एक परदेसी के अपनी पत्नी से मिलने की आतुरता के कारण छुट्टी लेकर घर आने का प्रसंग है। परदेसी अपने कमांडर से छुट्टी देने की विनती करता है क्योंकि उसकी नादान पत्नी का उसके वियोग में हाल बेहाल है। कमांडर को गुस्सा तो आता है, लेकिन अंततः वह उसकी छुट्टी की प्रार्थना स्वीकार कर लेता है। उसके आने का समाचार पाकर उसकी पत्नी सजना-सँवरना शुरू कर देती है। वह भी आते ही उसे हमेशा सजी-सँवरी रहने को कहता है ताकि उसे देखकर गाँव के लोगों को ईर्ष्या हो। वह युवती भी पति के कहने पर खूब शृंगार करके पनघट पर जाती है और सबकी ईर्ष्या का कारण बन जाती है।

माड़ी क्याँ तैं हो गी [148]

छोरी थी ए मैं थोड़े से दिनाँ की ए लांबी जादा [1] बध गी [2]
म्हारे घरक्याँ नै कर्‌या तगाजा ए छोरे नै छुट्टी मिल गी
काकी ताई मेरी संग की सहेली ए सारी छोडण आई
दो सखियाँ नै हाथ पकड़के ए मोटर बीच बिठा दी
पैंट साहमके [3] फौजी चढ़ ग्या ए मोटर बी थरणाई [4]
जड़ म्हैं बेठ के बूझण लाग्या रै रोंदी क्याँ तैं आई
सखियाँ म्हैं तैं न्यारी पाड़ दी ओ रोंदी ज्याँ तैं आई
फेर दूसरै बूझण लाग्या रै काळी क्याँ तैं [5] हो गी
खत गेड्‌या ना च्यट्‌ठी ओ पिया तेरी फिकर म्हैं हो गी
फेर तीसरे बूझण लाग्या रै माड़ी क्याँ तैं हो गी
माह पोह की ओ पिया सरदी पड़ै थी ओ पाटी [6] मेरी रिजाई

इस जकड़ी में ससुराल जाते समय रास्ते में एक युवती और उसके पति के बीच हुए प्रेमभरे वार्तालाप का वर्णन है। वह युवती उम्र की तो कम थी, लेकिन जवान जल्दी हो गई थी। यह देखकर उसके घरवाले उसे जल्दी ही ससुराल के लिए विदा कर देते हैं। गाड़ी में बैठकर युवक उससे पूछता है कि घर से चलते समय वह रो क्यों रही है? वह बताती है कि उसे अपनी सहेलियों से बिछुड़ने का दुख सता रहा था। फिर वह पूछता है कि उसका रंग काला क्यों पड़ गया? इस पर वह कहती है कि कई दिनों तक उसका पत्र न मिलने के कारण वह चिंता में काली पड़ गई। अंत में वह पूछता है कि वह कमज़ोर क्यों हो गई? उस पर वह कहती है कि भयंकर सर्दी में भी वह फटी हुई रजाई में सोती थी, इस कारण वह कमज़ोर हो गई।

1. ज़्यादा 2. बढ़ गई 3. ऊपर करके 4. काँपी 5. किसलिए 6. फटी हुई

मेरी रोसन दे मरवाई [149]

रामचंदर की ए धोळी हेली [1] *सासड़ नै सोवण खँदाई* [2]
दम दम करदी ए म्हैलाँ चढ़ गी उड़ै सोवै नणंद का भाई
तेरे तैं रै गोरी ज्यब बोलूँगा प्हैल्याँ भावज [3] *नै बलवा दे*
ऊपर तैं ए मैं तळै [4] *उतर्याई मन्नै सूती जेठाणी जगाई*
जा ए जेठाणी तेरा देवर बुलावै एक लोटा नीर मँगावै
दम दम करती ए म्हैलाँ चढ़ गी उड़ै सोवै नणंद का भाई
तेरे तैं ओ देवर ज्यब बोलूँगी मरवा दे अपणी ब्याही
ऊपर तैं ए उनै [5] *रुक्का मार्या* [6] *गोरी एक बै म्हैल म्हैं आइए*
मैं तो ओ पिया रोटी पोऊँ मेरी सास बारणै [7] *नै जा र्ही*
चूल्हे की रै गोरी आग बुझा दे तोवे नै तार बगा दे
चूल्हे की ए मन्नै आग बुझाई मन्नै तोवा तार बगाया
दम दम करदी ए म्हैलाँ चढ़ गी उड़ै बैठे देवर भाभी
क्हैणा हो जो क्है दे रै गोरी फेर हो ले सुरग की राही
खूँटी के तैं ए तारी कटारी मेरी धड़ तैं नाड़ उतारी
ऊपर तैं ए उनै रुक्का मार्या भावज एक बै म्हैल म्हैं आइए
मेरे तो ओ देवर बाळक रोवैं चाहे दूजा ब्याह करवा ले
जा री भावज तेरा भल्ला ना होइयो मेरी रोसन दे मरवाई
जा ए जेठाणी तेरै कीड़े पड़ियो मेरी भरी जिवानी खपवाई

इस जकड़ी में एक व्यक्ति द्वारा अपनी भाभी के प्रेम के वशीभूत होकर अपनी पत्नी की हत्या का प्रसंग है। विवाह के बाद पत्नी पहली बार पति के साथ सोने के लिए जाती है। लेकिन उसका पति तो पहले से ही अपनी भाभी के मोहपाश में जकड़ा हुआ है। इसलिए वह अपनी पत्नी को वापस भेज देता है और उसी के हाथों अपनी भाभी को बुलवा लेता है। भाभी आकर देवर से कहती है कि उनका प्रेम आगे तभी चलेगा, जब वह अपनी पत्नी को मरवा देगा। वह प्रेमांध व्यक्ति अपनी पत्नी का सिर धड़ से अलग कर देता है। एक दिन जब वह अपनी भाभी को आवाज़ देकर बुलाता है तो भाभी यह कहकर मना कर देती है कि उसके तो बच्चे रो रहे हैं, चाहे तो वह दूसरी शादी करवा ले। भाभी के बदले हुए तेवर देखकर उसे अपनी पत्नी की हत्या करने पर पश्चात्ताप होता है। अंतिम पंक्ति में मृत पत्नी भी अपनी जेठानी को कोसती है, जिसने भरी जवानी में ही उसकी हत्या करवा दी।

---

1. सफ़ेद रंग की हवेली 2. भेजी 3. भाभी 4. नीचे 5. उसने 6. आवाज़ दी 7. बाहर

मैं रंग म्हैल म्हैं एकली [150]

कड़ै ए गए थे ओ पिया रात नै
कड़ै ए गुमाई [1] सारी रात मैं रंग म्हैल म्हैं एकली
खेलण गए थे रै गोरी रात नै
झाकी म्हैं [2] बेठी तेरी सौक बैरण [3] नै रै झोली दे लेई
बेला तो ल्याई रै निकड़ू दूध का
म्हैं ए मिला ल्याई खांड बैरण नै रै मुँह कै ला दिया
बिछ रहे सतरंग सेज बैरण नै रै तकिया ला दिया
कीड़े पड़ैंगे पिया गात म्हैं
पाँचाँ म्हैं [4] पकड़्या हाथ ब्याही नै धोखा दे गया

इस जकड़ी में एक पुरुष के विवाहेतर संबंध और इसे लेकर उसकी पत्नी द्वारा उसे कोसने का प्रसंग है। वह अपने पति से पूछती है कि बीती रात वह कहाँ गया था? वह रंगमहल में उसका इंतज़ार करती रही। वह बताता है कि रात को वह टहलने के लिए गया था कि खिड़की में उसकी सौत बैठी थी और उसी ने उसे बुला लिया। इस तरह पूरी रात उसने उसी के साथ गुजारी। यह सुनकर पत्नी तिलमिलाकर उसे शाप देती है कि उसके शरीर में कीड़े पड़ेंगे, जो उसने अपनी पत्नी को धोखा दे दिया।

बात ध्यान म्हैं आई [151]

जिसके घर म्हैं कूआ हो उसनै बाह्र भरण क्यूँ जाणा ए
जिसके घर म्हैं देवर हो तो क्यूँ बदमास कुव्हाणा [5] ए
ज्यब देवर की होई सगाई ए भाभो नाक चढ़ावै
इब आ ज्यागी रामरोसनी आंदे ए[6] न्यारी होवै
सोड़ सोड़िए दरी गींडवे मैं धन्न भतेरा ल्याई
ओ भाइयाँ की सूँ मेरे सजन मैं तेरी रजाई ल्याई
सोड़ सोड़िए दरी गींडवे वो ले भाबो कै सो ग्या
मन्नै मन म्हैं न्यू जाण्या मेरै घराँ निगोडा [7] सो ग्या
ए दिन लिकड़्या ज्यब पीळक पाट्टी [8] होई घेर की राही
ए घेराँ के म्हैं सान्नी भेवै मेरै लड़न की आई
ओ जे भाबो तैं सारै था मन्नै क्यूँ ब्याहके ल्याया
ओ हाथ काँगणा पैर राखड़ी माथै मोड़ बंधाया

---

1. गँवाई 2. खिड़की में 3. दुश्मन, एक प्रेमभरा उपालंभ 4. पंचायत में 5. कहलवाना 6. आते ही 7. एक उपालंभ 8. पौ फटी

इतणीक क्है कै रामरोसनी ए होई बणाँ की राही
ए बण के बिचाळै[1] सेर बघेरे हे किस्सै नै ना खाई
रै उलटी ब्होड़ मेरी रामरोसनी रै घर की आई होड़ी[2]
रै ईब गए थे फेर ना जाँगे रै बात ध्यान म्हैं आई

इस जकड़ी में एक नवविवाहिता द्वारा अपने पति और जेठानी के बीच चल रहे प्रेम-प्रसंग का पता चलने पर घर छोड़ देने और उसके पति द्वारा उसे वापस घर लाने का प्रसंग है। जब देवर की सगाई होती है तो उसकी भाभी नाक-भौंह सिकोड़ती है। वह देवर को ताना देती है कि अब उसकी ज़िंदगी में उसके लिए कोई स्थान नहीं है। लेकिन विवाह होने के बाद भी देवर अपनी पत्नी को अकेला छोड़कर भाभी के यहाँ जाकर सो जाता है। अगले दिन उसकी पत्नी उससे पूछती है कि अगर उसे भाभी से इतना ही प्यार है तो उसने उसके साथ शादी क्यों की ? इतना कहकर वह घर छोड़कर जंगल का राह ले लेती है। उसके पति को अपनी गलती का एहसास होता है और उसे इस वचन के साथ वापस ले आता है कि वह फिर कभी अपनी भाभी के पास नहीं जाएगा।

याणे कै ब्याह दी ए[152]

याणे[3] कै ब्याह दी ए ब्याह दी सूँ जाणकै[4]
मैं रोटी पोऊँ ए मेरी जड़ म्हैं रोया बैठकै
ओ पिया रोवै मतना हो दे द्यूँगी मंडा सेककै
याणे के ब्याह दी ए ब्याह दी सूँ जाणकै
मैं पाणी ल्याऊँ ए रोवै सै जड़ म्हैं बैठकै
ओ पिया रोवै मतना हो ले ज्याँगी[5] गोदी साथ म्हैं
याणे कै ब्याह दी ए ब्याह दी सूँ जाणकै
मैं ईंख नुळाऊँ ए मेरी जड़ म्हैं रोया बैठकै
ओ पिया रोवै मतना हो दे द्यूँगी पोरी छोलकै[6]
याणे कै ब्याह दी ए ब्याह दी सूँ जाणकै
मैं सोवण लागी ए मेरी जड़ म्हैं रोया बैठकै
ओ पिया रोवै मतना हो सुआ द्यूँगी थप्पड़ मारकै
याणे कै ब्याह दी ए ब्याह दी सूँ जाणकै

इस जकड़ी में एक युवा लड़की की एक छोटे बालक से शादी हो जाने पर पेश आने वाली परेशानियों का ज़िक्र है। लड़की को सारा दिन घर-खेत के काम करने पड़ते

1. बीच में 2. की तरफ़ 3. बालक 4. जान-बूझकर 5. जाऊँगी 6. छीलकर

हैं। उसका पति उसका पल्ला पकड़े रहता है और रोता रहता है। वह जैसे-तैसे उसे बहलाने का प्रयत्न करती रहती है और साथ-ही-साथ अपने घरवालों को कोसती रहती है जिन्होंने जान-बूझकर उसका विवाह एक बालक के साथ कर दिया। सारे दिन की परेशान वह जब देखती है कि रात को सोते वक्त भी उसका पति रो ही रहा है, तब वह उसे दो थप्पड़ मारकर सुला देती है।

ढूँढ बसाणा हो सै [153]

ए चलो छोरियो ए देखण चाल्लाँ ताराँ के घर आळा [1]
हे ताराँ तो ए बेबे सुथरी बताइए बैलम कहिए काळा
ए बारोठी पै आया उदेसिंह माळा घालण आई
ए अपणे पति का रूप देखकै ए ताराँ भी घबराई
ए काकी ताई मेरी संग की सहेली ए सारी छोडण आई
ए दो सखियाँ नै हाथ पकडकै ए ब्हैली [2] बीच बिठाई
ए सास नणंद मेरी कट्ठी होकै [3] ए सारी तारण [4] आई
ए नणंद मेरी नै पीढा बिछा दिया बेट्ठो ताराँ भाभी
हे री डूब गए तेरे नाई र ब्हामण डूब गया तेरा बाबल
हे री तूँ तो री भाभी सुथरी घणी सै री कोन्या जोट [5] मिलाई
हे री के खाणा सै दाळ कढ़ी का री टूक भिड़ाणा हो सै
हे री काळे गेल्याँ ब्याह करवा कै री ढूँड बसाणा हो सै

इस जकड़ी में एक सुंदर लड़की की काले व्यक्ति से शादी होने पर उत्पन्न हुई निराशा झलकती है। विवाह के समय अपने काले-कलूटे पति को देखकर वह लड़की घबरा जाती है। मायके से विदा होकर जब वह ससुराल पहुँचती है तो उसकी बड़ी आवभगत होती है। उसकी ननद उसके पास बैठती है और सहानुभूति दिखाते हुए कहती है कि जिन्होंने भी यह शादी करवाई है, उन्हें डूब मरना चाहिए क्योंकि उन्होंने जोड़ी नहीं मिलाई। आगे उसकी ननद कहती है कि काले व्यक्ति से विवाह करके कोई संतुष्टि नहीं मिलती। यह तो मज़बूरी में घर बसाना है।

अणपढ़ की ले ली सगाई [154]

हे एक छोरा कोलेज का पढ़णिया ए मुसकल करी पढ़ाई
ए करकै बी ए पास ब्हाण अणपढ़ की ले ली सगाई
हे एक दिन छोरा बैठ पिलंग पै ए बोल्या गुड और नाइट

---

1. पति 2. डोली 3. इकट्ठी होकर 4. उतारने 5. जोड़ी

ए ताते [1] पाणी की भरी बाल्टी ए ल्या बिस्तर पै मुँधाई [2]
हे दूजे दिन छोरा बैठ पिंलग पै ए बैडसीट मँगवाई
ए ताते पाणी की भरी बाल्टी ए ल्या बिस्तर पै मुँधाई
हे तीजे दिन छोरा बैठ पिलंग पै बोल्या गुड और नाइट
ओ ताई तो थारी गई खेत म्हैं और पड़ोसण ल्याई
हे चौथे दिन छोरा बैठ पिलंग पै ए मन म्हैं सोचण लाग्या
ए कंद का दामण धोळा कुरता ए दम दम तलै उतर्याई
ए कुछ दिन तो ए मैं पीहर डिगर गी [3] ए अपणी माँ ए सिखाई
हे कुछ दिन तैं छोरा लेण डिगर ग्या कोट पैंट और टाई
ए पाणी नै तो वाटर बोलै ए सूज कह्वै जूते नै
हे री सुण ल्यो मेरी चाची अर ताइयो ए छोरियाँ नै [4] खूब पढ़ाइयो
हे री जे थारै घर म्हैं सरधा [5] ना सै तो अणपढ़ छोरे के ब्याहियो

इस जकड़ी में एक अनपढ़ लड़की की पढ़े-लिखे लड़के से हुई शादी और उससे उत्पन्न संवादहीनता की स्थिति का वर्णन है। पढ़ा-लिखा लड़का अपनी पत्नी से अंग्रेज़ी में कहता कुछ और है और उसकी अनपढ़ पत्नी समझती कुछ और है। तीन-चार दिन में ही दोनों एक-दूसरे से निराश हो जाते हैं। मायके जाकर वह लड़की अपनी चाची ताइयों से कहती है कि वे अपनी लड़कियों को अवश्य पढ़ाएँ। यदि लड़कियों को पढ़ाने का सामर्थ्य नहीं है तो उनकी शादी अनपढ़ लड़कों से ही करें।

रह्वै ए छोर्याँ के साथ म्हैं [155]

हाँ ए मेरा बालम बड़ा बदमास रह्वै [6] ए छोर्याँ के साथ म्हैं
हाँ ए छोर्याँ नै दे लिया बोल के तळै [7] उतर्याया रात नै
हाँ ए मेरी उगड़ी रैत नै ऐंख के सारे पिलंग पे ट्हो [8] लिया
हाँ ए मैं दमदम तळै उतर्याई के सास जगाई मनै रात नै
हाँ ए सासू नै सुसरा जगाया के साइकल दे दिया हाथ म्हैं
हाँ ए दिन लिकड्या पीळक पाट्टी सुसरा ए अंबाळै जै लिया
हाँ रै तन्नै या के सोची निरभाग के सुत्ती रै छोडी रात नै
हाँ ओ बाबू दिन्न रहो चाहे रैत रहूँगा छोर्याँ के साथ म्हैं

इस जकड़ी में एक ऐसे पति का ज़िक्र है जो रात में अपनी पत्नी को सोता छोड़कर साथियों के साथ घर से निकल जाता है। रात को पत्नी की आँख खुलती है। वह अपने

1. गर्म 2. उड़ेली 3. मायके चली गई 4. लड़कियों को 5. गुंजाइश 6. रहता है 7. नीचे 8. ढूँढ़ना

पति को पलंग पर न पाकर घबरा जाती है। नीचे आकर वह अपनी सास को जगाती है। सास उसके ससुर को जगाकर सारी बात बताती है। लड़के का पिता साइकिल लेकर घर से निकलता है और सुबह-सुबह ही अंबाला पहुँचकर अपने बेटे को पकड़ लेता है। जब वह उसे डाँटता है तो वह कहता है कि कोई चाहे कुछ भी करले, वह तो हमेशा साथियों के साथ ही रहेगा।

मैं खानदान घर ब्याही [156]

ए दुस्सर लेके आई थी ए मेरी सासू नै सोवण खँदाई
जाय बहू कमरे म्हैं सो ज्या बिछ रहया पिलंग सणी का
ए आधी रात सिखर तैं ढळ गी ए ईब तलक ना आया
ए रोंदी सुबकदी चली ट्होण नै ए पड्या पाळ[1] पै पाया
रेता माटी म्हैं रुळ्या पड्या ए मेरी ठंडी होगी काया
मैं जाणी पति मर्या पड्या सै ए बोल्या ना बतळाया
ए घर म्हारे तैं आई थी ए मैं धन भतेरा ल्याई
आगै भी घर धन आळा ए मैं खानदान घर ब्याही
सोड़ सोड़िए दरी गींडवे झालर तकिए ल्याई
भाइयाँ की सौंह ओ बालम मैं तेरी रिजाई ल्याई

इस लोकगीत में एक शराबी की पत्नी के निराशाजन्य भाव भरे हुए हैं। वह गौने पर ससुराल आती है। उसकी सास उसे सोने के लिए भेज देती है। लेकिन आधी रात ढलने के बाद भी उसका पति घर नहीं आता। रोती सुबकती वह उसे ढूँढ़ने निकल पड़ती है। उसे वह गाँव के बाहर नशे में धुत्त मिट्टी में पड़ा मिलता है। वह अपने धनवान पिता और खानदानी ससुर के बारे में सोचती हुई स्वयं के भाग्य को दोष देने लगती है।

तनै री एक बांदी दे गया [157]

हाँ ए मेरी गळ[2] की गळसरी[3] बेच पति नै तो घोड़ा ले लिया
हाँ ए घोड़े की तेज सपीट पति ए अंबाळै जा लिया
हाँ ए मैं दोघड़ भर के आई तार छोरे का आ लिया
हाँ ए पैंडी पै दोघड़ तार के ठाडूँ ए ठाडूँ[4] रो पड़ी
हाँ ए मेरी सासू बूझै बात बहू ए तेरा के के[5] ले गया
हाँ री मेरी दिन की ले ग्या भूख रैत की तो निंदरा ले गया
हाँ री मेरा ले ग्या हार सिंगार टरंक की तो चाबी ले गया
हाँ री तूँ ओर के बूझै मेरी सास तनै री एक बांदी दे गया

1. तालाब के किनारे 2. गला 3. एक आभूषण, गलश्री 4. ज़ोर-ज़ोर से 5. क्या-क्या

इस जकड़ी में एक ऐशपरस्त व्यक्ति की पत्नी का विलाप है। वह व्यक्ति अपनी पत्नी के गले का हार बेचकर घोड़ा खरीद लेता है। और उस पर सवार होकर अंबाला पहुँच जाता है। जब उसकी पत्नी को पता चलता है तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती है। उसकी सास उससे पूछती है कि वह उसका क्या-क्या ले गया? वह बताती है कि उसका पति उसकी दिन की भूख और रात की नींद ले गया, साथ ही उसका हार शृंगार और उसके संदूक की चाबी तक ले गया। अंत में वह कहती है कि वह स्वयं तो चला गया, लेकिन जाते-जाते अपनी माँ को एक नौकरानी ज़रूर दे गया।

खाँड की तो एक डळी री [158]

ओ आधी तैं ढळ गी रात देख पति अपणी घड़ी
ओ दूधू का भर्या गिलास सिर्हाणै तेरै कद की [1] खड़ी
रै गोरी दूर खड़ी बतळाय लागै सै मनै सुथरी घणी
ए मनै इतणा सुण्या जबाब म्हैल तैं तळै उतरी
ए मेरी सैसड़ बूझै बात बहू ए आज किस तैं [2] लड़ी
री सासड़ जाम [3] राख्या नरभाग आज मैं उसतैं लड़ी
रे बेटा बुरा भला चाहे मान बहू रे तनै सिर पै धरी
री माता बुरा भला चाहे मान चीज या तो ऐसी ए बणी
री माता सक्कर की भरी ए परांत खाँड की तो एक डळी
री मुरखाँ की सारी रैत चातर [4] की तो एक घड़ी

इस जकड़ी में रात के समय पति पत्नी के बीच हुई तकरार और दिन में सास द्वारा उनके मामले में हस्तक्षेप करने का रोचक प्रसंग है। रात के समय पति नाराज़ हो जाता है तो पत्नी भी गुस्से से भर जाती है। सुबह उसका उखड़ा-उखड़ा मूड देखकर सास पूछती है कि वह आज किसके साथ लड़ी है? वह उलटे सास को उलाहना देते हुए कहती है कि उसने बड़ा ही नालायक बेटा पैदा किया है। सास को भी गुस्सा आ जाता है और वह अपने बेटे से कहती है कि उसने बहू को सिर पर चढ़ा रखा है। बेटा कहता है कि माँ यह तो चीज़ ही ऐसी बनी है। यह तो खाँड की एक डली के समान है, जिसके आगे शक्कर से भरी परात की भी कोई औकात नहीं। अंत में वह कहता है कि मूर्ख लोग तो पूरा जीवन बर्बाद कर लेते हैं, जबकि सुघड़ सुजान के साथ तो एक घड़ी रहना ही काफ़ी है।

1. कब से 2. किसके साथ 3. पैदा करना 4. चतुर

मेरे मुट्ठी म्हैं भरतार [159]

मेरी सासू ब्होत कमेरी [1] ए ऊठै सै आधी रात
एक दिन तै मैं भी ऊठी ए प्होंचे तैं [2] पकड़ लिया हाथ
ईबे तैं बखत घणा सै रै आधी तै ढळी सै रैत
पांत्याँ नै पैर बाँध्याई ए सिर्हाणे नै दोनूँ हाथ
ब्हाई कै कान बाँध्याई ए मुखड़े पै हर्या रुमाल
मैं दमदम तळै उतर्याई ए मनै सारा कर लिया काम
मेरी सासू रुक्के मारै रे उतर्याई न लाल बलवान
घूँघट म्हैं हाँसी छूटी ए ऊँकी [3] गेल्याँ उठै खाट
छोर्याँ म्हैं बैठ कै रोया रै मत ब्याहियो सवासण [4] नार
छोरियाँ म्हैं बैठ कै हाँसी ए मेरे मुट्ठी म्हैं भरतार

इस लोकगीत में एक भरपूर जवान स्त्री और उसके कमज़ोर पति, जिसका नाम बलवान है, का रोचक वर्णन है। घर में सास बहुत मेहनती है, जो आधी रात को ही उठ जाती है और काम करने लगती है। संकोचवश एक दिन उसकी बहू भी उठती है। उसका पति उसका हाथ पकड़ लेता है और कहता है कि अभी तो बहुत रात पड़ी है। वह अपना हाथ छुड़ा लेती है और पति को खाट से बाँधकर नीचे उतर आती है। दिन निकलने पर उसकी सास अपने बेटे को आवाज़ लगाती है। बेटा उठने की कोशिश करता है तो खाट भी साथ ही उठ जाती है। यह देखकर उसकी पत्नी की हँसी छूट जाती है। बाद में वह साथियों के बीच बैठकर रोता है और उन्हें जवान लड़की से शादी न करने की सलाह देता है। इधर वह सहेलियों में बैठकर हँसती है और कहती है कि मेरा पति मेरी मुट्ठी में है।

हाय री माता पीट दिया [160]

मैं लिकड़ी सीम तैं ब्हार घूँघट मेरा खोल दिया
मेरे म्हैं जवानी का जोर घूँघट मनै ना खोल्या
उसकै दिन की भरी मरोड़ [5] सांझे नै ताळा भेड़ लिया [6]
मेरे म्हैं जवानी का जोर ताळा ए मनै तोड़ दिया
मनै धर्या [7] पिलंग पै पैर ऊठ के भाज लिया [8]
मनै भाजदे की ठ्याई [9] बलियाण पिलंग पै ए गेड़ दिया [10]
मेरै म्हैं जवानी का जोर कच्छा तो मनै पाड़ दिया
उसनै धरके मारी किलकार हाय री माता पीट दिया

1. मेहनती 2. कलाई से 3. उसकी 4. भरपूर जवान 5. गुस्सा 6. बंद कर लिया 7. रखा 8. भाग लिया 9. हाथ आई 10. गिरा दिया

म्हारा तीन मील पै गाम बीर मेरा आय गया
बेटा इसा के पाळ्या सांड लाल मेरा पीट दिया
मौसी प्याया निकड़ू दूध गुडियाँ री खेलण भेज देई
तन्नै प्याया खाट्टा सीत [1] सकूल म्हैं पढ़ण भेज दिया

इस जकड़ी में कमज़ोर पति और ताकतवर पत्नी के बीच हुई ज़ोर आजमाइश का रोचक वर्णन है। यह ज़ोर आजमाइश दिन में मायके की सीमा से बाहर निकलते ही शुरू होती है और रात तक चलती रहती है। वह रास्ते में उसका घूँघट खोलना चाहता है, लेकिन अपनी ताकत के बल पर वह उसे रोक देती है, घूँघट नहीं खोलने देती। इस बात से नाराज़ वह साँझ होते ही ताला बंद करके अंदर सो जाता है। लेकिन वह अपनी ताकत से ताले को तोड़ देती है। जब वह पलंग पर पाँव रखती है तो वह उठकर भाग लेता है। लेकिन वह अपने ज़ोर से उसे पलंग पर गिरा लेती है। वह चीखकर अपनी माँ को आवाज़ देता है और कहता है कि वह उसे पीट रही है। अगले दिन सुबह जब उसका भाई उसे लिवाने आता है तो सास उसकी शिकायत करती है और कहती है कि तुम्हारी बहन ने मेरा बेटा पीट दिया। इस पर भाई कहता है कि मौसी, हमने अपनी बहन को शुद्ध और ताज़ा दूध पिलाया और गुड़िया खेलने भेज दिया। दूसरी ओर आपने उसे लस्सी पिलाई और पढ़ने के लिए स्कूल भेज दिया इससे वह कमज़ोर रह गया।

बहू सै जिवान [161]

मैं दमदम म्हैलें चढ़ गी सैस री करके गुमान
मैं घाल [2] खटोला सो गी सास री मुख पै रूमाल
या चालै पिरवा पिछवा सास री उड ग्या रूमाल
पढ़णिया पढ़के आया सास री पा ग्या रूमाल
तूँ स्हैज स्हैज बतळाइए रे बेटा बहू सै जिवान
बूँटाँ की ठोकर मारूँ री माता छुट ज्याँ पिराण [3]
ऊपर तैं तळै [4] पटक द्यूँ पढ़णिए टूटै तेरी टाँग
मैं तो दूध दही तैं पाळी सास री ज्यद सूँ जुवान
तनै प्याया खाटा राँगा [5] सास री र्‌है ग्या निदान [6]

इस जकड़ी में पति-पत्नी के बीच संभावित झगड़े और सास द्वारा अपने बेटे को चेताने का प्रसंग है। जवान बहू गर्व में भरकर दिन में ही चौबारे में जाकर सो जाती है। उसका रूमाल उड़कर गली में जा गिरता है। उसका पति पढ़कर वापिस आता है और

1. बासी लस्सी 2. डालकर 3. प्राण 4. नीचे 5. बासी छाछ 6. कमज़ोर

रूमाल को पड़ा पाकर गुस्से से भर जाता है। उसकी माँ उसे चेताती है कि बहू जवान है, इसलिए वह नम्रता से बात करे। बेटा डींग हाँकता है कि वह ठोकर मारकर उसके प्राण हर लेगा। बहू माँ–बेटे की बात सुन रही है। वह पति को चेतावनी देते हुए कहती है कि अगर वह ऊपर आया तो वह उसे छत से नीचे पटक देगी, जिससे उसकी टाँग टूट जाएगी। वह अपनी सास को कहती है कि मेरे माँ–बाप ने मुझे दूध–दही से पाला है, इसलिए मैं जवान हूँ। तुमने अपने बेटे को खट्टी लस्सी पिलाई है, जिस कारण वह कमज़ोर रह गया है।

भाण मेरा बालम रूस ग्या [162]

मैं दुस्सर लेके आई भाण मेरा बालम रूस ग्या [1]
मेरै मारी कान पै लात मेरा तो टोपस टूट ग्या
ए संग की सुहेली न्यू बतळाई ए कूँगर [2] *डूब ग्या*
ए मारी कान पै लात तेरा तो टोपस टूट ग्या
ए मेरे सुसर कै धोळी हेली ए झाकीदार चुबारा
ए झाकी म्हैं को देखण लागी सोकण [3] *संग बतळा रूह्या*
ओ ज्यब तो बालम बोली कोन्या ईब रोप द्यूँ चाळा [4]
ओ मारूँ ठोकर खुल ज्या सांकळ दूर पड़ै तेरा ताळा

इस लोकगीत में पति–पत्नी के बीच पहली ही रात को हुई तकरार और अगले दिन पड़ोस में हुई इसकी चर्चा का प्रसंग है। पहली ही रात पति रूठ जाता है और गुस्से में आकर पत्नी के कान पर लात मारता है, जिससे उसके कान का आभूषण टूट जाता है। अगले दिन उसकी सहेलियाँ उसके प्रति सहानुभूति दर्शाती हैं और उसके पति के लिए बुरा–भला कहती हैं। उसी दिन पत्नी अपने पति को किसी अन्य महिला के साथ बात करते हुए देख लेती है। उसके तन–बदन में आग लग जाती है। वह पति को चेतावनी देती हुई कहती है कि अब तक वह कुछ भी नहीं बोली, लेकिन अब वह चुप नहीं बैठेगी।

तेरे एकले का गाम कोनी [163]

राम अर धरती क्यूकर डट रे [5] *बीच बिचाळै थाम* [6] *कोनी*
दमदम करदा म्हैलैं चढ़ ग्या ए हूर लरजदी पाई कोनी
मेरे म्हैलाँ तैं बाहर लिकड़ ज्या उरै रैह्ण का काम कोनी
क्यूँ बोलै सै धमक्या धमक्या इसा तूँ छोरा स्याम [7] *कोनी*
तेरै बाबल नै करी सगाई मेरे पै कोए स्यान [8] *कोनी*
मोड़ बांधकै ब्याह कै ल्याया ओ तेरे एकले का गाम कोनी

1. रूठ गया 2. जवान 3. सौतन 4. विघ्न, अद्‌भुत कार्य 5. ठहरे हुए 6. खंभा, स्तंभ 7. कृष्ण जैसा सुंदर 8. अहसान

इस जकड़ी में एक पुरुष द्वारा अपनी बदसूरत पत्नी को अपनाने से इनकार करने और पत्नी द्वारा अपना हक जताने का प्रसंग है। विवाह के बाद जब पहली बार पति-पत्नी मिलते हैं तो पत्नी को मनमाफ़िक सुंदर न पाकर पति भड़क जाता है। वह उसे दो टूक शब्दों में अपने घर से निकल जाने के लिए कहता है। लेकिन आत्मविश्वास से भरी वह नारी उसे नाहक गुस्सा करने का कारण पूछती है और कहती है कि वह स्वयं भी कोई छैल-छबीला नहीं है। आगे वह कहती है कि सगाई उसके बाप ने की है, इसलिए उस पर धौंस दिखाने की ज़रूरत नहीं है। घर-गाँव से निकल जाने की बात पर वह कहती है कि वह रीति-रिवाजपूर्वक विवाह होने के बाद यहाँ आई है। इसलिए इस घर-गाँव में उसका भी बराबर का हक है।

डरदी नै क्है दिया भाई [164]

दूस्सर लेके आई थी मेरी सासड़ नै सोवण खँदाई [1]
एक हाथ म्हैं दूध का लोटा एक हाथ म्हैं झारी
आधी रात सिखर तैं ढळ गी आया ना नणंद का भाई
ए कदे उठूँ कदे बैठूँ सूँ बेबे टूटै सै अँगड़ाई
चप्पल काढ़के चढ्या पिलंग पै जोबन लोचण लाग्या [2]
हाथ पकड़के प्होंचा पकड़्या मुस गी [3] *मेरी कलाई*
ए भाइयाँ की सूँ बड़ी जिठाणी डरदी नै क्है दिया भाई
हाथ पकड़कै ब्हार काढ़ दी उरै बैठके रो ले
मन मेरे तैं उतर गई किते और [4] *ठिकाणा टोह ले*
मोहनमाळा लिए खड़ी हट दूर परे नै हो ले
मैं बाणिए का बेटा सूँ किसे जाट के नै टोह ले
कसे कसाए घोड़े पै असवार चाहिए सै
ओ ना बाणिए ना जाट मनै भरतार चाहिए सै
टपक लिया यो आम सरोली ठा [5] *चूसणिया कोनी*
बीर मरद [6] *के झगड़े पर कोए पेसी भरणिया* [7] *कोनी*
केसर क्यारी म्हैं दूब खड़ी कोए न्हाड़ [8] *चरणिया कोनी*
उड़क धुड़क मेरा करै काळजा कोए हाथ धरणिया कोनी

---

1. भेजी 2. छेड़खानी करने लगा 3. मुड़ गई 4. कहीं और 5. उठाकर 6. पति-पत्नी 7. मध्यस्थता करना 8. साँड, बैल

इस लोकगीत में एक नवविवाहिता के मन में पति मिलन को लेकर बैठे डर और इस बात से उसके पति के नाराज़ हो जाने का प्रसंग है। आधी रात तक पति का इंतज़ार करते-करते वह थक गई है। जब पति आकर प्रेमालाप शुरू करता है तो अत्यधिक शारीरिक निकटता के कारण वह घबराकर डर के मारे उसे भाई कह देती है। इतना सुनते ही पति का मन उससे हट जाता है और वह उसे चौबारे से बाहर निकाल देता है। बाहर खड़ी-खड़ी वह बुरी तरह से डरी हुई रो रही है। वह सोचती है कि पति-पत्नी के झगड़े में कोई बीच-बचाव करने वाला भी नहीं होता। उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा है, लेकिन उस पर कोई हाथ रखकर सांत्वना देने वाला भी नहीं है।

ए बेबे क्यूं लाई थी किताब [165]

म्हारे घरक्याँ नै [1] करी सगाई ए दसमी के दिए इम्त्हान
उसकी ब्याही दूस्सर ल्याई हो पिया छोडो पढ़ाई का ध्यान
गोरी अपणे पीयर डिगर ज्या रै म्हारा नही छुटैगा ध्यान
मेरा सांझै बीरा आ ग्या ए तड़के [2] नै हो लेई त्यार
मनै गठड़ी मठड़ी बाँधी हे मनै म्हैं ए बाँधी किताब
बारणे तैं [3] पिया आ ग्या री माता कित सै [4] मेरी किताब
बेटा अलमारी म्हैं टोह ले रे अलमारी म्हैं तेरी किताब
माता अलमारी म्हैं टोह ली री मेरी कोन्या पाई किताब
माता हूर [5] पीहर म्हैं जा ली री मेरी वाहे ले गी किताब
पटड़ी पै मूंधा पड़ ग्या ए ऊपर कै उतर गई रेल
उसकी साथण बोली मारैं ए बेबे क्यूँ ल्याई थी किताब
मेरै बोली मतना मारो ए मेरे रूठ गए भगवान

इस लोकगीत में एक नादान लड़की द्वारा अपने पढ़ाकू पति की किताबें छुपाने और इस बात पर पति द्वारा आत्महत्या कर लेने का मार्मिक प्रसंग है। पति-प्रेम में डूबी पत्नी को पति की किताबें सौत जैसी लगती हैं। बार-बार कहने के बावजूद भी पति का ध्यान पढ़ाई से नहीं हटता। मायके जाते समय पत्नी सब किताबों को अपनी गठरी में छुपाकर ले जाती है। पूरे घर में ढूँढ़ने पर भी जब किताबें नहीं मिलतीं तो पति को विश्वास हो जाता है कि उसकी सारी किताबें उसकी पत्नी ही ले गई है। इस दुख में वह रेलगाड़ी के नीचे आकर आत्महत्या कर लेता है। बाद में उसकी पत्नी बहुत पछताती है।

---

1. घरवालों ने 2. सुबह-सवेरे 3. बाहर से 4. कहाँ है 5. पत्नी

पति बावळा [166]

दिल्ली तैं परे नै एक गाम आँवळा
ए मेरे पिता नै पति ढूँढ्या पति बावळा [1]
ए नीचै कै तो धोती बांधै ऊपर को कच्छा
ए बोलण की तो सोद्धी [2] कोन्या उल्लू का पट्ठा
ए ओढ़ फैर पाणी नै चाली छोर्याँ म्हैं बेठ्या
ए सारे छोरे न्हाए धोए सूर सा बेठ्या
ए पाणी भरके उल्टी आई गैल [3] हो लिया
ए पाच्छा फिरके देखण लागी रेल हो लिया [4]
ए मैं खड़ी तरावण बिस्सर [5] टांड पै चढ़ ग्या
ए दिवा लेके देखण लागी बासण [6] म्हैं बड़ गया
रै हलवा कर दे हलवा कर दे हलवा कर दे न
सबतैं बड्डी थाळी नै मेरी ठाडी भर दे न
ए सेर चून की करी लापसी घेर म्हैं ले ग्या
ए बाळक बच्चे रोंदे र्‌हैगे [7] उननै ना दे ग्या
हे रे जल का लोटा लेके बेटा मुखड़ा धो ल्यो न
हे रे थमनै भी खा ज्यागा रे बेटा भीतर हो ल्यो न

इस लोकगीत में अपने पागल पति की हरकतों से परेशान एक पत्नी का वर्णन है। दिल्ली के उधर बसे आँवला नामक एक गाँव में एक पागल व्यक्ति था, जिसकी शादी एक समझदार लड़की से हो गई। उस पागल व्यक्ति को न तो कपड़े पहनने की सुध थी और न ही बोलने की अक्ल। एक दिन जब वह पानी भरकर आती है तो वह गली में उसका पीछा करने लगता है। ज्योंही वह पीछे मुड़कर देखती है, वह भाग खड़ा होता है। घर में आकर भी वह इधर-उधर छिपता फिरता है। एक दिन वह ज़िद करके हलवा बनवा लेता है। उसके बच्चे रोते रहते हैं, लेकिन सारा हलवा वह स्वयं खा जाता है। गुस्से में आकर वह बच्चों से कहती है कि तुम सब घर के भीतर हो जाओ, वरना वह तुम्हें भी खा जाएगा।

अँघाई करै काणा [167]

मैं गई झील आळै [8] खेत गैल मेरै काणा [9]
मनै काटी भरोटी [10] च्यार ड्योळे पै बैठ्या काणा
मैं उलटी घर नै आऊँ अँघाई [11] करै काणा

---

1. पागल 2. सुध 3. साथ 4. भाग गया 5. इंतज़ार में 6. बर्तन 7. रोते रह गए 8. वाले 9. काना, एक आँख वाला 10. गट्ठर 11. शरारत

मेरै म्हैं जवानी का जोर पटक दिया काणा
काणे का तेज सुभाव चढ़्या ल्याया थाणा
मन्नै दिए चड़ाचड़ ब्यान खड़्या देखै काणा
मन्नै दस का बाँड़्या[1] परसाद माँग रह्या काणा
गोरी हमनै बी द्यो परसाद दिखा दिया थाणा

इस लोकगीत में एक काने व्यक्ति को उसकी हरकतों से परेशान हुई उसकी पत्नी द्वारा सबक सिखाने का प्रसंग है। पति-पत्नी दोनों खेत में जाते हैं। घास के चार बोझ पत्नी अकेली ही काट डालती है और काना खेत की मेंड़ पर बैठा रहता है। जब वह वापस घर की ओर आती है तो रास्ते में वह उससे शरारत करने लगता है। गुस्से में आकर वह उसे ज़मीन पर पटक देती है। काना भी तेज़ स्वभाव का है। वह थाने में जाकर रिपोर्ट कर देता है। थानेदार के सामने वह फटाफट अपना बयान दे देती है और काना हैरान होकर दाएँ-बाएँ देखता रहता है। थाने से बरी होने की खुशी में वह मुहल्ले में प्रसाद बाँटती है। काना उसे भी प्रसाद देने के लिए विनती करता है।

बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो[168]

मन्नै बखत उठके पीस्या धोळू नै हळसी[2] जोड़ी हे
बाँगर[3] म्हैं कोए मत ब्याहियो
मन्नै सोळ्हा टीकड़[4] पोए ढाई सेर की राबड़ी राँधी हे
बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो
मैं सीधी सरड़क चाली मेरै गैलै[5] काळा कुत्ता हे
बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो
मैं च्यारूँ तरफ लखाई कितियाँ[6] नी पड़्या दिखाई ए
बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो
मैं आड्डी तरफ लखाई झुँपड़ी म्हैं सोवै नपूता ए
बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो
मन्नै गूँठा मोड़ जगाया उसनै मुँह आळा सा बाया[7] ए
बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो
वो सोळ्हा टीकड़ खा ग्या ढाई सेर की राबड़ी पी ग्या ए
बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो
धोळू कै उठ्या मरोड़ा उसनै मर पड़ लिया बिट्योड़ा[8] ए

1. बाँटा 2. हल 3. एक अपेक्षाकृत ऊँचा भू-भाग 4. मोटी रोटियाँ 5. साथ 6. कहीं भी 7. खोला 8. गाँव के बाहर गोबर पाथने का स्थान

बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो
धोळू कै ढाई सेर माक्खी मैं तो और खसम तैं भी राखी ए
बाँगर म्हैं कोए मत ब्याहियो

इस लोकगीत में हरियाणा के बागड़ क्षेत्र में ब्याही गई और अपने पेटू और आलसी पति से परेशान पत्नी का वर्णन है। वह ढेर सारी रोटी और राबड़ी की हंडिया लेकर दोपहर को खेत में जाती है तो पाती है कि उसका आलसी पति खेत जोतने की बजाय झोंपड़ी में सोया पड़ा है। वह उसे जगाती है। वह जागते ही सारा खाना एक बार में ही खा जाता है। ज़्यादा खाने से उसके पेट में हलचल होती है। वह बड़ी मुश्किल से शौच के लिए निर्धारित स्थान तक पहुँच पाता है। उस व्यक्ति पर हमेशा मक्खियाँ भिनभिनाती रहती हैं। उसकी पत्नी हमेशा अपने भाग्य को कोसती रहती है।

मैं ना चालूँ बावळे [169]

ए नान्ही नान्ही बूंद पड़ै या ग्यारा [1] उठै सै
ए लख्मीचंद की हेली म्हैं तकरार हो री सै
ए पाणीपत के मोड़ पै ये तीन पटड़ी
ओ मैं ना चालूँ बावळे मेरी छोड गठड़ी
ए पाणीपत के रोड़ पै फरांस हालै सै
ओ मैं ना चालूँ बावळे क्यूँ सांस घालै सै
ए ताखड़ी [2] का तोल्या यू जीरा घट ग्या
ओ मैं ना चालूँ बावळे मेरा बीरा [3] नट ग्या

इस लोकगीत में पानीपत के बाज़ार में पति-पत्नी के बीच हुई तकरार का रोचक प्रसंग है। हल्की-हल्की बारिश के बीच एक पति अपनी पत्नी को ससुराल चलने के लिए कहता है। लेकिन पत्नी तरह-तरह के बहाने करके उसके साथ जाने से इनकार कर देती है। वह उससे उसकी गठरी छोड़ने को कहती है। वह कहती है कि वह नाहक ही हलकान हो रहा है, वह नहीं चल सकती क्योंकि उसके भाई ने उसे भेजने से इनकार कर दिया है।

सारस कै सी जोट आपणी [170]

जाइए नणंद बुलाकै ल्याइए री घेराँ [4] म्हैं तेरा भाई
हे री कर लेगा दो बात मेरे सैं चढ़ री सै करड़ाई [5]
हे रे के सूत्या सै बीर बावळा रे बेठ्या हो मेरा भाई

1. कीचड़ 2. तराजू 3. भाई 4. बाहर वाला मकान 5. दुर्भाग्य

हे रे मेरी भाबो कै दरद घणा रे दो बैद [1] ढुका मेरा भाई
इतणा बोल सुण्या छोरे नै ए तोळ्या तोळ्या [2] आया
हे रै कड़ै [3] गई थी रै के हो ग्या तनै के खा ग्या मेरी माया
प्होंचे तैं ए उसनै हाथ पकड़ लिया नाड़ी छूट लई
हे रै सारस कैसी जोट आपणी रै न्यारी पाट लई
मेरै म्हैलाँ की रैह्णे आळी रै जंगल चाल पड़ी
हे रै मेरे पिलंगाँ के सोणे आळी धरती कै बीच पड़ी

इस जकड़ी में एक युवती की असामयिक मृत्यु और इस पर उसके पति के विलाप का प्रसंग है। अचानक बीमार पड़ने पर वह युवती अपनी ननद के हाथों आने पति को घर बुलवाती है। जल्दी से घर आकर वह युवक उसकी नब्ज़ टटोलता है और महसूस करता है कि अब उनकी सारसों जैसी जोड़ी के बिछुड़ने का समय आ गया है। वह उसे तरह-तरह से याद करके विलाप करने लगता है।

मैं ना जांदी ओ निगोड्डे [171]

जोधपुर तैं गाड्डी चाली जाखळ नै जाग्गी [4]
हेला मारिए [5] निगोड्डे [6] टीडी बाजरा खा गी
बाजरे नै टीडी खा गी रै जोवाँ नै कीड़ा
मैं तो क्है रही निगोड्डे दो मण राखिये तूड़ा
सासू जी के सासरे म्हैं आज आया सूँ
अपणी लाडो नै बिठा द्यो रै मोटर कार ल्याया सूँ
टूटे से चुबारे म्हैं ईंट लटकै
कोन्या जाऊँ ओ निगोड्डे तेरै भीत लटकै
बाजरे की राबड़ी म्हैं बाळ पड़ ग्या
मैं ना जाँदी ओ निगोड्डे थारै काळ [7] पड़ ग्या

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने पति के साथ ससुराल जाने से मना करने का रोचक प्रसंग है। युवती हरियाणा की है और उसकी ससुराल राजस्थान में है, जहाँ भयंकर अकाल पड़ते हैं और फ़सल के नाम पर केवल बाजरा व जौ पैदा होते हैं। इन अनाजों को भी टिड्डीदल और कीड़ों से बचाने में खूब मशक्कत करनी पड़ती है। इस अभावग्रस्त जीवन से घबराकर वह युवती ससुराल जाने से मना कर देती है। साथ ही वह अपने पति को गंदे रहन-सहन का भी उलाहना देती है।

1. वैद्य 2. जल्दी-जल्दी 3. कहाँ 4. जाएगी 5. आवाज़ लगाना 6. एक उपालंभ 7. अकाल

स्याड़ी कै छींटा लगै सै [172]

धोळी तो मेरी धोती [1] ए धोती म्हैं फूल किरैं सैं [2]
ओढ़ प्हैर पाणी चाली ए रस्ते म्हैं जेठ खड़्या सै
दोघड़ भर ब्होड़ी [3] ए स्हैळयाँ म्हैं पति खड़्या सै
भाई रै तरवाइए रै तेरी ब्याही बोझ मरै सै
म्हारै तैं ना उतरै रै पैंटाँ कै छींटा लगै सै
गोरी रै पाणी प्याइए रै तेरा अपसर [4] प्यास मरै सै
मैं ना पकड़ाँदी ओ स्याड़ी कै छींटा लगै सै
बड्डी कलिहारी [5] रै या तो तुरते बदला ले सै
गाम म्हारा कीनर ओ इसकै जड़ म्हैं नाड़ा बसै सै
बगड़ म्हारा उरला ओ यू सबतैं ऊँचै सी बसै सै
गोत म्हारा दलाल हो इसतैं सारा देस डरै सै

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने पति के उसके प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार का प्रत्युत्तर देने का रोचक प्रसंग है। एक दिन वह युवती साज-सिंगार करके पानी भरने जाती है। जब वह दोघड़ लेकर घर आती है तो उसका जेठ उसके पति से दोघड़ उतरवाने के लिए कहता है। उसका पति यह कहते हुए दोघड़ उतरवाने से मना कर देता है कि उसकी पैंट खराब हो जाएगी। थोड़ी ही देर बाद जब यह स्वयं पीने के लिए पानी माँगता है तो वह भी यह कहते हुए पानी देने से मना कर देती है कि उसकी साड़ी खराब हो जाएगी। इस पर उसका पति उसे कलहप्रिया और तुरंत बदला लेने वाली कहता है। वह भी उसे भविष्य में सावधान रहने की चेतावनी देती है और कहती है कि जिस गाँव व परिवार में वह जन्मी है, उससे तो सारा देश डरता है।

गैल लाग पिसवावै सै [173]

कदे कर्या ना काम छोरियो ए सासड़ काम करावै सै
मेरे पति कै मैं ब्होते [6] लाडली गैल लाग [7] पिसवावै सै
बखत ऊठ के चाक्की झोई ए चाक्की धोरै [8] आवै सै
मेरी सैसड़ की आँख उघड़ गी ए यो के चाळा [9] हो र्‌या सै
के सोवै सै जाए रोए [10] घर का चलण बिगड़ ग्या सै
बहू सोवै यो छोरा पीसै मोटा चाळा हो र्‌या सै
चाल्ली जा बदमास रांड क्यूँ घर की हवा उडावै सै

1. साड़ी 2. खिले हुए हैं 3. वापस आई 4. अफ़सर 5. कलहप्रिया 6. बहुत ज़्यादा 7. साथ लगकर 8. पास 9. अजीब दृश्य 10. एक उपालंभ

बहू पिस्सो चाहे छोरा पिस्सो चून[1] टेम पै थ्यावै सै
पीस पास पति ब्हार लिकड़ ग्या सारा धोळा[2] हो र्या सै
छोरे छापरे मारैं मसकरी रै तेरी बहू के न्यारी सै
न्यारी सै रै भाई न्यारी सै या लगै ज्यान तैं प्यारी सै

इस जकड़ी में एक नवविवाहित युवक द्वारा आटा पीसने में अपनी पत्नी की सहायता करने का रोचक प्रसंग है। युवती ने मायके में कभी भारी काम नहीं किया, लेकिन ससुराल में उसकी सास उससे सुबह–सुबह आटा पिसवाती है। उसके पति से यह सब देखा नहीं जाता। इसलिए वह आटा पीसने में उसकी सहायता करता है। यह देखकर उस युवती की सास आग बबूला हो जाती है, लेकिन समझदार ससुर उसे चुप रहने की सलाह देता है। आटा पीसने के बाद जब वह युवक घर से बाहर जाता है तो उसके साथी उसका मज़ाक उड़ाते हैं। लेकिन वह उनकी परवाह नहीं करता क्योंकि उसे अपनी पत्नी जान से भी ज़्यादा प्रिय है।

दिल्ली आळी नार[174]

हम तो रै गोरी चले रै नौकरी
सारे कुणबे का तूँ परण निभाइए
थारा तो पिया हम भी निभा द्याँ
कुणबे के निभाणे आळी और ब्याह ल्याइए
दस दिन की ए पति छुट्टी आया
दिल्ली आळी नार वो तो गैल्याँ[3] ए ल्याया
हम तो रै गोरी चाले नौकरी
सारे कुणबे का तू परण निभाइए
थारा तो पिया हम भी निभा द्याँ
सारे कुणबे नै तूँ कुए म्हैं धका दे
फैन[4] ल्याया धोती अँगरेजी ल्याया कच्छा
दिल्ली आळी नार[5] नै बिठाया मेरा भट्ठा

इस हास्य–प्रधान जकड़ी में एक युवक द्वारा अपने परिवार के प्रति कर्तव्य पूरे करने के चक्कर में दो–दो विवाह करने का रोचक प्रसंग है। परदेस जाते समय वह अपनी पत्नी से कहता है कि उसकी अनुपस्थिति में वह परिवार के प्रति कर्तव्यों का पालन करे। इस पर उसकी पत्नी कहती है कि पति के प्रति फ़र्ज़ तो वह निभा सकती है, लेकिन कुनबे के फ़र्ज़ वह नहीं निभा पाएगी। अच्छा हो वह दूसरी पत्नी ले आए। यह सुनकर वह

1. आटा 2. सफ़ेद 3. साथ 4. एक विशेष प्रकार की किनारी वाली धोती 5. पत्नी

युवक दिल्ली की एक युवती को विवाह करके ले आता है और परदेस जाते समय वही बात उससे कहता है। दिल्ली वाली पत्नी तो यह कहकर उसका दिल तोड़ देती है कि वह अपने कुनबे को कुएँ में धक्का दे दे। अंत में वह पछताता है और कहता है कि दिल्ली वाली पत्नी ने तो उसका सर्वनाश ही कर दिया।

पिया दूजा ब्याह करवा ल्यो [175]

बिन्या बूँद पप्पैया तरसै देखे हो बिन्या पूत नै मैया तरसै
त्हारी हँस हँस कहै री नार देखे हो पिया दूजा ब्याह करवा ल्यो
तेरा ले लेगी छन्न पछेली गजरा देखे रै तेरा ले लेगी तन का कपड़ा
तेरा ले ले गळे का हार देखे रै तूँ तो काग उडाणी [1] बन ज्या
मैं तो दे द्यूँ छन्न पछेली गजरा देखे ओ मैं तो दे द्यूँगी तन का कपड़ा
मैं दे द्यूँ गळे का हार देखे हो पिया दूजा ब्याह करवा ल्यो
तेरे छुट जेंगे [2] म्हैल दुम्हैले तेरे छुट जेंगे पिलंग सणी के तेरा धरती म्हैं लागै डेरा
देखे हो मैं दे द्यूँगी म्हैल दुम्हैले दे द्यूँगी पिलंग सणी के
थारी हँस-हँस कह रही नार देखे हो मैं तो धरती म्हैं डेरा ला ल्यूँ
त्हारी हँस हँस कह री नार देखे हो पिया दूजा ब्याह करवा ल्यो
ज्यब चले दूसरी नै ब्याह के देखे ए वैं रस्ते म्हैं न्यू [3] बतळाए
त्हारै कहिए जलम [4] की बाँझ देखे हो मेरा न्यारा म्हैल चिणाइए
ब्हार ड्योढ़ी पै अरथ खड़्या सै देखे रै तूँ उसनै तारके [5] ल्याइए
थारी उसमैं बेट्ठी छोटी सोंक [6] देखे रै तू उसनै तारके ल्याइए
मेरी उतर ब्हाण माँजाई देखे ए मैं तन्नै तारण आई त्हम उतरो ब्हाण माँजाई
मेरै मतना हाथ लगाइए देखे ए तूँ कहिए जलम की बाँझ
देखे मेरे मतना हाथ लगाइए तू तो कहिए जलम की बाँझ
बेबे साची साच बता दे देख्ये ए तेरै आगै किसनै बताई
मेरै आगै उसनै बताई देखे ए मैं जिसकै ब्याही आई मेरै आगै उसनै बताई

इस जकड़ी में एक निस्संतान युवती द्वारा हठपूर्वक अपने पति के दूसरे विवाह और विवाह के तत्काल बाद उसकी सौतन द्वारा उसे तिरस्कृत करने का मार्मिक प्रसंग है। पुत्र की चाह में एक युवती अपने पति से दूसरा विवाह करने की ज़िद करती है। पति उसे चेताता है कि उसकी सौतन उसे बेघर कर देगी। लेकिन संतान को तरसती वह युवती पति की बात अनसुनी कर देती है और उसका दूसरा विवाह बड़े जोश से करवा देती है। नई दुल्हन आते ही अलग घर की माँग करती है और उस निस्संतान सौत को हाथ भी नहीं लगाने देती।

---

1. नितांत अकेली 2. जाएँगे 3. ऐसे 4. जन्मजात 5. उतारकर 6. सौतन

तूँ क्यूँ रै मरै नरभाग [176]

हो सुंदरे [1] के तोल दे नाथ देर क्यूँ ला र्‌या सै
हो मेरै घरें नहीं भरतार खेत म्हैं जा र्‌या सै
हे उनै एक तार दिया फेर [2] दूसरा ले र्‌या सै
हे उसकी मुट्ठी हो र्‌ही लाल पसीना आ र्‌या सै
हो तूँ क्यूँ रै मरै नरभाग तेरै के कुणबा भार्‌या [3] सै
हो तेरे तैं बड़ा तेरा बीर नौकरी जा र्‌या सै
हो तेरे तैं छोटा तेरा बीर मंदरसे म्हैं जा र्‌या सै
रै म्हारै भाई भाइयाँ का प्यार आज पड़वावैगी
रै म्हारै हेली कै बारणा [4] एक तीन लगवावैगी

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने पति को उसके परिवार के खिलाफ़ भड़काने और पति द्वारा उसका प्रतिकार करने का प्रसंग है। एक दिन वह युवती अपने पति को खेत में खून-पसीना एक करते देखती है। वह उसे झिड़कते हुए कहती है कि वह क्यों अकेला ही इतना परिश्रम करता है, जबकि उसका एक भाई सेना में मौज उड़ा रहा है और दूसरा पढ़ाई करने स्कूल गया हुआ है। यह सुनकर वह युवक उसकी भावनाओं को भाँप जाता है और कहता है कि लगता है तू हम तीनों भाइयों के पारस्परिक प्रेम को समाप्त करके ही दम लेगी।

मेरी माँ गैल क्यूँ लड़्या करै सै [177]

इसे जुलम क्यूँ कर्‌या करै सै मेरी माँ गैल [5] क्यूँ लड़्या करै सै
घणी गई रै इब थोड़ी र्‌हैगी सदा के माणस जिया करै सै
जिसकै रै गोरी दरद साँस का वो माणस के जिया करै सै
माँ का मार्‌या मर्‌या पड़्या सै म्हारे गाम तैं क्यूँ ल्याया करै सै
जिनके रै गोरी राम रूस ज्याँ [6] वैं पीहर म्हैं रह्या करैं सैं
तेरी माता ओ पिया खप्परभरणी गाळ [7] रांड की दिया करै सै
गाळ्याँ तैं क्यूँ खिज्या [8] करै सै
जितणे रैं गोरी साँस मेरे सैं तूँ राँड होण तैं क्यूँ डर्‌या करै सै

इस जकड़ी में सास बहू के झगड़े को लेकर पति-पत्नी के मध्य हुई तकरार का प्रसंग है। एक दिन पति अपनी पत्नी से कहता है कि वह उसकी बूढ़ी माँ से क्यों लड़ती रहती है? यह सुनकर पत्नी जल-भुन जाती है और ताना मारती है कि अगर उसे अपनी माँ से इतना प्यार है तो फिर वह उसे मायके से क्यों लिवा लाता है? वह आगे कहती है

1. सुनार 2. फेरा 3. बड़ा 4. दरवाज़ा 5. साथ 6. रूठ जाएँ 7. गाली 8. चिढ़ना

कि उसकी माँ चांडाल है, जो उसे रात-दिन राँड की गाली देती है। यह सुनकर वह युवक उसे समझाता है और कहता है कि जब तक वह जीवित है, तक तक उसे विधवा होने से नहीं घबराना चाहिए।

ना तेरै छोरा रै गोरी ना तेरै छोरी [178]

रोटी तो पो दे रै गोरी [1] काम जरूरी
इसा के काम हो राजा कर र्‌या सै चोरी
ना तेरै छोरा [2] रै गोरी ना तेरै छोरी [3]
द्‌यल्ली स्हैर म्हैं रै गोरी सुथरी सी छोरी
सुथरी सी छोरी रै गोरी ल्याणी जरूरी
उसकै हो ज्या रै गोरी छोरा र छोरी
छोडो छोडो रै गौरी महल अटारी
इनमैं आवै रै गोरी दूसरी रै गोरी
छोडो छोडो रै गोरी सेज बिस्तरे
इनपै सोवै रै गोरी सुथरी सी छोरी
खोलो खोलो रै गोरी माळ र गंठी
यैं बांधैगी रै गोरी सुथरी सी छोरी
तारो [4] तारो रै गोरी ल्हैंगा र चूनी
यैं प्हैरैगी रे गौरी सुथरी सी छोरी
हे ईस्वर तेरी लीला रे न्यारी
एक लाल [5] कै ऊपर छुट गी रे नगरी
जे ईस्वर मेरै हो ज्या रे छोरी
मेरै भी सीर [6] की या ए रे नगरी

इस जकड़ी में एक निस्संतान स्त्री की पीड़ा का मार्मिक वर्णन है। निस्संतान होने के कारण उस स्त्री का पति दूसरा विवाह कर लेता है और उसे घर से बाहर निकाल देता है। अंत में वह स्त्री विलाप करती हुई ईश्वर को दोष देती है। वह कहती है कि अगर ईश्वर उसे एक बेटी ही दे देता तो भी वह अपने समाज का हिस्सा बनकर रह लेती।

••••

1. पत्नी 2. लड़का 3. लड़की 4. उतारो 5. बेटा, पुत्र 6. साँझा

कुलवधू

कंद का दामण धोळा कुड़ता [179]

कंद का दामण[1] धोळा कुड़ता[2] ओढणे[3] पै कट र्या चाळा[4]
घोटा र पेमक फूल सुतारे यो पडूया रूप[5] पै चाळा
हे री माँ तार[6] ले बहू नै या मोटर कार खड़ी सै
गळ म्हैं तो मेरै कंठी गळसरी बूजनियाँ पै कट र्या चाळा
हार की या स्योब्या[7] न्यारी नगीने सतर्हा अट सै
पायाँ के म्हैं छन्न पछैली हाथाँ के म्हैं कंगण हे
ढूंगे ऊपर चोटी लटकै हो रह्या रूप निराळा हे
हे री माँ तार ले बहू नै या मोटर कार खड़ी सै
सुथरी-सी एक छोरी भाई साइकल ऊपर जाया करती
चौराहे पै खड़ी होकै च्यारूँ तरफ लखाया करती
मेरा भी तो ध्यान डिगर ग्या थोड़ी सी सरमाया करती
क्रीम अर पोडर घाल रही स्याही आँख मिरग[8] तैं मोटी
हे री माँ तार ले बहू नै या मोटर कार खड़ी सै

यह लोकगीत कलियों वाली जकड़ी के नाम से जाना जाता है। यह नाम ऐसे गीतों की विशेष गायन शैली के कारण पड़ा है। इस लोकगीत में एक नवविवाहिता पहले अंतरे में अपने द्वारा पहने गए सुंदर कपड़ों और अगले दो अंतरों में अपने द्वारा पहने गए विभिन्न आभूषणों का वर्णन करती है। गीत के अंतिम अंतरे में एक कुँवारी लड़की के रूप में उसकी यौवन सुलभ उत्सुकता, थोड़ी झिझक और लज्जा का सुंदर वर्णन है।

मेरै मारैं पड़ोसी तीर [180]

सिंगरके पाणी नै गई थी ए हे जेठे नै मार्या तीर[9]
बहू या किस छोरे की रै हे रै घूँघट पै नाम रणधीर
बहू या उस छोरे की रै हे रै जो जा र्या लड़ाइयाँ बीच
सैस मनै तौळी [10] सी तरा दे री हे री नहीं फोड़ूँ बगड़[11] के बीच

---

1. घाघरा 2. कुरता 3. दुपट्टा 4. कमाल 5. सौंदर्य 6. उतार 7. शोभा 8. हिरण 9. ताना 10. जल्दी 11. मोहल्ला, चौराहा, समूह

बहू ए मेरी न्यू क्यूँ बोली ए हे मेरा लाल लड़ाइयाँ बीच
भीतर बड़ रोवण लागी ए हे मेरी कोए ना बंधावै धीर
नणंद मेरी पढ़के आई ए हे मेरी उसनै बंधाई धीर
भावज मेरी रोवै मतना री हे री मेरा आ ज्या बीर रणधीर
नणंद वे तो ज्यूँदे [1] मर गे री हे री मेरै मारैं पड़ोसी तीर

इस जकड़ी में एक सैनिक की पत्नी को दिन-प्रतिदिन मिलने वाले तानों और उनके कारण उसके मन में पैदा हुई खिन्नता का वर्णन है। जब वह शृंगार करके पानी लेने पनघट पर जाती है तो चौपाल में बैठे लड़के उसके पति के नाम पर उसे चिढ़ाते हैं। वे कहते हैं कि इसका पति तो युद्ध में गया हुआ है और यह बन-ठनकर रहती है। इस पर जब उसे क्रोध आ जाता है तो उसकी ननद यह कहकर उसकी धीरज बँधाती है कि मेरा भाई जल्दी ही वापस आ जाएगा। लेकिन उस विरहिणी को इस पर भी संतोष नहीं होता। वह कहती है कि वह तो मेरे लिए जीते जी ही मर गया है।

जेठे नै बोली मार देइ [181]

हर्या सूँट मेरी काळी चोटी हाथ कै बँध र्ही टेम घड़ी
ओढ़ प्हैर के पाणी नै चाली जेठे नै बोली मार दई
जिनके बालम भाई घर पै कोन्या उनका सिंगरणा [2] ठीक नहीं
दस की तो ए मन्नै चिट्ठी गेड़ी ढाई का गेर्या [3] तार सखी
दस दिन की ए पिया छुट्टी आया गळ कै लागके रोय पड़ी
हर्या सूँट मेरा काळी चोटी हाथ कै बँध र्ही टेम घड़ी
ओढ़ प्हैर के पाणी नै चाली जेठे नै बोली मार देई
जिनके बालम भाई घर पै कोन्या उनका सिंगरणा ठीक नहीं
के भाई रै तेरै ब्याही आई के तेरै पल्लै ला राखी
ना भाई रै मेरै ब्याही आई ना मेरै पल्लै ला राखी [4]
चाल्लै थी रै भाई धरती काटदी हमनै तो धरती पै राख देई
भली करी रै मेरी माँ के जाए इज्जत मेरी राख दई

इस जकड़ी में एक सैनिक की पत्नी और उसके जेठ के बीच उसके चाल-चलन को लेकर हुए विवाद का प्रसंग है। एक नारी, जिसका पति फ़ौज में गया हुआ है, सज-धजकर पनघट पर जाती है। उसका जेठ उसे कहता है कि पति के परदेस में होते हुए पत्नी का सजना-सँवरना शोभा नहीं देता। वह स्त्री पत्र के माध्यम से अपने पति को बुला

1. जीवित 2. शृंगार करना 3. भेजा 4. ब्याह देना

लेती है। वह सैनिक अपने बड़े भाई से जवाब तलब करता है तो वह बताता है कि तुम्हारी पत्नी को मैंने वास्तविकता समझाई थी। सैनिक अपने भाई का एहसान मानता है कि उसने घर की इज़्ज़त बचा ली।

मेरा री जी लागता कोन्या [182]

हे री के दळिए का खाणा सास मनै भावंता [1] कोन्या
हे री पति गए परदेस मेरा री जी लागता कोन्या
ए ठाकै [2] दराती चाल पड़ी ए मैं होई खेत की राही
ए भार्या भरोटा बाँध लिया ए मनै कोए ना ठुवावण [3] आई
ए दुराणी जिठाणी मेरी बोली मारैं ए कौण ठुवावैगा
ए भार्या भरोटा [4] बाँध लिया ए के फौजी आवैगा
ए बोली मतना मारो छोरियो ए कदे तो आवैगा
ए सुत्ती सै तकदीर मेरी ए कदे आण जगावैगा
ए ठाकै भरोटा चाल पड़ी ए मैं होई घेर [5] की राही
ए घेराँ म्हैं एक फौजी आ रह्या मैं गळ कै लागके रोई
हे रै रोवै मतना रै मेरी गोरी रै गैल [6] ले चालूँगा
हे रै दुराणी जिठाणी तेरी काम करैंगी रै बांदी ला द्यूँगा

इस जकड़ी में एक सैनिक की पत्नी के वियोगी जीवन की छटा प्रस्तुत की गई है। पति के वियोग में अनमनी वह घर के काम में जुटी रहती है। वह खेत में जाकर घास की बड़ी-सी गठरी बाँध लेती है, लेकिन कोई भी उसे उठवाने के लिए नहीं आता। बल्कि देवरानी-जेठानी ताने मारती हैं कि अपने फ़ौजी पति को इसे उठवाने के लिए बुला ले। घर पर उसे अपना पति आया मिलता है। वह उसके गले लगकर फूट-फूटकर रोती है। फ़ौजी उसे चुप कराते हुए कहता है कि इस बार वह उसे अपने साथ ले जाएगा और काम करने के लिए नौकरानी रख लेगा।

कमला नै ओ पिया घाल सांसरै [183]

कमला नै ओ पिया घाल सांसरै या कमला ठीक नहीं सै
चुप र्हो रै गोरी चुप र्हो रै गोरी या कमला बाळक घणी [7] सै
छन पछैली ओ बणी धरी सैं ओ कमला की कंठी घड़ाइए
जाइए रे नाई के जाइए रे नाई के कमला की रे ठीक [8] जचाइए
ठीक जचावै तै तीन दिनाँ की ना आपणै गैल ले आइए

1. अच्छा लगना 2. उठाकर 3. उठवाने 4. गट्ठर 5. बाहरी मकान 6. साथ 7. बहुत 8. विदाई का दिन 9. डोली

ज्यब कमला की ए ब्हैली[7] आई उनै आधी ए रोटी खाई
ज्यब कमला की ए तीळ दिखाई वा भीतर बड़कै[1] ए रोई
काकी ताई मेरी संग की सहेली मन्नै सारी ए छोडण आई
दो सखियाँ नै ए हाथ पकड़कै ए ब्हैली बीच बिठाई
सास नणंद मेरी तारण आई सुसरे नै ए चाल पिछाणी
नहीं भई लड़के नहीं भई लड़के या बहू रै ठीक नहीं आई
ज्यब मेरा बालम सोवण आया वो गैल[2] गंडासा ए ल्याया
साची साच बता दे रै कमला तनै किस पै रै रोग कटाया
म्हारे गाम की हो लांबी सीम[3] सै मनै लेवण भरोटा हो जाणा
पतळा सुथरा हो छैल गाबरू मनै उस पै हो रोग कटाया
जे कमला रै तेरै हो ज्या रै छोरी मैं साहूकार के ब्याह द्यूँ
जे कमला रै तेरै हो ज्या रै छोरा मैं बी.ए. पास करा द्यूँ

इस जकड़ी में एक लड़की के विवाह से पहले ही गर्भवती हो जाने और उसे उसके पति द्वारा अपना लेने का दुर्लभ प्रसंग है। जब उस लड़की की भाभी जान लेती है कि उसका चाल-चलन ठीक नहीं है तो वह अपने पति से ज़िद करके उसे ससुराल भिजवा देती है। बड़ी मुश्किल से उस लड़की को ससुराल भेजा जाता है। ससुराल पहुँचने पर उसका ससुर उसकी चाल देखकर अपने बेटे से कहता है कि इस बहू का चरित्र ठीक नहीं है। रात को सोने के समय उसका पति गँडासा लेकर आता है। लेकिन मारने से पहले वह उसे सारी बातें सच बताने के लिए कहता है। वह बताती है कि एक दिन खेत में वह घास लेने गई थी और एक सुंदर युवक वहाँ से होकर गुज़र रहा था। वहीं पर दोनों में प्यार हो गया। अपनी पत्नी की साफ़गोई देखकर वह उसे क्षमा कर देता है और लड़का हो या लड़की दोनों को वह अपनाने को तैयार हो जाता है।

बेटा तेरी निरमलाँ झूठी[184]

हे रै तूँ लाल चूंदड़ी आळी म्हारी रोटी ल्याइए खेत म्हैं
ओ मैं नई नहेली आई जाणूँ ना खेत की राही
हे री भाभी सीधी सरड़क आइए पावैंगे[4] दोनूँ भाई
हे री सैसड़ तौळी[5] रोटी पो दे मनै आज खेत म्हैं जाणा
ए बहू नई नहेली आई जाणै ना खेत की राही
हे री मैं सीधी सरड़क जाँगी पावैंगे दोनूँ भाई
ए म्हारी सास बहू की लड़ाई सुसरे नै लाठी ठाई[6]

1. घुसकर 2. साथ 3. सीमा 4. मिलेंगे 5. जल्दी 6. उठाई 7. कमर

ए मेरी कड़[7] कै बीच जचाई मैं बैठ पिलंग पै रोई
ए वो साँझै हाळी आया मैं लाग गळे कै रोई
हे रै गोरी साँटा र जोट धरण दे[1] बाबल सैं बात करण दे
ओ बाबल इसी के जिवानी छै गी[2] तनै मेरी निरमलाँ पीटी
हे रै बेटा तेरी निरमलाँ झूठी मनै अपणी बूढ़ळी पीटी

इस लोकगीत में एक कामचोर नवविवाहिता की चालाकी का वर्णन है। उसका किसान पति उससे खेत में खाना लेकर आने को कहता है, लेकिन वह कहती है कि उसे खेत का रास्ता नहीं पता। इस पर उसका छोटा देवर कहता है कि सीधी सड़क चले आना, दोनों भाई दिखाई दे जाएँगे। इस बीच वह अपनी सास से झगड़ पड़ती है और खेत में नहीं जाती। साँझ के समय किसान खेतों से लौटकर आता है। वह उसके गले से लिपटकर रोने लगती है। वह कहती है कि आज दिन में हम सास-बहू की लड़ाई हो गई। ससुर ने मुझे लाठी मार दी। इस पर किसान अपने बाप को उलाहना देने लगता है। बूढ़ा बाप बताता है कि बहू झूठ बोल रही है क्योंकि उसने तो बुढ़िया की ही पिटाई की थी।

बाडर की स्याड़ी [185]

बाडर[3] की स्याड़ी[4] री सासड़ बिकणे नै आई
देवर भी ले ली री मेरै जेठै भी ले ली
हमनै भी ले द्यो री सासड़ बाडर की स्याड़ी
सास मेरी नै ए बेबे दूध सिळाया
नणंद मेरी नै ए बेबे जैहर मिलाया
एक घुँट भर ली ए मन्नै दो घुँट भर ली
तीजी तो घुँट म्हैं ए मन्नै आया तिवाळा[5]
ओढ़ चुंदड़िया ए बेबे कमरे म्हैं सोई
बारहा बरस तैं ए बेबे पिया घर आए
माता भी दीखै रै मनै बेबे भी दीखै
कड़ै ए गई सै रै मेरी राजदुलारी
ओढ़ चुंदड़िया रे बेटा कमरे म्हैं सोई
पैहली बसंटी[6] ए मेरै पंजे पै मारी
फेर भी ना बोली रै मेरी राजदुलारी
दूजी बसंटी ए मेरी छतियाँ पै मारी
फेर भी ना बोली रै मेरी राजदुलारी

1. रखने दे 2. छा गई 3. चौड़ा किनारा 4. साड़ी 5. चक्कर 6. डंडा

तीजी बसंटी ए मेरै मुखड़े पै मारी
फेर भी ना बोली रै मेरी राजदुलारी
ठाय[1] चुंदड़िया ए बेबे देखण लाग्या
मरी ए पड़ी सै रै मेरी राजदुलारी
ओढ़ चुंदड़िया ए बेबे कमरे म्हैं सो ग्या
सुपने म्हैं दिखी रै मेरी राजदुलारी
बाडर की स्याड़ी ओ पिया बिकणे नै आई
देवर भी ले ली ओ मेरै जेठै भी ले ली
हमनै भी ले द्यो री सासड़ बाडर की स्याड़ी
माँ ए तेरी नै ओ पिया दूध सिळाया
ब्हाण तेरी नै ओ पिया जैह्र मिलाया
एक घूँट भर ली मन्नै दो घूँट भर ली
तीजी तो घूँट म्हैं मन्नै आया ओ तिवाळा
इस बिद[2] मरगी ओ तेरी राजदुलारी

इस लोकगीत में साड़ी की माँग करने पर एक परेदसी की पत्नी की उसकी सास-ननद द्वारा की गई हत्या का वर्णन है। गली में कोई साड़ी बेचने वाला आया। जेठ-देवर सबने साड़ी ले ली तो परदेसी की पत्नी भी अपने लिए एक साड़ी लेने की बात अपनी सास से कहती है। यह सुनकर उसकी सास-ननद मिलकर उसे दूध में ज़हर मिलाकर पिला देती हैं, जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। बारह वर्ष बाद परदेसी घर वापस आता है और अपनी पत्नी के बारे में पूछता है। उसकी माँ कहती है कि वह तो चुनरी ताने चौबारे में सो रही है। वह जाकर चुनरी हटाता है तो पाता है कि वह तो मरी पड़ी है। वह भी चुनरी ओढ़कर सो जाता है। सपने में उसे अपनी पत्नी दिखाई देती है, जो उसे अपनी मृत्यु का सारा वृत्तांत बतलाती है।

तूँ आँदे रैड़ जगावै सै[186]

मैं दुस्सर लेके आई मेरी सैस सुखावै पीसणा
ए बहू बखत ऊठणा होगा थारा चाक्की ऊपर पीसणा
री सैसड़ हमनै नांही बेरा या चाक्की किस बळ[3] फिर्या करै
ए बहू बाँदी क्यूँ ना ल्याई तेरा बाबल साहूकार सै
री सासड़ बाँदी च्यार लियाऊँ तेरा बेटा असल गँवार सै
री कोलिज की लड़की पढ़ाऊँ तेरा बेटा टरक चलावै सै

1. उठाकर 2. तरह 3. तरफ़

री म्हीनै के पानसै ल्याऊँ तेरा बेटा ल्यावै डेढ़ सै
री हफ्ते म्हैं च्यार दिन आवै तूँ आँदे ए[1] लाड लडावै सै
री हफ्ते म्हैं एक दिन आऊँ तू आँदे रैड़[2] जगावै सै

इस जकड़ी में एक सास द्वारा अपनी नौकरीपेशा बहू को घर के धंधे में उलझाने और बहू द्वारा उसका प्रतिकार करने का प्रसंग है। सास सुबह-सुबह ही बहू को चक्की पीसने के लिए जगा देती है। घर के काम-काज से अनजान बहू पूछती है कि यह चक्की किस तरफ़ फिरेगी ? सास उस पर ताना मारती है कि अगर वह ऐसे ही साहूकार की बेटी है तो मायके से नौकरानी क्यों नहीं लेकर आई ? इस पर बहू तपाक से जवाब देती है कि वह एक नहीं चार नौकरानी रख सकती है, पर क्या करे उसका पति ही गँवार है। वह स्वयं तो कॉलेज में पढ़ाती है, जबकि उसका पति एक ट्रक ड्राइवर है। सास के पक्षपातपूर्ण व्यवहार को रेखांकित करते हुए वह कहती है कि उसका पति सप्ताह में चार बार घर आता है और हर बार उसकी माँ उसका लाड़ लड़ाती है, जबकि वह स्वयं सप्ताह में एक ही बार घर आ पाती है और आते ही उसकी सास झगड़ा करने बैठ जाती है।

तेरै घालूँ चवन्नी च्यार [187]

जमाई नै ज्हैज हवाई दी ए बेटी नै मोटर कार
जमाई तो सिखरी म्हैं चढ़ ग्या ए हे सरड़क पै मोटर कार
सैसड़ मेरी तारण आई ए हे तूँ उतर कंवर की नार[3]
बहू मनै मुखड़ा दिखा दे ए हे तेरै घालूँ[4] चवन्नी च्यार
सैसड़ तेरे बेटे नै दे दिए री हे री वो ल्यावै कलम दुवैत
बहू मनै मुखड़ा दिखा दे ए हे तेरै घालूँ ढाई हजार
सैसड़ तूँ तैं बैंक म्हैं गिड़ा दे[5] री हे री तेरै भ्हीनै का आवै ब्याज
बहू ए मनै मुखड़ा दिखा दे ए हे तेरै घालूँ चंदणहार
सैस तेरी खूँटी कै टाँग दे री हे री तेरी हेली[6] का हो सिणगार
बहू ए तूँ तो ऊत घराँ की ए हे मेरी लेई आबरू तार
सैस तनै आप तराई री हे री तू घालै चवन्नी च्यार

इस जकड़ी में पहली बार ससुराल आई दुल्हन और उसकी सास के बीच मुँह-दिखाई की रस्म को लेकर हुई नोक-झोंक का प्रसंग है। बहू अमीर घर की है। जब वह ससुराल पहुँचती है तो उसकी सास उसे घूँघट उठाकर अपना मुँह दिखाने को कहती है। मुँह-दिखाई के बदले वह चार चवन्नी देने की बात कहती है। बहू इससे चिढ़ जाती है।

1. आते ही 2. झगड़ा 3. पत्नी 4. दूँ 5. जमा करवा दे 6. हवेली

वह मुँह दिखाने से मना कर देती है और सास से कहती है कि वह ये चवन्नियाँ अपने बेटे को दे दे ताकि वह कलम-दवात ले आए। जब सास मुँह-दिखाई के बदले ढेरों रुपये और आभूषण देने की बात कहती है तो भी वह अपना मुँह दिखाने से इनकार कर देती है। अंत में सास कहती है कि तू तो धूर्त घर की बेटी है, जिसने आते ही सास की इज़्ज़त उतार ली। यह सुनकर बहू कहती है कि सास ने मुँह-दिखाई के बदले चार चवन्नी देने की बात कहकर अपना सम्मान खुद ही घटवाया है।

सासड़ के बोल पै ढ़है पड़ी [188]

ज्हैजपुरी म्हारा गाम ए मैं नौ भाइयाँ की ब्हाण ए दोप्हारे म्हैं[1] पाणी मैं गई
रस्ते म्हैं सैसड़ फेट गी[2] ए उनै दी भाइयाँ की गाळ
ए दोप्हारे म्हैं पाणी क्यूँ गई
रस्ते म्हैं बोलूँ ना मूळ री तेरी घराँ बूझ ल्यूँ बात
री भाइयाँ की गाळी क्यूँ देई
कूवे पै दोघड़ तारकै ए मनै कसकै ढ़ाठा मारकै
ए मनै ज्यान कुवे म्हैं झोंक दी
काढ़ैं देवर जेठ ए मेरा खड़्या लखावै भरतार
रै गोरी आज कसूती[3] सोच गी
पढ़ रही दस्स जमात ए मरवे[4] पै लिख गी नाम
ए सासड़ के बोल पै ढ़है पड़ी[5]
फूकैं देवर जेठ ए मेरा टस टस रोवै भरतार
रै गोरी आज एकले नै छोड गी
फूल प्हुँचाइए गंगा घाट पै ओ मेरी माटी नै लिए संगवाय
ओ कदे गादड़ खा ज्याँ ल्हास[6] नै

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपनी सास के ताने से गुस्सा होकर कुएँ में डूबकर मर जाने का प्रसंग है। उस युवती के नौ भाई हैं। एक दिन वह दोपहर को पनघट पर जा रही थी कि रास्ते में उसे उसकी सास मिल गई। सास उसे भाइयों की गाली देते हुए पूछती है कि वह दोपहर में पनघट पर क्यों जा रही है? इस बात पर नाराज़ होकर वह कुएँ में गिरकर मर जाती है। उसके देवर-जेठ उसे कुएँ में से निकालते हैं। उसका पति पश्चात्ताप करता है कि पढ़ी-लिखी होने के बावजूद वह छोटी-सी बात पर आत्महत्या कर बैठी। मरने के बाद वह अपने पति से विनती करती है कि वह उसकी अस्थियों को गंगा के घाट पर पहुँचा दे। इससे मेरी सद्गति हो जाएगी।

1. दोपहर में 2. मिल गई 3. खतरनाक 4. कुएँ का बुर्ज 5. गिर गई 6. लाश

बोहिया धर्‌या अलमारी म्हैं [189]

ए मेरे छुट्टी आए भरतार मोटर आई मनै लेणे नै
ए मैं गई सुसरे की पोळ[1] सासड़ आई मनै तारण नै
ए मनै मुड़ तुड़[2] दाबे पैर सीस[3] ना दिया कलिय्हारी नै
ए मनै कर लिए रोटी र साग कर लिए निरणाबासी[4] नै
ए री बार्‌ह्याँ तैं आई मेरी सास बोहिया[5] धर्‌या अलमारी म्हैं
ओ तूँ क्यूँ ल्याया नरभाग रोटी ना देंदी[6] खाणे नै
रै मत रोवै सिलोचना नार पेड़े ल्याऊँ तनै खाणे नै
ए नीचे तैं बोली उसकी माय मतना बिगाड़ै बेटा बहू नै
रै तू चाली जा नरभाग कर द्यूँगा काग उडाणी[7] नै
रे बेटा मत ना बोलै बोल बड़ी दुख पाई तेरे होणे म्हैं[8]
रै तनै खाया गूँद जमाण बड़ी मस्ताई मेरे होणे म्हैं

इस लोकगीत में एक ऐसी निर्दय सास का बखान है जो अपनी बहू को पेटभर खाना भी नहीं देती। बहू जब मायके से आती है तो शिष्टाचारवश अपनी सास के पाँव दबाती है। उसकी सास उसे आशीष तक नहीं देती। बहू बिना कुछ खाए-पिए ही घर का सारा काम करती रहती है, लेकिन उसकी सास उसे खाने तक के लिए नहीं पूछती। यहाँ तक कि वह रोटियों को अलमारी में छिपा देती है। रात को सोते समय उसके पति को पता चलता है कि वह सारा दिन भूखी रही है। वह उसे सांत्वना देते हुए उसके लिए मिठाई लाने की बात कहता है। यह बात सास के कान में पड़ जाती है और वह बेटे को चेतावनी देती है कि इस तरह बहू बिगड़ जाएगी। बदले में बेटा उसे झिड़क देता है और खुल्लमखुल्ला अपनी पत्नी का पक्ष लेता है।

उभाणा कूण फिरण लाग्या [190]

ए खूँटी पै धरके पैर के ज्यब रणधीर चढ़ण लाग्या
ए प्होंचे तैं पकड़ लिया हाथ के ज्यब मेरै जाड्डा[9] चढ़ण लाग्या
ए ठाडी[10] थी छुटा लिया हाथ के ज्यब मनै गाळ बकण लाग्या
ए मनै ढाई का गेर्‌या तार पाँच की लिख गेड़ी चिट्ठी
ए वो खड़्या पलटण के बीच माँग रह्या दस दिन की छुट्टी
ए उनै धुर का ले लिया पास रेल म्हैं बेठ लिया ए डाक्की[11]
ए वो आया बागाँ के बीच बाग की ए सब मेवा मीठी

1. दहलीज़ 2. झुककर श्रद्धापूर्वक 3. आशीर्वाद 4. भूखी-प्यासी 5. रोटियाँ रखने का बर्तन 6. देती 7. निर्वासित 8. जन्म देने में 9. कँपकँपी 10. ताकतवर 11. दुस्साहसी

ए वो आया घेराँ के बीच घेर म्हैं ए बुढ़ळा बाप पड़्या
ए वो आया स्हाळ्याँ के बीच स्हैळ म्हैं तो बुढिया माँ ए खड़ी
ए वो आया म्हैल्याँ के बीच म्हैल म्हैं तो दीवा ना बाती
ए उनै मारी बैटरी की लैट कूण म्हैं[1] तो बिमला हूर खड़ी
ए प्होंचे तैं पकड़ लिया हाथ आज गोरी क्याँ की भीड़[2] पड़ी
ओ प्होंचे तैं छोड दे हाथ सरम[3] मनै आवै ब्होत घणी
रै प्होंचे तैं छूटदा ना हाथ आज तेरे मन की बता सारी
ओ तेरे तैं छोटा रणधीर वो अपणी ओ बीर बणावै सै
ए खूँटी तैं तारी तलवार के ज्यब रणधीर छितण लाग्या[4]
री भाभी आज आज छुटवा दे के छोट्टा देवर पिटण लाग्या
रै थाळी म्हैं मांडे च्यार के च्यारवाँ म्हैं कूण छिकण लाग्या
रै पाती की बळ[5] र्‌ही आग सिके रै बिन्या कूण हटण लाग्या
रै जिसके घर म्हैं सिवासण नैर छिड़े रै बिना कूण हटण लाग्या
ओ थारे घर म्हैं सूळ भंभूळ उभाणा[6] कूण फिरण लाग्या
ओ थारे घर पै सिवासण नैर गाबरू कूण डटण लाग्या

इस जकड़ी में देवर द्वारा अपने परदेसी भाई की पत्नी के साथ ज़बरदस्ती करने और भाभी द्वारा उसका प्रतिकार करने का प्रसंग है। रणधीर अपनी भाभी का हाथ पकड़ लेता है। वह उससे तगड़ी होने के कारण अपना हाथ छुड़ा लेती है। वह अपमानित महसूस करता हुआ उसे गालियाँ बकने लगता है। वह तार भेजकर अपने पति को बुलवा लेती है और उसे सारी बात बता देती है। परदेसी अपने भाई को पीटने लगता है। पिटते-पिटते रणधीर अपनी भाभी से एक बार बचा लेने और क्षमा करने की विनती करता है और भूख, अग्नि, यौवन आदि के लौकिक उपमानों का उदाहरण देते हुए अपने द्वारा की गई बदतमीजी को जायज़ ठहराने की कोशिश करता है।

छैल नै तो हळसी जोड़ी ए[191]

सैस बैरी[7] की बेटी री
हे री तेरा लाल नौकरी जाय सैस तूँ क्यूँ ब्याह्वै थी री
बहू ए मेरे बस का कोन्या ए
हे तेरै तैं डाट्या[8] जा तो डाट नौकरी घराँ भतेरी[9] ए
छैल[10] नै तो ब्यसतर ठाया ए

1. कोने में 2. मुसीबत 3. शर्म 4. पिटने लगा 5. जलना 6. नंगे पाँव 7. दुश्मन 8. रोकना 9. बहुत-सी 10. पति

हे खूँटी तैं झोळा तार छैल की तो चालण की त्यारी
छैल मेरी सुणकै जाइए ओ
हो कूवे म्हैं झोक दयूँ ज्यान लाकड़ी देकै[1] जाइए ओ
छैल नै तो ब्यस्तर पटक्या ए
हे खूँटी पै झोळा टाँग जोट नार्याँ[2] की खोली ए
नार मेरी रोटी ल्याइए रै
हे रै बेले म्हैं मंडे च्यार दूध लोटे म्हैं ल्याइए रै
बहू ए मेरी भले घराँ की ए
ए बेटे की बचा लेई ज्यान बहू ए मेरी भले घराँ की ए

इस लोकगीत में एक नवविवाहिता द्वारा अपने पति को परदेस जाने से रोकने और घर में रहकर ही खेतीबाड़ी करने के लिए मनाने का प्रसंग है। पत्नी को पता चलता है कि उसका पति परदेस जा रहा है। वह अपनी सास को उलाहना देती है कि उसने उसका विवाह ही क्यों किया था? बेबस सास कहती है कि उसका बेटा उसके वश में नहीं है। अगर वह उसे रोक सकती है तो रोक ले। सास की बात सुनकर बहू अपने पति के पास जाती है और बड़े ही कातर स्वर में कहती है कि परदेस जाने से पहले वह उसकी चिता को अग्नि देकर जाए। भावविभोर होकर पति अपने थैले को खूँटी पर टाँग देता है और बैल लेकर खेत की ओर निकल पड़ता है। यह देख गद्‌गद हुई सास बहू को ढेर सारे आशीष देती है।

मरदी की ज्यान बचाई[192]

नौकरी ना जाइए हो नौकरी की कोनी[3] सै बडाई
नौकरी जावाँगे रै मेरा घालै[4] बडणा भाई
घेर म्हैं जाऊँगी री जेठे तैं करूँगी लड़ाई
जेठ क्यूँ घालै सै ओ के खाँ साँ[5] तेरी कमाई
बिस्तरा बाँध लिया ए उसनै धुर की टिकट कटाई
रेल म्हैं बैठ लिया री मैं तो रहै गई खड़ी की खड़ाई
रेल भाई डाट[6] दियो रै मेरी रहै गी निरमलां ब्याही
रेल भाई ना डटती रै टेस्सन तैं बाह्र लिकड़्याई
मैं उलटी घराँ आ गी री मेरै मारैं तीर लुगाई
जेठ मेरा न्यू बोल्या रै इसकी लिकड़ण द्यो[7] घुमराई[8]
जिठाणी मेरी न्यू बोली हो इसकै मारो पिलंग की बाही

1. चिता जलाकर 2. बैल 3. नहीं 4. भेज रहा 5. खा रहे हैं 6. रोकना 7. निकलने दो 8. घमंड

सास मेरी न्यू बोली रे क्यूँ मारो बिराणी जाई
नणंद मेरी न्यू बोली रे या तो भले घराँ की जाई
देवर मेरा न्यू बोल्या रै के बोझ्याँ [1] कै लागै सैं लुगाई
बाँधणा साड़ी का ए जणू जल पै तिरै मुरगाई
पीवणा दूधू का ए होठाँ पै आवै चिकणाई
राखणा देवर का ए मरदी [2] की ज्यान बचाई

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी पर होने वाले अत्याचार और उसके देवर द्वारा उसका बचाव करने का प्रसंग है। वह अपने पति को परदेस जाने से रोकती है। लेकिन वह कहता है कि वह मजबूर है क्योंकि उसका बड़ा भाई उसे ज़बरदस्ती भेज रहा है। वह जाकर अपने जेठ से भी झगड़ा करती है। लेकिन उसका कोई जोर नहीं चलता। अंतत: जब उसका पति चला जाता है तो उसके जेठ-जेठानी मिलकर उसे पीटने पर उतारू हो जाते हैं। सास और ननद उन्हें रोकने की कोशिश करती हैं। लेकिन उसका देवर तो यह कहकर कि औरतें कोई पेड़-पौधों पर नहीं लगतीं, खुल्लमखुल्ला उसके पक्ष में खड़ा हो जाता है। देवर के इस व्यवहार पर रीझकर वह कहती फिरती है कि सभी औरतों को अपने देवरों से स्नेह करना चाहिए क्योंकि वे ही मुसीबत में उनकी जान बचाते हैं।

रूपकलाँ फिटवा दे री [193]

तूँ मेरी भाभी मैं तेरा देवर रूपकलाँ फिटवा दे [3] री रूपकलाँ फिटवा दे री
कंद का तो देवर दामण [4] प्हैर ले ओढ़ो गोळ बिलांती हो ओढो गोळ बिलांती हो
मूँछ कटा ले देवर पोडर ला ले नैणाँ म्हैं घाल ले स्यांही हो नैणाँ म्हैं घाल ले स्यांही हो
सिर के ऊपर देवर खारी हो धर ले रूपकलाँ फिटवा द्यूँ हो रूपकलाँ फिटवा द्यूँ हो
बड़ कै स्हैर म्हैं [5] ए रुक्का मार्या कोए प्हैर ल्यो चूड़ी ए कोए प्हैर ल्यो चूड़ी ए
रूपकलाँ नै ए झोल्ली दे ली मनै प्हैरा ज्या चूड़ी ए मन्नै प्हैरा ज्या चूड़ी ए
तूँ तो ए बेब्बे हे मनियारी बहू जोर की ले र्ही ए बहू जोर की ले र्ही ए
या तो ए बेब्बे मेरी दुराणी दुस्सर लेकै आई ए दुस्सर लेकै आई ए
भाज लूजकै [6] ए पीढ़ा बिछाया बेठ ब्हाण माँजाई ए बेठ ब्हाण माँजाई ए
भाज लूजकै ए थाळ परोस्या जीम भाण माँजाई ए जीम भाण माँजाई ए
भाज लूजकै ए सेज बिछाई सो ज्या भाण माँजाई ए सो ज्या भाण माँजाई ए
तूँ तो ए बेब्बे हे मनियारी धोखेबाज लुगाई ए धोखेबाज लुगाई ए
तूँ तो क्है थी मेरी दुराणी यो सगी नणंद का भाई ए सगी नणंद का भाई ए

---

1. झाड़ 2. मरती 3. मिलवा दे 4. घाघरा 5. शहर में 6. जल्दी-जल्दी

इस लोकगीत में एक युवक की गौने से पहले ही अपनी पत्नी से मिलने की चाह और उसकी भाभी द्वारा उसकी मुलाकात के प्रबंध का रोचक प्रसंग है। वह युवक बार-बार भाभी से अनुरोध करता है कि वह उसे उसकी पत्नी रूपकला से मिलवा दे। भाभी को एक उपाय सूझता है वह देवर को एक नारी के वेश में सजाती है और स्वयं चूड़ी बेचने वाली मनियारिन बनकर अपने देवर की ससुराल पहुँच जाती है। रूपकला चूड़ी पहनने के लिए उन्हें अपने घर बुला लेती है। मनियारिन अपने देवर का परिचय अपनी नवविवाहित देवरानी के रूप में कराती है। उसे नई नवेली दुल्हन जान रूपकला उसे खाना खिलाती है और उसके लिए सेज बिछा देती है। सोते हुए वह अपने पति को पहचान जाती है और झूठ-मूठ की नाराज़ होकर अपनी जेठानी को 'धोखेबाज़' कहती है।

ए के जाणूँ जेठ पड़ोसी [194]

मैं मेथी का भरोटा[1] ल्याई मेरा गात लरजदा आवै सै
ए मनै आण घेर म्हैं पटक्या मेरा जेठा सानी भेवै सै
रै गोरी सानी के हाथ धुवा दे थोड़ा सा घूँघट खोलकै
ए सरमाँदी[2] बोली कोन्या जेठे की सरम[3] पिछाणकै
ए मैं रोंती सुबकदी आई जिठाणी रोटी पौवै सै
ए बेबे अपणे पति नै बरज ले[4] मनै अपणी बीर[5] बणावै सै
ऐ बेबे उसका खोट नहीं सै तेरा गात लरजदा आवै सै
ए के जाणूँ सोंक[6] जिठाणी जणू बाँदी रोटी पौवै सै
ए के जाणूँ जेठ पड़ोसी जणू साझी[7] सानी भेवै सै

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने जेठ की ओर से की गई छेड़छाड़ के प्रतिकार का प्रसंग है। एक दिन जब वह युवती खेत में से पशुओं का चारा लेकर आती है तो पशुओं के बाड़े में उसका जेठ उससे अपनी पत्नी के रूप में व्यवहार करता है। वह युवती रोती हुई अपनी जेठानी के पास आती है और अपने जेठ की शिकायत करती है। लेकिन जब जेठानी भी अपने पति के व्यवहार को जायज़ ठहराती है तो वह युवती गुस्सा हो जाती है। वह उनके प्रति आदर-सम्मान की सारी भावना उतार फेंकती है।

काढ ल्याऊँ पाणी [195]

सरड़क के परे नै खेत खेत म्हैं राही
मैं रोटी लेके जाँय जेठ मेरा हाळी[8]

---

1. गट्ठर 2. शरमाती 3. लिहाज, संकोच 4. रोक ले 5. पत्नी 6. सौतन 7. मज़दूर 8. हल चलाने वाला

बहू रोटियाँ नै कर आई वार [1] बाराळी [2] गाडी जा ली
मनै धर लिया उलटा पैर उल्टी ए घर नै आई
मनै धर्‌या देहळ पै पैर जिठाणी मेरी सूती [3]
तूँ के सूती रै मेरी सोक ईब होऊँ न्यारी
ऊपरला ल्यूँगी म्हैल तळे की अलमारी
चाँदी का ल्यूँ ना एक सोने की ल्यूँगी सारी
तूँ के सोचै रै मेरा जेठ भाई की बहू याणी [4]
धरती म्हैं मार द्यूँ ऐड काढ़ [5] ल्याऊँ पाणी
त्हामे [6] कोडे होके चाखो मीठा क खारा पाणी

इस जकड़ी में जेठ-बहू के झगड़े का प्रसंग है। एक दिन वह युवती खेत में अपने हाली जेठ का खाना लेकर जाती है। लेकिन जब जेठ उसे देर से आने का उलाहना देता है तो वह उलटे पाँव घर आ जाती है। आते ही वह अपनी जेठानी से झगड़ने लगती है और अलग हो जाने का ऐलान कर देती है। जेठ के खेत से आने पर वह उसे भी भला-बुरा कहती है। वह उसे चेताती है कि वह उसे नादान या भोली समझने की भूल न करे। वह तो इतनी तेज़-तर्रार है कि ज़मीन में एड़ी मारकर पानी निकाल सकती है।

तेरी ब्याही होई भठियारी [196]

आधी रात सिखर म्हैं हिरणी [7] मेरी सास जगावण आई
बहू ए मेरी बेठी हो ले तनै टेम बखत का ना बेरा
दमदम करदी तळै उतर्‌याई पैड़े पै [8] जेठ खड़्या सै
बहू रै तेरी भरी जवानी तनै नींद गजब की आई
पल्ले के म्हैं ल्याई लिफाफा मनै सुत्या देवर जगाया
देवर मेरा बेठ्या हो ले मैं भीड़ पड़ी [9] म्हैं आई
म्हल्याँ तो देवर ले ले लिफाफा फेर ले ले पैन र स्याही
देवर मेरा न्यूँ न्यूँ लिख दे तेरी ब्याही होई भठियारी [10]
ज्यब चिट्ठी ए पलटण म्हैं प्होंच ली सब छोर्‌याँ नै खुसी मनाई
भाई रै म्हारे आयानंद हो गे म्हारे घर तैं चिट्ठी आई
पाड़ लिफाफा बाँचण लाग्या बाँचदे नै नैड़ [11] हलाई
भाई रै बडे चाळे होगे मेरी ब्याही होई भठियारी
पतळी रै पतळी सुथरी घणी थी वा बाँध्या करदी स्याड़ी

1. देर 2. बारह बजे वाली 3. सोई हुई 4. नादान 5. निकालना 6. तुम 7. एक नक्षत्र 8. सीढ़ियों में 9. मुसीबत 10. गृहत्याग करने वाली 11. गरदन

भाई रै बडे चाळे होगे किते बण म्हैं फिरदी होगी
इमली म्हैं तै गुठली लिकड़जे फेर चुसे तैं के हो सै
भाई रै मेरी ब्याही लिकड़ गी ईब रोयाँ तैं के हो सै

इस जकड़ी में अपनी सास और जेठ के दुर्व्यवहार से अपमानित होकर एक परदेसी की पत्नी द्वारा घर छोड़ देने का वर्णन है। आधी रात को ही उसकी सास उसे घर का काम करने के लिए जगा देती है। जब वह चौबारे से उतरकर आती है तो सीढ़ियों में उसका जेठ खड़ा मिलता है, जो उसकी जवानी को लेकर उस पर ताना मारता है। इससे अपमानित होकर वह अपने सोए हुए देवर को जगाती है और अपने पति के नाम एक पत्र लिखवाती है। जब पत्र पलटन में पहुँचता है तो सभी सैनिक खुशी मनाते हैं कि उसके घर से एक पत्र आया है। जब वह परदेसी पत्र पढ़ने लगता है तो यह जानकर वह भी भौंचक रह जाता है कि उसकी पत्नी भठियारी हो गई है। वह उसके नाजुक सौंदर्य को याद करता हुआ दुखी होता है और कहता है कि अब न जाने वह किस जंगल में भटक रही होगी?

ओ देवर तेरा मेरा प्यार [197]

ओ देवर ओढ़ प्हैर पतलून आज तेरी कित[1] की त्यारी सै
ए री भाभी जाँगा बहू नै ल्याण आज म्हारै मन पै आ रही सै
ओ देवर मतना जाइए ल्याण के आँदे ए कळह जगावैगी
ओ देवर तेरा मेरा प्यार छोड दे ओ सौंक[2] दुराणी नै
ए री भाभी तेरा मेरा प्यार छोड दे री बडणे[3] भाई नै
ओ देवर वो तो छुटै ना मूळ मेरा तो पलटण म्हैं जा र्या सै
हे री भाभी वा तो छुटै ना मूळ बिच्यारी री पीवर जा रही सै

इस जकड़ी में एक देवर और उसकी भाभी के बीच खत्म होते प्यार के रिश्ते का वर्णन है। एक दिन जब देवर नहा-धोकर कहीं जाने को तैयार होता है तो भाभी उससे पूछती है कि आज कहाँ जाने की तैयारी है? देवर कहता है कि आज उसे अपनी पत्नी याद आ रही है। वह उसे लिवाने जा रहा है। भाभी कहती है कि वह उसे मायके में ही रहने दे क्योंकि आते ही वह कलह मचाएगी। वह देवर को आपसी प्यार की दुहाई देकर कहती है कि वह अपनी पत्नी को छोड़ दे। यह सुनकर देवर कहता है कि ठीक है, वह भी अपने पति को छोड़ दे। लेकिन भाभी यह कहकर अपने पति को छोड़ने से इनकार कर देती है कि वह बेचारा परदेस गया हुआ है। इस पर देवर भी यह कहकर अपनी पत्नी को छोड़ने से इनकार कर देता है कि वह बेचारी मायके गई हुई है।

---

1. कहाँ 2. सौतन 3. बड़ा

रातूँ पैंडल घड़ावै सै [198]

मेरा दो तोळ्याँ का पैंडल मेरा जेठ घड़ाके ल्याया सै
मैं ओढ़ प्हैर पाणी चाली मेरी बडी जिठाणी गैल्याँ [1] सै
बेबे सैच्चम सैच बता दे ए तेरा पैंडल किसनै घड़ाया सै
बेबे झूठ कती ना बोलूँ ए मेरा जेठ घड़ाके ल्याया सै
गोरी रोटी पो दे तावळी [2] रै मनै खाकै नौकरी जाणा सै
पिया रोटी उसपै पुआ ले हो जिसके रातूँ पैंडल घड़ावै सै
गोरी गाजर ऊपर गजरा सै थारा दिराणी जिठाणी का झगडा सै
गोरी मूळी ऊपर बक्कल [3] रै तेरी किसनै मार दी अक्कल रै

इस जकड़ी में एक जेठ और बहू के बीच अनुरक्ति का वर्णन है। प्रेम के वशीभूत हो जेठ अपनी बहू के लिए सोने का पैंडल बनवाता है। उसे पहनकर वह अपनी जेठानी के साथ पनघट पर जाती है। जेठानी के पूछने पर वह उसे पैंडल की सच्ची कहानी बता देती है। अगले दिन जब जेठ अपनी पत्नी से खाना बनाने के लिए कहता है तो वह ताना मारती है कि वह उसी से खाना बनवाए जिसके लिए वह रातों पैंडल घड़वाता फिरता है। जेठ इसे देवरानी-जेठानी की तकरार कहकर बात की गंभीरता को हलका कर देता है।

मेरे तैं कापण फूट्या [199]

मेरे तैं कापण [4] फूट्या यो कापण पूरा सेर का
ए मनै लिखके चिट्ठी गेरी [5] मनै गेरी बाबल के पास म्हैं
ए बाबल नै झोटी [6] भेजी वा झोटी सवा लाख की
ए सासड़ नै उल्टी भेजी बहू कापण ल्यूँगी सेर का
ए मेरे तैं कापण फूट्या यो कापण पूरा सेर का ए
ए मनै लिखके चिट्ठी गेरी मनै गेरी बीरे के पास म्हैं
ए बीरे नै मोटर भेजी वा मोटर सवा लाख की
ए सासड़ नै उल्टी भेजी बहू कापण ल्यूँगी सेर का
ए मनै लिखके चिट्ठी गेरी मनै गेरी माता के पास म्हैं
ए माता नै कापण भेज्या वो कापण पूरा सेर का
ए सासड़ नै रैड़ [7] बुझाई बहू कापण मिल ग्या सेर का

इस जकड़ी में एक मिट्टी के ढक्कन के फूटने पर सास-बहू के मध्य हुए कलह का प्रसंग है। एक दिन बहू से मिट्टी का एक बड़ा-सा ढक्कन टूट जाता है और सास के

1. साथ 2. जल्दी 3. छिलका 4. मिट्टी का ढक्कन 5. भेजी 6. युवा भैंस 7. झगड़ा

डर से वह अपने पिता को चिट्ठी लिख भेजती है। चिट्ठी पढ़कर उसका पिता अपनी बेटी की ससुराल में एक बहुमूल्य भैंस भेज देता है। लेकिन सास उस भैंस को यह कहकर वापस भेज देती है कि उसे तो वैसा ही ढक्कन चाहिए। भाई से कहने पर युवती का भाई एक कीमती मोटर भेजता है। सास उसे भी वापस कर देती है। अंत में युवती की माँ को इस बात का पता चलता है। वह वैसा ही ढक्कन अपनी बेटी की ससुराल भेजती है। ढक्कन पाकर सास खुश हो जाती है और झगड़ा खत्म कर देती है।

देवर मेरा सूँट सिमावै सै [200]

ए म्हारा देवर भाभी का प्यार देवर मेरा सूँट सिमावै सै
ए मैं ओढ़ प्हैर पाणी जाँय देवर मेरा खड़्या लखावै सै
री भाभी हळुवें हळुवें [1] चाल सूँट कै गिरद [2] चढ़ावै सै
ए मैं जल भर उल्टी आँय देवर मेरा पिलंग बिछावै सै
री भाभी ओबरे [3] म्हैं बड़के देख यो खुड़का [4] क्याँका हो र्‌या सै
ओ देवर यल्ले तेरा सूँट मेरै ओ क्यूँ स्याही लावै सै
री भाभी सदाँ सदाँ का प्यार आज क्यूँ प्यार तुड़ावै सै
ओ देवर सदाँ सदाँ का प्यार मेरै क्यूँ स्याही लावै सै

इस जकड़ी में एक युवती और उसके देवर के बीच प्रेम और युवती द्वारा देवर को उस प्रेम की सीमा लाँघने से रोकने का प्रसंग है। प्रेमवश देवर अपनी भाभी के लिए सूट सिलवाता है। भाभी वह सूट पहनकर जब पनघट पर जाती है तो देवर उसे एकटक देखता रहता है। भाभी जब पानी भरकर वापस आती है तो देवर उसे भीतर वाले कमरे में बुलाता है। उसकी नीयत को भाँपकर भाभी उसका सूट वापस कर देती है। देवर उसे अपने पारस्परिक प्रेम का हवाला देता है। वह कहती है कि उसे ऐसा प्रेम नहीं चाहिए, जो उसके चरित्र पर काला धब्बा लगने का कारण बन जाए।

तेरी छाती पै दाळ दळूँगी [201]

कणकें [5] काटूँ हे री मेरा सुसरा ब्होत [6] लड़ै सै
ऊँची काटै रै तूड़े का नास करै सै
रोटी पोऊँ हे री मेरी सासड़ ब्होत लड़ै सै
मोटी पोवै रै चून ए का नास करै सै
पाणी ल्याऊँ हे री मेरी नणदल रोज लड़ै सै
हळवाँ [7] चालै रै पनघट का नास करै सै

---

1. धीरे-धीरे 2. धूल 3. भीतर वाला कमरा 4. शोर 5. गेहूँ 6. बहुत 7. धीरे

दूधू काढ़ूँ [1] हे री मेरा जेठा रोज लड़ै सै
हळवाँ काढ़ै रै झोटी [2] का नास करै सै
कपड़े धोऊँ हे री मेरा देवर ब्होत लड़ै सै
मैल ए ना काढ़ै रै पैंटाँ का नास करै सै
आँगण म्हैं फिरूँ हे री मेरा फौजी ब्होत लड़ै सै
कुए म्हैं पड़ ज्या रै फौजी का नास करै सै
कुए ना पड़दी ओ मेरे बाबल का नाक कटै सै
आड़ै ए रहूँ ओ तेरी छाती पै दाळ दळूँगी

इस जकड़ी में एक युवती को उसके ससुराल वालों द्वारा तंग करने और युवती द्वारा डटकर मुकाबला करने का वर्णन है। वह युवती शिकायत करती है कि उसके काम करने के ढंग को लेकर उसका ससुर, सास, जेठ, ननद, देवर और यहाँ तक कि उसका पति तक उसे ताने देते रहते हैं। उसका पति उसे कुएँ में गिरकर आत्महत्या कर लेने की सलाह देता है। वह तपाक से कहती है कि ऐसा करने से उसके पिता की इज़्ज़त खत्म हो जाएगी। वह डंके की चोट पर कहती है कि वह न तो आत्महत्या करेगी और न ही घर छोड़कर जाएगी, बल्कि ससुराल में रहकर ही सबकी छाती पर मूँग दलेगी।

मेरै आगै काम करण नै [202]

कंद का दामण चहिए ए हे नणदल की रांद काटण नै [3]
धोळा [4] कुड़ता चहिए ए हे छोर्याँ का दिल डाटण नै
काळी चूँदड़ी चहिए ए हे दामण की झाल [5] डाटण नै
काळे स्यांडल चहिएँ ए हे टिब्याँ का रेत दाबण नै
बूढ़ा सुसरा चहिए ए हे परस्याँ [6] म्हैं बाण बाँटण नै
बूढ़ी सासड़ चहिए ए हे दो घंटे पैर दाबण नै
बड्डा जेठा चहिए ए हे लोगाँ के खूड पाड़ण नै [7]
बडी जिठाणी चहिए ए हे दो घंटे रोज लड़ण नै
छोटा देवर चहिए ए हे फागण म्हैं फाग खेलण नै
छोटी दुराणी चहिए ए हे मेरै आगै काम करण नै
छोटी नणदल चहिए ए हे मेरै आगै आगै चलण नै

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने अनुकूल एक आदर्श ससुराल की कल्पना का प्रसंग है। उसे ससुराल में शांतिपूर्वक रहने के लिए सबसे पहले तो अच्छे-अच्छे वस्त्र

1. निकालूँ 2. भैंस 3. पिंड छुड़ाने के लिए 4. सफ़ेद 5. हिलोर 6. चौपाल 7. हल चलाने के लिए

चाहिए ताकि वह जल्दी-से-जल्दी अपनी ननद को विदा कर सके। फिर उसे मनमाफ़िक ससुर, सास, जेठ, जेठानी, देवर और देवरानी चाहिए, जो वही काम करें, जो वह चाहे।

सासड़ नै तो बहू जगावै [203]

सासड़ नै तो बहू जगावै उठके सानी [1] भे ले री
तू तो री सासड़ गोबर गेडूया मैं रोटी साग बणा ल्यूँगी
दिन छिप ज्या फेर गादड़ बोलैं ज्यब तूँ घर नै आइए री
सारे दूध का जामण लाया तेरे नाम का भूली री
लास्सी का तो भर्या बरोला रोट पड़े दस बार्हा री
रोटी खाके न्यू करिए बाळकाँ की खाट बिछाइए री
बखत उठके सासड़ पीसण का जोटा लाइए री
बहू तेरी कमजोर घणी [2] पाणी की दोघड़ ल्याइए री

इस जकड़ी में एक विवाहिता द्वारा ससुराल में अपनी सास पर रोब गाँठने का प्रसंग है। वह सुबह से लेकर देर रात तक घर-बाहर के सारे काम अपनी सास से करवाती है; जैसे पशुओं को चारा डालना, खाट बिछाना, पीसना, पानी भरना आदि, लेकिन खाने में उसे बासी भोजन देती है।

मोगरा घड़ाइयो ए [204]

कंद का दामण धोळा कुड़ता दूसर लेके आई ए दूसर लेके आई ए
बारणे के म्हैं कार डाट दी सास तारण [3] आई ए सास तारण आई ए
बार्याँ तैं मेरा जेठा आ ग्या ईख नुळावण [4] जाणा ए ईख नुळावण जाणा ए
ईख नुळाई बडी नुळाई मिरच नुळा घर आई ए मिरच नुळा घर आई ए
देहळाँ के म्हैं पैर टेक दिया सास बरड़ाई [5] ए सास बरड़ाई ए
मरियो ए तेरे भाई भतीजे बख्ते घर नै आई ए बख्ते घर नै आई ए
खाती नै बुलाके बेबे नीम कटवाया ए नीम कटवाया ए
नीम कटवाके बेबे मोगरा घड़ाया ए मोगरा घड़ाया ए
मोगरा लेके पाछै पड़गी आगै होके भाजी ए आगै होके भाजी ए
म्हैंदरगढ़ की सीमा आगै हाथ जोड़ण लागी ए हाथ जोड़ण लागी ए
जीयो ए तेरे भाई भतीजे बख्ते घर नै आइयो ए बख्ते घर नै आइयो ए
जिसकी सासड़ खोटी ए बेबे मोगरा घड़ाइयो ए मोगरा घड़ाइयो ए
मोगरा लेके गल्लै [6] पड़ ल्यो जिद ए बळ म्हैं [7] आवै ए जिद ए बळ म्हैं आवैं ए

---

1. पशुओं का चारा 2. ज़्यादा 3. उतारने 4. निराई-गुड़ाई 5. बड़बड़ाई 6. पीछे 7. काबू में

इस जकड़ी में एक नवविवाहिता द्वारा अपनी झगड़ालू सास को सबक सिखाने का प्रसंग है। ससुराल आते ही उस युवती को खेत में काम करने के लिए भेज दिया जाता है। दिनभर की थकी-हारी वह ज्योंही घर वापस आती है, उसकी सास उसे भाई-भतीजों की गालियाँ बकने लगती है। तुरंत ही वह युवती बढ़ई को बुला भेजती है और आँगन का नीम कटवाकर एक मोगरा (भारी डंडा) घड़वाती है। मोगरा लेकर वह अपनी सास के पीछे पड़ जाती है। दौड़ते-दौड़ते जब सास थक जाती है तो हाथ जोड़कर माफ़ी माँगती है और उसे आशीर्वचन कहने लगती है। अंत में वह युवती सभी को सलाह देती है कि जिसकी भी सास झगड़ालू हो, वह मोगरा घड़वा ले। तभी ऐसी सास काबू में आएगी।

पिलंग तळै ए मेरा जेठ[205]

छम छम करदी फिरूँ पिलंग पै पिलंग तळै[1] ए मेरा जेठ बहू ए मुँह देखूँगा
एक बर पल्ला[2] ऊपर कर दे घालूँगा तेरै माळा मोटे रै मोटे मणियाँ की
बार्‌हा बरस तैं पिया घर आए गंठी का भेद बताय कड़ै[3] रै घड़वाई सै
मन्नै तो पिया बेरा कोन्या[4] बाप अपणे नै बूझ कड़ै रै घड़वाई सै
दूध काढदा बाबल बूझ्या गंठी का भेद बताय कड़ै रै घड़वाई सै
मन्नै तो बेटा बेरा कोन्या माय अपणी नै बूझ कड़ै रै घड़वाई सै
दूध घमड़दी[5] माता बूझी गंठी का भेद बताय कड़ै रै घड़वाई सै
मन्नै तो रे बेटा बेरा कोन्या भाई अपणे नै बूझ कड़ै रै घड़वाई सै
हळिया[6] जोड़दा भाई बूझ्या गंठी का भेद बताय कड़ै रै घड़वाई सै
मन्नै तो रै भाई बेरा कोन्या ब्याही अपणी नै बूझ कड़ै रै घड़वाई सै
सांटा[7] लेके गेल्लै पड़ ग्या गंठी का भेद बताय कड़ै रै घड़वाई ऐ
जेठ नै घड़ाई मैं गिरकाई[8] आप गए परदेस ईब क्यूँ रोवै सै

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी और उसके जेठ के बीच पनपे नाजायज़ संबंध का वर्णन है। पति की लंबी अनुपस्थिति में उस युवती का अपने जेठ से संबंध बन जाता है। जेठ उसके लिए मोटे-मोटे मनकों की माला घड़वाता है। बारह वर्ष के उपरांत जब उसका पति घर आता है तो वह उससे माला के बारे में पूछताछ करता है। बात टालने के लिए वह उसे अपने ससुर के पास भेज देती है। ससुर भी अनजान बन जाता है और सास के पास भेज देता है। वह परदेसी सास के पास से उस युवती के जेठ और अंततः फिर वापस अपनी पत्नी के पास आ जाता है। गुस्से में जब वह लाठी उठाता है तो वह युवती उसे बता देती है कि माला उसके जेठ ने बनवाई है। साथ ही वह यह भी कहती है कि पहले तो वह परदेस चला गया, अब क्यों पछता रहा है?

1. नीचे 2. घूँघट 3. कहाँ 4. पता नहीं 5. बिलोती 6. हल 7. चाबुक 8. शृंगार किया

नार मेरी बी लागे रै [206]

जेठ मेरे की बड़ी सी हेली हेली म्हैं बिजळी के तार जेठ मैं देखण आई ओ
दूध लोटे म्हैं ल्याई ओ ओ मैं काँच का ल्याई गिलास जेठ मैं तो प्यावण आई ओ
दूध नै तो नीचै धर दे [1] रै हे रै म्हारे छोटणे भाई की नार आज मेरे मन की कर दे न
जेठ तेरी बेटी लागूँ ओ हो तूँ लागै धरम का बाप ख्याल इज्जत का राखिए हो
बेटी तो थारे [2] घरक्याँ की लागै रै हे रै म्हारे छोटणे भाई की नार [3] नार मेरी बी लागै रै
जेठ थाणे म्हैं द्यूँ पकड़ाय ओ थाणे म्हैं दे द्यूँ रिपोट गुहाई [4] मेरा बालम देगा हो

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने जेठ के अनुचित प्रणय निवेदन के प्रतिकार का प्रसंग है। एक दिन युवती अपने जेठ के घर चली जाती है, जहाँ मौका देखकर जेठ उससे प्रणय निवेदन करता है। जब वह उसे अपने बाप-बेटी जैसे संबंध की दुहाई देती है तो वह कहता है कि बेटी तो वह अपने घर वालों की होगी, उसकी तो वह पत्नी लगती है। यह सुनकर वह युवती गुस्सा हो जाती है और जेठ को पुलिस में शिकायत करने की धमकी देती है।

मेरा जेठ ऊठकै भाज गया [207]

बेबे जेठ मेरे नै जुलम करे ए मेरा पति नौकरी घाल दिया [5]
बेबे रोटी पोऊँ ठाढूँ [6] रोवूँ ए याद पति मेरै आवै सै
बेबे जेठ मेरे नै रोंदी [7] सुण ली ए पति की त्यारी ला रह्या सै
बेबे दिन छिप्या ज्यब होया अंधेरा ए जेठ म्हैल म्हैं आ र्‌हया सै
गोरी सांगळ खोलो अरळी रै त्हारे बालम छुट्‌टी आ र्‌हे सैं
बेबे सांगळ खोली अरळी ए मैं लैग गळे कै रो ए पड़ी
गोरी स्हैज स्हैज बतळा ले रै मेरे तळै [8] पिता जी जागैं सैं
तेरे तळै पिताजी जागैं सैं ओ मनै ढंग दूसरा लागै सै
भर दीवा दे दे माचिस ओ मैं अपणा भरम मिटा ल्यूँगी
बेबे दीवा दे दिया माचिस ए मेरा जेठ ऊठकै भाज गया

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी द्वारा अपने जेठ के नापाक इरादों को असफल करने का प्रसंग है। एक दिन पति को याद करके वह युवती रो रही थी कि उसके जेठ ने उसे देख लिया। उसी रात वह उसके कमरे को यह कहकर खुलवाता है कि मैं तुम्हारा पति हूँ। उसकी बातों का विश्वास कर वह युवती दरवाज़ा खोल देती है और

1. रख दे 2. तुम्हारे 3. पत्नी 4. गवाही 5.भेज दिया 6. ज़ोर-ज़ोर से 7. रोती हुई 8. नीचे

उसके गले लगकर रोने लगती है। वह उसे शोर न करने को कहता है ताकि घर के बाकी लोग न सुन लें। यह सुनकर युवती को शक हो गया। वह अपना भ्रम मिटाने के लिए दीया जलाती है, लेकिन पोल खुलने से पहले ही उसका जेठ उठकर भाग जाता है।

ओ तेरा मामा बेईमान [208]

ए ड्योळे[1] पै खड़्या अमरूद किसे नै ठाया[2] भी कोन्या
ए माता का सिखाया लाल मेरे तैं बोलदा कोन्या
हे रै गोरी पतळे मांडे पोय आज मेरा मामा आ र्‌या सै
ओ तेरा मामा बेईमान मेरे तैं खसकै[3] चालै सै
हे रै गोरी करड़ा[4] दे धमकाय तेरा के साळा लागै सै
ओ मामसरे बेईमान उरै[5] के रिस्तेदारी सै
हे रै मनै भर्‌या जोर का भात उरै मेरी माँ की जाई सै
ओ तेरा उलटा ले ज्या भात ले जे ओ तेरी माँ की जाई नै

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने पति के मामा को घर से भगा देने का प्रसंग है। एक दिन उस युवती का पति उससे कहता है कि आज मेरा मामा आया हुआ है, इसलिए वह उसके लिए जल्दी से खाना बना दे। इस पर वह युवती कहती है कि तुम्हारा मामा बेईमान है और मुझ पर बुरी नज़र रखता है। यह सुनकर पति सलाह देता है कि वह उसे अच्छी तरह अपने आप ही डाँट दे। पति की शह मिलने पर वह अपने मामसरे (पति के मामा)को आइंदा वहाँ न आने की चेतावनी देती है। लेकिन जब वह कहता है कि वह ज़रूर आएगा, क्योंकि यहाँ उसकी बहन विवाहित है तो वह युवती उसे अपनी बहन को भी हमेशा के लिए अपने साथ ही ले जाने को कह देती है।

सास नै मैं घर तैं काढ़ देई [209]

हे मेरे पति गए परदेस सास नै मैं घर तैं काढ़ देई[6]
हे मेरै पाँच साल का लाल[7] लाल नै ए लेकै चाल पड़ी
ए मैं गई बाग कै बीच बाग म्हैं ए काळी नाग पड़ी
हे मनै लिया हरि का नाम नाग बंबी नै चाल पड़ी
हे मैं गई बणाँ कै बीच बणाँ म्हैं सेराँ की डार खड़ी
हे मनै लिया हरि नाम डार आगे नै चाल पड़ी
हे एक सूखा दरखत देख उड़ै ए मनै तोड़ी लाकड़ी

---

1. खेत की मेंड़ 2. उठाया 3. टकराकर 4. ज़ोर से 5. यहाँ 6. निकाल दी 7. पुत्र

हे मनै बांध्या जबर भरोटा[1] स्हैर म्हैं ए बेचण चाल पड़ी
ए मनै धर कै मारी किलकार कोए तो ए ले ल्यो लाकड़ी
हे तूँ इतणी सुथरी नार तनै ए क्यूँ बेची लाकड़ी
हे मेरे पति गए परेदस सास नै मैं घर तैं काढ़ देई
हे मेरै भी पेट म्हैं भूख मनै ए न्यू बेची लाकड़ी

इस लोकगीत में एक परदेसी की पत्नी के लकड़हारिन बनने की परिस्थितियों का वर्णन है। पति के परदेस चले जाने पर उस नारी की सास उसे घर से निकाल देती है। अपने पाँच साल के बेटे को लेकर वह जंगलों में भटकती है और ज़हरीले और हिंसक जानवरों से बचते-बचाते लकड़ियों का गट्ठर बाँधकर नगर की ओर चल पड़ती है। उस जैसी सुंदर स्त्री को लकड़ी बेचते देखकर लोग उससे लकड़हारिन बनने का कारण पूछते हैं। वह सास द्वारा घर से निकाल देने के बाद पेट भरने के लिए लकड़ी बेचने की मज़बूरी बताती है।

फौजी की ए नैर दुखी सै [210]

ए सीसम का पेड जबर सै फौजी की ए नैर[2] दुखी सै
हे मैं ठाकै टोकणी चाली मेरी गैल नणंद ना चाली
हे एक लीली मोटर आव्ळा सरवर कै दे लिया घेरा
ए सौ-सौ के लोट[3] दिखावै मनै मोटर बीच बिठावै
ए बहू एक बजे पाणी घाल्ली[4] तूँ च्यार बजे घर आई
हे री एक लीली मोटर आव्ळा सरवर कै दे लिया घेरा
हे री सौ-सौ के लोट दिखावै मनै मोटर बीच बिठावै
ए म्हारै भोळे घराँ की आई सौ-सौ के लोट छोड्याई
हे री बाबल की आबरो जा थी सुसरे की कदर घटै थी
हे री नणदी के बीर परदेसी उनकी भी हवा उडै थी

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी पर एक राहगीर द्वारा डोरे डालने की असफल घटना का वर्णन है। वह पानी लेने तालाब पर जाती है। एक मोटर वाला उसे घेर लेता है और रुपयों का लालच देता है। वह उसे मोटर में बैठने के लिए कहता है। घर आने पर सास उसे इतनी ज़्यादा देर लगाने का कारण पूछती है। कारण जानने पर सास अपनी बहू को डाँटती है कि वह रुपये क्यों छोड़ आई ? इस पर वह नारी कहती है कि ऐसा करने से उसके अपने पिता, ससुर और परदेसी पति की इज़्ज़त में बट्टा लग जाता।

---

1. गट्ठर 2. पत्नी 3. रुपये 4. भेजी

फौजियाँ की नार दुखी सैं [211]

फौजियाँ की नार दुखी सैं ब्होत घणी सै रे रे माटी [1]
मुकलावे म्हैं छोड डिगर ग्या [2] रात भाण [3] मन्नै रो रो काटी
छोटा देवर आया लेण नै माँ घालण तैं [4] नाटी कोन्या
सोच समझके रहिए बेटी मेरा जमाई घर पै कोन्या
गंठी गळसरी मोहनमाळा पैंडल तक मनै प्हैर्‌या [5] कोनी
अपने पति के परण पुगाए[6] गैरचलण कदे चाली कोनी
जुणसे कमरे म्हैं सोया करदी झालर तकिए लाए कोन्या
टक्कर मार मरूँ मेरी नणदी हाय री नणंद तेरा भाई कोन्या

इस लोकगीत में परदेसी की पत्नी के अपने पत्नी धर्म पर टिके रहने का वर्णन है। मुकलावे में ही फ़ौजी अपनी पत्नी को छोड़कर चला जाता है। वह देवर के साथ ही ससुराल भेज दी जाती है। माँ उसे ससुराल में सोच-समझकर रहने का उपदेश देती है। वह भी अपने सब हार-सिंगार त्यागकर एकदम सादा जीवन व्यतीत करने लगती है। लेकिन मन की बात वह अपनी ननद से कहती है। उसका ऐसा मन होता है कि वह टक्कर मारकर मर जाए।

सैस तन्नै बहू भतेरी री [212]

नाभी सूँट धर्‌या सै ए हे मनै कदे नी तन कै लाया
ओढ़ प्हैर पाणी चाली ए हे रस्ते म्हैं सरप पड़्या सै
सरप मन्नै खाइए मत ना ओ हो मेरा पति नौकरी जा र्‌ह्या
ब्हाण तन्नै अलबत [7] ख्हाँगा [8] ए हे मनै इस्बर होकम दिया सै
सरप मेरी चिटली के लड़ ग्या ए हे खूनाँ की बँधगी धारी
जेठ मेरा ईख नुळावै ए हे वो छोड़ कसौला भाज्या
जिठाणी का चीर पाड़के ए हे मेरी चिटली कै बँध लगाया
सैस तेरे बेटे नै बुलादे री हे री बुलवा दे जिलेसिंह भाई
बहू ए मेरी के ए करैगी ए हे तेरी थोड़े से दिनाँ की जिंदगानी
सैस तेरे घी के जळैंगे री हे री मेरै बाबल कै घोर अँधेरा
सैस तन्नै बहू भतेरी री हे री मेरी माता कै बेटी कोन्या

इस मार्मिक जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी की दुखद मृत्यु का प्रसंग है। वह पनघट की ओर जाती है कि रास्ते में उसे साँप डस लेता है। उसका जेठ खेत में से

---

1. कठिनाई 2. चला गया 3. बहन 4. भेजने से 5. पहना 6. निभाए 7. अवश्य 8. खाऊँगा

भागा-भागा आता है और जेठानी का दुपट्टा फाड़कर ज़ख्म पर पट्टी बाँधता है। मरते-मरते वह अपनी सास से विनती करती है कि वह उसके परदेसी पति और भाई जिलेसिंह को जल्दी से बुलवा दे ताकि मरने से पहले वह उनसे मिल ले। इस पर सास उसकी थोड़ी-सी बची साँसों का हवाला देकर किसी को भी बुलवाने से मना कर देती है। इस पर वह कहती है कि हे सास, मेरे मरने पर मेरे बाप के घर घोर अँधेरा छा जाएगा। तुझे तो बहू और मिल जाएगी, लेकिन मेरी माँ को दूसरी बेटी नहीं मिलेगी।

हे मेरा चारा ना चाल्या आके बिराणे घर म्हैं[213]

सैस कलिय्हारी[1] *नै मैं ईख नुळावण भेज देई*
सिर पै घड़िया नीर का मेरै कांधै कस्सी टेक देई
तीन मील पै खेत राँड का मैं घाली[2] *एकली बण म्हैं*
हे मेरा चारा ना चाल्या आके बिराणे[3] *घर म्हैं*
राही राही जाऊँ थी आगै तैं मिल्या फकीर का
हे बेबे मनै पाणी प्या दे मर्‌या तिसाया[4] *नीर का*
पाणी पीकै वो न्यू बोल्या तूँ फिरै एकली बण म्हैं
रे मेरा चारा ना चाल्या आकै बिराणे घर म्हैं
जिठाणी म्हैलाँ की राणी देवर गया सकूल म्हैं
छोटी नणदल गई सांसरै किसनै लेऊँ साथ म्हैं
पति बसैं परदेस राँड नै मैं घाली अकेली बण म्हैं
हे मेरा चारा ना चाल्या आके बिराणे घर म्हैं
साँझ हुई जब घर नै आई सुण ले सासड़ मेरी री
साज्झे का भर[5] *टाळा कर दे भांडे धर दे न्यारे री*
हळवैं हळवैं[6] *बोल बहू ब्हार खड़्या तेरा सुसरा ए*
जै तेरे सुसरे नै सुण ज्या ए नाड़ तार ले मेरी
ए बहू माफी दे दे भले घराँ की ए बेटी
अपणे लाल नै मैं ईब बुला द्यूँ मैं गेरूँ जबाबी चिट्‌ठी
ए बहू माफी दे दे भले ए घराँ की ए बेटी

इस जकड़ी में एक परदेसी की पत्नी के साथ ससुराल में होने वाले भेदभाव और उसके द्वारा इसका प्रतिकार दिखाई देता है। युवती का पति परदेस में है और उसकी झगड़ालू सास उसे अकेले ही ईख निराने के लिए तीन मील दूर खेत में भेज देती है। बेबस होकर वह कंधे पर कसौला और सिर पर पानी का मटका रखकर अकेली ही खेत

1. कलहप्रिया 2. भेजी 3. बेगाने 4. प्यासा 5. आदरसूचक संबोधन 6. धीरे-धीरे

की ओर चल पड़ती है। रास्ते में उसे एक फ़कीर मिलता है और पानी पिलाने को कहता है। फिर वह उससे अकेली ही इतनी दूर खेत में आने का कारण पूछता है तो वह कहती है कि ससुराल में उसे पराया माना जाता है। बेगाने घर में उसका कोई जोर नहीं चलता। साँझ को घर आते-आते उसे अपने साथ होने वाले अन्याय का एहसास हो जाता है। आते ही वह सास से कहती है कि उसे अलग कर दिया जाए। इस पर उसकी सास को अपनी गलती का अहसास होता है। वह उसे भले घर की बेटी बताती है और उससे माफ़ी माँगते हुए कहती है कि कल ही वह चिट्ठी लिखकर अपने बेटे को बुला लेगी।

तेरी मौसी रोज लडै सै [214]

हे रे मेरा सुण ले सूबेसिंह भाई तेरी मौसी रोज लड़ै सै
हे री मौसी साचम साच बता दे त्हारी [1] क्याँ पै रैड़[2] जगै सै
हे रे बेटा दिन का दूध ना लेंदी निकड़ू पै रैड़ जगै सै
हे री मौसी के री दूध का पळिया त्हारै घर का काम करै सै
हे रे मेरा लाल नौकरी जा र्‌या यो ठाला [3] ए सांड पळै सै
हे री मेरे जीजा जी नौकरी जा र्‌हे मेरी बेबे की कौण सुणै सै
हे रे तेरा मौसा राम घर जा र्‌हे मौसी की कौण सुणै सै
हे री मौसी मेरी बेबे नै घाल दे मेरी माता याद करै सै
हे रे मेरी चाँद सांसरै जी र्‌ही मेरै घर का काम करै सै

इस जकड़ी में एक फ़ौजी की पत्नी और उसकी सास के बीच रोज़ होने वाले झगड़े में उसके भाई द्वारा मध्यस्थता करने का प्रसंग है। उनके बीच झगड़ा दूध पीने को लेकर होता है। सास उसे दिन वाला पानी मिला दूध देना चाहती है। वह साँझ वाले ताजा दूध के लिए जिद करती है। इस पर उसका भाई कहता है कि मौसी, मेरी बहन घर का सारा काम करती है। ज़रा से दूध के लिए झगड़ा करना ठीक नहीं है। सास कहती है कि मेरा बेटा तो परदेस गया हुआ है और यह घर पर निठल्ली बैठी साँड की तरह पल रही है। भाई जब कहता है कि मेरे जीजा के परदेस में होने के कारण इस घर में मेरी बहन की कोई सुनवाई नहीं है। बुढ़िया तपाक से कहती है कि तुम्हारे मौसा के स्वर्गवासी होने के बाद इस घर में मेरी कौन सुनता है? अंत में भाई बहन को मायके ले जाने के लिए कहता है।

बहू लाल भतेरे [215]

फौजी छुट्टी आया ल्याया सै पाँच हजार
दो माँ तैं दे दिए राखे सैं तीन हजार

1. तुम्हारी 2. रार, झगड़ा 3. निठल्ला

गोरी सोवण आइए घणे [1] रै दिनाँ म्हैं मिले आज
मैं सोवण चाली सासू नै करी ए लड़ाई
बहू इब कित जागी ईबे तो बखत घणा सै
मेरी सास चढ़ गी बणकै नै गजबण नार
वा सेजाँ पै बैठ गी गज का तो घूँघट ताण
ए मैं पीसण उट्ठी बखतें [2] तो आए भरतार
गोरी कापी दे द्यो कापी म्हैं मेरा रै हिसाब
पिया किसतैं दई थी किस पै ओ माँगो सो हिसाब
गोरी तेरे तैं दी थी तेरे पै माँगूँ रै हिसाब
तेरी माँ ए गई थी बणके नै गजबण नार
सेजाँ पै बैठ गी गज का तो घूँघट ताण
गोरी धरती फट ज्या खो द्यूँ रै अपणी ज्यान
सासू इब के मिल ग्या मरवाकै अपणा री लाल
बहू लाल भतेरे मिलगे सैं पाँच हजार

इस लोकगीत में पैसे के लालच में एक माँ द्वारा अपनी बहू की जगह स्वयं अपने बेटे के पास जाने की असामान्य घटना का वर्णन है। एक सैनिक छुट्टी आता है। उसके पास कुल पाँच हज़ार रुपये थे। रात को सोने के समय उसकी माँ अपनी बहू से लड़-झगड़कर अपने बेटे के पास सोने के लिए चली जाती है और उससे सारे पैसे ले लेती है। सुबह के समय वह सैनिक अपनी पत्नी से उन पैसों का हिसाब माँगता है, जो उसने उसे रात को दिए थे। जब वह बताती है कि रात के समय उसके पास वह नहीं बल्कि उसकी माँ गई थी तो वह सैनिक आत्महत्या कर लेता है। बहू सास को अपने ही बेटे की जान लेने का उलाहना देती है। सास कहती है कि उसे पाँच हज़ार रुपये मिलने की खुशी है, बेटे तो और बहुत हैं।

मेरी मूछ पाड़के भाज गई [216]

लिक्कड़दे [3] नै ताना मार्या मार्या जेठ हजारी [4] नै ओ मेरी ज्यान
मत ना ओ जेठा तान्ने मारै जाण गई बीमारी नै
खूड खूड म्हैं गेडूँ जेवड़ी [5] बलवा ल्यूँ पटवारी नै ओ मेरी ज्यान
लिख परवाना पिए धोरै [6] गेडूया याद करै तेरी ब्याही ओ
जल्दी से पिया घर पै आओ कब्जा करै तेरा भाई ओ हो मेरी ज्यान
पहले हफ्ते म्हैं छुट्टी आया आण डट्या [7] म्हारे घेर्याँ म्हैं

1. काफ़ी 2. सुबह-सवेरे 3. आते-जाते 4. आदरणीय, प्रभावशाली 5. रस्सी 6. पास 7. रुका

साचमसाच बता मेरा भाई के रै खोट मेरी ब्याही म्हैं ओ मेरी ज्यान
मैं माँग्या दूधू का लोटा या दूधू नै नाट गई
तोते ज्यूकर आँख बदलके रंग न्यारे नै छाँट गई ओ मेरी ज्यान
मैं बोल्या रै गोरी सेज बिछा दे वा सेज्याँ नै नाट गई
और के ज्यादा जिकर करूँ रै मेरी मूछ पाड़के भाज गई ओ मेरी ज्यान
आप पिया परदेस डिगरगे[1] छोड चले इस झेरे म्हैं[2]
भरी जवानी न्यूँ डाटी जणू डाट्या नाग पिटारे म्हैं ओ मेरी ज्यान

इस लोकगीत में एक परदेसी की पत्नी द्वारा अपने जेठ के अनुचित प्रणय निवेदन का प्रतिकार है। आते-जाते हर समय उसका जेठ उस पर फ़ब्तियाँ कसता है। इन ओछी हरकतों से परेशान वह एक दिन उसे अलग होने एवं ज़मीन-जायदाद बँटवाने की चेतावनी दे देती है। साथ ही वह सारी बातों को एक चिट्ठी में लिखकर अपने पति के पास भेज देती है। परदेसी भी शीघ्र ही घर आ जाता है और आते ही अपने भाई से अपनी पत्नी के अपराध के बारे में पूछता है। जेठ भी स्पष्टवादी है। वह बताता है कि एक बार दूध का गिलास माँगने पर वह आँखें तरेरकर दूध देने से मना कर गई। जब उसने उसे सेज बिछाने के लिए कहा, तब तो वह बहुत क्रुद्ध हो गई और उसकी मूँछें उखाड़ लीं। अंत में वह स्त्री अपने परदेसी पति को उलाहना देती है कि वह स्वयं तो परदेस चले गए और उसे इस नरक में छोड़ गए। पति की अनुपस्थिति में उसने अपनी भरी जवानी को यूँ वश में रखा है जैसे किसी साँप को पिटारे में बंद रखा जाता है।

या माँ ए रांड पिटवावै[217]

सास बहू का प्यार घणा म्हारी कदे ना होई लड़ाई
ए चाकी ऊपर धर्या पीसणा ए पिसणे पै राड़ जगाई
ठाके[3] टोकणी पाणी नै चाली फौजी छुट्टी आया
ए पाणी लेके उलटी आई माँ बेटे नै सिकावै[4]
चाक्की ऊपर धर्या पीसणा रे खाली पाट घसावै
काळी तो रे बेटा वैल[5] ओढ़ ले कड़वे त्योर लखावै[6]
दोफारे म्हैं पाणी ल्यावै चलदी कार डटावै
बार्ह्याँ तैं मेरा सुसरा आ ग्या क्यूँ रै बहू नै धमकावै
छस्सेर पक्का पिसै पीसणा फेर पाणी के ल्यावै
अड्डे ऊपर मोटर डटैं सैं या के घराँ बुलावै
काळी वैल जगत म्हैं ओढ़ैं या के घराँ बणावै

1. चले गए 2. कुएँ में 3. उठाकर 4. सिखा रही 5. ओढ़नी 6. आँखें तरेरना

म्हारा तो बाबू दोस नहीं या माँ ए रांड पिटवावै
दम-दम करदी म्हैलाँ चढ़गी करके लाड भळेवै[1]

इस जकड़ी में एक नारी की उसकी सास के बहकावे में आकर उसके परदेसी पति द्वारा पिटाई करने का वर्णन है। एक दिन चक्की पीसने को लेकर सास-बहू में लड़ाई हो जाती है। इधर बहू पानी लेने पनघट पर जाती है, उधर उसका पति फ़ौज से छुट्टी आ जाता है। जब तक वह पानी लेकर वापस आती है, तब तक उसकी सास उसके पति को उसके खिलाफ़ तरह-तरह की शिकायतें करके भर देती है। ज्योंही परदेसी अपनी पत्नी को डाँटने-डपटने लगता है, त्योंही ससुर आकर बहू की तरफ़दारी करने लगता है और सास द्वारा लगाए गए आरोपों का एक-एक करके जवाब देने लगता है। यह सुनकर परदेसी सहम जाता है और अपनी माँ पर उसे भड़काने का आरोप लगाता है। रात के समय परदेसी लाड़-प्यार से अपनी पत्नी को मनाने की कोशिश करता है।

जेठ नहीं रे कोए चाळा सै[218]

मेरे पति गए परदेस भाण मेरा जेठा दामण सिमावै सै
मेरा जेठा दामण सिमावै सै
दामण तो लिया सिमवाय भाण चुँदड़ी म्हैं जाळ गिरावै सै
चुँदड़ी म्हैं जाळ गिड़ावै सै
मैं ओढ़ प्हैर पाणी जाँय भाण छोर्याँ म्हैं जेठ लखावै सै
छोर्याँ म्हैं जेठ लखावै सै
भाई किस छोरे की नार यार बिजळी सी च्यमकदी आवै सै
बिजळी सी च्यमकदी आवै सै
भाई मेरे तैं छोटा मेरा बीर यार मेरे पै डाट लगावै सै
यार मेरे पै डाट लगावै सै
मेरे छुट्टी आए भरतार भाण पोळ्याँ[2] *म्हैं जेठ सिखावै सै*
पोळ्याँ म्हैं जेठ सिखावै सै
भाई बहू नहीं रै कोए चाळा सै दोफारे म्हैं पाणी ल्यावै सै
दोफारे म्हैं पाणी ल्यावै सै
भाई इब तारूँगा नाड़ यार पाच्छे तैं बडी गिरकावै सै
पाच्छे तैं बड़ी गिरकावै सै
थारी माँ नै ल्यो न बूझ पति ओ क्यूँ घर का नास करावै सै
क्यूँ घर का नास करावै सै

1. मनाना, बहकाना, बहलाना 2. घर में एक स्थान विशेष, बैठक

माता सैचम सैच बता ए आज इनका जेठ बहू का झगड़ा सै
इनका जेठ बहू का झगड़ा सै
बेटा जेठ नहीं रे कोए चाळा सै दोफारे म्हैं खिड़क खुलावै सै
दोफारे म्हैं खिड़क खुलावै सै
बेटा बहू नहीं रे कोए सीता सै देबी सी तळै उतर्यावै सै
देबी सी तळै उतर्यावै सै

इस लोकगीत में एक परदेसी की पत्नी के प्रति उसके जेठ के अनुचित लगाव का वर्णन है। जेठ बहू के लिए नए-नए कपड़े लेकर आता है। जब वह ओढ़-पहनकर पनघट पर जाती है तो उसका जेठ गली में डींग हाँकता है कि वह उसे रिझाने के लिए श्रृंगार करती है। लेकिन जेठ की दाल नहीं गलती और वह उससे चिढ़ने लगता है। जब उसका पति छुट्टी आता है तो जेठ उसकी पत्नी को बदचलन बताता है। यह सुनकर परदेसी अपनी पत्नी को मारने दौड़ता है तो वह उससे आग्रह करती है कि मारने से पहले वह एक बार अपनी माँ से पूरी बात जान ले। सास बहू का बचाव करते हुए कहती है कि वह तो सीता की-सी सरल और आज्ञाकारी है। कसूर तो जेठ में है जो देर-सवेर उसका दरवाज़ा खटखटाता रहता है।

डूब क्यूँ ना मर ग्या [219]

रेलवाई साड़ी मेरा भूरा कचिया गात
मसीन चलाऊँ देवर नै पकड़ लिया हाथ
जेठ का री बेटा वो कर र्या दसमी पास
सुरेंदर चिट्ठी लिख दे गेरूँगी [1] पति के पास
चाचाजी छुट्टी आओ म्हारी चाची सकत बीमार
छुट्टी तो नहीं मिलदी चाहे आज मरो चाहे काल
म्हैल चढ़ सो गी मेरे बाह्र खड़े भरतार
साँकळ तो खोलो गोरी थारे बाह्र खड़े भरतार
साँगळ तो नहीं खुलदी चाहे आज मरो चाहे काल
गोरी रै के हो ग्या थमनै गेर्या तार पै तार
रेलवाई साड़ी मेरा भूरा कचिया गात
मसीन चलाऊँ देवर नै पकड़ लिया हाथ
गोरी रै के हो ग्या मेरी माँ का जाया छोटा बीर
डूब क्यूँ ना मर ग्या जींदे [2] नै सौंप देई नैर

1. भेजूँगी 2. जीते-जागते

इस जकड़ी में देवर द्वारा एक परदेसी की पत्नी से छेड़छाड़ करने और पति द्वारा इस बात की अनदेखी करने का प्रसंग है। एक दिन कपड़े की सिलाई करते समय देवर अपने भाई की पत्नी का हाथ पकड़ लेता है। वह अपने जेठ के बेटे के हाथों अपने पति के पास अपनी बीमारी का तार भिजवाती है। परदेसी छुट्टी आता है। वह उसे पूरी घटना बताती है। इस पर वह परदेसी कहता है कि इसमें कौन-सी बड़ी बात है? आखिर वह मेरा सहोदर (सगा) भाई ही तो है। वह उसका तिरस्कार करते हुए कहती है कि ऐसा कहने से पहले वह कहीं डूब क्यों न मरा, जो जीते जी अपनी पत्नी किसी और को सौंप रहा है।

ओ साझे म्हैं म्हारी पार पड़ै ना [220]

ए करतें करतें मिलै बुराई ए मेरा निछतर [1] खोटा
ए रोटी लेकै गई खेत म्हैं ए हाळी देवर छोटा
आज तो रै बैरण भूखा मरग्या ए देई माता की गाळी
ए रोटी लेकै घराँ डिगर्याई [2] ए रोटी भी ना खाई
ओ न्यारे गेहूँ बुवाकै जाइए ओ देकै जाइए उगाही
ओ साझे [3] म्हैं म्हारी पार पड़ै ना हो करकै जाइए न्यारी
हे रै साझे कैसी कार [4] नहीं रै म्हारी न्यू ए निभ ज्यागी
हे रै न्यारे होकै काम करैं म्हारी माटी पिट ज्यागी
हे रै सात साल मनै गए नै हो लिए रै सात रहे सैं बाकी
हे रै चोद्हा साल म्हैं छुट्टी आल्याँ [5] दे दे गोरी माफी
हे रै कालर [6] के म्हैं सरप पड़्या मेरै गळ म्हैं [7] घालैगी
हे रै न्यू तै मैं भी जाण गया रै मेरै गेल्याँ चालैगी

इस लोकगीत में एक परदेसी की पत्नी की अलग घर बसाने की जिद और परदेसी द्वारा उसे समझाने के प्रयास का प्रसंग है। परदेसी छुट्टी आया हुआ है। उसकी पत्नी अपने देवर, जो खेत में हाली है, के लिए रोटी लेकर खेत में जाती है। देवर उसे रोटी लाने में देर करने का उलाहना देता है। नाराज़ होकर वह घर आ जाती है और अपने पति से अलग घर बसाने की जिद करती है। वह उसे समझाते हुए कहता है कि अलग हो जाने पर उनकी मिट्टी पलीत हो जाएगी। वह आगे कहता है कि उसकी नौकरी के सात साल पूरे हो चुके हैं और सात ही बाकी हैं। फिर वह रिटायर होकर घर पर ही रहेगा। दुख-सुख पाकर यह समय उन्हें साझे में ही काटना चाहिए। लेकिन जब वह नहीं मानती तो वह समझ जाता है कि वह उसे घर वालों से अलग करके ही मानेगी और अलग होकर वह उसके साथ ही चलेगी।

1. नक्षत्र, भाग्य 2. आ गई 3. संयुक्त परिवार 4. मौज़, बढ़िया बात 5. आ जाएँगे 6. खलिहान 7. गले में

जगदे नै संतरां ब्याही [221]

कलकत्ते बंबई बीच देखे री तेरा बीरा [1] ज्ह्याज चलावै
जे होंता नणंद तेरा बीर देखे री तेरा बीरा ब्याह रचावै
मैं ओढ़ प्हैर पाणी जाँय देखे ए एक फौजी छुट्टी आवै
मैं जल भर उलटी आई देखे ए स्हाळाँ म्हैं दूधू पीवै
त्हम डूब मरो न नरभाग देखे ओ तेरी बेबे ओड [2] कवारी
उनै इतणा सुण्या जबाब देखे ए वो चाल्या करण सगाई
माता पतळी कमर लांबी नैड़ देखे री ढूँढ्याया तेरा जमाई
बेटा इबकै कर द्यो टाळ देखे रे आगे नै ब्याह र सगाई
माता बूढ़ा तेरा दिमाक देखिए री स्योने कै लाग ज्या स्याही
उसका सारा कुणबा नराज देखे री जगदे नै संतरां ब्याही

इस जकड़ी में एक भाभी द्वारा अपने परदेसी पति से कहकर अपनी ननद का विवाह करवाने का प्रसंग है। परदेसी की पत्नी देखती है कि उसकी ननद जवान हो चुकी है, लेकिन घर में किसी को उसकी शादी की चिंता नहीं है। जब उसका पति छुट्टी आता है तो वह उसे उलाहना देते हुए कहती है कि उसे तो डूब मरना चाहिए, जो उसकी बहन अब तक अविवाहिता है। इतना सुनते ही परदेसी बहन के लिए वर ढूँढ़ने निकल पड़ता है और बहन की सगाई करके ही वापस आता है। उसकी माँ चाहती है कि बेटी का विवाह इस साल न होकर अगले साल हो। लेकिन सारे परिवार के नाराज़ होने के बावजूद वह उसी समय अपनी बहन का विवाह कर देता है।

पति की ज्यान बचाई [222]

ए म्हारे घरक्याँ नै जुल्म करे मैं देवर गैल [3] खँदाई [4]
ए चाची ताई मेरी संग की सहेली ए सारी घालण आई
ए पहिएँ ऊपर नीर गेरकै [5] ए ज्ह्याज्याँ बीच बिठाई
ए बैठ ज्ह्याज म्हैं देवर के साथ म्हैं ए घर सुसरे कै आई
ए सास नणंद मेरी द्योराणी जेठाणी ए सारी तारण आई
ए उतर कँवर की नार तळे नै सै करमाँ की माड़ी [6]
ए नणंद मेरी नै दूध सिळ्वाया [7] ए नैणाँ म्हैं भर आया पाणी
हे री साचमसाच बता मेरी नणदी री किस बिद [8] डैण [9] बताई

1. भाई 2. इतनी बड़ी 3. साथ 4. भेजी 5. डालकर 6. भाग्यहीन 7. ठंडा किया 8. कारण 9. डायन

हे इंदरा गाँधी भाईरोई ए कर देई सरु लड़ाई
हे री मेरा बीरा बोडर पै जा र्‌या री इस बिध डैण बताई
हे भाजी दौड़ी गई घेर म्हैं ए सूत्या देवर जगाया
ओ मन्नै तो देवर दे दे लिफाफा ओ दे दे पैन र स्याही
ए तार जनाना ले मरदाना ए होई सरहद की राही
ए सरहद ऊपर प्होंच लेई ए ज्यब राजरूप घबराई
ए अपणे पति का फोटू ले र्‌ही ए फोटू म्हैं स्यकल[1] मिलाई
ओ आ मेरे साळे आ मेरे साळे ओ किस विपता म्हैं आए
ओ मेरी बेबे बीमार पड़ी ओ जीजा घर पै जलदी बुलाए
ए दस दिन की ए उनै छुट्टी मिल गी ए दो दिन आणा जाणा
ए दिल्ली के म्हैं पहुँच लेई ए ज्यब राजरूप घबराई
(यहाँ से धुन बदल जाती है)
पाच्छा फेरिए पिया ओ तेरी ब्याही रुक्के मारै
स्हैराँ चालिए पिया ओ मेरी रेसम साड़ी ल्याइए
साच बता दे रै गोरी रै तूँ किस विपदा म्हैं आई
घर के म्हारे जुलमी पिया ओ मैं देवर गैल खँदाई
घर के थारे जुल्मी पिया ओ मैं आँवते ए डैण बताई
हूर नहीं कोई देवी सै रै पति की ज्यान बचाई

इस जकड़ी में एक पत्नी द्वारा अपने फ़ौजी पति को युद्ध से वापस घर लाने का प्रसंग है। इस स्त्री को उसके पति के बजाय उसका देवर लेने आता है। ससुराल पहुँचने पर सब उसे अभागिन कहते हैं। वह अपनी ननद से इसका कारण पूछती है। ननद उसे बताती है कि सरहद पर लड़ाई छिड़ी हुई है और उसके भाई की जान खतरे में है। इसलिए सब उसे डायन कह रहे हैं। इतना सुनकर वह मर्दाना वेश लेकर सरहद पर पहुँच जाती है। उसका पति उसे अपने साले के रूप में पहचानता है और सरहद पर आने का कारण पूछता है। वह उससे बताती है कि उसकी पत्नी बीमार पड़ी है और उसे जल्दी घर बुलाया है। जब वह छुट्टी लेकर दिल्ली पहुँचता है तो उसकी पत्नी अपने असली रूप में उसके सामने आती है। हैरान होकर वह उससे इस तरह वेश बदलने और युद्ध के मोर्चे पर पहुँचने का कारण पूछता है। जब वह सारी बात बताती है तो वह गद्‌गद होकर कहता है कि वह नारी नहीं बल्कि कोई देवी है, जिसने अपने पति की जान बचाई।

1. शक्ल

जेठ मेरे का न्योंदा दे दिया [223]

हे दस सेर के मनै तारे गुलगले [1] पैंसर की रोटी
हे भरके टोकणी [2] रांधी खीर की ए लागड़[3] थी झोटी
हे जेठ मेरे का न्योंदा [4] दे दिया जीमण आइए ओ
हे जेठ मेरा तो जीमण आ ग्या ए धर कांधै धोती
हे दस सेर के उनै खाए गुलगले पैंसर की रोटी
हे भर्‌या टोकणा खाया खीर का ए लागड़ थी झोटी
हे जीम जूठके चाल्या ऊठके दछणा [5] दे बेटी
हो दछणा दछणा के कर रह्या तूँ चाल्या जा डाकी [6]
हो बाळक तो मेरे भूखे र्‌हैंगे मैं निरणाबासी
हो द्‌योराणी जिठाणियाँ का लेणा देणा वो र्‌है ग्या बाकी
हे हळ का हार्‌या हाळी आया उनै गंठा [7] रोटी

इस हास्यगीत में एक बहू द्वारा शिष्टाचारवश अपने जेठ को भोजन पर निमंत्रित करने और पेटू जेठ द्वारा सारा भोजन चट कर जाने का हास्य प्रसंग है। जेठ को जिमाने के लिए एक औरत दस सेर आटे के गुलगुले और पाँच सेर आटे की रोटियाँ बनाती है। इसके अतिरिक्त वह टोकनी भरकर खीर बनाती है। उसका जेठ कंधे पर धोती का पल्ला रखकर जीमने के लिए आता है और सारा भोजन खा जाता है। जाते-जाते जब वह उससे दक्षिणा भी माँगता है तो वह आग बबूला हो जाती है। वह कहती है कि उसके बच्चे भूख से बिलख रहे हैं, वह स्वयं निराहार है और देवरानी-जेठानी भी कुछ पाने की आस लगाए बैठी हैं। यहाँ तक कि उसके हाली पति को सिर्फ़ प्याज व रोटी मिलेगी, ऐसे में उसे दक्षिणा की भी आस है? वह उसे पेटू कहकर भगा देती है।

ले ल्यो सस्ता माल ए [224]

पीतळ की मैं ल्याई टोकणी चाँदी के गिलास हे
मेरे पति कै खेलण खातर ल्याई रंगीले तास ए
सास मेरी का सिर भड़कै सै नणदी कै बुखार ए
पति मेरे की अंखियाँ दूखैं दिन दिखै नी रात ए
तीनुवाँ नै कट्‌ठे [8] करके लेकै चली बजार ए
बड़के स्हैर म्हैं रुक्का मार्‌या ले ल्यो सस्ता माल ए
सास मेरी के लागे पान सै नणदल के हजार ए

1. एक हरियाणवी पकवान 2. पीतल का बड़ा मटका 3. ताज़ा ब्याई हुई 4. न्यौता 5. दक्षिणा 6. भुक्खड़ 7. प्याज 8. इकट्‌ठे

पति मेरे की लगी चवन्नी उसका खाया अचार ए
सास मेरी नै मोड्डे [1] ले गे नणदल नै थाणेदार ए
पति मेरे नै रंडी [2] ले गी कर सोहळा सिंगार ए
सास मेरी कै छोरी होई नणदल कै नन्दलाल ए
पति मेरे कै बांदर जलम्या देखण आई सनसार ए

इस लोकगीत में एक औरत द्वारा अपनी सास, ननद और पति को बाजार में बेचकर आने का रोचक प्रसंग है। उसकी सास का हमेशा सिर दुखता रहता है। उसकी ननद को बुखार चढ़ा रहता है और उसके पति की आँखें दुख रही हैं। इन तीनों की बीमारी से वह अत्यंत परेशान है। उनसे पिंड छुड़ाने के लिए वह तीनों को इकट्ठा करके शहर की ओर चल पड़ती है। बाज़ार में घुसकर वह आवाज़ लगाती है कि जिसे भी सस्ता माल चाहिए वह आकर ले ले। लोग-बाग इकट्ठे हो जाते हैं और बोली लगाने लगते हैं। उसकी सास को पाँच सौ रुपये में कोई संन्यासी ले जाता है। उसकी ननद को एक थानेदार एक हज़ार रुपये में ले जाता है। अंत में एक वेश्या उसके पति को चवन्नी के बदले ले जाती है। तीनों से मुक्ति पाकर वह निहाल हो जाती है।

सैस गिह्वाँ की दे दे री [225]

सैस बाजरे की रोटी री
हे री दो देंदी दे दे एक सैस गिह्वाँ [3] की दे दे री
बहू ए गिह्वाँ की खावै ए
हे तेरा बाबल साहूकार के भरके गाड्डी आवै ए
सास म्हारै गिह्वाँ के ठेके री
हे री तेरै एक बोरी म्हैं जुवार इसे म्हैं भोडी [4] ए भोडी री
सास म्हारै च्यार च्यार झोटी [5] री
हे री तेरै एक बूढ़ा सा खोल [6] इसे कै डोके [7] कोन्या री
सास म्हारै बळ्दाँ [8] की जोड़ी री
हे री तेरै एक बूढ़ा सा ढैंड [9] इसे कै पूंजड़ [10] कोन्या री
सास मेरै नौ भाई सैं री
हे री तन्नै एक जाम्या था लाल इसे म्हैं अक्कल कोन्या री
सास इसकै नौ मण ढेरे [11] री
हे री गोड्याँ पै [12] चढ़ र्या मैल सास इसनै ज्होड़ म्हैं नुहा ल्या री

---

1. साधु 2. वेश्या 3. गेहूँ 4. कूड़ा 5. नई भैंस 6. बूढ़ी भैंस 7. दूध 8. बैल 9. बूढ़ा बैल 10. पूँछ 11. जुएँ 12. घुटनों पर

इस जकड़ी में गेहूँ-बाजरे की रोटी को लेकर सास-बहू के बीच हुई तकरार का प्रसंग है। बहू का मन बाजरे की अपेक्षा गेहूँ की रोटी खाने का है। इस पर सास ताना मारती है कि क्या उसका बाप साहूकार है, जो गेहूँ की गाड़ी भरकर उसके लिए भेजता है। मायके का तिरस्कार बहू से सहन नहीं होता। सास को खरी-खोटी सुनाती हुई वह अपने मायके की प्रशंसा और ससुराल की बुराई करने लगती है। अंत में वह अपने पति को भी नहीं बख्शती। वह उसे मूढ़मति, गँवार और सड़ियल तक कह देती है।

बीर कड़े तैं ल्याऊँ[226]

टापू म्हैं करूँ थी गुजारा देखे ए मनै ठा ले ग्या गिरकाणा[1]
मैं आई सुसर की द्हेळ देखे ए मेरी सासड़ तारण आई
बहू पतळी सुथरी छैल देखे ए म्हारै धन्न भतेरा ल्याई
बहू बिन भाइयाँ की भाण देखे ए म्हारै नहीं न्यग्हा म्हैं[2] *आई*
सब सखी भरैं जल नीर देखे ए मन्नै भी दोघड़ ठाई
मरवे[3] *पै दोघड़ तार देखे ए मैं च्यारुँ तरफ लखाई*
करड़ा[4] *सा ढाठा मार देखे ए मनै ज्यान कुवे म्हैं झोंकी*
मेरी माता नै पाट्टी जाण[5] *देखे ए वा डाँगर ज्यूँ अरड़ाई*
बेटी के तीळाँ[6] *की बात देखे ए मनै तीळ डेढ़ सै बाँधी*
बेटी के टूमाँ की बात देखे ए मनै धोळी र पीळी कर दी
मेरे बाबल नै पाट्टी जाण देखे ए वो कुवे धोरै आया
बेटी के बालम की बात देखे ए मनै लफ्टीडेंट कै ब्याही दी
बाबल सारी चीजाँ की मौज देखे ओ मैं तो भाई के बोल पै मरगी
बेटी मोल मिलै नी उधार देखे ए तन्नै बीर कड़े तैं ल्याऊँ

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा सास के इस ताने पर कि वह बिना भाई की है, आत्महत्या कर लेने का मार्मिक प्रसंग है। वह युवती खूब सारा दहेज का सामान लेकर ससुराल पहुँचती है। लेकिन उसकी सास यह कहकर उसका तिरस्कार कर देती है कि उसका कोई भाई नहीं है। वह युवती मर्माहत होकर कुएँ में गिरकर मर जाती है। जब उसके माँ-बाप को उसकी मृत्यु का समाचार मिलता है तो वे रोना-धोना मचाते हैं और पूछते हैं कि उसे ऐसा क्या दुख था जो उसने आत्महत्या कर ली। उसके दुख का कारण जानकर वे भी असहाय-से नज़र आते हैं।

---

1. छैल-छबीला 2. निगाह में 3. कुएँ का बुर्ज 4. मज़बूत 5. पता चला 6. तीवल

थमनै कहके उलटी कुव्हाई [227]

हे रे उड ज्या रे काग उडणिया मेरा आवै सुबेसिंह भाई
हे री नणदी नै बोल्ली मारी के लारी दे तेरा भाई
हे री नणदी पाँच भाण एक भाई वो किस किसनै दे लारी
हे री नणदी पाँच बीर एक बेबे पायाँ तैं फिरै उभाणी [1]
हे री खूँटी तै तारी तलवारी मेरा धड़ तैं सीस उतार्‌या
ओ पिया बात सुणो न हमारी चाहे पाच्छै [2] नाड़ [3] काटियो
हे रे उड ज्या रे काग उडारी मेरा आवै सुबेसिंह भाई
ओ नणदी नै बोल्ली मारी के लारी दे तेरा भाई
हे री नणदी पाँच भाण एक भाई वो किस किसनै दे लारी
हे री नणदी पाँच बीर एक बेबे पायाँ तैं फिरै उभाणी
हे री माता इसका दोस नहीं सै थमनै [4] कहके उलटी कुव्हाई

इस जकड़ी में भाभी-ननद के मध्य हुई तकरार का वर्णन है। एक दिन जब भाभी अपने भाई को याद करती है और उसके आने की इंतज़ार में है तो ननद ताना मारती है कि उसका भाई क्या मोटरगाड़ी लेकर आएगा? भाभी प्रत्युत्तर में कहती है कि पाँच बहनों के बीच उसका तो एक ही भाई है। सो वह किस-किसके यहाँ मोटरगाड़ी लेकर जाए? लेकिन वह तो पाँच भाइयों के बीच अकेली बहन है और फिर भी पाँवों से नंगी है। ननद जाकर अपने भाई से भाभी की शिकायत कर देती है और वह अपनी पत्नी की जान लेने पर उतारू हो जाता है। युवती उसे कहती है कि मारने से पहले वह सारा प्रसंग जान ले। सारी बात जानकर वह उसे मारने का इरादा त्याग देता है और अपनी माँ-बहन से कहता है कि उन्होंने पहले ताना देकर उसे प्रत्युत्तर देने पर मज़बूर किया है।

मन्नै भरकै कोळी पटक्या ए [228]

मेरा जेठ तरावण आया ए मनै लिया टोकरा तार
चालदी का आग्गा हेर्‌या ए मनै दोनूँ जोड़ लिए हाथ
सरमांदी बोली कोन्या ए जेठे की राख गई ल्हयाज
दोफारे की रोटी पोऊँ ए मेरा जेठ धरै था आग
गोरी पतळे मांडे पोइए रै खावाँगे दोनूँ साथ
बळधाँ [5] की सान्नी भेऊँ ए मेरा जेठ धरै था आग
गोरी बढ़िया सान्नी भेइयो रै कदे म्हैं ए छोड द्‌यो नीर
सरमांदी बोली कोन्या ए जेठे की राख गई ल्हयाज

1. नंगे पाँव 2. बाद में 3. गरदन 4. तुमने 5. बैल

सांझे की रोटी पोऊँ ए मेरा जेठ करै था सनान
गोरी बढ़िया सब्जी बनाइयो रै खावाँगे दोनूँ साथ
जेठा तोवळ[1] करके आइए हो कदे धणी लगा दे देर
मनै साँझै ए साँकळ भेड़ी[2] ए मनै कर्‌या मोगरा त्यार
गोरी जल्दी साँकळ खोलो रै थारे ब्हार खड़े भरतार
मनै भरकै कोळी[3] पटक्या ए कोह्णी[4] तैं टूट ग्या हाथ
माता ताता[5] पाणी कर द्यो री सेकूँगा अपणा हाथ
बेटा साची साच बता दे रे तनै कड़ै तुड़ाया हाथ
माता ऊत घराँ की आई री म्हारी लेई आबरू तार
बेटा भले घराँ की आई रे थारी लेई आबरो राख

इस जकड़ी में एक युवती द्वारा अपने बदचलन जेठ की पिटाई करने का प्रसंग है। युवती का पति परदेस में है और अनुकूल अवसर जानकर उसका जेठ उसे बार-बार प्रेमालाप का निमंत्रण देता है। एक दिन तंग आकर वह युवती उसे रात में मिलने का निमंत्रण देती है। चाव से भरा जेठ जब उसके कमरे में पहुँचता है तो वह उसे ज़मीन पर गिरा लेती है और डंडे से उसकी पिटाई कर देती है। इस पिटाई में जेठ का हाथ टूट जाता है। अगले दिन वह अपनी माँ के सामने उस युवती की शिकायत करता है और उसके मायके वालों को बदमाश कहता है। सब कुछ सुनकर माँ कहती है कि बहू भले घर की बेटी है, जो उसने सबकी इज़्ज़त रख ली।

जाइयो बाँझ जिठाणी [229]

ईख नुळावण गई ए खेत म्हैं ए ईख नुळा घर आई
ए बडी जिठाणी न्यूं बोली ए बेबे घर तैं चिट्ठी आई
तूँ तो ए बेबे घराँ डिगर ज्या[6] ए माँ बीमार बताई
ए राजकँवर नै आड़ै छोड ज्या ए राखै इसकी ताई
ए बारहा बज गे तफरी[7] होगी ए राजकँवर घर आया
ए ताई खप्परभरणी[8] नै ए वो ओबरे बीच बुलाया
तूँ तो रे बेटा आड़ै[9] बैठ ज्या मैं खोदूँगी एक हारा[10]
रे सारी गाळ के कुत्याँ नै म्हारा दूध पी लिया सारा
मार काटके गेर्‌या खड्डे म्हैं ए ऊपर चिण दिया हारा
ए सारी गाळ के कुत्याँ नै ए म्हारा दूध पी लिया सारा

1. जल्दी 2. बंद कर ली 3. बाँहों में लपेटना 4. कोहनी 5. गर्म 6. चली जा 7. स्कूल की छुट्टी 8. एक प्रकार की गाली 9. यहाँ 10. अँगीठी

ए राजकँवर का ताऊ आया राजकँवर ना आया
ए सारी गाळ के बाळक आ गे ए राजकँवर ना आया
ऐ गळी ढूँडी गतवाड़े ढूँडे ए सैहर ढूँड लिया सारा
ऐ सारी गाळ के बाळक आ गे ए राजकँवर ना आया
ए राजकँवर की माता ए बेबे ऐसा सुपना आया
ए छाती ऊपर सरप पड़्या ए मेरा काढ़ काळजा ल्याया
ए मरियो तेरे भाई भतीजे ए जाइयो बाँझ जिठाणी
ए नौमै भीनै और जाम ल्यूँ ए राजकँवर जिठाणी

इस जकड़ी में एक बाँझ जेठानी द्वारा किसी युवती के इकलौते बेटे की हत्या कर देने का मार्मिक प्रसंग है। एक दिन जब वह युवती खेत से वापस आती है तो उसकी जेठानी उसे यह कहकर मायके भेज देती है कि उसकी माँ सख्त बीमार है। उसकी अनुपस्थिति में जेठानी उसके बेटे को मारकर जमीन में गाड़ देती है। सभी लोग उस लड़के को ढूँढ़ते हैं, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिलता। उधर रात में उस युवती को सपना आता है कि उसकी छाती पर एक साँप पड़ा हुआ है। वह तुरंत अनहोनी को भाँप जाती है। वह अपनी जेठानी को बाँझ ही रहने का शाप देती है और कहती है कि वह स्वयं तो शीघ्र ही और बेटा पैदा कर लेगी।

जै बोलण लाग्गे आरिए [230]

कित सी [1] धरी सै री सासू टोकणी
हाँ री कित सी धरे सैं नेजू डोल जै बोलण लागे आरिए[2]
पैंडी धरी सै ए बहू टोकणी
हाँ ए खूँटी पै टंग रहे नेजू डोल जै बोलण लागे आरिए
ओढ़ प्हैर कै ए बहू निसरी
हाँ ए दोघड़ पै बोल्या काळा काग जै बोलण लागे आरिए
कै तौ फूटैगी री सासू टोकणी
हाँ री ना सै नेजू का री काम जै बोलण लागे आरिए
दोघड़ भरकैं ए उलटी आ गई
हाँ ए आ र्‌या सै बडणा [3] ए बीर जै बोलण लागे आरिए
भली ए करी रे काळे कागले [4]
हाँ रे दोघड़ की राखी तन्नै ल्हयाज जै बोलण लागे आरिए

---

1. कहाँ पर 2. आर्यसमाजी 3. बड़ा 4. कौवा

इस जकड़ी में काले कौवे के बोलने के शकुन को लेकर सास-बहू के मध्य हुए वार्तालाप का वर्णन है। बहू ज्यों ही पानी भरने के लिए निकलती है तो उसके मटके पर काला कौवा बैठकर काँव-काँव करने लगता है। उसे अपशकुन मानकर बहू कहती है कि या तो मटका फूटेगा या मेरी जान जाएगी। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। जब वह पानी लेकर वापस आती है तो उसे अपना भाई आया हुआ मिलता है। भाई को देखकर वह खुश हो जाती है और कौवे को आशीष देने लगती है, जिसने बहन-भाई को मिला दिया।

के ब्हैल टूटदी आई [231]

सूरत देखी भाई की री मैं तो हँसदी खेलदी आई
सैस मेरी न्यू बोली ए बहू किसका के ठा ल्याई [1]
किसे का किमे ना ल्याई री मेरा आ र्या जलेसिंह भाई
बहू ए मैं तो ना घालूँ [2] ए के ब्हैल टूटदी आई
सास बोली ना मारै री मैं तो धन्न भतेरा ल्याई
दो जोड़ी ल्याई बळ्द्याँ [3] की री मैं तो घर के अरथ म्हैं आई
पाँच ल्याई स्योनै की री चाँदी म्हैं लरजदी आई
तेरी तो ल्याई दामण की री सुसरे की रतन रिजाई
दो दो तो ल्याई नणंदाँ की री जेठे का कांबळ ल्याई
देवराँ के ल्याई चैदरे री छैले का दुसाला ल्याई
सैस तेरै और घणी री मँगवाइए ज्ह्याज हवाई
बहू ए मैं तो हाँस रही ए तूँ तो मन म्हैं ब्होत दुख पाई

इस जकड़ी में भाई को लेकर सास-बहू के मध्य हुई तकरार का प्रसंग है। बहू को खुश देखकर सास अचरज में पड़ जाती है। जब बहू बताती है कि उसका भाई उसे लिवाने आया है तो सास उसे भेजने से यह कहकर मना कर देती है कि वह ज़्यादा दहेज नहीं लाई। इस पर बहू दहेज में आए ढेर सारे वस्त्रों, आभूषणों और बैलों की जोड़ी की याद सास को दिलाती है। आगे वह कहती है कि अगर इतना दहेज भी उसे कम लग रहा है तो इससे ज़्यादा वह अपनी बाकी बहुओं से मँगवा ले। बहू के तेवर देखकर सास झेंप जाती है और बात बदलने के लिए कहती है कि वह तो मज़ाक कर रही थी।

ओ बिन खोट मार दी चोट [232]

ओ देवर तेरा रोज का काम आड़ै [4] के ताता [5] पाणी सै
ए उसनै इतणा सुण्या जबाब देवर मेरा बिस्तर बांधै सै

---

1. उठा लाई 2. भेजूँ 3. बैल 4. यहाँ 5. गरम

ए बाहर्याँ तैं आ ग्या बडा बीर भाई रै आज कित की तैयारी सै
रै भावज नै बोल दिए बोल आज मेरठ की तैयारी सै
रै भाई एक बर उलटा चाल काढ़ द्याँ [1] रै रांड लुगाई नै [2]
हाँ रै गोरी साचूँ साच बता के क्है दिया छोटे भाई नै
ओ बिन खोट मार दी चोट तेरे ओ इस छोटे भाई नै
रै मत रोवै सील संतोस काढ़ द्याँ रै साळे भाई नै

इस जकड़ी में देवर–भाभी के बीच हुई तकरार और भाभी द्वारा अपने पति के सामने उसे दूसरा ही रूप देने का प्रसंग है। एक दिन देवर जब स्नान करने के लिए पानी लेता है तो उसकी भाभी उसे झिड़क देती है कि उसका तो यह रोज़–रोज़ का काम हो गया है। मर्माहत देवर परदेस जाने की तैयारी करता है कि तभी उसका बड़ा भाई वहाँ आ जाता है। अपनी पत्नी के हाथों छोटे भाई का अपमान उसे बुरा लगता है। वह पत्नी को डाँटने के लिए घर आता है। लेकिन उसके कुछ कहने से पहले ही उसकी पत्नी अपने देवर पर बदतमीज़ी का आरोप लगा देती है। इससे नाराज़ होकर वह व्यक्ति अपने भाई को ही घर से निकालने पर उतारू हो जाता है।

इज्जत का ख्याल करै सै [233]

ए मैं गेहूँ पीसूँ ए मेरै तो चून चढ़ै सै
ए मेरी सास कलिहारी मोटा ए मोटा करै सै
हे रै गोरी नैन्हा [3] पीसो माता की राड़ [4] मिटै सै
ओ मैं क्यूकर पीसूँ देही म्हैं जोर पड़ै सै
ए मेरी छोटी नणदी चूँदड़ी ए चूँदड़ी करै सै
हे रै गोरी दे द्यो न चूँदड़ी बेबे की राड़ मिटै सै
ओ मैं क्यूकर दे द्यूँ दामण की स्यो [5] ए घटै सै
ए मेरा छोटा देवर फूल तो फूल करै सै
हे रै गोरी दे द्यो न फूल भाई की राड़ मिटै सै
ओ मैं क्यूकर दे द्यूँ कमरे की स्यो ए घटै सै
ए मेरा बडा जेठा गोरी ए गोरी करै सै
हे रै गोरी बणो न गोरी भाइयाँ की राड़ मिटै सै
ओ मैं क्यूकर बण ज्याँ बाबल की इज्जत घटै सै
ए एक फूल गुलाबी गंगा म्हैं बैहंदा [6] फिरै सै
हे रै गोरी दे द्यो फूल न बलमा की राड़ मिटै सै

1. निकाल बाहर करें 2. औरत 3. बारीक 4. झगड़ा 5. शोभा 6. बहता हुआ

ओ मैं क्यूकर दे द्यूँ गंगा की स्यो ए घटै सै
हे रै स्याबास गोरी इज्जत का ख्याल करै सै

इस जकड़ी में परिवार के विभिन्न सदस्यों की इच्छाओं के संदर्भ में पति-पत्नी के मध्य हुए संवाद का वर्णन है। पत्नी को शिकायत है कि उसकी सास, ननद, जेठ, देवर और यहाँ तक कि उसका पति उससे विभिन्न वस्तुओं की माँग करते हैं, जबकि वह उन्हें कुछ भी नहीं देना चाहती। जब वह अपने पति को भी इनकार कर देती है तो पति कटाक्ष करता है कि वह धन्य है, जो सबकी इ़ज़्ज़त का इतना ज़्यादा खयाल रखती है।

वो भी नौकर भेज दिया [234]

उठ लाल मेरे बेठ्या रे हो ले गाडी का टेम उक्या जा सै [1]
तीन लाल माता तीनूँ री एक से मन्नै क्यूँ बखत जगावै सै
दो ए लाल मेरे हाळी र पाळी तूँ ए बी.ए. कराया सै
उठ बहू ए मेरी बेट्ठी हो ले क्यूँ लिकड़्या सूरज छिपावै सै
तीन बहू री तन्नै तीनूँ री एक सी मन्नै क्यूँ बखत जगावै सै
दो ए बहू ए मेरी खप्परभरणी तेरे पै पार बसावै सै [2]
बीस टोकणी ल्याऊँ री पाणी की के मेरा कुणबा न्हावै सै
दस्सर पक्का पीसूँ री पीसणा के मेरा कुणबा खावै सै
दो ए फुल्के खाया करदा वो भी नौकर भेज दिया

इस जकड़ी में घर के काम-काज को लेकर सास, बहू और बेटे के मध्य हुए संवाद का वर्णन है। जब माँ अपने बेटे को सुबह-सुबह जगाती है तो वह शिकायत करता है कि माँ उसे ही क्यों रोज़ सुबह जल्दी उठाती है जबकि उसके दो अन्य भाई भी हैं। इस पर माँ कहती है कि तीनों में वही सबसे ज़्यादा लायक है, इसलिए वह उसे जल्दी उठाती है। इसी प्रकार जब वह बहू को जगाती है तो बहू भी यही शिकायत करती है कि उसके अलावा उसकी दो और बहुएँ भी हैं, वह उन्हें क्यों नहीं जगाती? बहू को समझाते हुए सास कहती है कि केवल वही भले घर की बेटी है, जो सास का कहा मानती है। इसलिए वह उसे सुबह जल्दी उठाती है।

भोजन म्हैं तेरा काळ सै [235]

पिस्सै [3] *का ज्हैर मँगा रै तूँ मंडे बीच रळा दिए* [4]
पढ़के नै आवै रणभीर तूँ उसनै ढोल जिमा दिए [5]

---

1. बीता जा रहा है 2. वश चलना 3. पैसा 4. मिला देना 5. प्यार से खाना खिलाना

पढ़के नै आया रणभीर भाबो री हाथ धुवा दिए
हाथ धुवाऊँ मेरा द्योर लोटे पै आँसू ड्हैं पड़्या
सैचम सैच बता री तेरा री के ग्यान[1] *सै*
ग्यान ग्यून सब ठीक भोजन म्हैं तेरा काळ सै
भोजन जिमाँगे जरूर भाई का परोस्या थाळ सै
जीम जूठ रणभीर चुबारै चढ़ सो ग्या
सैचम सैच बता ओ तेरा ओ के ग्यान सै
ग्यान ग्यून सब ठीक मरणे म्हैं घंटा ड्योढ़ सै
(यहाँ से धुन बदल जाती है)
हम सीधे सुरग म्हैं चाले री भाबो[2] *करिए कुछ ख्याल*
उसका दूसर[3] *बण्या धर्‌या सै री भाबो मेरा रूमाल*
(यहाँ से फिर धुन बदल जाती है)
उसनै पीहर मत ना छोडियो री उसकी भावज लड़ैगी
दे भाइयाँ की गैळ[4] *री वा रांड क्हवैगी*
उसके रूस गए[5] *भगवान री वा तो सबर करैगी*

इस जकड़ी में एक भाई द्वारा अपनी पत्नी के हाथों ज़हर खिलाकर अपने छोटे भाई की हत्या कर देने का मार्मिक प्रसंग है। एक दिन बड़ा भाई अपनी पत्नी को आदेश देता है कि वह उसके छोटे भाई के खाने में ज़हर मिला दे। जब छोटा भाई पढ़कर आता है और खाना खाने बैठता है तो भाभी उसे चेता देती है कि भोजन में ज़हर मिला हुआ है। लेकिन छोटा भाई यह कहकर सहर्ष उस खाने को खा लेता है कि यह उसके बड़े भाई का परोसा हुआ थाल है। खाना खाकर वह चौबारे में जाकर सो जाता है। वह मरने से पहले अपनी भाभी से वचन लेता है कि वह उसकी ब्याहता, जो मायके में है, को ससुराल ले आएगी। अन्यथा मायके में उसकी भाभियाँ उसका जीना हराम कर देंगी।

••••

1. हाल 2. भाभी 3. ससुराल-गमन की तैयारी 4. गाली 5. रूठ गए

विविध

जाटणी ए न्यौंदा दे आई[236]

जाटणी [1] ए न्यौंदा दे आई बामण [2] नै ए नींद ना आई
बामण तो ए रैत [3] का भूखा बेठ ग्या ए प्हैर कै तड़कै [4]
जाटणी ए पाणी नै चाली बामण तैं ए ताळी [5] दे चाली
बामण कै मन म्हैं होया काळा [6] तोड़ लिया कोठी का ताळा
कोठी म्हैं ए नूण [7] का बारा ओज लिया खीर म्हैं सारा
खीर तो हो गई ए खारी [8] खार [9] म्हैं ए ओजण चाल पड़्या
बामण तो ए गात का भार्‌या खार म्हैं ए चाल ग्या [10] सारा
इतणे म्हैं जाटणी आ गी बामण तो ए खार म्हैं बोल्या
जाटणी रै काढ़ ले [11] मन्नै के बात बता द्यूँगा तन्नै
जाटणी ए गात की भारी खार म्हैं ए चाल गी सारी
इतणे म्हैं जाट भी आ ग्या जाटणी ए खार म्हैं बोली
जाट के ओ काढ़ ले मन्नै के बात बता द्यूँगी तन्नै
जाट तो ए गात का हळुवा [12] दोनुवाँ नै काढ़कै ल्याया
दादसरे ओ तड़के नै आइए तूँ अपणी ओ दिछणा [13] ले ज्याइए
मन्नै रै दिछणा की ना चाह्ना मैं अपणी रै ज्यान बचा चाल्या

इस हास्यगीत में एक औरत द्वारा एक ब्राह्मण को अपने घर खाने पर निमंत्रित करने और भुक्खड़ ब्राह्मण द्वारा उतावलेपन के कारण सब कुछ चौपट कर देने का प्रसंग है। खाने का निमंत्रण पाकर ब्राह्मण को पूरी रात नींद नहीं आती। वह अगले दिन सुबह-सवेरे ही यजमान के यहाँ जा बैठता है। यजमान की पत्नी ब्राह्मण को घर पर बैठाकर पनघट पर पानी लेने चली जाती है। रात का भूखा ब्राह्मण रसोई में घुस जाता है और जल्दबाज़ी में खीर के भरे टोकणे में चीनी की जगह नमक डाल बैठता है। घबराहट में वह टोकणे को सिर पर उठाकर घर के पिछवाड़े फैंकने जाता है। लेकिन अपने भारी शरीर के कारण वह दलदल में धँस जाता है। इतने में घर की मालकिन वापस आ जाती है और ब्राह्मण को दलदल से निकालने के प्रयास में स्वयं भी धँस जाती है। तभी यजमान घर पर आ जाता है। सारी बात समझकर वह उन दोनों को दलदल से बाहर

---

1. जाट की पत्नी 2. ब्राह्मण 3. रात 4. मुँह अँधेरे 5. चाबी 6. पाप 7. नमक 8. कड़वी 9. दलदल 10. धँस गया 11. निकाल ले 12. हलका 13. दक्षिणा

निकालता है। ब्राह्मण को खाली हाथ जाते देखकर वह उसे अगले दिन आने को कहती है ताकि वह अपनी दक्षिणा ले जाए। लेकिन ब्राह्मण कहता है कि मुझे दक्षिणा की कोई चाह नहीं है, मेरे लिए इतना ही काफ़ी है कि मेरी जान बच गई।

चूल्हे जळे की होई सगाई [237]

चूल्हे जळे की होई सगाई तोवा बण्या हलवाई ए
चिमटा र फूकणी चढ़े बराती रोटी ब्याही आई ए
आलू र गोभी की मची लड़ाई मिरचाँ नै तोप चलाई ए
जीरा र धनिया नकटे [1] हो गे हळदी बणी पणसारी ए
टींडसी जळी [2] के आए बटेऊ गंठे [3] नै गठड़ी ठाई ए
ठा गठड़ी टेसण पै पटकी रेल घूमदी आई ए
रेलाँ म्हैं तैं भिंडी उतरी टींडसी का सिर पुचकार्‌या ए
जा मेरी बेटी राजी रहिए लेण टमाटर आया ए
बैंगण जळी ए उनै तारण आई ऊतर बहुअड़ मेरी ए
मेरा बेटा तो लाल टमाटर हरी टींडसी आई ए
गाजर जळी कै छोरा हो ग्या मूळी झुगले [4] ल्याई ए
सकरगन्दी नै बेरा पाट्या [5] मंगळ गावणे नै आई ए

इस लोकगीत में रसोईघर में काम आने वाले बर्तनों और विभिन्न प्रकार की तरकारियों के आपसी संबंधों का कल्पनालोक रचा गया है। जब चूल्हे की सगाई होती है तो तवा हलवाई बन जाता है। चिमटा और फूँकनी बराती बनकर रोटी को ब्याहकर लाते हैं। इस विवाह के अवसर पर आलू, गोभी और मिर्च में खूब लड़ाई होती है। जीरा, धनियाँ रूठ जाते हैं। हल्दी पंसारी बन बैठती है। टिंडसी ससुराल जाती है तो प्याज उसकी गठरी उठाता है। भिंडी रेलगाड़ी से उतरकर टिंडसी का सिर पुचकारती है और उसे टमाटर के साथ राजी-खुशी रहने का आशीर्वाद देती है। बैंगन सास के रूप में टिंडसी को डोली से उतारती है। गाजर को लड़का पैदा होता है तो मूली नए-नए कपड़े लेकर आती है और शकरकंदी मंगलगीत गाती है।

मेरा काळजा धड़क्या रै [238]

बखत उठके चल्या बाणिया [6] कांधै जुआ धरकै रै
जमींदार तेरा हाल देखके मेरा काळजा धड़कै रै
रोटी लेकै चाली बाणनी सिर पै सक्कर धरकै रै

---

1. ज़िद्दी 2. एक उपालंभ 3. प्याज 4. नवजात शिशु के कपड़े 5. पता चला 6. बनिया, सेठ

जमींदार तेरा हाल देखके मेरा काळजा धड़कै रै
रोटियाँ नै काग ले गे पड़्या छालणा [1] फरकै रै
जमींदार तेरा हाल देखके मेरा काळजा धड़कै रै
साँझ होई ए जिद आया बाणिया घर लिया मर पड़कै रै
जमींदार तेरा हाल देखके मेरा काळजा धड़कै रै
आइए सिठाणी मेरी खाट बिछा दे घर लिया मर पडकै नै
जमींदार तेरा हाल देखके मेरा काळजा धड़कै रै
मूढ़ै बैठके रोई बाणनी बाणिया मरैगा तड़कै [2] रै
जमींदार तेरा हाल देखके मेरा काळजा धड़कै रै

इस लोकगीत में एक बनिए द्वारा एक दिन किसानी करने पर हुए उसके बुरे हाल का वर्णन है। अपने पास गिरवी पड़ी जमीन को बनिया खुद ही जोतने का निश्चय करता है और एक दिन कंधे पर हल रखकर सुबह-सुबह ही खेत में पहुँच जाता है। दोपहर को उसकी सेठानी उसके खाने की पोटली सिर पर रखकर खेत की ओर चल पड़ती है। रास्ते में रोटियों को तो कौवे खा जाते हैं और सेठानी के हाथ में केवल छालना रह जाता है। दिनभर का भूखा सेठ बड़ी मुश्किल से घर पहुँच पाता है और आते ही खाट में पड़ जाता है। उसकी बुरी हालत देखकर सेठानी यह कहकर रोने लगती है कि कल तक उसका सेठ नहीं बचेगा।

ताऊ ओ म्हारी ताई [239]

बुढिया नै सिमाया सूँट हरी ए कोटन का
बुड्ढी ओढ़ प्हैर पाणी जाय छोर्‌याँ म्हैं बूढा बेठ्या
छोर्‌याँ नै मारी किलकार ताऊ ओ म्हारी ताई
बूढे कै बी उट्ठी ल्हैर पैन्ट सिमवाई
कुड़तै के अठारा टूक बुरसट सिमवाई
बुड्ढा धोळी बुरसट प्हैर पलटण म्हैं भरती हो ग्या
बूढे नै ए गेड़्या [3] तार केवाटर मिल ग्या
बूढ़ा दस दिन की छुट्टी आया बूढ़ी नै गेल्याँ [4] ले ग्या
रसते म्हैं उठ्या साँस रेल तळै [5] दे ग्या
ओड़ै पूछैं अफसर लोग ब्याही रै कड़ै [6] छोड्डी
भाई दिल्ली म्हैं हो था सांग देखदी रै र्‌हैगी
वा कर रही सोळ्हा रै जमात आप टोह् लेगी

1. रोटी लपेटने का छोटा कपड़ा 2. कल, सवेरे 3. भेजा 4. साथ 5. नीचे 6. कहाँ

उसके साथी बूझैं बात ब्याही रै कड़ै छोड्डी
भाई याणी उमर नादान एकली क्यूँ छोड्डी
भाई उसकै रै हो ग्या था सांस रेल तळै दे दी
तेरा जाइयो रै सित्यानास तेरा रै के ले थी
भाई सै सरकारी काम सादी[1] तो तेरी होगी
ज्यब बूढे की होई सगाई
सूई सार की तागा पट का
ज्यब बुड्ढे का टेवा आया
हरी हरी गाँडळ सदा ए सुरंगी लटक मंडेरै आई बे
ज्यब बूढे कै तेल चढ़ाया
गोया ए गोया धरती माँ ए
उसकै हाथ म्हैं दो सुहागण सिरातरी
ज्यब बूढे का मंढा बँधाया
खुजानी सोह्वै[2] ए माट म्हैं
धरी री म्हारे भाती कै हाथ रंगीलै मांढ़ै की जै सै
ज्यब बूढे का तेल तार दिया
तेई ए तेलण तेलो तेल चंपा की रेलो
ज्यब बूढे का स्हेरा बँधाया
बन्ना रे तूँ तो बाँध ले स्हेरा रे तेरे तो मामले[3] ल्याए रे
ज्यब बूढा तो घोड़ी चढ़ाया
नौ ए मास रे बेटा बोझ मरी थी मायड़ का निरणा ले चल्या
ज्यब बूढा तो चढ्या बराती
ओ तेरी लीली[4] कूण पिलाणै[5] बूढा चढ़ ग्या जै जणैती
ज्यब बूढ़ा ढूका पै आया
हमनै बुलाए गबरू-गबरू बूढ़े ठेरे आए री पंसेरे पंसेरे ठट्ठे आए री पंसेरे
ज्यब बूढ़ा फेर्‌याँ पै आया
ए त्हों ल्हुक जे हे लाडो तेरे ढूँढुड़े[6] आए
ज्यब बूढ़ा बिद्या पै आया
आज खाए लाड्डू से तड़कै खाइयो बाबू से
ज्यब बूढ़ा ब्याह के नै आया
मैं तन्नै पुछूँ मेरा लाडला रे थम के के ल्याए
ज्यब बूढ़े का होया मकलोवा

1. विवाह 2. सुशोभित 3. मामा 4. घोड़ी 5. काठी चढ़ना 6. खोजने वाले

फ्हराइयो मेरी भाण सारी ए रळ मिलके
उड़ ज्यागी मेरी भाण चिड़िया का बाणा भरके
ज्यब बूढ़े कै छोरा होया
जच्चा की चटोरी जीभ जलेबी भावैं सैं ए

इस हास्यगीत में एक बूढ़े शौकीन व्यक्ति द्वारा फ़ौज में भरती होने और अपनी बुढ़िया को मारकर दूसरी शादी रचाने का प्रसंग है। बूढ़ा अपनी बुढ़िया के लिए नए फैशन का सूट सिलवाता है। स्वयं भी पैंट-शर्ट पहनकर पलटन में भरती हो जाता है। सरकारी आवास मिलने पर वह बुढ़िया को भी साथ ले जाता है। लेकिन रास्ते में बुढ़िया की साँस उठ जाती है और उससे परेशान होकर बूढ़ा उसे रेल के नीचे दे देता है। फ़ौज में जब साथियों को इस घटना का पता चलता है तो वे कहते हैं कि वह सरकारी आदमी है, इसलिए उसकी शादी तो होगी ही। बाकी के गीत में सगाई होने से लेकर विवाह और उसके बाद बच्चा पैदा होने समेत विभिन्न अवसरों पर गाए जाने वाले लोकगीतों की एक झलक है। इस लोकगीत को महिलाएँ 'बारहमासिया' भी कहती हैं।

नूपगढ़ देखूँगी [240]

साइकल आळे मनै बिठा ले आड्डे [1] तक ले चाल नूपगढ़ देखूँगी
मेरे साइकल पै बैठके तूँ कित का भाड़ा भर देगी
मैं माँगूँगा तूँ नाटैगी [2] खड़ी लड़ाई माचैगी
ब्हादरगढ़ के अड्डे ऊपर हो ज्याँ जूतमजूत के दुनिया देखैगी
संग की सहेली बूझण लागी कूण बटेऊ आ रहया सै
माँ का जमाई बाबू का जमाई भाई का भणोइया भाभी का नणदोइया
बाळकाँ का बाबू सगी नणंद का बीर लेण [3] मनै आ र्‌या सै
साची साच बता दे ए बेबे के के मिठाई ल्याया सै
लाडू छोडे जलेबी छोडी छोडी सतपकवानी काँकड़ी ए ल्याया सै
साची साच बता मेरी बेबे क्याँ म्हैं घालकै ल्याया सै
झोळा छोड्या लिफाफा छोड्या छोड्या जंजीरी बैग के गठड़ी ए ल्याया सै
साची साच बता मेरी बेबे क्याँ म्हैं बैठ कै आया सै
मोटर छोड़ी सकूटर छोडी छोडी हवाई ज्ह्याज के बुग्गी [4] ए ल्याया सै
साची साच बता द्यूँ ए बेबे हम भी संग म्हैं चालाँगे
एक नै ले चालूँ दोयाँ नै ले चालूँ
तीसरी की कर द्यूँ टाळ काटड़ा ए हळुआ [5] सै

1. अड्डा 2. मना करेगी 3. लिवाने 4. छकड़ा 5. कमज़ोर

इस लोकगीत में अपनी पत्नी को मायके से लिवाने आए हुए एक व्यक्ति के बारे में उसकी सालियों के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन है। सहेलियाँ जब पूछती हैं कि आज कौन मेहमान आया हुआ है तो वह विस्तार से बताती है कि उसका पति उसे लेने के लिए आया हुआ है। इसके बाद वह क्या मिठाई लेकर आया है, किस सवारी से आया है और किस-किसको अपने साथ ले जाएगा आदि विषयों से संबंधित रोचक वार्तालाप है।

खोज मिटैगा रै तेरा[241]

हे रै म्हारी नेजू[1] *ठा*[2] *ली खोज*[3] *मिटैगा रै तेरा*
जिसनै म्हारी नेजू ठाई उसकै ताळा भिड़ियो रै
रोटी लेके गई खेत म्हैं इसबर काळा[4] *लड़ियो रै*
कोए गारड़ू बूझै कोन्या पड़्या खाट म्हैं सिड़ियो रै
हे रै म्हारी नेजू ठा ली खोज मिटैगा रै तेरा
माता तेरी भाजी पाइयो[5] *भाई तेरे कै चढ़ियो ताप*
बैहना तेरी रांड होइयो गिरड़ गिरड़के[6] *मरियो बाप*
या नेजू सै दल ब्हामण की सदा उमर ना उतरै पाप
हे रै म्हारी नेजू ठा ली खोज मिटैगा रै तेरा
जे कूवे म्हैं पासैगा तो फूटै साळे तेरा डोल
घेटी[7] *के म्हैं लिकड़ै गूमड़ा*[8] *सिर म्हैं बोलै तेरा बोल*
मोती के पै बंटवाई थी लेके नै सण थोड़ा मोल
हे रै म्हारी नेजू ठा ली खोज मिटैगा रै तेरा
सोणे नै तनै खाट मिलै ना बता ऊत कित सोवैगा
पड़ने नै तनै कुवा मिलै ना कित सी स्यान ल्हकोवैगा
ऐसा रोग लगा द्यूँ पाछै मूंड[9] *पकड़के रोवैगा*
हे रै म्हारी नेजू ठा ली खोज मिटैगा रै तेरा
भर गाडी गंड्याँ[10] *की ल्याया ऊपर नेजू धरके रै*
तूँ भी साळे राजी हो ले इसतैं पाणी भरके रै
मोती के पै बंटवाई थी ब्होत खुसामंद करके रै
पाई हो तो दे दिए रै मानूँगा स्यान[11] *भतेरा*
हे रै म्हारी नेजू ठा ली खोज मिटैगा रै तेरा

इस लोकगीत में एक ब्राह्मण की नेजू (कुएँ से पानी निकालने की रस्सी) चोरी हो जाने और उसके द्वारा चोर को शाप देने का मनोरंजक प्रसंग है। ब्राह्मण कहता है कि

1. कुएँ से पानी खींचने की रस्सी 2. उठा ली, चुरा ली 3. नामोनिशान 4. सर्प 5. भागी हुई मिले 6. घिसट-घिसटकर 7. गरदन 8. फोड़ा 9. सिर 10. गन्ने 11. एहसान

जिसने भी उसकी नेजू उठाई है, उसका सर्वनाश हो जाएगा। उसकी पत्नी को साँप काट लेगा, वह स्वयं असाध्य रोग से ग्रस्त हो जाएगा। उसकी बहन विधवा हो जाए, माँ-बाप-भाई सब बीमार पड़ जाएँ, पानी भरते समय उसका डोल फूट जाए, उसे कही भी मुँह छिपाने का स्थान न मिले, आदि। लेकिन अंत में वह ब्राह्मण मनुहार भी करता है और कहता है कि जो भी उसकी नेजू वापस कर देगा, वह उसका बहुत एहसान मानेगा।

या मेरी बेटी लाडली [242]

लड़की का पिता जी बड़ा परेसान है
रिसता करने चाल पड़्या मेरी बेटी लाडली
ओरै धोरै [1] बैठ चौधरी माँगणा हो जो माँग चौधरी
या मेरी बेटी लाडली
साठ कासण [2] इकसठ तीळ टेलीबीजन और फरीज
यू मेरा बेटा लाडला
कैह्णी थी जो क्है ली चौधरी इब मेरी बी सुण ले चौधरी
या मेरी बेटी लाडली
आम नारंगी खाया करै सै साबुण तेल सैं न्हाया करै सै
या मेरी बेटी लाडली
के देखै मेरे हाथाँ नै हाथ घड़े बेमाता नै
चुड़ी प्हराई मनियारे नै घड़ी सजाई मेरे भाई नै
मैं सूँ बेटी लाडली
माँगेराम का गाणा ए बेबे काम छोडके आणा ए बेबे
न्यू के गीत सिकाए[3] जाँ
सासू इसकी सेज बिछावै छोरा इसके पैर दबावै
या भी बेटी लाडली

इस लोकगीत में एक सिरचढ़ी लाड़ली बेटी के विवाह का प्रसंग है। जब लड़की का पिता उसका रिश्ता करने जाता है तो वह लड़के के पिता से जो मन में आए वह दहेज माँगने को कहता है क्योंकि वह उसकी लाड़ली बेटी है। लड़के का पिता भी अपने लाड़ले बेटे के लिए खूब दहेज़ माँगता है। बात तय होने पर लड़की का पिता लड़की की खाने-पीने की आदतों और किसी काम में अभ्यस्त न होने के बारे में बताता है। विवाह के बाद वह लड़की सज-धजकर पलंग पर बैठी रहती है। सास उसका बिस्तर लगाती है और पति उसके पाँव दबाता है।

1. नज़दीक 2. बरतन 3. सिखाए

इब के करोगे पढ़ाई[243]

गाँधी महात्मा सही आदमी ए दुनिया म्हैं नाम चला ग्या
स्यावतरी[1] ए दुनिया म्हैं नाम चला ग्या
एक छोरी थी वा पढ़ी लिखी ए वा अणपढ़ छोरे कै ब्याह दी
स्यावतरी ए अणपढ़ छोरे कै ब्याह दी
वा बोलै अंगरेजी बोली नहीं समझ म्हैं आई रै गोरी नहीं समझ म्हैं आई
दो पिस्याँ[2] का चाख मँगाके तड़कै दाखल होंगे रै गोरी तड़कै दाखिल होंगे
कुछ लिक्खाँगे कुछ पड्ढाँगे त्हम भी कोस्यस[3] करियो
स्यावतरी रै त्हम भी कोस्यस करियो
पड्ढण लायक थे पड्ढे कोन्या इब के करोगे पढ़ाई
पति जी इब के करोगे पढ़ाई

इस जकड़ी में एक पढ़ी-लिखी लड़की की एक अनपढ़ लड़के से शादी का प्रसंग है। जब वह लड़की ससुराल जाती है, और अंग्रेज़ी में बात करती है तो उसका पति हाथ खड़े कर देता है। वह कहता है कि मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है। लेकिन निराश होने के बजाय वह अगले दिन से ही स्कूल में दाखिला लेने और पढ़ाई शुरू करने का वादा करता है। वह अपनी पत्नी से भी विनती करता है कि वह भी उसे पढ़ाने-लिखाने का प्रयास करे। इस पर उसकी पत्नी कहती है कि वह अब पढ़ने-लिखने का विचार छोड़ दे। जब पढ़ने-लिखने की उम्र थी, तब नहीं पढ़े तो अब क्या पढ़ोगे?

सीसा देखैं एडी धोवैं[244]

लीली पैंट गुलाबी बुरसट खास मेरे घरआळे की
बूरा तैं ओ तेरा मन भर र्‌या सै खा ले दाळ मुसाले की
हेली[4] तैं ओ तेरा मन भर र्‌या सै ला ले बाळ[5] चुबारे की
मेरे तैं ओ तेरा मन भर र्‌या सै ब्याह ले खास बिडाणै की
नाळी छोड नदियाँ म्हैं कूदैं महलसरे नरवाणै की
सुदाँ जूतियाँ दूध बिलोवैं मिर्जापर और न्याणै की
सीसा देखैं एडी धोवैं मोची और चुबारे की
गुड़ की डळी पर राड़ मचावैं खरक भदोड़ राजली की
छैह छैह भीन्ने[6] तैं लत्ते धोवैं नैह्लै और पाबड़े की
भाइयाँ सेती मारैं मसकरी[7] डाटै और गुराणे की
मार मंडासा पाल्ला काटैं छोट्टी बड्डी न्योळी की

1. सावित्री 2. पैसे 3. कोशिश 4. हवेली 5. हवा 6. महीने 7. मज़ाक

तांसळे के म्हैं दळिया रांधैं छोट्टे बड्डे दणोदे की
धोळे कुड़ते लीले लैंहगे छोटी बडी मंदोरी की
टुंटियाँ ऊपर राड़ मचावैं चिकनास और नांधड़ी की

इस लोकगीत में हरियाणा के विभिन्न गाँवों की औरतों की विशेषताओं का रोचक वर्णन मिलता है। जैसे नरवाना की महिलाएँ नदी में छलाँग मारकर नहाती हैं; मिर्जापुर और न्याणे की औरतें जूती पहने-पहने दूध बिलोती हैं; मोची और चुबारे की औरतें बार-बार दर्पण देखती हैं; खरक, बधावड़ और राजली गाँवों की औरतें गुड़ की डली के लिए झगड़ा कर लेती हैं; डाटा और गुराना की औरतें अपने भाइयों से मज़ाक करती हैं; न्योली की महिलाएँ मँडासा मारकर पशुओं का चारा काटती हैं; दनौदा गाँव में तो तसले में ही दलिया राँध लेती हैं और मंदोरी की औरतें नीला घाघरा और सफ़ेद कुरता पहनती हैं। इसी प्रकार लाँधड़ी और चिकनवास की स्त्रियाँ पानी भरने समय पनघट पर झगड़ती रहती हैं।

मूस्याँ का राज बडा भारी [245]

ओड़ै मूस्से [1] भरती होगे हे मूस्याँ का राज बडा भारी
मूसा दस दिन की छुट्टी आया
मूसी [2] के सैंडल ल्याया ए मूस्याँ का राज बडा भारी
मूसी ओढ़ प्हैर पाणी चाली
मूसा एडी ठै ठै [3] देखै ए मूस्याँ का राज बडा भारी
मूसी जल भर उलटी ब्होड़ी [4]
मूसा सेज बिछांदा पाया ए मूस्याँ का राज बडा भारी
मूसा छुट्टी काटके चाल्या
मूसी डांगर ज्यूँ अरड़ाई [5] ए मूस्याँ का राज बडा भारी

इस लोकगीत में चूहे और चुहिया का पति-पत्नी के रूप में मानवीकरण किया गया है और उनका एक-दूसरे के प्रति लगाव दर्शाया गया है। एक चूहा फ़ौज से छुट्टी आता है और चुहिया के लिए ढेर सारे वस्त्र आदि लेकर आता है। चुहिया सज-धजकर कुएँ से पानी लेने चली गई। वह जब पनघट से वापस आती है तो चूहा उसके लिए सेज बिछा रहा होता है। छुट्टी पूरी होने पर जब चूहा वापस नौकरी पर जाता है तो चुहिया डंगरों (पशुओं) की तरह दहाड़ मारकर रोती है।

---

1. चूहे 2. चुहिया 3. उठा-उठाकर 4. वापस आई 5. रोई

माता चाळे हो गे [246]

मेरी माता कै सात होई थी री
हे री री री सातूँ एको नाळ[1] *माता चाळे*[2] *हो गे री*
ज्यद हम सातुवाँ की करी सगाई री
हे री री री एक ढूँढ्या भरतार माता चाळे हो गे री
ज्यद हम सातूँ फेर्याँ पै आई री
हे री री ब्हामण मसळै हाथ माता चाळे हो गे री
ज्यद हम सातूँ ब्हैल म्हैं बिठाई री
हे री री री हिरणाँ कैसी डार माता चाळे हो गे री
ज्यद मेरी सासड़ तारण आई री
हे री री री उतर बहू स्याबास माता चाळे हो गे री
ज्यद हम सातूँ सोवण खँदाई री
हे री री री खाट तळै[3] *भरतार माता चाळे हो गे री*
ज्यद हम सातूँ पीसण उठी री
हे री री री चाकी ऊपर नाग माता चाळे हो गे री
ज्यद नागण नै डंक चलाया री
हे री री री सातूँ सौंपसार[4] *माता चाळे हो गे री*
ज्यद सैसड़ नै बेरा पाट्या[5] *री*
हे री री री चोखा[6] *कट गी रैंद*[7] *माता चाळे हो गे री*

इस लोकगीत में सात जुड़वाँ बहनों का वर्णन है, जिनके सभी संस्कार एक साथ ही किए जाते हैं। उनकी माँ उन सातों बहनों को एक साथ ही जन्म देती है तो सभी को बड़ा आश्चर्य होता है। बहनों के आपसी प्रेम को देखकर उनकी एक ही युवक से सगाई कर दी जाती है। शादी के बाद वे ससुराल पहुँचती हैं। उनकी सास उन्हें एक साथ ही उतारती है और उन्हें शाबाशी देती है। जब वे रात को सोने के लिए जाती हैं तो उनका पति घबराहट के मारे पलंग के नीचे छुप जाता है। सुबह जब वे चक्की पीसने के लिए उठती हैं तो एक साँप उनमें से एक को डस लेता है, जिससे सातों की मृत्यु हो जाती है। उनकी सास को उनकी मृत्यु की खबर मिलती है। वह कहती है कि चलो, पिंड छूटा।

दिल्ली के म्हैं लाल किले पै [247]

ज्हयाज आळे ज्हयाज डाट ले ज्हयाज डाट ले भाई रे
तेरी ज्हयाज के ढीले पुरजे करड़े[8] *कर ले भाई रे*

1. जुड़वाँ 2. कमाल 3. नीचे 4. मर जाना 5. पता चला 6. अच्छा हुआ 7. पिंड छूटा 8. कसना

के ए नाम तेरा के ए गाम तूँ किस राजै की जाई ए
साचम साच बता मेरी बेबे किस राजै कै ब्याही ए
दिल्ली गाम मेरा इंदरा नाम मैं नेहरू लाल की जाई रे
साचम साच बताऊँ मेरा भाई मुसलमान कै ब्याही रे
इंदरा नाम तेरा दिल्ली गाम तूँ नेहरू लाल की जाई ए
साचम साच बता मेरी बेबे नाक कड़ै[1] कटवाई ए
दिल्ली के म्हैं लाल किले पै भासण द्यूँ थी भाई रे
कोलेज म्हैं तैं छोरे लिकड़े[2] नाक काट ली भाई रे

इस जकड़ी में एक पायलट और इंदिरा गाँधी के मध्य हुए संवाद का वर्णन है। इंदिरा गाँधी पायलट से कहती है कि उसकी हवाई जहाज़ के पुर्ज़े ढीले हैं। वह उन्हें कस ले। पायलट उससे उसका नाम, गाँव, पिता का नाम आदि पूछता है। सब जानकारी प्राप्त होने पर पायलट को इस बात पर आश्चर्य होता है कि उसने एक विधर्मी से शादी की है।

मैं ना जाऊँ पलटण म्हैं[248]

तेरा नाम लिखा द्यूँ रंगरूट चल्या ओ जाइए पलटण म्हैं
उरै[3] मिलैगी तनै सीत राबड़ी उड़ै[4] मिलैगा फलूट चल्या ओ जाइए पलटण म्हैं
पी ल्यूँगा रै मैं सीत राबड़ी ना चहिए रै फलूट मैं ना जाऊँ पलटण म्हैं
तेरा नाम लिखा द्यूँ रंगरूट चल्या हो जाइए पलटण म्हैं
उरै मिलैगी तनै बासी रोटी उड़ै मिलैगा हल्वा पूरी चल्या हो जाइए पलटण म्हैं
खा ल्यूँगा रै मेरी बासी रोटी ना चहिए हल्वा पूरी मैं ना जाऊँ पलटण म्हैं
तेरा नाम लिखा द्यूँ रंगरूट चल्या हो जाइए पलटण म्हैं
उरै मिलैगी तनै सिड़ी[5] लंगोटी उड़ै मिलैगी पतलून चल्या हो जाइए पलटण म्हैं
प्हैर ल्यूँगा मेरी सिड़ी ए लंगोटी मनै ना चहिए पतलून मैं ना जाऊँ पलटण म्हैं
तेरा नाम लिखा द्यूँ रंगरूट चल्या हो जाइए पलटण म्हैं
उरै मिलैंगे तनै टूटे लित्तर[6] उड़ै मिलैंगे फौजी बूँट चल्या हो जाइए पलटण म्हैं
पैह्र ल्यूँगा रै मेरे टूटे लित्तर ना चाहिए फौजी बूँट मैं ना जाऊँ पलटण म्हैं
तेरा नाम लिखा द्यूँ रंगरूट चल्या हो जाइए पलटण म्हैं
उरै मिलैंगी तनै जेळी र गंडासी[7] उड़ै मिलैगी बंदूख चल्या हो जाइए पलटण म्हैं
ठा ल्यूँगा[8] रै मेरी जेळी र गंडासी ना चहिए रै बंदूख मैं ना जाऊँ पलटण म्हैं
तेरा नाम लिखा द्यूँ रंगरूट चल्या हो जाइए पलटण म्हैं

1. कहाँ 2. निकले 3. यहाँ 4. वहाँ 5. मैली 6. जूते 7. कृषि के औज़ार 8. उठा लूँगा

इस जकड़ी में एक युवक द्वारा सेना में भर्ती होने से इनकार करने का प्रसंग है। उसे तरह-तरह के प्रलोभन दिए जाते हैं। उसे बताया जाता है कि यहाँ रहने पर उसे गरीबी, भुखमरी और दरिद्रता का जीवन बिताना पड़ेगा, जबकि सेना में भर्ती होने पर उसे सब प्रकार की सुविधाएँ मिलेंगी। बार-बार प्रलोभन दिए जाने के बावजूद वह युवक सेना में जाने से यह कहकर इनकार करता रहता है कि वह यहीं खुश है। वह यहीं रहकर सब कुछ सहन कर लेगा लेकिन सेना में नहीं जाएगा।

किसने फौज म्हैं घाल दिया [249]

किसनै तो रे तेरे बांधे बिसतरे किसनै फौज म्हैं घाल दिया
भाई नै ए मेरे बांधे बिसतरे भाबो नै फौजाँ म्हैं घाल दिया
किसनै तो रे तेरा चूर्‌या चूरमा किसनै दूधू प्याय दिया
मांय मेरी नै चूर्‌या चूरमा बेबे [1] नै बेला प्याय दिया
किसनै नै तो रे तेरे लिए निमसते किसनै स्यर [2] पुचकार दिया
ब्याही नै ए मेरे लिए नमसते सैसड़ [3] नै सिर पुचकार दिया
किसनै तो रे तेरै पाणी घाल्या [4] किसनै साबण तेल दिया
साळ्याँ नै ए मेरै पाणी घाल्या साळियाँ नै साबण तेल दिया

इस जकड़ी में एक सैनिक के घर से विदा होते समय का वर्णन है। पूछने पर वह बताता है कि उसके भाई-भाभी ने बिस्तर बाँधकर फ़ौज में भेज दिया; माँ ने उसके लिए चूरमा बनाया और बहन ने दूध का प्याला पिलाया; उसकी पत्नी ने नमस्ते करके विदा किया है; उसकी सास ने उसका सिर पुचकारा; साले ने नहाने के लिए पानी और साली ने साबुन पकड़ाया।

होया करण सिंग भरती ए [250]

सोळ्हा साल की नै छोड़ डिगर ग्या [5] होया करण सिंग भरती ए
पीहर के म्हैं उमर कटै ना भर रही जोर जवानी ए
पंद्र्हा रप्पइए सेर मिठाई वा झोळे म्हैं [6] घाली ए
अपणे नाम की च्यार नारंगी वैं न्यारी [7] घाली ए
माता की ए वो ल्याया चूंदड़ी बेबे का ल्याया कमीज ए
ब्याही हूर की केसर स्याड़ी सैंडल और तबीज ए
कलकत्ते तैं रेल छूट गी रेल धड़ाधड़ आई ए
करण सिंग कै द्हैल बैठ गी ओड़ै [8] ज्यान खपाई ए

---

1. बहन 2. सिर 3. सास 4. डाला 5. चला गया 6. थैले में 7. अलग 8. वहाँ

पंदऱ्हा रप्पइयाँ की सात मिठाई वा लोगाँ नै खाई हे
करण सिंग की सोरण [1] काया वा कागाँ [2] नै खाई हे

इस जकड़ी में एक युवा सैनिक कर्णसिंह की असमय मृत्यु का वर्णन है। कर्ण सिंह अपनी सोलह वर्ष की नवविवाहिता को उसके मायके में ही छोड़कर सेना में भरती हो जाता है। जब उसे छुट्टी मिलती है तो बड़े चाव से घर आने की तैयारी करता है। माँ, बहन एवं पत्नी के लिए ढेर सारे उपहार और मिठाई लेकर वह कलकत्ते से रेलगाड़ी में बैठ जाता है। लेकिन रेलगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो जाती है और कर्णसिंह मारा जाता है। उसकी मिठाई को लोग और उसकी कंचन काया को कौवे खा जाते हैं।

तबीजी आळी मर गी [251]

नौकर डिगर ग्या ए छोऱ्यां म्हैं रळमिल के
छुट्टी तो आया हे आया सै दस दिन की
साच बता द्याँ रै मरी नै भीना हो लिया
रोवण लाग्या हे दरवाजा बंद करके
भाइयाँ नै डाट्या हे करड़ा [3] सा हीया करके
रोवै मतना रै बिव्हा द्याँ तन्नै तड़कै [4]
नौ फुट लाम्बी रै च्यार फुट चौड़ी
उसतैं तो सुतरी [5] रै हळद रंग पीळा
बेसक बिव्हा द्यो रै उसी तो नहीं आवै
काळी सी कुत्ती ए चुबारै चढ़ सुत्ती
मन्नै न्यूँ जाण्या रै तबीजी आळी सुत्ती
हाथ लाया रै प्होंचे तैं मेरा पकड़्या
मैं क्यूँ ना मर ग्या रै तबीजी आळी मर गी
तोवै की सेकूँ रै चुल्है की मेरी जळ ज्या
फूक मारूँ रै मूछ मेरी जळ ज्या
मैं क्यूँ ना मर ग्या रै तबीजी आळी मर गी

इस जकड़ी में अपनी पत्नी की मृत्यु पर व्यथित एक सैनिक का वर्णन है। वह साथियों के साथ मिलकर सेना में चला जाता है। कई वर्ष बाद वह छुट्टी आता है। उसे पता चलता है कि उसकी पत्नी की मृत्यु हो गई है। वह अंदर जाकर रोने लगता है। उसके भाई उसे दिलासा देते हैं और उसकी दूसरी शादी की योजना बनाते हैं। लेकिन सैनिक के

1. स्वर्ण 2. कौवे 3. मज़बूत 4. कल 5. सुंदर

मन में तो अपनी पहली पत्नी ही बसी हुई है। रात को वह चौबारे में सोने के लिए जाता है। वहाँ पहले से ही एक काली कुतिया सो रही होती हैं। उसे भ्रम होता है कि उसकी पत्नी ही सो रही है। वह उसे हाथ लगाता है तो वह उसे काटने को दौड़ती है। दिन में जब वह खाना बनाता है तो चूल्हे में फूँक मारते समय उसकी मूँछें जल जाती हैं। अपनी इस दुर्दशा पर वह कहता है कि काश! उसकी बजाय वह स्वयं ही मर जाता।

जगदीस आरिए होगे [252]

कूवे पै नीर भरूँ थी
दयानंद नै घोड़ा डाट्या [1] ए जगदीस आरिए[2] होगे
बेबे एक घुँट पाणी की पिला दे
मैं तनै देख के आया ए जगदीस आरिए होगे
बीरा परे नै [3] हट के पी ले
मेरै लागैं सैं छींट [4] दामण कै रे जगदीस आरिए होगे
बेबे इसै नीर की ना चाहना [5]
पीवाँ साँ दूध सिंघरी [6] का ए जगदीस आरिए होगे
मेरै दामण पै दोघड़ पड़ियो [7]
दयानंद का दोस उतरियो ए जगदीस आरिए होगे

इस जकड़ी में एक युवती और एक आर्य युवक के बीच पनघट पर हुई मुलाकात का वर्णन है। एक दिन एक युवती कुएँ पर पानी भर रही थी कि तभी एक युवक वहाँ आया और उसे बहन कहकर संबोधित करते हुए पानी पिलाने का आग्रह किया। युवती उसका तिरस्कार करती हुई कहती है कि वह उससे दूर हटकर पानी पिए। आर्य युवक उसकी शंका को भाँप जाता है और अपने चरित्रवान आर्य युवक होने की दुहाई देता हुआ उसके हाथ से पानी पीने से इनकार कर देता है। जब युवती को अपनी गलती का एहसास होता है तो वह अपने आपको कोसने लगती है कि उसने दयानंद सरस्वती जैसे महात्माओं का अपमान कर दिया।

देवर जेठ सब आरिए री [253]

झलसा झलसा हो रही री सैसड़
झलसा देखण मैं गई री मेरी छोटी नणदल साथ म्हैं
देवर जेठ सब आरिए री
पितसरे र्‌हैगे पोप री झलसे म्हैं दयानंद आरिया

---

1. रोका 2. आर्यसमाजी 3. परे, दूर 4. छींटे 5. इच्छा 6. शेरनी 7. गिर जाए

आरियाँ की छोरी[1] न्यू बधैं[2] ए
जणू बधै केळे का पेड ए झलसे म्हैं दयानंद आरिया
पोपाँ[3] की छोरी न्यू घसैं ए
जणू घसै हळ्द की गैंठ[4] ए झलसे म्हैं दयानंद आरिया

इस जकड़ी में आर्यसमाजी परिवार के सद्गुणों का बखान किया गया है। एक बार एक युवती अपनी ननद के साथ आर्यसमाज के जलसे में शामिल होती है। वहाँ वह देखती है कि उसके देवर-जेठ सब आर्यसमाजी बन गए हैं। लेकिन कुछ कुटुंबी लोग पाखंड को अपनाए रहते हैं। फिर वह दोनों परिवारों की तुलना करती है और अपने आर्यसमाजी परिवार को श्रेष्ठतर पाती है।

हरियाणे म्ह सब कोए ब्याहियो रै[254]

पतळा सुथरा छैल गाबरू ए साइकल डाटी[5] नोहरे[6] म्हैं
साइकल डाटके मेरै धोरै[7] आ ग्या ए हाल सुणा दे छोरी काया का
कुणसे गाम की रैहणे आळी रै कुणसे गाम म्हैं ब्याह राखी
बेटी सूँ मैं राजसतान की ओ हरियाणे म्हैं ब्याह राखी
मेरे तो रै छोरी करम फूट गे रै राजसतान म्हैं ब्याह राख्या
राजसतान की रै ईंया बींया बोलैं रैं इंगलस बोलैं हरियाणे की
राजसतान की लँहगे पैह्रै रै साड़ी बाँधै हरियाणे की
राजसतान म्हैं ब्याह ना कराइयो रै रोटी पोवै अणछाणे की
हरियाणे म्हैं सब कोए ब्याहियो रै रांधैं दाळ मुसाले की
राजसतान म्हैं चाळे[8] देखे रै पाणी आगै ताळे देखे
रै नैह्र खुली रै हरियाणे की

इस जकड़ी में एक युवक और युवती, जो क्रमशः राजस्थान और हरियाणा में विवाहित हैं, के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन है। युवती जहाँ हरियाणा में शादी करवाकर अपने आपको भाग्यशाली मानती है, वहीं युवक कहता है कि राजस्थान में शादी करवाकर उसने तो अपनी किस्मत ही फोड़ ली। बाकी गीत में दोनों राज्यों की भाषा, रहन-सहन, खान-पान को लेकर तुलना की गई है।

उसके सदा दुखी भरतार[255]

हाँ ए उसके सदा दुखी भरतार ए जिसके घर म्हैं फूअड़ नारी
जिद फूअड़ नै पोई रोटी देवर की जळाई धोती

---
1. लड़की 2. बढ़ें 3. पाखंडी 4. गाँठ 5. रोकी 6. पशुशाला 7. पास 8. आश्चर्य

जिद फूअड़ नै दिया हारा[1] देवर का जव्ळाया ढारा[2]
हाँ ए उनै घर म्हैं लगा देई आग ए फेर रुक्के[3] मारण लागी
हाँ ए उसके सदा दुखी भरतार ए जिसके घर म्हैं फूअड़ नारी
ठा[4] दोघड़ पाणी नै चाली कूवे ऊपर तार देई
कूवे ऊपर तारकै[5] नै बाह्र होण नै चाल पड़ी
हाँ ए उसकी बिगड़ गई सलवैर ए फेर धोण जोह्ड़ म्हैं चाली
हाँ ए उसके सदा दुखी भरतार ए जिसके घर म्हैं फूअड़ नारी
बेठ आँगण म्हैं रोवण लागी बीज बिघन के बोवण लागी
हाँ ए उसका ब्याहा देवै बोल रै कित जागी बूआ म्हारी
हाँ ए उसके सदा दुखी भरतार ए जिसके घर म्हैं फूअड़ नारी

इस जकड़ी में एक फूहड़ पत्नी का वर्णन है, जिसके कारण उसका पति सदा दुखी रहता है। एक दिन जब वह फूहड़ नारी खाना पकाने बैठी तो देवर की धोती ही जला डाली। जब उसने हारे में आग जलाकर पशुओं का चारा पकाना चाहा तो अपने देवर की झोंपड़ी ही फूँक डाली। फिर आग लगी देखकर शोर मचाने लगी। जब वह पानी भरने गई तो रास्ते में दीर्घशंका के लिए चल पड़ी और तालाब में घुस गई। एक दिन वह आँगन में बैठकर सबसे लड़ने लगी। यह देखकर उसका पति उसे मिन्नतें करके मनाने लगा।

वा म्हाचल की लड़की थी [256]

चौद्हा तारीख नोम्मा[6] भीना[7] जलम होया ए हरियाणे म्हैं
वा म्हाचल[8] की लड़की थी ए वा मारी गई गोहाणे[9] म्हैं
बार्हा दिन उसनै आई नै हो लिए कोरस कर्‌या करै थी ए
गोहाणे म्हैं इंदरा कोलेज उसमैं पढ्या करै थी ए
पैहल्याँ तो ए उसकी करी बेज्जती फेर फूस म्हैं मारी ए
अपणी ज्यान बचावण खातर सारी फीटिंग तोड़ी ए
गंघाणे[10] म्हैं ए समसेर छोरा उसनै गोळी चलाई ए
च्यार तो ए उसनै फूकी टैक्सी फेर करी तोड़ा फोड़ी ए

इस जकड़ी में एक लड़की की हत्या और उसके बाद उसके प्रेमी द्वारा मचाए गए उत्पात का प्रसंग है। हिमाचल प्रदेश की एक लड़की हरियाणा के गोहाना कस्बे में एक कॉलेज में पढ़ती थी। गोहाना में एक दिन कुछ लोगों ने उससे बलात्कार किया और फिर

1. दूध गरम करने की अँगीठी 2. पशुओं की झोंपड़ी 3. ज़ोर से आवाज़ देना 4. उठाकर 5. उतारकर 6. नौवाँ 7. महीना 8. हिमाचल 9. हरियाणा में एक कस्बे का नाम 10. एक गाँव का नाम

उसे आग में ज़िंदा जला दिया। जब उसके प्रेमी को इसका पता चला तो उसने गुस्से में आकर गोलियाँ चलाईं, तोड़-फोड़ की और चार गाड़ियों को फूँक दिया।

मन्नै री मरवावै थी 257

हाँ री मौसी बागाँ म्हैं घोर अंधेर मनै री डर लागै सै
हाँ रे बेटा लट्टू लुवा द्यूँ तीन सै सैठ तनै रे के खावै सै
हाँ री मौसी खा जेगा काळा री नाग फेर मनै रोवैगी
हाँ रे बेटा बाप मर्या रे बलवान तनै रे के रोऊँगी
हाँ री मौसी आवैगी ब्याही री नार[1] *तूँ उसनै कड़ै ल्हकोवैगी*[2]
हाँ रे बेटा सोप्पे[3] *म्हैं द्यूँगी रे रोक जंजीरी ताळा जड़ द्यूँगी*
हाँ री मौसी लागैगी डाकण भूख खाणे नै के देवैगी
हाँ रे बेटा दिन का तो द्यूँगी रे दूध टूक[4] *पकड़ा द्यूँगी*
हाँ री मौसी कंद का तो दामण उसका लाल वा किसनै फ्हैर दिखावैगी
हाँ रे बेटा तेरे तैं छोटा तेरा बीर[5] *वा उसनै फ्हैर दिखावैगी*
हाँ री मौसी त्हों तो बड्डी री बदमास मनै री मरवावै थी

इस जकड़ी में एक युवक और उसकी सौतेली माँ के मध्य हुए वार्तालाप का वर्णन है। एक दिन सौतेली माँ (मौसी) उसे गहन अँधेरे में जंगल में जाने के लिए कहती है। वह युवक मृत्यु के भय से वहाँ जाने से मना कर देता है। वह कहता है कि उसके मर जाने पर वह फूट-फूटकर रोएगी। उसकी मौसी कहती है कि वह तब भी ऐसे नहीं रोई थी, जब उसका जवान पति मर गया था। अब तो रोने का प्रश्न ही नहीं। वार्तालाप के क्रम में जब वह पूछता है कि उसके मरने के बाद उसकी पत्नी का क्या होगा? मौसी तपाक से कहती है कि वह उसे अपने छोटे बेटे के साथ ब्याह देगी। यह सुनकर वह युवक क्रुद्ध हो जाता है और अपनी मौसी की नीयत पर शक करने लगता है।

तमाखू रे बैरी 258

तमाखू[6] *रे बैरी आण जगाई आधी रात*
ज्यद री तमाखू बोवण लागी बोए सैं पेड पचास
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
जिद री तमाखू सींजण लागी सींजे सैं पेड पचास
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
जिद री तमाखू काटण लागी काटे सैं पेड पचास

1. पत्नी 2. छुपाएगी 3. भीतर वाला कमरा 4. बासी रोटी 5. भाई 6. तंबाकू

तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
जिद री तमाखू बाँधण लागी बाँधे सैं पेड पचास
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
जिद री तमाखू साड़न लागी साड़े सैं पेड पचास
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
जिद री तमाखू कूटण लागी कूटे सैं पेड पचास
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
जिद री तमाखू रळावण [1] लागी रळाए पेड़ पचास
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
जिद री तमाखू पीवण लाग्या घर ना पाई उसनै ऐग [2]
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
चिलम भी फोड़ूँ होक्का तोड़ूँ तोड़ूँगा तेरी रै नैड़
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
ठाके कापणी [3] पड़ोसियाँ कै भाज्जी [4] खोलो नै अजड़ किवाड़
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
जे तेरा बालम होक्का ए पीवै घर क्यूँ ना दाबी तन्नै ऐग
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात
आज आज बेबे ज्यान बचा दे तड़कै ए गोसे [5] दाबूँ च्यार
तमाखू रे बैरी आण जगाई आधी रात

इस जकड़ी में एक व्यक्ति के हुक्का-प्रेम और इस कारण उसकी पत्नी को होने वाली दिक्कतों का वर्णन है। हुक्का पीने का शौकीन व्यक्ति बड़े जतन से तंबाकू पैदा करता है। सब तैयारी करके जब रात के समय वह चिलम भरने बैठा तो देखा कि घर में आग ही नहीं है। आग बबूला होकर वह अपनी पत्नी को मारने दौड़ता है। पत्नी भागकर पड़ोसी के यहाँ आधी रात को आग लेने गई। पड़ोसन को खिन्न देखकर वह कहती है कि बस आज रात वह उसकी जान बचा ले, कल से वह आग तैयार रखेगी।

काबर देस तैं चल्या रे गोळिया [259]

काबर [6] देस तैं चल्या रे गोळिया [7] ले लिया भगमा बाणा रे गोळिया
गोळिए नै वा गोळण बोली आज कित की [8] त्यारी रे गोळिया
बाँगर देस म्हैं लांबा लांबा सिरटा बाँगर देस की त्यारी ए गोळण

1. मिलाने 2. आग 3. मिट्टी का ढक्कन 4. भागी 5. उपले 6. उपजाऊ, रंग बिरंगा, दोमट, खादर, कछार 7. एक पक्षी 8. कहाँ की

बाँगर देस म्हैं गोरे गोरे गबरू खाणे ना देंगे दाणा रे गोळिए
लांबी लांबी चोंच कबरे माथे मचा ल्याँगे धिकताणा[1] ए गोळण
चीरे आळे[2] की दुखै ए अँगळियाँ मेरी दूखैं अँखियाँ गोळिए
ज्योंडै[3] चढ़के गोळा री मार्‌या सिर तैं गिरड़ाया[4] रे गोळिए
धोरै[5] बैठी गोळण रोवै गोळिया किसनै मारा रे गोळिए
गोळण नै तो बेबे[6] बणा ल्यूँ गोळिए नै बणा ल्यूँ भणोइया गोळिए
गोळण नै तो दामण सिमा द्यूँ गोळिए नै सिमा द्यूँ कब्जा[7] रे गोळिए
गोळण की तो लीली ए रंगा द्यूँ गोळिए का हर्‌या तौलिया गोळिए
गोळण ने तो ब्हैल[8] म्हैं बिठा द्यूँ गैल[9] बिठा द्यूँ भणोइया गोळिए

इस जकड़ी में एक किसान द्वारा बाजरा खाने में मग्न चिड़े की हत्या और उसके बाद पश्चात्ताप करने का मार्मिक प्रसंग है। एक दिन काबर देस से उड़कर चिड़ियों का एक जोड़ा बाँगर देस में भोजन की तलाश में आ गया। बाँगर देस में बाजरे का भरा-पूरा खेत देख वे दाना चुगने बैठ गए। तभी खेत के रखवाले ने एक ढेला दे मारा जिससे चिड़े की मृत्यु हो गई। चिड़ियों के मार्मिक विलाप को सुनकर रखवाले का मन हत्या के पश्चात्ताप से भर गया और उसने चिड़ियों को अपनी बहन बना लिया।

नोमै ओ म्हीनै जामूँ लाल[260]

ब्हाण एक रोहतक जिले म्हैं बड्डा[10] ए कहिए जमींदार
ब्हाण उसकै एक ए बेट्टा वो ए तो दिया मरवाय
ब्हाण उसका बाबल रोवै रोवै सै टक्कर मार
पिता जी मेरे रोवो मतना नोमै ओ म्हीनै जामूँ लाल[11]
ब्हाण मेरै पीड़[12] लगी थी आधी के आ गे हकदार
ब्हाण मेरै लड़का होया था कुरड़ी म्हैं दिया दबवाय
ब्हाण ठंडे पाणी म्हैं नुव्हा दी होय गई ए सुनपात
ब्हाण मेरी चिता ए चिणा दी आधी के हो गे हकदार
ब्हाण मेरा सुसरा ए रोवै रोवै सै टक्कर मार
ब्हाण मेरै आँच लगी थी देही का टूट्या सुनपात
पिता जी मेरे रोवो मतना बेट्ठी सूँ बोझड़े[13] की ओट
पिता जी मनै चैदर दे द्यो घराँ बता द्यूँ सारी बात
पिता जी मेरै लड़का हुया था कुरड़ी म्हैं दिया दबवाय

1. ज़बरदस्ती 2. पगड़ी वाला 3. मचान 4. लुढ़काया 5. पास 6. बहन 7. कमीज़ 8. डोली 9. साथ 10. अमीर, बड़ा 11. बच्चा, लड़का 12. प्रसव पीड़ा 13. झाड़

ब्हाण उनै[1] कुरड़ी ए खोदी गूंठे तो चूंघै नन्दलाल
ब्हाण वैं तो फाँसी ए तोड़े सूळी तो तोड़ी उनकी नार

इस जकड़ी में रोहतक जिले के एक बहुत बड़े ज़मींदार के इकलौते बेटे की शरीकियों द्वारा हत्या कर दिए जाने का मार्मिक प्रसंग है। शरीकी लोगों द्वारा इकलौते पुत्र की हत्या करवा दिए जाने पर ज़मींदार टक्कर मार-मारकर रोता है। तभी उसकी पुत्रवधू उसे ढाढ़स बँधाती है और कहती है कि वह गर्भ से है। लेकिन जिस दिन उसे पुत्र पैदा होता है, उस दिन ज़मींदार बाहर गया हुआ था। अच्छा अवसर जान शरीकी नवजात बच्चे को मटके में डालकर मिट्टी में दबा देते हैं और नवप्रसूता को ठंडे पानी से नहला देते हैं। उसे मृत जानकर वे उसकी चिता जला देते हैं। खबर मिलते ही ज़मींदार भागा-भागा आता है और रात में चिता के पास बैठकर रोने लगता है। तभी उसे झाड़ियों में से अपनी पुत्रवधू की आवाज़ आती है, जो जीवित बच गई थी। उसके बताने पर नवजात शिशु को भी मिट्टी से जीवित निकाला जाता है। अंत में ज़मींदार का घर पुनः बस जाता है, जबकि उसके शरीकियों को फ़ाँसी की सजा हो जाती है।

कांडे आळे जरा सरमाइए रे [261]

कांडे आळे[2] जरा सरमाइए रे परची दिए जरूर देर मत लाइए रे
यो आच्छा पोह उतर ज्या तो आच्छा फेर देख तमासा
जरा सरमाइए रे परची दिए जरूर देर मत लाइए रे
इन ईख्याँ कै झंडे आ रहे ए लोग घणे दुख पा रहे
जरा सरमाइए रे परची दिए जरूर देर मत लाइए रे

इस जकड़ी में शुगर मिल के एक कर्मचारी, जो गन्ने का वज़न तौलता है, को अपना कार्य तत्परता से करने की विनती की गई है। तौल करने वाला सुस्त होने के साथ-साथ बेईमान भी है, जो तौल की रसीद किसानों को नहीं देता। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर उससे जरा शर्म करने को कहा गया है। किसान जो पौष-माघ की सर्दी में ईख की कमरतोड़ खेती से पहले ही परेशान हैं, उन्हें शुगर मिल के कर्मचारियों की निष्कर्मण्यता और बेईमानी और भी ज्यादा दुखी कर देती है।

आज रात नै मारैगा वो [262]

ठाकै टोकणी पाणी ने चाली कूवे ऊपर आई ए
ए उस कूवे पै भीड़ घणी थी न्यरमल[3] खड़ी उदासी ए
के बेबे तेरा सिर भड़कै सै के तेरै ताप निवाई ए

1. उसने 2. तौलने वाला 3. निर्मला

के बेबे तेरी सास लड़ै सै के याणे[1] कै ब्याही ए
ना बेबे मेरा सिर भड़कै सै ना मेरै ताप निवाई ए
आज रात नै मारैगा वो बणकै मरद कसाई ए
मार काटकै गेरी[2] तूड़े म्हैं भार्‌या ल्हास बनाई ए
इस पापी नै मार देई ए मैं भार्‌या ल्हास बनाई ए
छह भाई रे थारै एक ब्हाण सै बेबे का बदला लियाओ रे
के जीणा रे थारी[3] के जिंदगानी बेबे का बदला लियाओ रे
रोवै मतना हे री मेरी माता बेबे का बदला लियावाँ री
छह भाई री म्हारै एक ब्हाण थी बेब्बे का बदला लियावाँ री
आधी रात सिकर तैं ढळ गी जलेसिंग की मोटर आई ए
अगड़ पड़ोसण न्यू उठ बोली ब्हाण थारी मारी रे
भीतर मतना बड़िए[4] रे भाई तेरी ज्यान का गाळा रे
तोड़ खिड़कियाँ भीतर बड़ ग्या छाती म्हैं गोली मारी ए
उस पापी नै मारकै नै बेबे की ल्हास सम्हाळी ए
आधी रात सिकर तैं ढळ गी जलेसिंग की मोटर आण डटी
रोवै मतना हे री मेरी माता बेबे का बदला लियाए री
उस दुसमन नै मारके नै बेबे की ल्हास ठाई री
रोवै मतना हे री मेरी माता बेबे का बदला लियाए री

इस जकड़ी में निर्मला नाम की एक युवती की उसके पति द्‌वारा हत्या कर देने और निर्मला के भाइयों द्‌वारा बहन की मौत का बदला चुकाने का प्रसंग है। निर्मला को अपनी हत्या का पूर्वाभास हो जाता है। इसलिए वह पनघट पर उदास खड़ी है। अन्य औरतों के पूछने पर वह अपनी उदासी का असली कारण बता देती है। उसी रात उसका पति उसकी हत्या कर देता है। जब निर्मला की माँ को अपनी इकलौती बेटी की हत्या का पता चलता है तो वह अपने बेटों को बदला लेने के लिए ललकारती है। माँ की ललकार पर निर्मला के भाई उसकी ससुराल जाते हैं और निर्मला के पति की हत्या करके बहन की मौत का बदला लेते हैं।

यो फैसन बैलबोटम का[263]

इबकै छोर्‌याँ नै डोबैगा ए यो फैसन बैलबोटम का
घराँ खाण नै दाणे कोन्या सूँट सिमा लिया कोटन का
आड्‌डी टेड्‌ढ़ी माँग पाड़ लई काळे चसमे लावैं ए

1. बालक, छोटा 2. पटक दी 3. तुम्हारी 4. घुसिए

हरफ [1] बाँचणे आंदे कोन्या गाळाँ म्हैं [2] गिरकावैं ए
बडे बडे साहूकार डूब गे डूब लिया जमींदारा ए
देख देख कै ब्याहवण लाग्गे डूब लिया हरियाणा ए
बेटी आळा मत घबराइयो मिल ज्या मोल जमाई ए
अगले का घर ठाड्डा [3] भर दें दे दें ज्ह्याज हवाई ए

इस जकड़ी में हरियाणवी युवाओं के फ़ैशन के चक्कर में पड़कर अपनी संस्कृति भुला देने का वर्णन है। नए-नए फैशन के चक्कर में युवाओं का पढ़ाई-लिखाई से ध्यान भटक गया है। इसके चक्कर में क्या साहूकार क्या ज़र्मींदार सब अपना देसी चलन भूल गए हैं। यहाँ तक नौबत आ गई है कि उन्होंने दहेज माँगना शुरू कर दिया है।

राख लेई बंजारी [264]

ए बंजारी नै ग्हैणै धरकै [4] ए चाल पड्या ब्यंजारा
ए दूर देस में प्होंच लिया ए उसनै पाट्या कोन्या बेरा
सात साल में आया बंजारा रै दे दे मेरी ब्यंजारी
हे रै मूळ ब्याज चाहे सारा ले ले रै दे दे मेरी बंजारी
हे रै मरी नै म्हीने च्यार हो लिए रै कोन्या बची बंजारी
हे रै बैद डाक्टर सारे बलवाए रै कोन्या बची बंजारी
हे मनसा सेठ कै दो छोरे सैं रै जाइयो सत्यानासी
हे रै मेरी बंजारी राख ली रै तूँ दे दे मेरी बंजारी
हे रै भीतर सोप्पे [5] म्हैं रोवै बंजारी रै रोक देई बंजारी
हो मन्नै काढ़ ले [6] हो बंजारे रोक देई बंजारी
हे इतणी सुणकै रोया बंजारा राख लेई बंजारी
हो मनसा सेठ तेरै कीड़े पड़ियो रै राख लेई बंजारी

इस जकड़ी में एक बंजारे द्वारा मज़बूरीवश अपनी पत्नी को मनसा सेठ के पास गिरवी रखने और समय आने पर सेठ द्वारा बंजारिन वापस करने से मना करने का प्रसंग है। व्यापार के लिए ऋण हेतु एक बंजारे ने अपनी पत्नी मनसा सेठ के यहाँ गिरवी रख दी और स्वयं परदेस में व्यापार करने चला गया। सात साल बाद बंजारा धन कमाकर लौटा और सेठ से अपनी पत्नी छुड़ाने चला। सेठ ने झूठ-मूठ कह दिया कि उसकी पत्नी तो चार महीने पहले ही मर गई। बंजारे ने सेठ की कुटिलता भाँप ली और विवश होकर सेठ को कोसने लगा। इधर हवेली में बंद बंजारिन भी फूट-फूटकर रोने लगी।

---

1. अक्षर 2. गलियों में 3. पूरा 4. गिरवी रखकर 5. सबसे भीतर वाला कमरा 6. निकाल ले

बेस्हूरी कामचोरी [265]

बेस्हूरी [1] कामचोरी नै रै चाहे आटूँ फ्हैर पढ़ाएँ जा
कुणबे गेल्याँ[2] जूतम जूता रोंएँ जा र रुआएँ जा
जिसकै आ ज्या इसी ब्होड़िया [3] कूण नरक म्हैं भर ज्या सै
दोनूँ ढूँग्याँ खाज करे जा रै हपता बीत ज्या न्हावै ना
बुरी बहू रै मेरी बुरी बहू रै छोरा हरदम लाड लडाएँ जा
कुणबे गेल्याँ जूतम जूता रोंएँ जा र रुआएँ जा
सिर भड़कै मेरै चढ़ै निवाई रै सिर म्हैं दरद बताएँ जा
आग्गै पाच्छै घणा सूड़ ज्या [4] रै कुणबा क्हवै ज्यब खावै ना
चाक्की के घरणाटे म्हैं [5] रै रोवण की तान लगाएँ जा
कुणबे गेल्याँ जूतम जूता रोंएँ जा र रुआएँ जा
दिन छिपै ज्यब हाळी आवै पड़ी खाट म्हैं पावै ए
हाळी बोलै स्हैज स्हैज या सीधी सिर पै आवै ए
इसी राँड का के कर ले रै जो खाएँ जा गंडराएँ [6] जा
कुणबे गेल्याँ जूतम जूता रोएँ जा र रुआएँ जा
काळा टीकड़ बोच [7] काख म्हैं साग माँगदी फिर ज्या सै
मूरख माणस समझै कोन्या समझणिया तो मर ज्या सै
कुवे ज्होड़ पै जाके नै रै घरक्याँ की हवा उडाएँ जा
कुणबे गेल्याँ जूतम जूता रोएँ जा र रुआएँ जा

इस जकड़ी में एक बेहूदी और कामचोर स्त्री का वर्णन है कि कैसे वह पूरे परिवार को परेशान करती रहती है। ऐसी स्त्री साफ़-सफ़ाई का ध्यान नहीं रखती, न ही समय पर खाना बनाती है। तरह-तरह की बीमारियों का बहाना करके वह काम से बचती रहती है। सभी के सिर पर सवार रहती है। कुएँ-जोहड़ पर जाकर अपने परिवार की बुराई करती रहती है। ऐसी पत्नी जिसके पल्ले बँध जाए, उसका तो जीवन नारकीय हो जाता है।

इसमैं ए रंग अजादी का [266]

या साड़ी कित [8] रँगवाई ए सखी इसमैं ए रंग अजादी का
फ्हैले पल्ले पै म्हात्मा गाँधी खड़े
जिसनै छोरियाँ का [9] मान बढ़ाया हे सखी इसमैं ए रंग अजादी का
या साड़ी कित रँगवाई ए सखी इसमैं ए रंग अजादी का

1. नालायक 2. साथ 3. बहू 4. खा जाना 5. घरघराहट में 6. मीनमेख निकालना 7. दबाकर 8. कहाँ 9. लड़कियों का

दूजे पल्ले पै जवाहर लाल नेहरू खड़े
जिसनै स्यांति का पाठ पढ़ाया ए सखी इसमैं ए रंग अजादी का
या साड़ी कित रँगवाई ए सखी इसमैं ए रंग अजादी का
तीजे पल्ले पै सुभास चंदर बोस खड़े
जिसनै देस अजाद कराया हे सखी इसमैं ए रंग अजादी का
या साड़ी कित रँगवाई ए सखी इसमैं ए रंग अजादी का
चौथे पल्ले पै या इंदरा गाँधी खड़ी
जिसनै खूब ए राज जमाया ए सखी इसमैं ए रंग अजादी का
या साड़ी कित रँगवाई ए सखी इसमैं ए रंग अजादी का

देशभक्ति की भावना से प्रेरित इस जकड़ी में एक ऐसी साड़ी का वर्णन है, जिसके चारों पल्लों पर चार देशभक्त बैठे हुए हैं। पहले पल्ले पर महात्मा गाँधी हैं, जिन्होंने स्त्रियों का मान-सम्मान बढ़ाया। दूसरे पल्ले पर जवाहरलाल नेहरू हैं, जिन्होंने शांति का पाठ पढ़ाया। तीसरे पल्ले पर सुभाषचंद्र बोस हैं, जिन्होंने देश को आज़ाद करवाया। इसी प्रकार चौथे पल्ले पर इंदिरा गाँधी हैं, जिन्होंने देश का प्रशासन चुस्त-दुरुस्त किया।

हरियाणे म्हैं तंगी आई [267]

हो बनसीलाल कुछ करिए ख्याल तनै चंडीगढ जितवाई
हो चंडीगढ़ जितवाणे म्हैं ओ हरियाणे म्हैं तंगी आई
हो म्हारे देस म्हैं न्हैर खुदा दिए ऊँची पटड़ी बँधाई
हो न्हैर तळै [1] को न्हैर काढ़ दी [2] ऊँची मोरी लुवाई
हो बनसीलाल तेरै कीड़े पड़ियो मरियो तेरी लुगाई [3]
हो न्हैर तळै को न्हैर काढ़दी ऊँची मोरी लुवाई
हे गोळागढ़ का कहिए री बागड़ी ऊँटड़े इसनै चराए
रै के बेरा तनै राज करण का उलटे बोट भिड़ाए [4]

इस जकड़ी में हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री बंसीलाल की नीतियों की आलोचना की गई है। इस जकड़ी के अनुसार बंसीलाल ने चंडीगढ़ पंजाब को दे दिया, जिससे हरियाणा को काफ़ी नुकसान हुआ। उसने सिंचाई के लिए नहरें तो खुदवाईं, लेकिन पानी की मोरी ऊँची लगवा दी, जिससे खेतों तक पर्याप्त पानी नहीं पहुँचता। अंत में बंसीलाल की राजनीति की आलोचना करते हुए कहा गया है कि उसने अपना हित साधने के लिए लोगों को आपस में लड़वाया।

---

1. नीचे 2. निकाल दी 3. पत्नी 4. लोगों को लड़ाया

हिंदस्तान बणा दिया थोड़ा [268]

हे इंदरा गाँधी तेरे राज म्हैं ए रोप दिया ए चाळा [1]
हे बच्चे बंद करा दिए हिंदस्तान बणा दिया थोड़ा
हे कूण करैंगे खेती क्यारी कूण बणैंगे हाळी पाळी
कुण बाग्याँ की करै रुखाली कूण ल्यावै मेवा सारी
कूण देगा ए अमरफल लूटके झोळा [2]
हे भूख मरैगी ए इंदरा गाँधी ए राज र्‌हवै [3] ना तेरा
हे कूण चलावै मोटर ठेले कूण चलावै ह्‌वाई ज्ह्‌याज
कूण देगा ए सर्‌हद पै फौज नै घेरा
हे भूख मरैगी ए इंदरा गाँधी ए राज र्‌हवै ना तेरा
हे कूण बणैंगे मेंबर सरपंच कूण बणैंगे थाणेदार
कुण थाणे का बणै सिपाही कूण बणैगा बाबूदार
हे कूण देगा ए टेलीफून म्हैं बेरा
हे भूख मरैगी ए इंदरा गाँधी ए राज र्‌हवै ना तेरा

इस जकड़ी में आपातकाल के दौरान इंदिरा गाँधी द्वारा अपनाई गई जबरन नसबंदी की नीति की खामियाँ गिनाई गई हैं। जबरन नसबंदी के कारण भारत की जनसंख्या कम हो गई है। कम लोगों के कारण इंदिरा गाँधी को ही अपना राजकार्य करने में दिक्कत होगी। जब लोग ही नहीं होंगे तो कौन तो खेती करेगा और कौन पशु पालेगा? कौन बागवानी करके उसे फलों से भरा थैला देगा? कौन मोटरगाड़ी और हवाई जहाज़ चलाएगा और कौन सीमा की रखवाली करेगा? कौन पंचायत बनाएगा? कौन थानेदार होगा और कौन दूरसंचार की व्यवस्था सँभालेगा? जबरन नसबंदी करके तो इंदिरा गाँधी ने भूखों मरने का प्रबंध कर लिया है।

••••

1. अजीब बात 2. थैला 3. रहेगा

परिशिष्ट

1. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
2. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
3. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
4. यह जकड़ी मीना (आयु : 31 वर्ष, मायका : सिंहपुरा, रोहतक; ससुराल : रोहतक) ने दिनांक 22 मई, 2013 को गाँव गद्दी खेड़ी, रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।
5. यह जकड़ी भरपाई (आयु : 52 वर्ष, मायका : पालवास, भिवानी; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
6. यह जकड़ी चंदर (आयु : 75 वर्ष, मायका : बेरी खेड़ा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 08 नवंबर, 2014 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
7. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
8. यह जकड़ी राजबाला (आयु : 46 वर्ष, मायका : लिजवाणा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2014 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
9. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 31 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
10. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
11. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
12. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
13. यह जकड़ी संतोष (आयु : 40 वर्ष, मायका : काळवा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 05 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
14. यह जकड़ी भल्लो (आयु : 55 वर्ष, मायका : बंभेवा, जींद; ससुराल: जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
15. यह जकड़ी चंदरो (आयु : 65 वर्ष, मायका : स्यामड़ी, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

16. यह जकड़ी धन्नो (आयु : 50 वर्ष, मायका : समैण पुट्ठी, हिसार; ससुराल : जलालपुर कलाँ, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को गाँव जलालपुर कलाँ में रिकॉर्ड करवाई।
17. यह जकड़ी भरपाई (आयु : 52 वर्ष, मायका : पालवास, भिवानी; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 07 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
18. यह जकड़ी संतोष (आयु : 45 वर्ष, मायका : बलाबांसा, करनाल; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 07 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
19. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
20. यह जकड़ी सुदेश (आयु : 30 वर्ष, मायका : काकड़ोद, जींद; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय में रिकॉर्ड करवाई।
21. यह जकड़ी दर्शना (आयु : 50 वर्ष, मायका : लुदाणा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
22. यह जकड़ी बीना (आयु : 46 वर्ष, मायका : घिरावड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर में रिकॉर्ड करवाई।
23. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
24. यह जकड़ी संतोष (आयु : 49 वर्ष, मायका : झज्जर; ससुराल : बामला, भिवानी) ने दिनांक 24 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
25. यह जकड़ी अंगूरी (आयु : 73 वर्ष, मायका : घिरावड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 08 नवंबर, 2014 को शाहपुर में रिकॉर्ड करवाई।
26. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
27. यह जकड़ी तारावती (आयु : 48 वर्ष, मायका : भट्टू कलाँ, फतेहाबाद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 27 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
28. यह जकड़ी तारावती (आयु : 48 वर्ष, मायका : भट्टू कलाँ, फतेहाबाद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 27 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
29. यह जकड़ी वीरमती (आयु : 48 वर्ष, मायका : मिराण, भिवानी; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
30. यह जकड़ी उषा (आयु : 30 वर्ष, मायका : सातरोड़, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 14 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
31. यह जकड़ी गुड्डी (आयु: 49 वर्ष, मायका: बाळक, हिसार; ससुराल: जुगलान, हिसार) ने दिनांक 02 दिसंबर, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
32. यह जकड़ी लाजवंती (आयु: 49 वर्ष, मायका: जुगलान, हिसार; ससुराल: खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 04 दिसंबर, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

33. यह जकड़ी चमेली (आयु : 50 वर्ष, मायका : मायना, झज्जर; ससुराल : बामला, भिवानी) ने दिनांक 24 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
34. यह जकड़ी सरला (आयु: 35 वर्ष, मायका: उमरा, हिसार; ससुराल: घिराय, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
35. यह जकड़ी चमेली (आयु : 50 वर्ष, मायका : मायना, झज्जर; ससुराल : बामला, भिवानी) ने दिनांक 24 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
36. यह जकड़ी भल्लो (आयु: 55 वर्ष, मायका : बंभेवा, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
37. यह जकड़ी इंद्रावती (आयु : 37 वर्ष, मायका : समाणा, रोहतक; ससुराल : गोहाना, सोनीपत) ने दिनांक 30 अप्रैल, 2013 को गाँव गद्दी खेड़ी, रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।
38. यह जकड़ी इंद्रावती (आयु : 37 वर्ष, मायका : समाणा, रोहतक; ससुराल : गोहाना, सोनीपत) ने दिनांक 30 अप्रैल, 2013 को गाँव गद्दी खेड़ी, रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।
39. यह जकड़ी भरपाई (आयु : 76 वर्ष, मायका : फरीदपुर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 13 मार्च, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
40. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
41. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
42. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
43. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 55 वर्ष, मायका : फरमाणा, रोहतक; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
44. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
45. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 28 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
46. यह जकड़ी गुड्डी (आयु : 35 वर्ष, मायका : दणोदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 06 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
47. यह जकड़ी भरपाई (आयु : 76 वर्ष, मायका : फरीदपुर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 15 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
48. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : घिलोड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
49. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : घिलोड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

50. यह जकड़ी मोतां (आयु : 65 वर्ष, मायका : बहबलपुर, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
51. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 26 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
52. यह जकड़ी रेखा (आयु : 25 वर्ष, मायका : धमताण साहिब, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
53. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
54. यह जकड़ी बिमला (आयु : 53 वर्ष, मायका : दुपेडी, करनाल; ससुराल : माळी, जींद) ने दिनांक 12 जून, 2014 को दुपेडी गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
55. यह जकड़ी रानी (आयु : 42 वर्ष, मायका : आर्यनगर, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
56. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
57. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
58. यह जकड़ी रोशनी देवी (आयु : 49 वर्ष, मायका : बामला, भिवानी; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 24 मार्च, 2013 को रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।
59. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 31 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
60. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
61. यह जकड़ी रोशनी (आयु : 49 वर्ष, मायका : बामला, भिवानी; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 23 मई, 2013 को रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।
62. यह जकड़ी दर्शना (आयु : 50 वर्ष, मायका : लुदाणा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
63. यह जकड़ी चमेली (आयु : 50 वर्ष, मायका : मायना, झज्जर; ससुराल : बामला) ने दिनांक 24 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
64. यह जकड़ी निंबो देवी (आयु : 70 वर्ष, मायका : बिठमड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 अप्रैल, 2015 को बरवाला में रिकॉर्ड करवाई।
65. यह जकड़ी फुल्ली (आयु : 60 वर्ष, मायका : भाटोल, हिसार; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
66. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका : दणौदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

67. यह जकड़ी कृष्णा (आयु : 50 वर्ष, मायका : खरक बूरा, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
68. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 28 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
69. यह जकड़ी बिमला (आयु : 46 वर्ष, मायका : खरैंटी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 31 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
70. यह जकड़ी कृष्णा (आयु : 50 वर्ष, मायका : खरक बूरा, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 28 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
71. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
72. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
73. यह जकड़ी पनमेसरी (आयु : 72 वर्ष, मायका : मिर्जापुर, हिसार; ससुराल : फरीदपुर, हिसार) ने दिनांक 24 नवंबर, 2012 को फरीदपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
74. यह जकड़ी गुड्डी (आयु : 48 वर्ष, मायका : बाळक, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 24 नवंबर, 2012 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
75. यह जकड़ी भरपाई देवी (आयु : 52 वर्ष, मायका: पालवास, भिवानी; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 07 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
76. यह जकड़ी भरपाई देवी (आयु : 52 वर्ष, मायका: पालवास, भिवानी; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 07 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई। यही जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका: सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने भी दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
77. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका: सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 28 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
78. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका: सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 28 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
79. यह जकड़ी राजबाला (आयु : 47 वर्ष, मायका: लिजवाणा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
80. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका: दणौदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
81. यह जकड़ी गुड्डी (आयु : 35 वर्ष, मायका : दणौदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
82. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 50 वर्ष, मायका: न्योळथा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

83. यह जकड़ी रोशनी (आयु : 49 वर्ष, मायका: बामला, भिवानी; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 24 मार्च, 2013 को रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।
84. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका: सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
85. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 50 वर्ष, मायका: न्योळथा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
86. यह जकड़ी कमलेश (आयु : 40 वर्ष, मायका: काळवा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
87. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका: जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
88. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका: जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
89. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका: स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
90. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 49 वर्ष, मायका: जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 04 दिसंबर, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
91. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 49 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 04 दिसंबर, 2014 को गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
92. यह जकड़ी रोशनी देवी (आयु : 49 वर्ष, मायका : बामला, भिवानी; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 24 मार्च, 2013 को रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।
93. यह जकड़ी गुड्डी (आयु : 48 वर्ष, मायका : बाळक, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 24 नवंबर, 2012 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
94. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
95. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
96. यह जकड़ी नन्ही (आयु : 38 वर्ष, मायका : जलालपुर, जींद; ससुराल : मसाणिया खेड़ी, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
97. यह जकड़ी रोशनी देवी (आयु : 49 वर्ष, मायका : बामला, भिवानी; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 24 मार्च, 2013 को रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।
98. यह जकड़ी कृष्णा (आयु : 50 वर्ष, मायका : खरक बूरा, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
99. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

100. यह जकड़ी बीरमती (आयु : 40 वर्ष, मायका : फूले, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

101. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 48 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2013 को मोबाइल फोन पर बरवाला से रिकॉर्ड करवाई।

102. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

103. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

104. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

105. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

106. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

107. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका : दणोदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई। यही जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

108. यह जकड़ी बीरमती (आयु : 40 वर्ष, मायका : फूले, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

109. यह जकड़ी बीरमती (आयु : 40 वर्ष, मायका : फूले, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

110. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 22 मई, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

111. यह जकड़ी मूर्ति (आयु : 50 वर्ष, मायका : बालसमंद, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई। यही जकड़ी कमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : पाबड़ा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

112. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

113. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

114. यह जकड़ी फुलमां (आयु : 65 वर्ष, मायका : मुजादपुर, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

115. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका : दणोदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
116. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 22 मई, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
117. यह जकड़ी राजबाला (आयु : 46 वर्ष, मायका : लिजवाणा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 08 नवंबर, 2014 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
118. यह जकड़ी अँगूरी (आयु : 73 वर्ष, मायका : घिरावड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 08 नवंबर, 2014 को शाहपुर में रिकॉर्ड करवाई।
119. यह जकड़ी शांति (आयु : 49 वर्ष, मायका : गोरछी, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
120. यह जकड़ी नन्ही (आयु : 43 वर्ष, मायका : डूमरखा कलाँ, जींद ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 26 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
121. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
122. यह जकड़ी रेखा (आयु : 25 वर्ष, मायका : धमताण, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
123. यह जकड़ी तारावती (आयु : 48 वर्ष, मायका : भट्टू कलाँ, फतेहाबाद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
124. यह जकड़ी तारावती (आयु : 48 वर्ष, मायका : भट्टू कलाँ, फतेहाबाद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
125. यह जकड़ी सुनहरी (आयु : 69 वर्ष, मायका : कोथ कलाँ, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
126. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
127. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
128. यह जकड़ी तारावती (आयु : 48 वर्ष, मायका : भट्टू कलाँ, फतेहाबाद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
129. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 48 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
130. यह जकड़ी गुड्डी (आयु : 48 वर्ष, मायका : बाळक, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
131. यह जकड़ी मुन्नी (आयु : 45 वर्ष, मायका : मिराण, भिवानी; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

132. यह जकड़ी मुन्नी (आयु : 45 वर्ष, मायका : मिराण, भिवानी; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
133. यह जकड़ी सुखदेई (आयु : 61 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : सिंघवा, हिसार) ने दिनांक 16 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
134. यह जकड़ी तारावती (आयु : 48 वर्ष, मायका : भट्टू, फतेहाबाद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 21 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
135. यह जकड़ी दर्शना (आयु : 46 वर्ष, मायका : खरक बूरा; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 21 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
136. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 21 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
137. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 16 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
138. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 16 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
139. यह जकड़ी नन्ही (आयु : 39 वर्ष, मायका : डूमरखा कलाँ, जींद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 16 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
140. यह जकड़ी कमलेश (आयु : 42 वर्ष, मायका : चुडाळी, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 05 जून, 2014 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
141. यह जकड़ी चंदर (आयु : 75 वर्ष, मायका : बेरी खेड़ा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 07 जून, 2014 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
142. यह जकड़ी बिमला (आयु : 53 वर्ष, मायका : दुपेडी, करनाल; ससुराल : माळी, जींद) ने दिनांक 12 जून, 2014 को दुपेडी गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
143. यह जकड़ी दर्शना (आयु : 46 वर्ष, मायका : खरक बूरा, जींद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 04 दिसंबर, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
144. यह जकड़ी दर्शना (आयु : 46 वर्ष, मायका : खरक बूरा, जींद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 04 दिसंबर, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
145. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
146. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
147. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
148. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

149. यह जकड़ी बेदो (आयु : 57 वर्ष, मायका : सुंडाणा, रोहतक; ससुराल : बामला, भिमानी) ने दिनांक 25 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
150. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 29 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
151. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 49 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 04 दिसंबर, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
152. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 31 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
153. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
154. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 28 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
155. यह जकड़ी संतोष (आयु : 47 वर्ष, मायका : धनोरी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
156. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 29 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
157. यह जकड़ी दरसन (आयु : 50 वर्ष, मायका : लुदाणा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
158. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 29 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
159. यह जकड़ी कृष्णा (आयु : 57 वर्ष, मायका : सुंडाणा, रोहतक; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 01 मई, 2013 को गद्दी खेड़ी गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
160. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 29 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
161. यह जकड़ी सुमन (आयु : 15 वर्ष, मायका : जुगलान) ने दिनांक 20 नवंबर, 2012 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
162. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 55 वर्ष, मायका : फरमाणा, रोहतक; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
163. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 29 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
164. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 29 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
165. यह जकड़ी रोशनी (आयु : 49 वर्ष, मायका : बामला, भिवानी; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 24 मार्च, 2013 को रोहतक में रिकॉर्ड करवाई।

166. यह जकड़ी संतरो (आयु : 40 वर्ष, मायका : भरैण, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
167. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 29 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
168. यह जकड़ी भरपाई (आयु : 76 वर्ष, मायका : फरीदपुर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 15 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
169. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 50 वर्ष, मायका : न्योळथा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
170. यह जकड़ी निंबो देवी (आयु : 70 वर्ष, मायका : बिठमड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 अप्रैल, 2015 को बरवाला में रिकॉर्ड करवाई।
171. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका : दणोदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
172. यह जकड़ी बबली (आयु : 40 वर्ष, मायका : किन्नर, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
173. यह जकड़ी कांता (आयु : 40 वर्ष, मायका : भकलाना, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
174. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
175. यह जकड़ी संतोष (आयु : 47 वर्ष, मायका : धणोरी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
176. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
177. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
178. यह जकड़ी संतोष (आयु : 35 वर्ष, मायका : खानक, भिवानी; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
179. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
180. यह जकड़ी कमला (आयु : 52 वर्ष, मायका : अडियाणा, पानीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
181. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
182. यह जकड़ी बिमला (आयु : 46 वर्ष, मायका : खरैंटी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 31 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

183. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

184. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 50 वर्ष, मायका : न्योळथा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

185. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

186. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

187. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

188. यह जकड़ी चमेली (आयु : 50 वर्ष, मायका : मायना, झज्झर; ससुराल : बामला, हिसार) ने दिनांक 24 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

189. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

190. यह जकड़ी रोशनी (आयु : 40 वर्ष, मायका : सीसर, हिसार; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

191. यह जकड़ी कृष्णा (आयु : 57 वर्ष, मायका : सुंडाणा, रोहतक; ससुराल : गद्दी खेड़ी) ने दिनांक 30 अप्रैल को गद्दी खेड़ी गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

192. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

193. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

194. यह जकड़ी बीना (आयु : 48 वर्ष, मायका : घिरावड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 08 नवंबर, 2014 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

195. यह जकड़ी बिमला (आयु : 37 वर्ष, मायका : सुरतपुरा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 26 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

196. यह जकड़ी सुदेश (आयु : 32 वर्ष, मायका : गुराणा, हिसार; ससुराल : फरीदपुर, हिसार) ने दिनांक 25 नवंबर, 2012 को फरीदपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

197. यह जकड़ी रेखा (आयु : 25 वर्ष, मायका : धमताण साहिब, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

198. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।

199. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 28 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

200. यह जकड़ी गुड्डी (आयु : 48 वर्ष(मायका : बाळक, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 29 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
201. यह जकड़ी फुल्ली (आयु : 73 वर्ष, मायका : ढाणी ठाकरिया, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 24 नवंबर, 2012 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
202. यह जकड़ी कमला (आयु : 36 वर्ष, मायका : सिसाय, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
203. यह जकड़ी प्रेमपती (आयु : 58 वर्ष, मायका : ढाणी प्रेमनगर, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 30 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
204. यह जकड़ी उषा (आयु : 30 वर्ष, मायका : सातरोड़, हिसार ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 14 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
205. यह जकड़ी उषा (आयु : 30 वर्ष, मायका : सातरोड़, हिसार ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 14 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
206. यह जकड़ी दर्शना (आयु : 48 वर्ष, मायका : खरक बूरा, जींद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 21 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
207. यह जकड़ी दर्शना (आयु : 48 वर्ष, मायका : खरक बूरा, जींद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 21 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
208. यह जकड़ी बीरमती (आयु : 46 वर्ष, मायका : मिराण, भिवानी; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 21 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
209. यह जकड़ी चमेली (आयु : 50 वर्ष, मायका : मायना, रोहतक; ससुराल : बामला भिवानी) ने दिनांक 24 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
210. यह जकड़ी बिमला (आयु : 46 वर्ष, मायका : खरैंटी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
211. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 49 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 04 दिसंबर, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
212. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 30 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
213. यह जकड़ी धन्नो (आयु : 50 वर्ष, मायका : सैमण पुट्ठी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई। यही जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
214. यह जकड़ी लिछमी (आयु : 61 वर्ष, मायका : खैरी, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
215. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

216. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
217. यह जकड़ी चमेली (आयु : 50 वर्ष, मायका : मायना, झज्झर; ससुराल : बामला, हिसार) ने दिनांक 24 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई। यही जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
218. यह जकड़ी भरपाई (आयु : 52 वर्ष, मायका : पालवास, भिवानी; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 07 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
219. यह जकड़ी कमलेश (आयु : 40 वर्ष, मायका : काळवा, जींद; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
220. यह जकड़ी कृष्णा (आयु : 57 वर्ष, मायका : सुंडाणा, रोहतक; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 22 मई, 2013 को गद्दी खेड़ी गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
221. यह जकड़ी कृष्णा (आयु : 57 वर्ष, मायका : सुंडाणा, रोहतक; ससुराल : गद्दी खेड़ी, रोहतक) ने दिनांक 30 अप्रैल, 2013 को गद्दी खेड़ी गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
222. यह जकड़ी बेदो (आयु : 57 वर्ष, मायका : सुंडाणा, रोहतक; ससुराल : बामला, भिवानी) ने दिनांक 25 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
223. यह जकड़ी बीरमती (आयु : 75 वर्ष, मायका : जहाजगद, झज्झर; ससुराल : बामला, भिवानी) ने दिनांक 24 मई, 2013 को बामला गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
224. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका : दणोदा, जींद; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
225. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका : दणोदा, जींद; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
226. यह जकड़ी संतोष (आयु : 39 वर्ष, मायका : उचाणा, जींद; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
227. यह जकड़ी संतोष (आयु : 35 वर्ष, मायका : खानक, भिवानी; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
228. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
229. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
230. यह जकड़ी संतोष (आयु : 47 वर्ष, मायका : धनोरी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
231. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

232. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

233. यह जकड़ी चंदरो (आयु : 61 वर्ष, मायका : स्यामड़ी, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

234. यह जकड़ी चंदरो (आयु : 61 वर्ष, मायका : स्यामड़ी, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

235. यह जकड़ी भूरो (आयु : 44 वर्ष, मायका : फरीदपुर, हिसार; ससुराल : दमकोरा, हिसार) ने दिनांक 25 नवंबर, 2012 को दमकोरा गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

236. यह जकड़ी संतरो (आयु : 40 वर्ष, मायका : भरैण, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

237. यह जकड़ी संतरो (आयु : 40 वर्ष, मायका : भरैण, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

238. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका : दणोदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

239. यह जकड़ी माया (आयु : 40 वर्ष, मायका : दणोदा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 09 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

240. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 50 वर्ष, मायका : न्योळथा, पानीपत ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 05 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

241. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : घिलोड़, रोहतक; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

242. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 50 वर्ष, मायका : न्योळथा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 06 जून, 2013 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

243. यह जकड़ी संतोष (आयु : 47 वर्ष, मायका : धनोरी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

244. यह जकड़ी प्रोमिला (आयु : 40 वर्ष, मायका : बनाँवाली, फतेहाबाद; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 11 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

245. यह जकड़ी भूरो (आयु : 44 वर्ष, मायका : फरीदपुर, हिसार; ससुराल : दमकोरा, हिसार) ने दिनांक 25 नवंबर, 2012 को दमकोरा गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

246. यह जकड़ी स्मृति के आधार पर लिखी गई है। इस जकड़ी को मैंने मार्च 1984 में कृष्णा (आयु : 19 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार) से जुगलान गाँव में सुना था।

247. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 49 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 26 नवंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

248. यह जकड़ी चंदरो (आयु : 70 वर्ष, मायका : प्रभुवाला, हिसार; ससुराल : बुड़ाक, हिसार) ने दिनांक 01 दिसंबर, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

249. यह जकड़ी रोशनी (आयु : 60 वर्ष, मायका : गामड़ा, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 मई, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
250. यह जकड़ी बिमला (आयु : 46 वर्ष, मायका : खरैंटी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 31 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
251. यह जकड़ी लाजवंती (आयु : 46 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 27 दिसंबर, 2011 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
252. यह जकड़ी सुखदेई (आयु : 61 वर्ष, मायका : जुगलान, हिसार; ससुराल : सिंघवा राघो, हिसार) ने दिनांक 16 मार्च, 2014 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
253. यह जकड़ी चंदर (आयु : 75 वर्ष, मायका : बेरी खेड़ा, पानीपत; ससुराल : शाहपुर, जींद) ने दिनांक 07 जून, 2014 को शाहपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
254. यह जकड़ी राजपती (आयु : 62 वर्ष, मायका : खरकड़ा, हिसार; ससुराल : खेड़ी जालब, हिसार) ने दिनांक 03 अप्रैल, 2015 को वाराणसी में रिकॉर्ड करवाई।
255. यह जकड़ी बिमला (आयु : 53 वर्ष, मायका : दुपेडी, करनाल; ससुराल : माळी, जींद) ने दिनांक 12 जून, 2014 को दुपेडी गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
256. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 55 वर्ष, मायका : फरमाणा, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
257. यह जकड़ी लिछ्मी (आयु : 61 वर्ष, मायका : खैरी, हिसार; ससुराल : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
258. यह जकड़ी खजानी (आयु : 64 वर्ष, मायका : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
259. यह जकड़ी खजानी (आयु : 64 वर्ष, मायका : घिराय, हिसार) ने दिनांक 08 जून, 2013 को घिराय गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
260. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 29 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
261. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 31 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
262. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 31 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
263. यह जकड़ी कृष्णा (आयु : 50 वर्ष, मायका : खरक बूरा, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 28 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
264. यह जकड़ी बिमला (आयु : 45 वर्ष, मायका : सींक, सोनीपत; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।
265. यह जकड़ी संतोष (आयु : 47 वर्ष, मायका : धनोरी, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

266. यह जकड़ी सावित्री (आयु : 55 वर्ष, मायका : फरमाणा, जींद; ससुराल : जलालपुर, जींद) ने दिनांक 30 मई, 2013 को जलालपुर गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

267. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।

268. यह जकड़ी मेस्सर (आयु : 70 वर्ष, मायका : स्याहड़वा, हिसार; ससुराल : जुगलान, हिसार) ने दिनांक 10 जून, 2013 को जुगलान गाँव में रिकॉर्ड करवाई।



किशोर विद्या निकेतन

वाराणसी



ISBN : 978-93-84299-55-2

